बगलामुखी साधना एवं उपासना

लेखक :

पं. संजीव कुमार झा

सुपुत्र : पं. वाई.एन.झा 'तूफान'

मोबाइल नं. – 094175-86091

फोन + फैक्स : 0181-2490311

प्रकाशक :

महामाया पब्लिकेशन्स

नज़दीक चौंक अड्डा टांडा, जालन्धर शहर।

Ph.0181- 5001696

मूल्य : 110:00

बगलामुखी साधना एवं उपासना

लेखक : **पं. संजीव कुमार झा**

सूचना

इस पुस्तक के प्रूफ पढ़ते समय पूर्ण सावधानी बरती गयी है। पात्र का नाम, स्थान घटना क्रम आदि देते भी समय पूरी सावधानी वरती गई। फिर भी मानवीय मूल संभव है। इसके लिए लेखक, प्रकाशक व संपादक जिम्मेदार न होंगे। बल्कि अगर कोई गल्ती है तो हमें अवगत करायें ताकि अगले संस्करण में उसे सुधारा जा सके।

प्रिंटिंग : **महामाया प्रिंटर्स**, *जालन्धर शहर।*

भूमिका

प्रिय पाठको! 'भगवती श्रीबगलामुखी माता' दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या हैं। इनकी कैलाशधाम में और इस धरती पर अवतरण की कथा बड़ी रोचक है। कैलाशधाम में इनके अवतरण की कथा इस प्रकार है –

भगवान शिव और माता पार्वती जी में जितना प्रेम था उतना ही वे दोनों छोटे-छोटे विषयों पर झगड़ पड़ते थे। उनमें अक्सर कोई-न-कोई विवाद होता ही रहता था। इस तरह देवों-के-देव महादेव, पार्वती मईया जी से रुष्ट होकर कहीं दूर चले जाते थे। वे हजारों-लाखों वर्ष तक योगनिद्रा में लीन हो जाते और माता पार्वती जी को उनका असहनीय वियोग सहन करना पड़ता।

एक दिन इसी तरह उन दोनों में किसी विषय को लेकर विवाद हो गया। अब फिर से भोले नाथ लम्बी योगनिद्रा में जाने को तैयार थे किन्तु, इस बार माता पार्वती जी ने भी मन में निश्चय कर लिया था कि अब की बार वे भगवान शिव को जाने से रोकने की हर चेष्टा की परन्तु, भगवान भोलेनाथ जी नहीं रुके, तब माता पार्वती जी ने अपने दिव्य शरीर से दस देवियों को प्रगढ़ किया जो दस-महाविद्या कहलायी और जिन्होंने महादेव का दसों दिशाओं में मार्ग अवरुद्ध कर दिया। भगवान शंकर किसी भी दिशा (आकाश, पाताल, पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान, अग्निकोण, नैऋत्य और वायव्य दिशा) में नहीं आगे बढ़ सके। इसी प्रकार 'श्रीबगलामुखी' दस महाविद्याओं में एक महाविद्या का अवतरण कैलाशधाम में हुआ।

पृथ्वी पर उनके अवतरण की कथा इस प्रकार है – 'पुराकृत युग' में एक भयानक 'बवंडर' सृष्टि को विनाश करने वाला एक तूफान उठा। उस 'तूफान' से सम्पूर्ण सृष्टि में त्राहि-त्राहि मच गयी। उस भयानक बवंडर से समस्त जगत् का विनाश होने लगा, जिसे देखकर भगवान विष्णु को चिन्ता हो गयी। उन्होंने तपस्या करके 'श्रीमहात्रिपुर सुन्दरी' को संतुष्ट किया। सौराष्ट्र नामक क्षेत्र में स्थित 'हरिद्रा' नामक झील के किनारे जल क्रीड़ा करते हुए देवी के हृदय से एक तेज निकला जो भगवती 'श्री बगलामुखी' का स्वरूप था जिसने तत्काल उस 'प्रलयकारी तूफान' को रोक दिया।

माता बगलामुखी पीले वस्त्रों में, पीताभूषणों से सजी हुई शव के आसन पर विराजमान हैं। उन्हों एक हाथ में दुष्ट की जिह्वा को धारण किया माता को पीले रंग की वस्तुएं बहुत प्रिय हैं। इसलिए इनकी पूजा में कनेर का पुष्प, पीला हल्दी मिश्रित चन्दन, हल्दी की माला और पीले कम्बल के आसन का प्रयोग विशेष रूप से होता है।

पाठको! बाजार में वैसे तो 'श्रीबगलामुखी' जी पर कई पुस्तकें मिलती हैं किन्तु, उनमें पूजा की जो विधि बतायी गयी है वह सामान्य पाठकगण की समझ से परे है। आपकी इसी समस्या के समाधान के लिए मैंने इस परम पवित्र पुस्तक 'श्री बगलामुखी साधना' की रचना की है।

इस पवित्र पुस्तक में 'श्री बगलामुखी आद्यशक्ति रहस्य', 'दस महाविद्याओं' में से एक महाविद्या बगलामुखी, 'श्री बगलामुखी की अवतार कथा', 'श्री बगलामुखी शब्द का अर्थ', 'साधना के आधारभूत विषयों का ज्ञान', 'माता श्रीबगलामुखी का पंचोपचार नित्य पूजन', '108 नामों का जाप', 'सहस्त्रनाम की महिमा', श्रीबगलामुखी चालीसा, वन्दना और आरती विषय सम्मिलित हैं जो बड़े सरल ढंग से लिखा गया हैं ताकि साधारण पाठकगण इसको अच्छी तरह समझ सकें।

पाठको! इन सभी उपरोक्त विषयों से भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण विषय 'श्री बगलामुखी यंत्र' दिव्य महातेजस्वी यंत्र साधना-विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है जो अत्यन्त दिव्य चमत्कारी यंत्र है और किसी से भी जीवन को बड़ी अद्‌भुत तरीके से बदलने में सक्षम है। यह साधना-विधि भी सरल ढंग से वर्णित है। पाठकगण स्वयं भी इस परम शक्तिशाली यंत्र को सिद्ध कर पाते तो हमारे कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर 'सिद्ध महाबगलामुखी यंत्र' मंगवा कर इस यंत्र का पूरा लाभ उठा सकते हैं।

पाठको! किसी प्रकार के सिद्ध यंत्र मंगवाने के लिए, अपनी जन्मपत्री व सम्पूर्ण जीवन का भाग्यफल बनवानें हेतु आप हमारे निम्नलिखिंत कार्यालय के पते पर सम्पर्क कर सकते हैं। अन्त में यही कहना चाहुंगा कि यदि इस पुस्तक में कोई त्रुटि रह गयी हो तो पाठकगण उसके लिए मुझे क्षमा करें और इस पुस्तक को और बेहतर बनाने के लिए आप अपने सुझाव निम्न पते पर भेज सकते हैं। जय श्री बगलामुखी माता की।

लेखक :

पं॰ संजीव कुमार झा

सुपुत्र : पं॰ वाई॰ एन॰ झा 'तूफान'

मकान नं. 61, टोबरी मुहल्ला,

नियर टांडा रोड, देवी तालाब अस्पताल

जालन्धर सिटी (पंजाब) भारत

पिन कोड - 144004

फोन + फेक्स नं. 0181-2490311

मोबाइल नं. 094175-86091, 098726-17598

विषय सूची

प्रथम भाग

श्री बगलामुखी रहस्य खण्ड :

द्वितीय भाग

साधना से पूर्व आवश्यक ज्ञान खण्ड

साधना में आसन और मालाओं का प्रयोग खण्ड

तृतीय भाग

माता बगलामुखी पूजन खण्ड

माता बगलामुखी हवन विधि खण्ड

चतुर्थ भाग
श्री बगलामुखी स्तोत्र, स्तुति, कवच खण्ड

पंचम् भाग
श्री बगलामुखी यंत्र-मंत्र साधना खण्ड

श्री बगलामुखी वन्दना खण्ड

प्रथम भाग

श्री बगलामुखी रहस्य खण्ड

भगवती बगलामुखी के मूलाधार आधा महाशक्ति पार्वती रहस्य

पाठको! 'भगवती बगलामुखी' आद्या-महाशक्ति माहेश्वरी 'पार्वती' के ही शरीर से प्रकट हुई हैं और माहेश्वरी भगवती पार्वती ही 'महाकाली' हैं, दस महाविद्याएं हैं, जो विभिन्न रूपों में विविध लीलाएं कती हैं।

परमात्मा के पुरुष वाचक सभी स्वरूप इन्हीं अनादि, अविनाशिनी, अनिवर्चनीया, सर्व-शक्तिमयी परमेश्वरी आद्या महाशक्ति के ही हैं। यही महाशक्ति अपनी माया-शक्ति को जब अपने अन्दर छिपाये रखती हैं, तब निष्क्रिय शुद्ध ब्रह्म कहलाती हैं। यही जब उसे विकासोन्मुख करके एक से अनेक होने का संकल्प करती हैं तब स्वयं ही पुरुष रूप में मानो अपनी ही प्रकृति रूप योनि में 'संकल्प' द्वारा चेतन रूप बीज स्थापना करके सगुण निराकार परमात्मा बन जाती है। इसी की अपनी शक्ति से गर्भाशय में वीर्य स्थापना से होने वाली विकार की भांति उस प्रकृति में क्रमशः सात विकृति होनी है। महातत्व, समविष्ट बुद्धि, अहंकार और सूक्ष्म पञ्चतन-मात्राएं मूल प्रकृति के विकार होने से इन्हें 'विकृति' कहते हैं, परन्तु इनके अन्य सोलह विकारों की उत्पत्ति होने के कारण इन सातों के समुदाय को 'प्रकृति' भी कहते हैं।

फिर अहंकार से मन और दस (ज्ञान-कर्म रूप) इन्द्रियों और पञ्चतन्मात्रा से 'पञ्च भूतों' की उत्पत्ति होती है, इसलिए इन दोनों समुदायों का नाम 'प्रकृति' और 'विकृति' है। मूल प्रकृति के सात विकार, सप्तधा विकार रूपा प्रकृति से उत्पन्न सोलह विकार और स्वयं मूल प्रकृति - ये कुल मिलाकर चौबीस तत्त्व हैं, यों वह महाशक्ति ही अपनी प्रकृति सहित चौबीस तत्त्वों के रूप में यह 'स्थूल संसार' बन जाती हैं और जीव रूप से स्वयं पच्चीसवें तत्त्व स्वरूप में प्रविष्ट होकर खेल खेलती हैं।

चेतन परमात्मा रूपिणी महाशक्ति के बिना जड़ प्रकृति से यह सारा कार्य कदापि सम्पन्न नहीं हो सकता। इस प्रकार महाशक्ति 'पार्वती' विश्व रूप 'विराट पुरुष' बनती हैं और इस सृष्टि के निर्माण में स्थूल निर्माता 'प्रजापति' के रूप में आप ही 'अशांवतार' के भाव से 'ब्रह्मा' और पालनकर्त्ता के रूप में 'विष्णु' एवं

संहारकर्त्ता के रूप में 'रुद्र' बन जाती हैं और ये ब्रह्मा, विष्णु, शिव प्रभृति अंशावतार भी किसी कल्प में दुर्गा रूप में, महाशिव रूप में, दस महाविद्याएं व 'बगलामुखी' रूप में, महाशिव रूप में, किसी कल्प में श्रीराम रूप में और किसी में श्री कृष्ण रूप में, अर्थात् एक ही 'महाशक्ति' विभिन्न कल्पों में विभिन्न नाम रूप से अवतरित होती हैं। इस विभिन्नता का कारण और रहस्य भी उन्हीं को ज्ञात है। यही महाशक्ति अनन्त ब्रह्माण्ड में असंख्य ब्रह्मा, विष्णु, महेश बनी हुई हैं और अपनी माया शक्ति से अपने को ढक कर आप ही 'जीव संज्ञा' को प्राप्त हैं।

ईश्वर, जगत, जीव तीनों आप ही हैं। भोक्ता, भोग्य और भोग तीनों आप ही हैं, न तीनों को अपने ही से निर्माण करने वाली, तीनों में व्याप्त रहने वाली भी आप ही हैं।

इन्हीं सगुण, निर्गुण रूप भगवान या भगवती से उपर्युक्त प्रकार से कभी 'महादेवी' रूप के द्वारा, कभी 'महाशिव' रूप के द्वारा, कभी 'महाविष्णु' रूप के द्वारा, कभी 'श्री कृष्ण' रूप के द्वारा और कभी श्री राम रूप के द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति होती है और यही परमात्मा रूपी महाशक्ति पुरुष और नारी रूप में 'विविध अवतारों' में प्रकट होती हैं। अपने पुरुष रूप अवतारों में स्वयं 'महाशक्ति' ही लीला के लिए इन्हीं के अनुसार रूपों में उनकी 'पत्नी' बन जाती हैं। ऐसे बहुत से इतिहास मिलते हैं। जिनमें महाविष्णु ने लक्ष्मी से, श्री कृष्ण ने राधा से, श्री सदाशिव ने उमा से और श्रीराम ने सीता से कहा है कि – हम दोनों सर्वथा अभिन्न हैं, एक के ही दो रूप हैं, सिर्फ लीला के लिए एक के दो रूप बन गए हैं, वस्तुतः हम दोनों में कोई अन्तर नहीं है।

यही आदिकाल के तीन जोड़े उत्पन्न करने वाली 'महालक्ष्मी' हैं। इन्हीं की शक्ति से ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र बनते हैं, जिनसे विश्व की उत्पत्ति होती है। इन्हीं की शक्ति से विष्णु और शिव प्रकट होकर विश्व का पालन और संहार करते हैं।

दया, क्षमा, निद्रा, स्मृति, क्षुधा, तृष्णा, तृप्ति, श्रद्धा, भक्ति, धृति, मति, पुष्टि, शान्ति, कान्ति, लज्जा आदि इन्हीं महाशक्ति की 'शक्तियां' हैं। इन्हीं के अंशावतार रूप से काली, तारा, षोड़सी, त्रिपुर सुन्दरी, भुवनेश्वरी, कमला छिन्नमस्ता, धूमावती, 'बगलामुखी' और मातङ्गनी दस महाविद्याएं अवतरित हुई हैं। यही गोलोक में श्री राधा, साकेत में श्री सीता, क्षीरोद सागर में लक्ष्मी, दक्ष कन्या सती और दुर्गति नाशिनी दुर्गा हैं। यही वाणी, विद्या, सरस्वती, सावित्री और गायत्री हैं।

यही सूर्य की प्रभा शक्ति, पूर्ण चन्द्र की सुधावर्षिणी शक्ति, अग्नि की दाहिका शक्ति, वायु की वहन शक्ति, जल की शीतलता शक्ति, धरा की धारण शक्ति और शस्य की प्रसूति शक्ति हैं। यही तपस्वियों का तप, ब्रह्मचारियों का ब्रह्म तेज, गृहस्थों की सर्वाश्रम आश्रयता, वान प्रस्थों की संयम-शीलता, सन्यासियों का त्याग, महापुरुषों की महत्ता और मुक्त पुरुषों की मुक्ति हैं।

यही 'महाशक्ति पार्वती' शूरों का बल, दानियों की उदारता, माता-पिता का वात्सल्य, गुरु की गुरुता, पुत्र और शिष्य की गुरुजन भक्ति, साधुओं की साधुता, चतुरों की चातुरी और मायावियों की माया हैं। यही लेखकों की लेखन शक्ति, नरेशों की प्रजापालन शक्ति और प्रजा की राज शक्ति हैं। यही विद्वानों की विद्या सम्पत्ति, धनवानों की अर्थ सम्पत्ति, ज्ञानियों की ज्ञान शक्ति और प्रेमियों की प्रेम शक्ति हैं।

यही मातेश्वरी पार्वती राजाओं की राजलक्ष्मी, वणिकों की सौभाग्य लक्ष्मी और श्रेयाश्रियों की 'श्रीं' हैं। सारांश यह है कि जगत् में तमाम जगह परमात्मा रूपी 'महाशक्ति' ही विविध शक्तियों के रूप में खेल रही हैं। तमाम जगह स्वभाविक ही 'महाशक्ति' की पूजा हो रही है। 'जहां महाशक्ति नहीं है वहीं शून्यता है।'

यही 'आद्या महाशक्ति' ही सर्व कारण रूप प्रकृति की आधार भूता होने से 'महाकारण' हैं। यही मायाधीश्वरी हैं, यही सृजन, पालन, संहारकारिणी आद्या नारायणी शक्ति हैं।

'शिव' जो शक्तिमान हैं, उनसे महाशक्ति भिन्न नहीं है। अधिष्ठान से अध्यस्त की सत्ता भिन्न नहीं होती है, वह तो अधिष्ठान रूप ही है। शिव एक रस अपरिणामी हैं और शक्ति परिणामी हैं। यह जगत, परिणामी महाशक्ति का ही विलास है। शिव में 'शक्ति' का आविर्भाव होते ही तीनों लोक और चौदहों भुवन उत्पन्न होते हैं और महाशक्ति का तिरोभाव होते ही जगत् का अत्यन्त अभाव हो जाता है।

'वेदान्त' ने नीचे के श्लोकों में इसी बात को स्पष्ट किया है -

श्लोक

शक्ति-जातंहि संसार तस्मिन सति जगत्त्रयम्।
तस्मिन् क्षीणे जगत क्षीणं तच्चि-करिष्यं प्रयत्नतः॥

भावार्थ : शक्ति का कार्य यह संसार है। महाशक्ति के आविर्भाव से तीनों ही जगत् उत्पन्न होते हैं और महाशक्ति के तिरोभाव होने से जगत् का अत्यन्त अभाव हो जाता है।

'विद्यारण्य मुनि' भी यही कहते हैं :

श्लोक

न केवलम् ब्रह्मैव जगत कारणं निर्विकार त्वात्।
नापि केवलम् शक्तिः कारणं स्वतंत्रया भावात्॥
तस्मादुभयं मिलित्वैव जगतत्कारणं भवति।

भावार्थ : केवल 'ब्रह्म' जगत का कारण नहीं है, क्योंकि वह निर्विकार है और केवल 'महाशक्ति' भी जगत् का कारण नहीं, क्योंकि उसमें स्वतंत्रता का

अभाव है। इस कारण ब्रह्मशक्ति (ब्रह्म और शक्ति) दोनों के संयोग से संसार उत्पन्न होता है। परन्तु, इन दोनों में महाशक्ति की ही प्रधानता है, क्योंकि 'शक्ति' के बिना शिव भी 'शव' की संज्ञा को प्राप्त होते हैं। 'उपनिषद' भी महाशक्ति की महिमा से भरे पड़े हैं। नीचे के कुछ मंत्रों से स्पष्ट हो जायेगा। लेख बढ़ जाने के कारण अधिक प्रमाण नहीं दिए जाते।

श्लोक

मायां तु प्रकृति विधान्मा-यिनं तु महेश्वरम्।
तस्यावय वभूतैस्तु व्याप्तं सर्वमिदं जगत्॥
न तस्य कार्ये करणं च विद्यते।
न तस्यम श्राभ्य-धिकश्च दृश्यते॥
परास्य शक्ति विविधैव-श्रृयते।
स्वाभाविकी ज्ञान बलक्रिया च॥
ते ध्यान योगानुगता अपश्यन्।
देवाश्म शक्ति निखिभानि तानि।
कालास्म युक्तान्य-धितिष्ठ व्येकः॥

भावार्थ : 'माया' (महाशक्ति) को 'प्रकृति' जानों, माया के अधिपति और प्रेरक 'महेश्वर' हैं। महेश्वर के अवयव रूप भूतों से यह जगत् भरा पड़ा है। महेश्वर और महाशक्ति को एक समझो। 'ब्रह्म' का न कोई 'कार्य है न करण', न उसके समान कोई है न कोई अधिक है। परमात्मा की 'महाशक्ति' ही सब कुछ है। परमात्मा की महाशक्ति नाना प्रकार की सुनी जाती हैं, शक्ति में ज्ञान, बल और क्रिया स्वाभाविक है।

मुनियों ने ध्यान के बल से अपने ही गुणों से आध्यात्म शक्ति और ईश्वर को देखा जो कालस्व भावादि कारणों के भी कारण रूप में एक होकर अधिष्ठित हैं। मुनियों ने योगबल से यह सिद्धान्त निकाला कि इस जगत के कारण 'शिव और शक्ति' दोनों हैं, जो एक ही हैं, मात्र लीला करने हेतु दो रूप में विभक्त हैं।

'दुर्गा सप्तशती' में भी शिव की अव्यक्ता-स्पन्द रूपा महाशक्ति देवी ने अनेक रूप धारण किए हैं। पांचवें अध्याय में महाशक्ति रूपी देवी की विलक्षण शक्तियों का कुछ स्पष्ट वर्णन आया है। जैसे -

यह शिव की महाशक्ति अव्यक्त रूप से दृश्य मात्र जगत् में और सब शरीरों में विष्णु की माया, चेतना, बुद्धि, शक्ति, लक्ष्मी, वृत्ति आदि नामों से आप ही स्थित है। दृश्यमान जगत् की और सब इन्द्रियों की अधिष्ठात्री हैं और दृश्य-अदृश्य जगत

मात्र में व्याप्त हैं और चेतन रूप हैं। ऐसी जगन्माता देवी को बारम्बार प्रणाम है। यही महाशक्ति रूपी देवी अवयक्त रूप से नामों को धारण करती हैं और भक्तों की भावना के अनुसार अव्यक्त होकर भी व्यक्त (प्रकट) रूपों को धारण करती है। दुर्गा, काली, राधा, अन्नपूर्णा, सरस्वती, लक्ष्मी, तारा, दस महाविद्याएं इत्यादि अनेक रूपों को धारण करती हैं। महादेवी में अनन्त सामर्थ्य है। जैसे बीज से अंकुर भिन्न नहीं है, सूर्य की किरणों से जैसे सूर्य भिन्न नहीं है, वैसे ही शिव से महाशक्ति भिन्न नहीं हैं। 'अर्धनारीश्वर की उपासना का यही मौलिक रहस्य है।'

पाठको! उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट हो ज़ाता है कि सृष्टि जगत् की सब कुछ 'महाशक्ति पार्वती' ही हैं। यही पार्वती दस रूपों में विभक्त होकर 'दस महाविद्या' कहलायी हैं और उन्हीं दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या 'भगवती बगलामुखी' भी हैं।

दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या भगवती बगलामुखी

(चामुण्डा तंत्र एवं मुण्डमाला तंत्र में वर्णित)

पाठको! आजकल बाजारों में भगवती बगलामुखी पर आधारित जितनी भी पुस्तकें प्रकाशित है उनमें माता बगलामुखी अवतार का समय 'सतयुग' काल बताया गया है, जबकि भगवती बगलामुखी का अवतार इससे पूर्व दस महाविद्या अवतार काल में हो चुका है। सतयुग से पूर्व भी भगवती बगलामुखी का अस्तित्व शास्त्रों ग्रन्थों में वर्णित है।

जिस प्रकार 'महाशक्ति पार्वती' के अंशों से माता महाकाली दस महाविद्या अवतार के समय एवं रक्तबीज दानव के वध के समय भी अवतरित हुई हैं, उसी प्रकार मातेश्वरी पार्वती के अंशों से ही भगवती बगलामुखी दस महाविद्या अवतार के समय एवं 'सतयुग' में सृष्टि विनाशकारी तूफान आने पर भगवान विष्णु की तपस्या से प्रसन्न होकर अवतरित हुई और विनाशकारी बवंडर को शान्त किए। शास्त्रों में भगवती बगलामुखी के दो बार अवतरण होने की कथा उद्दृत है।

भगवान शिव के साथ 'महाशक्ति' कभी 'सती' बनकर, कभी 'गौरी' बनकर, कभी 'उमा' तो कभी 'पार्वती' बनकर सृष्टि संचालन में साथ निभाई हैं।

यह कथा भगवती 'उमा' काल की है - एक समय की बात है कि शक्तिमान महेश्वर 'भगवती उमा' (पार्वती) से रूठकर कहीं चलने को तत्पर हुए। भगवती ने कहा हे परमेश्वर! हे प्राणनाथ!! आप इस प्रकार हमसे रुष्ट होकर कहां जा रहे हैं? भगवान शिव ने उत्तर दिए - हमारी जहां इच्छा होगी वहां मैं जाऊंगा।

भगवती उमा ने मुस्कुराते हुए निवेदन किया हमारे पास से अन्यत्र जाने का विचार आप त्याग दीजिए। परन्तु भगवान सदाशिव ने भगवती के शब्दों पर ध्यान न देते हुए अन्यत्र जाने के विचार से प्रस्थान कर ही दिया। कुछ दूर जाने पर देखा कि मार्ग अवरुद्ध करके भगवती उमा 'महाकाली' रूप में सामने मार्ग रोककर खड़ी हैं और भगवान शंकर से बोली –

इस दिशा में आप नहीं जा सकते। पुनः भगवान शंकर ने उस ओर से प्रत्यावर्तित होकर विभिन्न दिशाओं की ओर क्रमशः प्रस्थान किया। परन्तु जिस-जिस दिशा की ओर भगवान शंकर गए, उन-उन दिशाओं में भगवती का कोई-न-कोई स्वरूप मार्ग रोके हुए उपस्थित रहा।

इस प्रकार भगवती उमा (पार्वती) के दस दिशाओं में दस स्वरूप प्रकट हुए। जो 'आगम ग्रन्थों' में 'दस महाविद्या' के नाम से विख्यात हुए। इन दस महाविद्याओं के अलग-अलग नाम निम्नलिखित हैं :

1. काली, 2. तारा, 3. षोड़सी, 4. त्रिपुरमस्तिका, 5. भुवनेश्वरी, 6. कमला, 7. छिन्नमस्तिका, 8. धूमावती, 9. 'बगलामुखी' (वल्गामुखी) और 10. मातङ्गि। 'चामुण्डा तंत्र' एवं 'मुण्डमाला तंत्र' में इनका उल्लेख इस प्रकार आया है :

श्लोक

काली तारा महाविद्या षोड़शी भुवनेश्वरी।
त्रिपुर सुन्दरी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा॥
'बगलामुखी' सिद्ध विद्या च मातङ्गि कमलात्मिका।
एषा दशमहाविद्याः सिद्ध विद्याः प्रकीर्तिता॥

भावार्थ : पाठको ! समयानुसार युग परिवर्तन होता रहता है और अनेकों बार देवताओं और मनुष्यों पर दैत्यों एवं अन्य प्रकार की विपदाएं उपस्थित हुई हैं। ऐसी विकट परिस्थितियों में 'आदि शक्ति' किसी न किसी रूप में उपस्थित होकर देवताओं और मनुष्यों के दुखों का हरण कर धर्म व सत्य की स्थापना करती हैं।

'भगवती बगलामुखी' के दूसरी बार अवतरण की कथा 'स्वतंत्र तन्त्र ग्रन्थ' में निम्न प्रकार से वर्णित है।

भगवान शिव द्वारा वर्णित भगवती बगलामुखी अवतार की कथा

('स्वतंत्र तंत्र ग्रन्थ' में वर्णित)

'भगवती बगलामुखी अवतार' की यह कथा भगवान शिव एवं भगवती पार्वती के मध्य वार्तालाप के रूप में 'स्वतंत्र तंत्र' ग्रन्थ में वर्णित है। इस तंत्र ग्रन्थ के माध्यम से भगवान शिव भगवती पार्वती से कहते हैं कि

श्लोक

अथ प्रक्ष्यामि देवेशि बगलोत्पत्ति कारणम्।
पुरा कृत युगे देवि वात क्षोभ उपस्थिते॥ 1॥
चराचर विनाशाय विष्णुश्चिन्त्रा परायणः।
तपस्यया च संतुष्टा महात्रिपुर सुन्दरी॥ 2॥

भावार्थ : हे देवी ! बगलामुखी के आविर्भाव का कारण सुना रहा हूँ। पुरा कृत युग में एक 'भयानक बवंडर' सृष्टि को विनाश करने वाला 'तूफान' उठा॥ 1॥ उस तूफान से सृष्टि में त्राहि-त्राहि मच गयी, उस भयानक बवंडर से समस्त जगतों का विनाश होने लगा, जिसे देखकर भगवान विष्णु को चिन्ता हो गई। उन्होंने तपस्या करके 'श्री महात्रिपुर सुन्दरी' को संतुष्ट किया॥ 2॥

श्लोक

हरिद्रारव्यं सरो दृष्टवा जल क्रीड़ा परायणा।
महापीत हृदस्यान्ते सौराष्ट्रे बंगलाम्बिका॥ 3॥
श्री विद्या सम्भवं तेजो विजृम्भति इतस्ततः।
चतुर्दशी भौम युता मकारेण समन्विता॥ 4॥
कुल ऋृक्ष समायुक्ता वीर रात्रिः प्रकीर्तिता।
तस्या मेवार्ध रात्रौ तु पीत हृद निवासिनी॥ 5॥

भावार्थ : 'सौराष्ट्र' नामक क्षेत्र में स्थित हरिद्रा नामक झील के किनारे जल क्रीड़ा करते हुए देवी के हृदय से एक तेज निकला जो 'भगवती बगलामुखी' के स्वरूप था। उस श्री विद्या माता 'श्री महात्रिपुर सुन्दरी' से जो तेज निकला, उससे तत्काल ही उस प्रलयकारी तूफान का अन्त कर दिया॥ 4॥ मंगलवार को जब 'चतुर्दशी' तिथि हो और साथ में मकार हो 'पुष्य नक्षत्र' का भी योग हो तब होने वाली रात्रि को 'वीर रात्रि' कहते हैं, इसी योग से परिपूर्ण अर्द्धरात्रि को पीताम्बरा भगवती बगलामुखी का अवतार हुआ था।

'सांख्यायन तंत्र' के अनुसार भगवती बगलामुखी माहात्म्य रहस्य

पाठको! 'सांख्यायन तंत्र' के प्रथम पटल में भगवती बगलामुखी माहात्म्य का रहस्य निम्न प्रकार से वर्णित है – यह रहस्य भगवान शिव और ऋषि क्रोञ्चभेदन के वार्तालाप के रूप में वर्णित है।

श्लोक

कैलाश शिखरा सीनं गौरी वाभाङ्ग संस्थितम्।
भारती पति वाल्मीकिः शिवा-संयुत-मीश्वरम्॥ 1॥
अष्ट दिक्पाल संयुक्तं विघ्नेशाष्टक सेवितम्।
भैरवाष्ट वृत्तं देवं मातृ मण्डल वेष्टितम्॥ 2॥
महा पाशुपला क्रांतं प्रमथै रावृतं प्रभुम्।
नत्वा स्तुत्वा कुमारश्च इदं वचनम् ब्रवीत्॥ 3॥

हिन्दी अनुवाद : कैलाश पर्वत के शिखर पर विराजमान भगवती गौरी जिनके वाम अंग में संस्थित हैं, शिखा से समन्वित, आठों दिकपालों से युक्त आठ विघ्नेश्वरों से संयुक्त हैं, आठ भैरवों से समन्वित, मातृ मण्डल के सहित ईश देव को जो महापाशुपत ने आक्रान्त और प्रथम गणों से समावृत प्रभु हैं – उनको प्रणाम करके भारती पति वाल्मीकि कुमार ने यह वचन कहा था॥ 1-3॥

ऋषि क्रौञ्चभेदन ऊवाच

चाप-चर्याषु निपुणैर्युद्द-चर्या भयंकरः।
नाना मायाविनं चैव जेतु मिच्छामि राक्षसम्॥ 4॥
तस्यो पाचं च तद् विद्यां ब्रहिमे करुणाकर।
पुत्रोऽच तव शिष्योहं कृपा-पात्रोऽहमेव च॥ 5॥

हिन्दी अनुवाद – ऋषि क्रौञ्चभेदन ने कहा – धनुर्विद्या की चर्या में कुशल युद्ध विद्या में अत्यन्त दक्ष तथा बहुत ही भयंकरों से युक्त अनेक प्रकार की माया से संयुक्त राक्षस को मैं जीतना चाहता हूँ॥ 4॥ हे दयालु महादेव! उसका कोई भी उपाय आप कृपा करके हमें बतलाइये। हे प्रभु! हमें भी अपना पुत्र समझिए और शिष्य भी हूँ और मैं आपकी कृपा का पात्र हूँ, तात्पर्य यह है कि मैं हर तरह से उक्त विद्या को प्राप्त करने का उचित अधिकारी हूँ।

(महादेव ऊवाच)

साधु साधु महा प्राज्ञ क्रौञ्ध भेदन कोविद्।
ब्रह्मास्त्रेण विना शत्रोः संहारो न भवेत् किल॥ 6॥
तद् विद्यां च प्रवक्ष्यामि त्रिषु लोकेषु दुर्लभाम्।
पुत्रो देयः शिरो देयं न देया यस्य कस्याचित्॥ 7॥

हिन्दी अनुवाद : भगवान शिव ने कहा – हे क्रौञ्च के भेदन करने में कोविद! आपने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है, आप महाबुद्धिमान हैं। हे शिष्य! 'ब्रह्मास्त्र' के बिना शत्रु का संहार निश्चित रूप से नहीं होता है॥ 6॥ और उस महाविद्या के विषय में आपको बतलाऊंगा जो कि तीनों लोकों में परम दुर्लभ है। इस अति दुर्लभ विद्या को 'प्रथम गोपनीय' रखना चाहिए। भले ही अपना पुत्र दे दे तथा समय आ जाए तो अपना शिर भी दे दे किन्तु इस 'महाविद्या' का ज्ञान कभी किसी को नहीं देना चाहिए॥ 7॥

श्लोक

ब्रह्मास्त्र स्तम्भिनी विद्या स्तब्ध माया मनु स्तथा।
प्रवृत्ति रोधनी विद्या "बगलामुखी" च कुमारकः॥ 8॥
मंत्र जीवन विद्या च प्राणि प्रजाऽप-हारिका।
षट्कर्माऽधार विद्या च शत्रे पर्याय वाचकाः॥ 9॥
षट प्रयोग मयी विद्या षट विद्याऽगम पूजिता।
तिरस्कृताऽखिला विद्याः त्रिशक्तिमय मेव च॥ 10॥

हिन्दी अनुवाद : हे कुमार! यह महाविद्या 'ब्रह्मास्त्र' का भी स्तम्भन करने वाली है तथा यह स्तब्ध माया का मंत्र है और प्रवृत्ति का रोधन करने वाली महाविद्या 'भगवती बगलामुखी' हैं॥ 8॥ यह 'महाविद्या' प्राणियों और प्रजाओं के अपहरण करने वाली है तथा मंत्रों के जीवों की विद्या है। यह रात्रि के पर्याय की वाचक है और षट्कर्मों के आधार स्वरूप है। मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन, विद्वेषण – ये छः कर्म ही 'षटकर्म' कहे जाते हैं॥ 9॥ यह विद्या षट् प्रयोगों से परिपूर्ण है तथा षट्विद्या के आगमों के द्वारा यह पूजित है। इसके आगे अन्य समस्त विद्याएं तिंरस्कृत होती हैं और तीनों महाशक्तियों से पूर्ण हैं॥ 10॥

श्लोक

स्तम्भेन विना वश्यं शान्तिश्चैव तु तद्विना।
मोहना आकर्षणे चैव विद्वेषोच्चाटने तथा॥ 11॥
मारणं भ्रान्ति रूद्वेग करणं च कुमारकः।

महाविद्या च बगलानाम्नी मुनि गुह्या सुपावनि ॥ 12 ॥
वना वाक् स्तम्भिनी विद्या स्वविद्या न च भासते।
तस्मा देतन्महा विद्यां कमलासन जीविनीम् ॥ 13 ॥

हिन्दी अनुवाद : हे शिष्य! इससे स्तम्भन के बिना ही वश्य और शान्ति होती है। मोहण, आकर्षण, विद्वेषण, उच्चाटन, मारण-भ्रान्ति उद्वेग करण इस विद्या से होते हैं ॥ 11 ॥ यह 'बगला' नाम वाली महाविद्या परम पावनी है ॥ 12 ॥ और यह मुनियों के द्वारा गुह्य है ॥ 13 ॥

श्लोक

पद्मजो नारदो विद्यां सांख्यायन मुनिं प्रति।
उपदेश क्रमेणेव दत्तवान मेरू-मेरू कन्दरे ॥ 14 ॥
तेन देवी कटाक्षेण कृत वानागमं भुवि।
मूल मन्त्रोप विद्याश्च अङ्ग विद्या च विस्तरात् ॥ 15 ॥
प्रयोगं चोप संहारं समाराधन मेव च।
विस्तरेणोक्त-वानस्मिन् वक्ष्ये तत्सर्व मादरात् ॥ 16 ॥

हिन्दी अनुवाद : वाणी के स्तम्भन करने वाली विद्या के बिना अपनी विद्या भी भासित नहीं होती है। इस कारण से कमलासन की जीवनी इस 'महाविद्या' को भगवान नारायण ने देवर्षि नारद को मेरू पर्वत की कन्दरा में उपदेश के ही क्रम से प्रदान किया था ॥ 14 ॥ उस देवी के कृपा कटाक्ष से भूमण्डल में आगम का आगमन हुआ था ॥ 15 ॥ मूलमंत्र से युक्त उपविद्या और विस्तार से अङ्गविद्या और उसका समाराधन इन सबको मैं अब आदर के साथ बतलाऊंगा ॥ 16 ॥

श्लोक

स्व विद्या रक्षिणी विद्या स्वभंत्र फल-दायिका।
स्वकीर्ति रक्षिणी विद्या शत्रु संहार कारिका ॥ 17 ॥
परविद्या छेदिनी च परमंत्र विदारिणी।
परमंत्र प्रयोगेषु सदा विध्वंश-कारिका ॥ 18 ॥
परानुष्ठान हारिणी परकीर्ति विनाशिनी।
पराआपन्ना शकृद् विद्यां परेषां भ्रम कारिणी ॥ 19 ॥

हिन्दी अनुवाद : हे वत्स! भगवती बगलामुखी महाविद्या अपनी विद्या की रक्षा करने वाली है और स्वकीय मंत्र के फल को देने वाली है। अपनी कीर्ति की रक्षा करने वाली है ॥ 17 ॥ यह महाविद्या दूसरों की विद्या का छेदन करने वाली है और दूसरों के मंत्रों का निवारण करने वाली है। दूसरों के द्वारा मंत्रों के प्रयोगों में यह

विद्या सदा विध्वंश करने वाली है ॥ 18 ॥ यह महाविद्या दूसरों के 'अनुष्ठानों' का हरण करने वाली है तथा परों (दूसरों) की कीर्ति का विनाश करने वाली है, दूसरों के द्वारा की हुई विपत्तियों का नाश करने वाली है तथा दूसरों को भ्रम में डालने वाली है ॥ 18 ॥

श्लोक

ये वा विजय-मिच्छन्ति ये वा जन्तु-क्षयं कलौ।
ये क्रूर मृगेभ्यश्च जय-मिच्छन्ति मानवाः ॥ 20 ॥
इच्छन्त शान्ति कर्माणि वश्यं सम्मोहना आदिकम्।
विद्वषो उच्चाटनं पुत्र तेनो पाश्य स्तवयं मनुः ॥ 21 ॥
सत्सम्प्रदाय विधिना सद् गुरोर्मुख तस्तथा।
उपदेश क्रमेणैव गृहीत्वा साधयेन्मनुम् ॥ 22 ॥

हिन्दी अनुवाद : जो पुरुष 'विजय' की इच्छा रखते हैं अथवा जो कलियुग में जीवों के क्षय की इच्छा रखते हैं और जो मनुष्य क्रुरमृगों से जय की इच्छा करते हैं ॥ 20 ॥ जो शान्ति कर्मों को चाहते हैं, जो 'वश्य' और 'मोहन' आदि कर्मों को करना चाहते हैं। हे पुत्र! जो मानव 'विद्वेषण' और 'उच्चाटन' या 'मारण' की इच्छा रखते हैं, उनको अवश्य ही इस 'बगलामुखी' के मंत्र व यंत्र की उपासना करनी चाहिए ॥ 21 ॥ जो मनुष्य बगलामुखी के मंत्र व यंत्र की सिद्धि करना चाहते हैं वे सत् सम्प्रदाय की विधि से सद्गुरुदेव के मुख से मंत्र व यंत्र का उपदेश लेकर ही साधना करनी चाहिए ॥ 22 ॥

श्लोक

कुलआचार समायुक्तः कुल-मार्गेण पुत्रक।
दीक्षा काले गुरोर्योगो गृहीतव्यः सुवुद्धिमान् ॥ 23 ॥
साधयेत् कुल मार्गेण तेन मन्त्रं यंत्रं प्रयोजयेत्।
उपसंहरणं तेन कर्तव्यं कुल योगिना ॥ 24 ॥
सौभाग्येन समायुक्तैः सदा तर्पण-पूर्वकैः।
सदा पूजा समायुक्तै श्चिन्तितं भवति ध्रुवम् ॥ 25 ॥

हिन्दी अनुवाद : हे पुत्र! कुल के आचार से समायुक्त होकर कुल के ही मार्ग से बुद्धिमान को दीक्षा के काल में 'सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र' गुरु से ग्रहण कर धारण करना चाहिए ॥ 23 ॥ गुरू के बताये मार्ग से ही साधना करे और उन्हीं के मुख से बगलामुखी मंत्र प्राप्त कर साधना सम्पन्न करनी चाहिए ॥ 24 ॥ सौभाग्य से समायुक्त पूर्व में तर्पण करने वाले तथा पूजा से संयुतों के द्वारा चिंतन ध्रुव होता है ॥ 25 ॥

श्लोक

ऋषि सिद्धाःऽमरैश्चैव विद्याधर-महोरगैः।
यक्ष गन्धर्व नागैश्च पिशाच ब्रह्म-राक्षसैः॥ 26॥
पञ्चेन्द्रि-यैश्च संचारं सद्यो हन्त्य निशं मनुः।
पंडितोऽप्यपण्डितो जीवः कि पुनः क्रौञ्चभेदन॥ 27॥

हिन्दी अनुवाद : ऋषि-सिद्ध, देव, विद्याधर, महोरग, यक्ष, गन्धर्व, नाग, पिशाच, ब्रह्म, राक्षस और पञ्चेन्द्रिय के द्वारा किए हुए संचार यह मंत्र-यंत्र सदा निरन्तर हनन कया करता है॥ 26॥ क्रौच भेदन! जीव पण्डित हो अथवा अपण्डित हो उसके विषय में क्या कहना है॥ 27॥

'वह्नि पुराण' में वर्णित भगवती बगलामुखी मंत्र की महिमा रहस्य

पाठको! वह्नि पुराण 'पाशुपतदाना ध्याय' में भगवती बगलामुखी मंत्र की महिमा रहस्य भगवान शिव व भगवती पार्वती संवाद के रूप में उजागर है, जो इस प्रकार है :

श्लोक

बगलोति महामन्त्रं सर्वेषां सर्व कामदम्।
केवलेन जपेनैव लक्षेण काली सिद्धयति॥ 1॥
वशीकरण कर्मादि दशसाहस्त्रो भवेत्।
अथ वक्ष्ये महेशानि बगला साधनं तव॥ 2॥
बगलेति मनोः संख्या पुरश्चरण कर्मणि।
लक्षेण मन्त्र सिद्धिः स्यात्नास्त्यत्र युग संख्यकम्॥3॥

हिन्दी अनुवाद : भगवान शिव बोले हे महेशानि! बगलामुखी का महामंत्र समस्त पुण्यात्मा धर्मवान मानवों को समस्त कार्यों में सफलता प्रदान करने वाला है। केवल बगलामुखी मंत्र का एक लाख जप करने से ही 'काली की सिद्धि' हो जाया करती हैं॥ 1॥ वशीकरण आदि कर्म दस सहस्त्र जप से ही हो जाया करते हैं। इसके अनन्तर हे देवी! मैं आपके सामने बगलामुखी की साधना प्रकार बतलाता हूँ॥ 2॥ बगलामुखी मंत्र का पुरश्चरण कर्म में संख्या एक लाख ही है। एक लाख मंत्र जप से ही मंत्र की सिद्धि हो जाती है॥ 3॥ इसके बाद वशीकरण आदि कर्म करे जो दस के आरोग्य के लिए अथवा धन-सम्पत्ति प्राप्ति की इच्छा वाले मानव को दस सहस्त्र इस मंत्र का जप करना चाहिए॥ 4॥

श्लोक

कला वेतस्य तु मनोः प्रभावं किं ब्रवीमि ते।
सहस्त्र मात्र हामेन सर्व सिद्धिर्नचा-न्यथा॥ 5॥
नास्त्य-पेक्षा ऋृष्यादेः स्तुति पाठ दिकस्य वा।
स्तुतिर्वा कवचं वापि ऋृष्यादि न्यास एवच॥ 6॥
बगलेति स्वयं सर्व सिद्ध विद्या इति प्रिये।
त्वयाआद्या रूपया काल्या स्वयं मुक्तं पुरिकदा॥ 7॥
शरीरा आरोग्यतो देवि वैरि निग्रह तोऽपि वा।
दिवानक्तं च कर्तव्याः सहस्त्र मानतो हुतीः॥ 8॥

हे भवानी! मैं आपको कलियुग में बगलामुखी मंत्र का प्रभाव क्या बतलाऊँ। केवल एक ही सहस्त्र (एक हजार) आहुतियों के द्वारा हवन करने से सभी प्रकार की सिद्धि हो जाती है, इसमें अन्यथा कुछ भी नहीं है अर्थात् पूर्णतया सत्य है॥ 5॥ इस मंत्र के प्रयोग में ऋृष्यादि न्यास की आवश्यकता नहीं है अथवा स्तुति कवच अथवा ऋषि आदि की तथा न्यास की भी आवश्यकता नहीं है॥ 6॥ हे प्रिये! बगलामुखी स्वयं ही सर्वसिद्ध महाविद्या है अर्थात् पूर्ण रूप से सिद्ध हुई विद्या है। आद्या रूपी महाकाली स्वयं ही बगलामुखी हैं॥ 7॥ शारीरिक आरोग्य के हेतु अथवा वैरियों के विनाश के लिए दिन में अथवा रात्रि में एक सहस्त्र (एक हजार) आहुतियां देनी चाहिए॥ 8॥

श्लोक

केवला आहुति मात्रेण रात्रा वारोग्यतां लभेत्।
बगले इति यो द्विश्चात्युत वोच्चैर्यत्र वा वदेत्॥ 9॥
पथिस्था विघ्नदाः सर्वे पलायन्ते तमोक्षिताः।
भवेद्धि सफलं कर्म बगलेति स्मरण जनः।
बगला जापिनं दृष्ट्वा सर्वे भीति मवाप्नुयुः॥ 10॥

हिन्दी अनुवाद : केवल आहुतियों के देने से ही (रात्रि में) आरोग्य की प्राप्ति कर लिया करता है। जो भी कोई 'बगले' यह दो बार उच्च स्वर में जहां पर भी मुंह से बोलता है, उसको देखकर ही मार्ग में स्थित विघ्न-बाधाएं सब पलायन कर जाया करते हैं और उसके सब कर्म सफल हो जाते हैं॥ 9॥ जो भी मनुष्य 'बगले' इस नाम का स्मरण कर लिया करता है उसे देखते ही भूत-प्रेतादि व शत्रु भयभीत हो जाते हैं॥ 10॥

भगवती बगलामुखी मंत्र-यंत्र विधान रहस्य

(सांख्यायन तंत्र के बगलामुखी पटल में वर्णित)

पाठको! भगवती बगलामुखी मंत्र-यंत्र विधान रहस्य 'सांख्यायन तंत्र' के बगलामुखी पटल में वर्णित है। इस पटल में भगवान शिव ने भगवती पार्वती को बगलामुखी यंत्र का स्वरूप और मंत्र तत्व तथा मंत्र द्वारा हवन करके विविध कार्यों का सम्पादन करने की विधि बतलाए हैं, जो निम्न प्रकार है।

श्लोक

श्रृणु देवि प्रवक्ष्ये शत्रूणां स्तम्भिनी बगलामुखीम्।
प्रणवो गगन पृथिवी शान्ति विन्दु युत बग॥ 1॥
ला मु साक्षी गदी सर्व दुष्टाणां वा हलोन्दु युक्।
मुखं पदं स्तम्भयान्ते जिह्वत्रं कीलय वर्णकाः॥ 2॥
बुद्धि विनाश यान्ते तु बीजतारोऽग्नि सुन्दरी।
षट त्रिंशादक्षरो मन्त्रः नारदो मुनिरस्य तु॥ 3॥
छन्दस्तु बृहती शेषं देवता बगलामुखी।
नेत्राक्ष साय कंपञ्च नवकाष्ठा भिर रंगकम्॥ 4॥

हिन्दी अनुवाद : भगवान शिव बोले, हे देवी! बगलामुखी के मंत्र का बीज स्वरूप 'ह्लीं' है। आरम्भ में इसी मंत्र का उद्धार बतलाता हूँ। इसके बाद शत्रुओं को स्तम्भन करने वाली बगलामुखी मंत्र बतलाऊंगा। शान्ति और बिन्दु से युक्त गगन और पृथ्वी है अर्थात् सबसे प्रथम प्रणव (ॐ) है और इनके पश्चात् 'ह्लीं' होता है॥1॥ इसके अनन्तर साक्षी गदी बगला है अर्थात् 'बगलामुखी' होता है। इसके आगे 'सर्व दुष्टाणां' होता है, फिर हलीन्दु युक्त अर्थात् 'वाचं' है॥ 2॥ फिर मुझे 'पदं स्तम्भय' होता है। अन्त में 'जिह्वा कीलय' ये वर्ण होता है, फिर 'बुद्धि विनाशय' है, फिर 'ह्लीं ॐ स्वाहा' होता है॥ 3॥ तार का अर्थ प्रणव है और अग्नि सुन्दरी का अर्थ 'स्वाहा' होता है। इस तरह से यह मंत्र 'छत्तीस वर्णों' वाला होता है, इसका ऋषि 'नारद' है, इस मंत्र का छन्द 'बृहती' है और देवता 'बगलामुखी' है, नेत्र सायक नव और पांच काष्ठाओं से अंग वाला है॥ 4॥

भगवती बगलामुखी के स्वरूप वर्णन :

श्लोक

सौवर्णासन संस्थितां त्रिनयनां पीतांशु कोल्लासिनीम्।
हेमाभांग रूचिं शशांक मुकुटां सच्चम्पक स्त्रग्युताम्॥
हस्तैमुर्दगर पाशव जरसना: सम्विभृती भूषणै:।
र्व्याप्ताङ्गी बगलामुखी त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्॥ 5॥
एवं ध्यात्वा जपेल्लक्ष मयुतं चम्पकोद भवै:।
कुसुमैर्जुहुयात् पीठे पूर्वोक्ते पूजयेदि मांम॥ 6॥
चन्दना गुरू चन्द्राद्यै: पूजार्थं यन्त्रमा-लिखेत्।
त्रिकोण षटदलाष्टौ स्त्रषोड़शार-धरापुरे॥ 7॥

हिन्दी अनुवाद : भगवान शिव बोले, हे भवानी! सुवर्ण निर्मित सिंहासन पर विराजमान, तीन नेत्रों से युक्त, पीले वस्त्रों से सुशोभित, सुवर्ण की आभा से युक्त अङ्ग की कान्ति वाली चन्द्र से चिन्हित मुकुट धारण की हुई, सुन्दर चम्पा के पुष्पों की माला धारण करने वाली, अपने करों में मुद्गर, वज्र, पाश और रसना को ग्रहण करती हुई करने वाली बगलामुखी देवी का 'ध्यान' करना चाहिए॥ 5॥ ध्यान करने के बाद बगलामुखी के एक लाख मंत्र का जप करें। फिर जप के अन्त में चम्पा के पुष्पों से दस हजार आहुतियां दे और पूर्व में वर्णित स्वरूप की अर्चना करनी चाहिए॥ 6॥ पीले चन्दन (हल्दी चूर्ण का घोल) से पूजा के लिए भोजपत्र पर यंत्र का लेखन करे। सर्व प्रथम 'त्रिकोण' लिखें, फिर 'षटकोण' और फिर 'अष्टदल कमल' और इसके बाद सोलह अवतार वाला 'भूपुर' का लेखन करना चाहिए॥ 7॥

श्लोक

मध्ये सम्पूजयेद देवीं कोणे सत्वादिकान् गुणान्।
षट् कोणेशु षडङ्गनि मातृ भैरव संयुता:॥ 8॥
सम्पूज्याऽष्ट दले पद्मे षोडशारे यजेदिमा:।
मंगला स्तम्भिनी चैव जृम्भिणी मोहनी तथा॥ 9॥
वश्या बला बलाका च भूधरा कल्मषाऽभिधा।
धात्री च कलना काल कर्षिणी भ्रामिकाऽपि च॥ 10॥
मन्द गमना भोगस्था भाविका षोड़शी स्मृता।
भूगृहस्य चतुर्दिक्षु पूर्वाआदिषु यजत् क्रमात्॥ 11॥

हिन्दी अनुवाद : 'मध्य में' भगवती बगलामुखी पूजन करे और 'कोणों में' सत्व आदि तीनों गुणों की अर्चणा करें। इसके बाद षट्कोणों में छः अंगों का यजन

करके मातृगण एवं भैरव का पूजन करना चाहिए॥ 8॥ आठ दलों वाले पद्म (कमल) में और षोडशार में मातृगणों का पूजन करें। अब उनके नामों को बतलाता हूँ – मंगला, स्तम्भिनी, जृम्भिणी तथा मोहिनी॥ 9॥ वश्या, बला, बलाका, भूधरा, कल्भषा, धात्री, कलना, काल रूपिणी, भ्रामिका॥ 10॥ मन्द गमना, भोगस्था भाविका ये सोलह मातृकाएं कही गयी हैं॥ 11॥

श्लोक

गणेशं वटुकं चापि योगिनी क्षेत्र-पालकम्।
इन्द्रादीर्श्च ततो ब्राह्मे निजाआयुध समन्विताम्॥ 12॥
इत्थं सिद्ध मनुर्मंत्रीं स्तम्भयेद् देवता आदिकान्।
पीतवस्त्र पुष्पैर्य जेद् देवीं हरिद्रोत्थ स्त्रथा स्त्रजा जपन्॥ 13॥
पीत वस्त्र स्तदासीनः पीतभाल्याऽनु लेपनः।
पीतां ध्यायन् भगवतीं प्रयोगेष्व युतं जपेत्॥ 14॥
त्रिमध्वा आज्यतिलै-र्होमो नृणां वश्य करोमतः।
मधुरत्रि तयाक्तैः स्यादा कर्षो लवणै-ध्रवम्॥ 15॥

हिन्दी अनुवाद : इसके अनन्तर 'भूपुर' की पूर्व आदि चारों दिशाओं में गणेश, वटुक, योगिनी और क्षेत्रपाल की पूजा करनी चाहिए। उसके बाहर फिर अपने-अपने आयुद्यों से युक्त इन्द्र आदि देवों की पूजा करें॥ 12॥ इस रीति से यंत्र की साधना करने वाले को यह यंत्र सिद्ध हो जाता है और उसमें ऐसी शक्ति भगवती बगलामुखी के प्रभाव से आ जाया करती है कि उनके सभी शत्रु विनष्ट हो जाता साथ ही देवताओं तक का भी 'स्तम्भन' हो जाता है, मनुष्यों के विषय में तो कहना ही क्या है। इस देवी के साधक को सदैव पीत वस्त्र, पीला चन्दन तथा हल्दी की माला धारण करनी चाहिए॥ 13॥ पीत वर्ण के ही पुष्पों के द्वारा भगवती का पूजन करे तथा 'हरिद्रा' (हल्दी) की बनाई माला से मंत्र का जप करना चाहिए, पीत वर्ण वाली देवी का ध्यान करते हुए प्रयोगों में इसके मंत्र का दस हजार जप करें॥ 14॥ मधु-घृत और काले तिलों के द्वारा किया हुआ हवन मनुष्यों को 'वश' में करने वाला होता है। शहद, शक्कर और घृत युक्त लवण (नमक) से किया हुआ हवन निश्चित रूप से 'आकर्षण' करने वाला होता है॥ 15॥

श्लोक

तैलाभ्यक्तै र्निम्बपत्रे र्होमो विद्वेष कारकः।
ताल लवण हरिद्राभि र्द्विषां संस्तम्भनं भवेत्॥ 16॥
अङ्गार धूम राजींश्च महिषं गुग्गुलं निशि।

श्मशान पावके हत्वा नाशये दचिरादरीन॥ 17॥
गरूतो गृद्दकानां च कटु तैल विभीतकंम्।
गृह धूम चिता वह्नो हुत्वा प्रोच्चाटचेद् रूिपन॥ 18॥
दूर्वागुडु चीलाजान् यो मधु रत्रितयाऽन्वितान्।
जुहोति सोऽखिलान् रोगान् शमयेत् दर्शनादपि॥ 19॥

हिन्दी अनुवाद : चिता का भस्म, राई तथा गुग्गुल से रात्रि में श्मशान की अग्नि में बगलामुखी मंत्र का हवन करने से शीघ्र ही उनके 'शत्रुओं' की मृत्यु हो जाती है॥ 16॥ गरूड़ व गिद्द का पंख और कछुआ के तेल से चिता अग्नि में हवन करने से शत्रुओं का उच्चाटन हो जाता है॥ 17॥ दूब, गिलोय और खीलों को शहद, शक्कर व शुद्ध घी में मिलाकर जो हवन करता है उनके समस्त रोग-शोक शान्त हो जाते हैं॥ 18-19॥

श्लोक

पर्वताग्रे महारण्ये नदीसंगे शिवालये।
ब्रह्मचर्य रतो लक्षं जपे दखिल सिद्धये॥ 20॥
एकवर्ण ग्वं दुग्धं शर्करा मधु संयुतम्।
त्रिशतं मन्त्रितं पीतं हन्याद् विषपरा-भवम्॥ 21॥
श्वेत पालाश काष्ठेण रचिते रम्य-पादुके।
अलवक्कं जिते लक्षं मन्त्र-येन्मनुनाऽमुना॥ 22॥
तदा रूढ़ः पुमान् गच्छेत् क्षणेन शत योजनम्।
पारदं यः शिलाताल पिष्टं मधु समन्वितम्॥ 23॥
मनुना मन्त्रयेत् लक्षं लिपेत्तेनाऽखिला तनुम्।
अदृश्यः स्यान्नृणा-मेष आश्चर्यं दृश्यता मिदम्॥ 24॥

हिन्दी अनुवाद : हर प्रकार की सिद्धि प्राप्त करने के लिए बगलामुखी के मंत्र का जप पर्वत के शिखर पर, महान वन में, नदियों के संगम में, शिवालय में ब्रह्मचर्य से युक्त होकर एक लाख करना चाहिए॥ 20॥ एक ही वर्ण वाली गौ का दूध जो शर्करा और मधु से युक्त होवे, उसको तीन सौ बार अभिमंत्रित करके पिये तो विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है॥ 21॥ सफेद ढाक के काष्ट से सुन्दर पादुकाओं (खड़ाऊं) की रचना करावे और उसको अलक्त से बार अभिमंत्रित करे। उन पादुकाओं पर चढ़कर साधक एक ही क्षण में एक सौ योजन तक गमन कर लेता है॥ 22॥ पारद, (पारा) मैनसिल और हरताल-इनको शहद के साथ पीसे और बगलामुखी देवी के मंत्र से एक लाख बार जप करके अभिमंत्रित करें॥ 23॥ इससे

फिर अपने सम्पूर्ण शरीर का लेपन करना चाहिए। वह मनुष्य सभी मनुष्यों की दृष्टि में अदृश्य हों जायेगा, इस महान आश्चर्य को देखे ॥ 24 ॥

श्लोक

षट्कोणे विलिखेद् बीजं साध्य-नामान्वितं मनोः।
हरिताल निशा चूर्णे रून्मत्त रस संयुतैः ॥ 25 ॥
शेषाऽक्षरैः समं बीजं धरागेह विराजितम्।
तद् यन्त्रं स्थापित प्राणपीत सूत्रेण वेष्टयेत् ॥ 26 ॥
भ्राम्यत्कुलाल चक्रस्था गृहीत्वा मृत्तिकां तथा।
रचयेद् वृषभ रम्यं यन्त्रं तन्मध्यतः क्षिपेत् ॥ 27 ॥
हरितालेन संलिप्यं वृषभं प्रत्यह-मर्चयेत्।
स्तम्भं विद्विषां वाचं गति कार्य परम्पराम् ॥ 28 ॥

हिन्दी अनुवाद : षट्कोण में बीज (ह्लीं) लिखे और साध्य जो भी हो उसके नाम से युक्त मंत्र के बीज का लेखन करना चाहिए, हरिताल हल्दी के चूर्ण जिसमें धतूरे का रस मिला हो ॥ 25 ॥ उससे मंत्र के शेष अक्षरों के समान बीज हो जो भुपूर में विराजित करे। उस यंत्र को स्थापित प्राणपीत सूत्र से वेष्टित करे ॥ 26 ॥ भ्रमण करते हुए कुम्हार के चाक की मिट्टी लाकर उससे बहुत सुन्दर वृषभ (बैल) की रचना करनी चाहिए और मध्य में उस यंत्र को डाल दे ॥ 27 ॥ हरिताल से लिप्त करके उस वृषभ की नित्य पूजा करे। इससे जो भी विद्वेषी हो उनकी वाणी का तथा गति अर्थात् कार्य परम्परा का स्तम्भन हो जाता है ॥ 28 ॥

श्लोक

आदाय वाम हस्तेन प्रेत भूमिस्थ खर्परम्।
अङ्गारेण चितास्थेन तत्र यन्त्रं समालिखेत् ॥ 29 ॥
मन्त्रिणं निहितं भूमौ रिपूणां स्तम्भयेद् मतिम्।
प्रेत वस्त्रे लिखेद यन्त्रभंगारेण च तत्पुणः ॥ 30 ॥
मण्डुक वदने न्यस्येत पीत सूत्रेण वेष्टयेत्।
पूजितं पीत पुष्पै स्तद् वाचं संस्तम्भ येद् द्विषाम् ॥ 31 ॥
यद् भूमौ भविता दिव्यं तत्र यन्त्रं समालिखेत्।
मार्जितं तद् वृषापत्रेर्दिव्य स्तम्भन कृद भवेत् ॥ 32 ॥

हिन्दी अनुवाद : श्मशान भूमि से खप्पर को लाकर उस पर पिता के भस्म से यंत्र का लेखन करे ॥ 29 ॥ फिर मंत्र से अभिमंत्रित करके भूमि में गाड़ दे तो शत्रुओं

के समस्त कार्य का स्तम्भन हो जाता है ॥ 30 ॥ शव के वस्त्र (कफन) पर चिता के भस्म से बगलामुखी यंत्र निर्माण करे, फिर उसे मेढ़क के मुक में रख दे और उसको पीत सूत्र से वेष्टित (पीला धागा लपेट दें) कर दे फिर पीले पुष्पों के द्वारा उनकी पूजा करे तो शत्रुओं की वाणी का स्तम्भन हो जाता है, यन्त्र के मध्य में शत्रु का नाम अवश्य लिखे ॥ 31 ॥ जिस भूमि में दिव्य (देवालय, शिवालय आदि) हो वहां पर यन्त्र को लिखे, फिर वृषा के पत्रों से उसका मार्जन करे तो दिव्य का स्तम्भन हो जाता है ॥ 32 ॥

श्लोक

किं भूरिणा देवी मन्त्रः सम्य गुपासितः।
शत्रूणां गति बुद्धयादेः स्तम्भनो नात्र संशयः ॥ 33 ॥

हिन्दी अनुवाद : हे देवी! बहुत कथन से क्या लाभ, साधना करने वाले के द्वारा भली-भांति उपासित बगलामुखी देवी का मंत्र शत्रुओं की गति-मति व बुद्धि आदि का 'स्तम्भन' करने वाला होता है, इसमें कुछ भी संशय नहीं है ॥ 34 ॥

नोट : पाठको! यहां मैं यह बताना अनिवार्य - समझता हूँ कि भगवती बगलामुखी की महिमा आदि का वर्णन किसी एक ग्रन्थ में नहीं बल्कि थोड़े-थोड़े अंश में कई तंत्र ग्रन्थों में है। अब 'मेरु तंत्र' के अन्तर्गत भगवती बगलामुखी के सम्बन्ध में भगवान शिव ने भगवती पार्वती को क्या उपदेश दिए हैं, उन अमृतमय उपदेशों को पढ़ें।

'मेरू तंत्र' वर्णित श्री बगलामुखी मंत्र प्रयोग रहस्य

पाठको! मेरू तंत्र में भगवान शिव ने भगवती पार्वती को बगलामुखी मंत्र की सिद्धि कर हवन द्वारा स्तम्भन, आकर्षण, उच्चाटन, वशीकरण व मारण विधान बतलाए हैं, जो इस प्रकार है :

श्लोक

श्रृणु महादेवि एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षमयुतं चम्पकोद्भवैः।
कुसुमै र्जुहु यात् पीठे पूवोक्तं पूजयेदि माम्॥ 1॥
इत्थं सिद्ध मनुर्मन्त्री स्तम्भयेद् देवतादिकान्।
पीत वस्त्र स्तदा सीनः पीतमाल्या नुलेपनः॥ 2॥
पीत पुष्पैर्यजेद् देवीं हरिद्रोत्थ-स्त्रजा जपन्।
पीतां ध्यायन भगवती प्रयोगेष्व युतं जपेत्॥ 3॥

त्रीमध्वक्त-तिलैर्होमे नृणां वश्य करो मतः।
मधुरत्रि तयोक्तैः स्यादा कर्षो लवणैर्ध्रुवम्॥ 4॥

हिन्दी अनुवाद : देव वशीकरण विधि – भगवान शिव बोले, हे महादेवि! साधक को चाहिए कि वह बगलामुखी देवी का विधिवत पूजन और ध्यान कर भगवती बगलामुखी देवी का मंत्र – 'ॐ ह्रीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वा कीलय बुद्धि विनाशय ह्रीं ॐ स्वाहा' मंत्र का एक लाख जप करें, फिर मंत्र जप का दशांश चम्पा पुष्प से हवन – करे तो साधक सभी देवताओं को अपने वश में कर लेता है॥ 1॥

मनुष्य वशीकरण : स्वयं पीले वस्त्र धारण कर, पीली माला एवं केसरिया चन्दन लगाकर, हल्दी की माला से भगवती बगलामुखी का पूजन-ध्यान करें। भगवती का एक लाख मंत्र जप करके, मधु-घृत और शक्कर मिश्रत तिल से दशांश हवन करने पर कोई भी मनुष्य अपने वश में हो जाता है॥ 2-3॥

उपरोक्त विधि से ही मंत्र सिद्ध कर

आकर्षण प्रयोग विधि : मधु, घृत, शक्कर सहित नमक से हवन करने पर प्राणिमात्र का अवश्य ही आकर्षण होता है। यह प्रयोग अनुभूत है॥ 4॥

श्लोक

तैलाभ्यक्तै र्निम्ब पत्रे र्होमे विद्वेश कारकः।
ताल-लोण-हरिद्राभिर्द्विषां संस्तम्भनं भवेत्॥ 5॥
आगार धूमं राजीश्च माहिषं गुग्गुल निशि।
श्मशान पावके हुत्वा नाशयेद चिरादरीन्॥ 6॥
गरूतो गृघ्रकाकानां कटुतैलं बिभीतकम्।
गृहधूमं चितावह्नो प्रोच्चाटयेद् रिपून॥ 7॥
दूर्वा गुड्ची-लाजान्यो मधुरत्रि तयान्वितान्।
जुहोति सोऽखिलान् रोगान् शमचेद् दर्शनादपि॥ 8॥

भावार्थ : कलह कारक प्रयोग : तेल में मिले हुए नीम की पत्ती से हवन करने पर आपस में लड़ाई-झगड़े होते हैं।

शत्रु स्तम्भन प्रयोग : ताड़पत्र, नमक व हल्दी की गांठ से हवन करने पर शत्रु स्तम्भित होता है॥ 5॥

शत्रु विनाश प्रयोग : यदि राई, भैंस का घी और गुग्गुल मिलाकर रात्रि में हवन करे तो शत्रुओं का विनाश हो जाता है॥ 6॥

शत्रु उच्चाटन प्रयोग : गीध और कौवे के पंख को सरसों के तेल में मिलाकर चिता की अग्नि में हवन करने से शत्रुओं का 'उच्चाटन' होता है॥ 7॥

समस्त रोग विनाशक : मधु घृत, चीनी, दूर्वा, गुरूच एवं धान का लावा मिलाकर जो हवन करता है, उसके समस्त रोग शान्त हो जाते हैं, अथवा उस हवन के दर्शन मात्र से ही रोगी के समस्त रोग अपने आप ही नष्ट हो जाते हैं ॥ 8 ॥

श्लोक

पर्वताग्रे महारण्ये नदीसङ्गे शिवालये।
ब्रह्मचर्य रतो लक्षं जपेदखिल सिद्धये॥ 9॥
एकवर्ण गवीदुग्धं शर्करा मधु संयुतम्।
त्रिशतं मन्त्रितं पीतं हन्याद् विष पराभवम्॥ 10॥
श्वेत पालाश काष्ठेन रचिते रम्य पादुके।
अलक्त रंजिते लक्षं मन्त्रयेन्मनु नाऽमुना॥ 11॥

भावार्थ : साधना के स्थान – साधक को चाहिए कि समस्त कार्य की सिद्धि के लिए पर्वत की चोटी पर, घनघोर जंगल में, नदी तट पर अथवा भगवान शिव के मंदिर में ब्रह्मचर्य पूर्वक बगलामुखी देवी के मंत्र का एक लाख जप करे ॥ 9 ॥

शत्रु शक्ति विनाशक – चीनी तथा मधु से युक्त एक वर्ण वाली गौ के दूध को बगलामुखी मंत्र से तीन सौ बार अभिमंत्रित कर, उस दूध को पीने से शत्रु द्वारा किए–कराए तांत्रिक दोष नष्ट हो जाते हैं ॥ 10 ॥

शीघ्र गति कारक : सफेद पलास की लकड़ी का सुन्दर खड़ाऊं बनवा कर, उसे लाल रंग से रंगकर, चौदह लाख बगलामुखी मंत्र से अभिमंत्रित कर, उस खड़ाऊं को धारण करने से मनुष्य एक क्षण में सौ कोश चला जाता है ॥ 11 ॥

नोट : पाठको! उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि 'सांख्यायन तंत्र' और 'मेरू तंत्र' दोनों में ही बगलामुखी मंत्र शक्ति का रहस्य एक ही समान वर्णित हैं।

भगवती बगलामुखी देवी के स्वरूप एवं अस्त्र-शस्त्र

साधको! जिस प्रकार माता दुर्गा जी के सोलह भुजाओं वाली और आठ भुजाओं वाली दो रूप हैं, उसी प्रकार 'भगवती बगलामुखी' के भी दो भुजाओं वाली और चार भुजाओं वाली स्वरूप का वर्णन तंत्र ग्रन्थों में मिलता है। देखिए 'शाक्त प्रमोद तंत्र' ग्रन्थ में भगवती बगलामुखी के दो भुजा वाली रूप की उपमा–

श्लोक

जिह्वा ग्रामादाय करेण देवी वामेन शत्रून परिपीडयन्तिम्।
गदा-मिधातेन च दक्षिणेन पीतम्बराढ्या नर्माम॥

हिन्दी अनुवाद : सुधा समुद्र के बीच अवस्थित मणि मंडप पर रत्न वेदी है, उस पर रत्न-सिंहासन पर पीतवर्ण और पीत वर्ण के आभूषण माल्य से विभूषित अंगों वाली भगवती बगला हैं, उनके एक हस्त में शत्रु जिह्वा और दूसरे में मुद्गर है, उस बगलामुखी देवी को नमस्कार करता हूँ।

नोट : साधको! भगवान शिव द्वारा वर्णित मेरू तंत्र के अन्तर्गत भगवती बगलामुखी के चतुर्वाहु (चार भुजाओं वाली) स्वरूप का एवं उनके अस्त्र-शास्त्रादि का वर्णन निम्न प्रकार है :

श्लोक

सौ वर्णासन संस्थितां त्रिनयना पीतां शुकोल्लासिनीं-
हेमाभाङ्ग रूचिं शशांक मुकुटां सच्चम्पक स्त्रग्युताम्।
हस्तैर्मुगर पाश वज्र रसनाः संविभ्रति भूषणै-
वर्याप्तांगी बगलामुखी त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्॥

हिन्दी अनुवाद : सुवर्ण निर्मित आसन पर विराजमान तीनों नेत्रों से समन्वित पीतवर्ण के वस्त्रों से शोभिता, हेम के समान अंगों की आभा से संयुता, शशांक को मुकुट में धारण करने वाली, पीत चम्पा की माला से विभूषित अपने करों में मुदगर, पाश, वज्र और शत्रु की जिह्वा को ग्रहण करती हुई, भूषणों से व्याप्त अंगों वाली, तीनों भुवनों का स्तम्भन करती हुई श्री बगलामुखी स्वरूप का 'ध्यान' करना चाहिए।

नोट : साधको! भगवती बगलामुखी के दोनों ही स्वरूप कल्याणकारी हैं। साधक गण दोनों में से किसी भी रूप की साधना करके मनोवांछित कार्यों की पूर्ति कर सकते हैं।

पाठको! अब मैं आपको भगवती बगलामुखी के विभिन्न मंत्रों से परिचित करा रहा हूँ।

भगवती बगलामुखी के विभिन्न मंत्र

साधको! भगवती बगलामुखी के विभिन्न मंत्र निम्न प्रकार हैं :

1. 'ह्लीं'

साधको! 'वैदिक' ग्रन्थों में 'ह्लीं' शब्द भगवती बगलामुखी का बीजाक्षर एकाक्षरी नाम है। जैसे 'श्रीं' का मतलब लक्ष्मी, 'क्रीं' का मतलब महाकाली, 'गं' का मतलब श्रीगणेश, 'क्लीं' का मतलब भगवती दुर्गा होता है। उसी प्रकार 'ह्लीं' का मतलब - 'भगवती बगलामुखी' होता है।

2. 'ह्लीं'

साधको! 'तांत्रिक ग्रन्थों' में भगवती बगलामुखी का बीजाक्षर नाम 'ह्लीं' वर्णित है। दोनों शब्दों का अर्थ – बगलामुखी ही होता है।

3. शत्रु को स्तम्भित, जिह्वा कीलन एवं बुद्धि विनाश करने वाला बगलामुखी मंत्र :

मंत्र

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व दुष्टानं वाचं मुखं पदं-
स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा॥

मंत्र का हिन्दी अनुवाद : हे 'ॐ' स्वरूपा भगवती बगलामुखी सभी दुष्ट मनुष्यों के वचन-मुख-शब्द और पैरों को 'स्तम्भित' कर दें, जिह्वा कीलन करदे और बुद्धि का विनाश कर दें, हे 'स्वाहा देवी' हमारी यह प्रार्थना ॐकार स्वरूपा भगवती बगलामुखी तक पहुंचावें।

नोट : साधको! उपरोक्त मंत्र भगवती बगलामुखी का 'सर्व श्रेष्ठ' मंत्र है। जो सर्व विदित है। अब मैं आपको भगवती बगलामुखी के एक और महामंत्र से परिचय करा रहा हूँ, जो 'विश्वसारोद्धार तंत्र' में वर्णित है।

4. समस्त धन-सम्पत्ति की प्राप्ति मनोकामनाओं की पूर्ति एवं शत्रु नाश करने हेतु बगलामुखी मंत्र :

मंत्र

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं क्लीं श्री बगलानने, मम रिपून नाशय-
नाशय, ममैश्वर्याणि देहि देहि, मनोवांछित कार्यं
साधय-साधय ह्रीं फट् स्वाहा।

मंत्र का हिन्दी अनुवाद : हे 'ॐ' स्वरूपा बगलामुखी, महा सरस्वती स्वरूपा, महालक्ष्मी स्वरूपा, महादुर्गा स्वरूपा श्री बगलानने! मेरे शत्रुओं का नाश करें – नाश करें, हमें समस्त प्रकार की धन-सम्पत्ति प्रदान करें प्रदान करें, मन में जो भी इच्छाएं उत्पन्न करूं, उसे पूर्ण करें – पूर्ण करें। हे 'स्वाहा देवी' हमारी यह प्रार्थना भगवती बगलामुखी को तुरन्त पहुंचावें।

5. भगवती बगलामुखी गायत्री मंत्र :

ॐ बगलामुख्यै च विद्महे स्तंभिन्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥

6. भगवती बगलामुखी शाबर मंत्र :

मंत्र

ॐ मलयाचल भगवती महाक्रूरी महाकराली राज मुख-बन्धनं ग्राम मुखब धनं ग्राम पुरूष बन्धनं कालमुख बन्धनं चोर मुख बंधनं व्याघ्र मुख बन्धनं सर्वग्रह मुख बन्धनं सर्वजन बंधन वशीकुरु हुं फट स्वाहा।

नोट : उपरोक्त सभी मंत्र एक लाख की संख्या में जपने से सिद्ध होता है। मंत्र की साधना विधि पुस्तक के अगले भाग में वर्णित करूंगा।

भगवती बगलामुखी 'ब्रह्मस्त्र कल्प' विधान रहस्य

(देवी-देवताओं के अस्त्र-शस्त्र एवं ब्रह्मा जी के ब्रह्मास्त्र प्रहार विफल करने हेतु)

भगवान शिव द्वारा वर्णित

पाठको! भगवान शिव द्वारा वर्णित इस 'ब्रह्मास्त्र कल्प' का जो भी साधक साधना सम्पन्न कर लेता है, उस पर किसी भी प्रकार की 'जादू-टोने' आदि का प्रभाव नहीं पड़ता, यहां तक कि उसके ऊपर विधाता ब्रह्मा जी द्वारा चलाया गया 'ब्रह्मास्त्र' भी विफल हो जाता है। 'मेरू मंत्र' में वर्णित इस विधान का संस्कृत भाषा का मूल रूप और हिन्दी अनुवाद साधकों के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मंत्र

शृणु देवि, साधको ब्रह्म मुहूर्ते चोत्थाय स्वशिरसि-सहस्त्र दल कमल कर्णिकायां सशक्तिकं गुरुं। संचिन्त्य मानसोप-चारैः सम्पूज्य जपं समर्प्य-गुरू पादुकां जपत्वा। निवेद्य स्वेष्ट देवतां पीताम्बरां ध्यात्वा मानसै रूपचारैं। सम्पूज्यं ऋष्यदि षडंग न्यास ध्यान पूर्वकं मूलं जपत्या। निवेद्य जलाशयं गत्वा वैदिक् विधिना षडंग-न्यासां विधाय जले त्रिकोणं विभाव्य तस्मिन्न-ड्कुश मुद्रया स्नात्वा-आचम्य प्राणा नायभ्य बाल त्रिबीजैं (एं क्लीं सौः)। कर सूर्य मण्डला तीर्थ मावाह्य देवीं ध्यायेद्।

हिन्दी अनुवाद : भगवान शिव ने कहा, हे देवी माहेश्वरी ! ब्रह्मास्त्र कल्प की साधना करने वाले को चाहिए कि वह प्रातः काल में ब्रह्म मुहूर्त्त में शय्या (बिस्तर) से उठे और अपने मस्तक में ऐसा ध्यान करे कि 'एक सहस्त्र दलों वाला कमल है' और उस कमल के मध्य में 'श्री गुरुदेव' विराजमान हैं। अपने ध्यान में ही मानसिक उपचारों द्वारा गुरुदेव का पूजन करें। फिर अपने द्वारा किए जाने वाले ब्रह्मस्त्र कल्प विधान मन-ही-मन गुरुदेव को समर्पित कर श्री गुरुदेव की पादुकाओं का मानसिक पूजन करना चाहिए। फिर देवी पीताम्बरा की अराधना (पूजन करना चाहिए) देवी की पूजा मन से कल्पित उपचारों द्वारा करे। फिर ऋषि आदि के 'षडंग न्यास' तथा ध्यान के साथ मूल मंत्र का जप करें। उसके उपरान्त किसी भी जलाशय पर जाकर वेदोक्त विधान से स्नान करे। 'ऐं क्लीं सौः' इन तीनों बीज मंत्रों से आचमन, प्राणायाम करके और अंग के षडन्यास करे और जल में त्रिकोण बनाकर फिर अंकुश की मुद्रा से उसमें सूर्य मण्डल से तीर्थों का आवाहन कर फिर भगवती बगलामुखी का 'ध्यान' निम्न प्रकार से करना चाहिए।

श्लोक

नव-यौवन सम्पन्नां सर्वा भरण-भूषिताम।
पीत माल्यानु-वसनां स्मरेत्तां बगलामुखीम्॥
इति ध्यात्वा 'गंगे च यमुने चेति'
धेनु मुद्रया तीर्थानि। प्रार्थ्य मूलेन त्रिर्निर्मज्य
त्रिःसन्तप्य मूलेन श्री सूर्याय त्रिरर्घ्य दत्वा।
जलान्निक्रम्य धौते वाससी परिधाय वैदिकीं
संध्यां निर्बर्त्य त्रिराचम्य मूलेन त्रिःप्राणायाम्य
मूलेन शिरोहृद्या दिषु त्रिः सम्मार्ययेत्।

हिन्दी अनुवाद : अभिनव यौवन से समन्वित तथा समस्त आभूषणों से विभूषित एवं पीत वर्ण के वस्त्र और माल्य से शोभित भगवती बगलामुखी का स्मरण एवं चिन्तन करना चाहिए। इस रीति से देवी का ध्यान करके फिर 'गंगे च यमुना च' इत्यादि मंत्र के द्वारा 'धेनुमुद्रा' प्रदर्शित करते हुए 'तीर्थों' का आवाहन करना चाहिए तथा प्रार्थना करे, फिर मूल मंत्र से तीन बार आवाहन करे तथा तीन बार भली भांति तर्पण करना चाहिए। फिर भगवान सूर्य को मूल मंत्र से ही तीन बार अर्घ्य दे। तत्पश्चात् जलाशय से बाहर आकर पीले रंग का धोती कारण करें और पीले रंग का गमछा कंधे पर आगे की ओर दोनों तरफ से लटका कर रखे। फिर वेदोक्त संध्या करके फिर 'तांत्रिक संध्या वन्दना करना चाहिए।'

अब 'तांत्रिक संध्या' का विधान बतला रहा हूँ। मूल मंत्र 'ह्लीं' से तीन बार आचमन करके मूल मंत्र से ही तीन बार 'प्राणायाम' करे और मूल मंत्र से ही तीन बार मस्तक, हृदय का स्पर्श करे। फिर 'ॐ ह्लीं हुं फट् स्वाहा' मंत्र बोले। इसके उपरान्त भगवान सूर्य को 'ॐ सूर्याय नमः' मंत्र के द्वारा तीन बार अर्घ्य समर्पित करके सूर्य देव को देखते हुए निम्नलिखित बगला गायत्री मंत्र से देवी का ध्यान करना चाहिए। बगला गायत्री मंत्र यह है – 'ह्लीं ब्रह्मास्त्र विद्यायै विद्महे, पीताम्बरायै धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात्।' फिर सूर्य मण्डल का दर्शन करते हुए – 'श्री बगला मुख्यै इदमर्घ्य समर्पयामि' मंत्र उच्चारण करते हुए तीन बार अर्घ्य समर्पित कर दस बार उपरोक्त गायत्री मंत्र का जप करें।

श्लोक

ॐ ह्लीं हुं फट् स्वाहा इत्यधमर्षणं कृत्वा ततः सूर्य मंत्रेण श्री सूर्याय अर्घ्य दत्वा। त्रिवारं सूर्य-मण्डले ध्यात्वा – 'ह्लीं ब्रह्मास्त्र विद्यायै विद्महे पीताम्बरायै धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात्।' सूर्यमण्डल स्थायै श्री बगलामुख्यै इदमर्घ्यं समर्पया मीति-त्रिर्दत्वा गायत्रीं दशधा जप्त्वा। ॐ अस्य श्रीं बगलामुखी मन्त्रस्य नारदर्षये नमः शिरसि, अनुष्टुप छन्दसे नमो मुखे, श्री बगलामुखी देवतायै नमः हृद्यै, 'ह्लीं' बीजाय नमो गुह्ये, स्वाहा- शक्तये नमः पादयोः, नमः इति कीलकाय नमः सर्वाङ्गे, न्यासे विनियोगाय नमः कर सम्पुटे, ह्लामित्यादि षड् दीर्घे करः षडङ्गकम्। "ॐ हलीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः बगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः सर्व दुष्टानां" मध्यमा भ्यां नमः वाचं मुखं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः, "जिह्वा कीलय" कनिष्ठिका भ्यां नमः "बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा" करतल पृष्ठाभ्यां नमः।

हिन्दी अनुवाद : इसके बाद 'अङ्गन्यास' करे। न्यास करने का क्रम यह है – ॐ अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारदर्षये नमः शिरसि, इस मंत्र से शिर पर न्यास करें, इसी प्रकार से अन्य अंगों पर भी नीचे लिखी रीति से न्यास करना चाहिए। अनुष्टुप छन्द नमो मुखे, श्री बगलामुखी देवतायै नमः हृदये, ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये, स्वाहा शक्त्ये नमः, इति कीलकाय नमः सर्वाङ्गे, न्यास विनियोगाय नमः कर, इसके

बाद 'हलांग' इत्यादि छः दीर्घों से षट्कारों का न्यास करे। इसका क्रम यह है - ॐ ह्लीं अंगुष्ठाय नमः, 'वाचं मुखं पदं स्तम्भय' अनामिकाभ्या नमः, जिह्वा कीलय कनिष्ठाभ्यां नमः, 'बुद्धि विनाश्य ह्लीं ॐ स्वाहा' करतल पृष्ठाभ्यां नमः।

इसके बाद 'हृदयादि न्यास' करें :

'ॐ ह्लीं' शिरसि, 'वगला' ललाटे, 'मुखि' कर्णयो, 'सर्वभ्रुवोः दुष्टाना' नेत्रयोः, 'वाचं' नासिकयो, 'मुखं' मुखे, 'पदं' कण्ठे, 'स्तम्भय' हृदि, 'जिह्वा' जठरे, 'कोलय' नाभौ, 'बुद्धि' गुह्ये, 'विनाशय' ऊर्वो, 'ह्लीं' पादयोः, 'वगला' गुल्फ योः 'मुखि' ऊर्वो, 'सर्व' लिंगे, 'दुष्टानां' नाभौ, 'वाचम' उदरे, 'मुखं' हृदि, 'पदं' कण्ठे, 'स्तम्भय' मुखे, 'ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय ऐं' मूलाधारे, 'जिह्वां कीलय' हृदि, 'बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा' ब्रह्मरन्ध्रे, 'ह्लीं वगलायै नमः' पूर्वे न्यासामि, 'ॐ ह्लीं गदाधारिण्यै नमः' आग्नेये, 'ॐ पीताम्बरायै' दक्षिणे, 'ॐ स्तम्भिन्यै' नैर्ऋत्ये, 'ॐ जिह्वा कीलिन्यै' पश्चिमे, 'ॐ मदोन्मत्तायै' वायव्ये, ॐ त्रिशूल धारिण्ये-कौवेर्याम, ॐ ब्रह्मास्त्र देवतायै-ईशान्ये, ॐ स्तब्धातृभ्यः पाताले, ॐ देव्यै-उर्ध्वम्। एवं दस दिक्षु।

हिन्दी अनुवाद : अब नीचे लिखी हुई विधि से हृदयादि का न्यास करना चाहिए। 'ॐ ह्लीं नमः' शिरसि, अर्थात् - ॐ ह्लीं नमः - मंत्र पढ़कर 'सिर का स्पर्श' करें, ॐ बगला नमो-ललाटे, अर्थात् अपने ललाट का स्पर्श करें। इसी प्रकार मुखि मुख स्पर्श करे, सर्व नमो-भ्रुवो, दुष्टानां नमो-नेत्र, वाचं नमो- नासिका, मुखं नमो-मुख, पदं नमः - कण्ठ, स्तम्भय नमो-हृदय, जिह्वा नमो-जठरे, कीलय नमो-नाभि, बुद्धि-नमो - गुदामार्ग, विनाशय नमः सीना, ह्लीं नमः - दोनों तलुवा पैर का, जिह्वां नमो - नासिका, कीलय नमः - कान, ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचमुखं पदं स्तम्भ्य ऐं नमो - मूलाधारे, ॐ स्वाहा नमो- ब्रह्मरन्ध्रे का स्पर्श करें।

इसके बाद सभी दिशाओं का न्यास करना चाहिए। इस न्यास में मात्र मंत्र को पढ़ते जाना है और मंत्र में लिखी दिशाओं में क्रमशः दृष्टि डालना है -

ॐ ह्लीं बगलायै नमः - पूर्व, ॐ ह्लीं गदाधारिण्ये नमः - आग्नेय कोण, ॐ पीताम्बरायै नमः - दक्षिण दिशा, ॐ स्तम्भिन्यै नमः नैर्ऋत्य कोण, ॐ जिह्वां कीलिन्यै नमः - पश्चिम दिशा, ॐ ब्रह्मास्त्र देवतायै नमः - ईशान कोण, ॐ स्तब्धातृभ्यो नमः - पाताल, ॐ शत्रु जिह्वा धारिण्ये नमः आकाश, ॐ शत्रु विनाशय देवयै नमः - उत्तर दिशा। इस रीति से दसों दिशाओं का न्यास करना चहिए।

न्यास के बाद निम्न मंत्र द्वारा भगवती बगलामुखी का 'ध्यान' करना चाहिए।

ध्यान मंत्र

चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासन संस्थिताम्।
त्रिशूलं पानपात्रं च गदां जिह्वां च विभ्रतीम्॥
विम्बोष्ठीं कम्बु कण्ठी च समपीन पयोधराम्।
पीताम्बरां मदाघूर्णां ध्यायेद् ब्रह्मास्त्र देवताम्॥
इति ध्यात्वा मानसोप चारैः - सम्पूज्य 'ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं-पदं स्तम्भय ऐं' - आत्म तत्व व्यापिनी बगलामुखाम्बा श्री 'पादुकां' पूजयामि। जिह्वा कीलय क्लीं - विद्या तत्व व्यापिनी बगलाम्बायै नमः। बुद्धिं विनाशाय ह्लीं ॐ स्वाहा सौः - शिव तत्व व्यापिनी श्री बगलाम्बायै नमः। ततः मूले जपित्वा अन्ते ''गुह्याति गुह्याति'' जपं निवेदयेत्।

हिन्दी अनुवाद : चार भुजाओं से समन्वित, तीन नेत्रों वाली, कमल के आसन पर विराजमान, करों में त्रिशूल, पानपात्र, गदा और शत्रु की जिह्वा धारण करती हुई, बिम्ब के फल के समान रक्तवर्ण ओष्ठों वाली, कम्बु के सदृश कंठयुक्त, समान एवं पीन (पुष्ट) पयोधरों वाली, पीतवर्ण वस्त्रों को धारण किए हुए, मद् से धूर्णित 'ब्रह्मास्त्र की देवता' अर्थात् भगवती बगलामुखी का ध्यान करना चाहिए।

उपरोक्त रीति से देवी का ध्यान करके, फिर मन से कल्पित पूजन सामग्री द्वारा निम्न रीति से भगवती बगलामुखी की 'पादुका' का ध्यान कर पूजन करना चाहिए। मंत्र पढ़े - 'ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय ऐं' आत्मतत्व व्यापिनी बगलामुखी अम्बा की 'श्री पादुका' का पूजन करता हूँ। 'जिह्वा कीलय' - क्लीं विद्या तत्त्व व्यापिनी बगला अम्बा को नमस्कार करता हूँ। 'बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा' - शिव तत्व व्यापिनी श्री बगला अम्बा को नमस्कार है। इसके पश्चात् 'मूल मंत्र' का 108 बार जप करें। अन्त में - 'गुह्याति गुह्य' मंत्र पढ़कर भगवती को नमस्कार करें।

नोट : उपरोक्त विधि से भगवती बगलामुखी के 'ब्रह्मास्त्र विद्या' सिद्ध करने पर उस पर देवी-देवताओं के अस्त्र प्रहार, ब्रह्मा जी का ब्रह्मास्त्र प्रहार भी विफल हो जाता है, समस्त तांत्रिक दोष नष्ट हो जाते हैं, उस पर किसी भी प्रकार के जादू-टोने का प्रभाव जीवन में नहीं पड़ता और सदैव सुखी रहता है।

मन्त्र के दस संस्कार एवं एकाक्षर मंत्र का रहस्य

('सांख्यायन तंत्र' ग्रन्थ में, भगवान शिव द्वारा वर्णित)

मंत्र के संस्कार

(क्रोंचभेदन उवाच)

नमस्ते जगतां नाथ भस्मोद्धूलितविग्रह।
एकाक्षरं महामंत्रवैभवं वद मे प्रभो॥ 1॥

हिन्दी अनुवाद : क्रौंच भेदन ने कहा – हे भस्म से उद्धुलित स्वामिन। आप तो समस्त जगतों के नाथ हैं। आपको मेरा प्रणाम है। हे प्रभो! एक अक्षर वाले महामंत्र के वैभव को मुझे कृपाकर बतलाइये॥ 1॥

शिव उवाच

यत्तदेकाक्षरि मनत्रं तत्तन्मन्त्रेषु जीवनम्।
उत्तमं बीजसंयुक्त तन्त्रं सर्वार्थसाधनम्॥ 2॥
नाना मन्त्रेषु मन्त्रेवा बीजाद्य सर्वसिद्धिदम्।
निर्वीजमेव निर्वीर्य शिवस्य वचनं यथा॥ 3॥
तद्बीजोद्धारमनधं सर्वसिद्धि प्रदायकम्।
एकाक्षट महामन्त्रं बगलायाः सुसिद्धिदम्॥ 4॥

हिन्दी अनुवाद : भगवान शिव ने कहा – जो–जो भी एकाक्षट होता है वह उन–उन मन्त्रों का जीवन होता है। बीज से युक्त उत्तम मन्त्र समस्त अर्थों के सिद्ध करने वाला साधन होता है॥ 2॥ अनेक मन्त्रों में अथवा मन्त्र में बीजाद्य सब अर्थों की सिद्धि का देने वाला है। जो बिना बीज वाला है वही वीर्य से हीन होता है। उसी भांति से शिव का वचन है। अनध! उस बीज का जो एकाक्षर मन्त्र है वह सुन्दर सिद्धि का प्रदाता है॥ 4॥

पूजनं च प्रयोगं च वक्ष्येऽहं तव पुत्रक।
सोऽन्तरान्त समायुक्तं चतुर्णस्वर संयुतम्॥ 5॥
रेफाक्रान्त विन्दुयुक्तं ब्रह्मास्मैकाक्षरो मनुः।
हलीं ब्रह्मा ऋषिश्छन्दो गायत्री समुदाहृतम्॥ 6॥
देवता बगलानाम्नी शक्तिश्चिन्मयरूपिणी।
लं बीजं हूं च शक्तिश्च ईं कीलमुदाहतम्॥ 7॥
न्यासविद्यां प्रवक्ष्यामि, मन्त्रसिद्धिकरी नृणाम्।
भूतसिद्धि भुवः सिद्धि मार्तृकाद्वितयं न्यसेत्॥ 8॥

हिन्दी अनुवाद : हे पुत्र! मैं पूजन और प्रयोग सब आपको बतलाऊंगा। वह अन्तरांत से समायुक्त होता है तथा चतुर्थ स्वर से संयुक्त होता है। रेफ से आक्रान्त और विष्णु से युक्त ब्रह्मास्त्र का एकाक्षट मन्त्र होता है। हलीं इसका ऋषि ब्रह्मा है और छन्द गायत्री होता है। इसकी देवता हलीं बगला नाम वाली होती है और शक्ति चिन्मय रूपी है। इसका लं बीज है – हूं शक्ति है तथा ईं इसका कलिक कहा गया है। इसके अनन्तर न्यास विद्या के विषय में कहूँगा, जो मनुष्यों को मन्त्र की सिद्धि करके मातृका द्वितीय का न्यास करना चाहिये ॥ 5–8 ॥

मन्त्राक्षरेण विन्यस्य तद्विधिं श्रृणु पुत्रक।
नेत्रवाणयतुः पञ्चनव पञ्चदशोऽक्षरम्॥ 9॥
ॐ हलीं बगलामुखि इत्यादि च विन्यसेद्।
अङ्गुलीभिश्च षडङ्गेषु विन्यसेत्तथैव च॥ 10॥
मन्त्रैर्मलत्रयं मंत्री विमलीकरणँ हि तत्।
कुशोद्केन जप्तेन प्रत्यर्ण प्रोक्षणं मनोः॥ 11॥
वारिबीजेन विधिवत् एतदाप्यापनं मतम्।
तारुण्योमाग्नियुक् ज्योतिर्मन्त्र एष उदाहृतः॥ 12॥
मन्त्रेण वारिणा मन्त्रे तर्पणं तर्पणं मतम्।
तारमायार मायोगो मनोर्दीपन मुच्यते॥ 13॥

हिन्दी अनुवाद : मन्त्र के अक्षरों का विन्यास करें। उसकी विधिः का तुम श्रवण करो। नेत्र वाणा, चिकुट, पंच, नव ऐसे पंच नव दशाक्षरों वाला है। ओहलीं बगलामुखि इत्यादि का विन्यास करे। उसी भांति छः अंगों में अंगुलियों से न्यास करे॥ 9–10॥ मन्त्रधारी मन्त्र में मल में चाप को निर्दग्ध करे इससे मन्त्र का विमलीकरण नामक संस्कार होता है। अभिमंत्रित किये हुए कुशोदक से विधि के साथ वारिबीज से मन्त्र के प्रत्येक अक्षर का प्रोक्षण करने से आप्यायन संस्कार होता है। तारव्योम और अग्नि से युक्त ज्योति मन्त्र कहा गया है। मन्त्र के द्वारा अर्थात् इसी उक्त मन्त्र से मन्त्र में अर्थात् जिस मन्त्र को संस्कार करना है उसमें तर्पण करें तो यह तर्पण नामक संस्कार होता है। तार माया और रमा का योग करने से मन्त्र का दीपक नामक संस्कार कहा जाता है॥ 11–13॥

जप्यमानस्य मन्त्रस्य गोपनं त्वप्रकाशनम्।
संस्कारा दश मन्त्राणं सर्वतन्त्रेषु गोपिताः॥ 14॥
यत् कृत्वा सम्प्रदायेन मन्त्री वाञ्छितमश्नुते।
रुद्रकीलित विञ्छिन्न गुप्त शप्तादयोऽपि च॥ 15॥
मन्त्रदोषाः प्रणश्यन्ति संस्कारैमिरुत्तमैः॥ 16॥

हिन्दी अनुवाद : जिस मन्त्र का जाप करना है अर्थात् जप किया जा रहा है उसको प्रकाशित न करना ही गोपन नाम का संस्कार होता है। ये मन्त्रों के चाहे जो भी कोई मन्त्र हो सबसे दश संस्कार है और सब तन्त्रों में ये गोपित होते हैं। सम्प्रदाय से इनको करके मन्त्रधारी अपने मनोभिलाषित फल को प्राप्त किया करता है। इनके करने का यह प्रभाव होता है कि रुद्र देव के द्वारा कीलित-विच्छिन्न गुप्त और शप्त आदि सभी दो मन्त्रों में रहते हैं वे सभी इन उत्तम दश संस्कारों से नष्ट हो जाया करते हैं ॥ 14-16 ॥

एकाक्षर मन्त्र रहस्यम्

अप्रबुद्धमन्त्रः संस्कारेण प्रबुद्धः क्रियते, अतः
संस्काराणामुपयोगः यथा हि -
मन्त्राणां दश संस्काराः कथ्यन्ते सिद्धिदायिनः
निर्दोषितां प्रथान्त्याशु ते मन्त्राः साधु संस्कृता ॥ 1 ॥
जननं जीवनं चैव ताऽनं बोधनं तथा।
अभिषेकोऽथ विमलीकरणाऽऽप्यायने पुनः ॥ 2 ॥
तर्पणं दीपनं गुप्तिः दशैता मन्त्रसंस्क्रियाः।
प्रणवान्तरितं कृत्वा मन्त्रवर्ण जपेत् सुधीः ॥ 3 ॥
मन्त्रार्ण संख्यया तद्धि जीवनं सम्प्रचक्षते।
मन्त्रवर्णान समालिख्य ताऽयेच्च-चन्दनाम्भसि ॥ 4 ॥
प्रत्येकं वायुबीजेन ताऽनं तदुदाहृतम्।
विलिख्य मन्त्रवर्णास्तु प्रसूनैः करबीरजैः ॥ 5 ॥
मन्त्राक्षरेण संख्यातैर्हन्यात् तद् बोधनं मतम्।
स्वतन्त्रोक्त विधानेन मन्त्री मन्त्रार्णसंख्यया ॥ 6 ॥
अंश्वत्थपल्लवै-र्मन्त्रभिषिञ्चे-द्विशुद्धये।
संचिन्त्य मनसा मन्त्रं ज्योतिमन्त्रेण निर्दहेत् ॥ 7 ॥

हिन्दी अनुवाद : जो मन्त्र अप्तबुद्ध होता है वह संस्कार के द्वारा शुद्ध किया जाया करता है अर्थात् फिर वह चैतन्य हो जाता है। अतएव संस्कारों का बड़ा उपयोग हुआ करता है। वही दिखलाया जाता है, मन्त्र के दश संस्कार सिद्धि के देने वाले कहे जाया करते हैं। भली भांति से संस्कार किये गये मन्त्र शीघ्र ही निर्दोषता को प्राप्त हो जाया करते हैं। अब उन देशों के नाम बतलायें जाते हैं, जनन, जीवन,

ताड़न, बोधन, अभिषेक, विमलीकरण, आप्यायन, तर्पण, दीपन, गुप्ति ये मन्त्रों की दश संस्कार करने की क्रियायें हैं। मन्त्र में जितने वर्ण हों उतनी ही बार संख्या में प्रणव का सम्पुट देकर मन्त्र का जप करना चाहिये। इसको ही जीवन नामक संसकार कहा जाता है। मन्त्र के वर्णों को लिखकर चन्दन के जल में ताडन करें। प्रत्येक का वायु बीज के द्वारा ताड़न कहा गया है। मन्त्र के वर्णों को लिखकर करबरि के पुष्पों से जितने मन्त्र के अक्षर होवें उतनी संख्या में हवन करें तो बोधन नाम वाला संस्कार होता है। अपने तन्त्र में कहे हुए विधान से मन्त्रधारी मन्त्र की वर्ण संख्या के अनुसार पीपल के पत्तों से मन्त्र का भलीभांति चिन्तन कर के मन्त्र का ज्योति मन्त्र से निर्दहन करे ॥ 1–7 ॥

नोट : पाठको! यहां पर बगलामुखी रहस्य खण्ड समाप्त होता है। अब अगले खण्ड में बगलामुखी साधना की चर्चा करने जा रहा हूँ।

व्याकरण के अनुसार बगलामुखी शब्द का अर्थ रहस्य

ननु बगलामुखीति संज्ञा कथं संगच्छते, गलेति नाम्ना प्रसिदं कोशादौ व्याकरणव्युत्पत्याऽपि साधयितुं दुर्घटमेवेति येत् न यास्केन वृणोते रूपपस्यांगीकारा 'बगला वृणीतेः' वलगहन मित्यादि व्याख्यानावसरे उष्वटमहीधराभ्यां तथैर्वांगीकारात् मुसाधृत्वं यावगम्यते। वगल शब्दार्थ उक्तत एवं, बगला इति लुप्तनकारा-द्वितीय-बहुवचनस्यानुकरणम्। तान् खनति विदारयति इति 'बगलामुखी' सिध्यति। खन् अवदारणे इत्यस्मात् ऽत् खवेमुट स चोदात्तः इत्युणादिसूत्रेण मुख शब्द निष्पादनं भवति।

हिन्दी अनुवाद : सवाल यह उठता है कि बगलामुखी यह नाम किस प्रकार से सही होता है। बगला इस नाम से प्रसिद कोश आदि में व्याकरण की व्युत्पत्ति से भी सिद्ध करना महा कठिन है ऐसा जो कहते हैं वह ठीक नहीं है। इसको यास्क मुनि ने बृणोति धातु का एक रूप स्वीकार किया है। बलगहन इत्यादि की व्याख्या के अवसर पर उब्वट और महीधर ने भी उसी प्रकार से अंगीकार किया है। इस शब्द का अर्थ तो कहा ही गया है। बगला यह जिसका नकार लुप्त हो गया है ऐसा द्वितीय कारक का बहुवचन का अनुकरण है। उन बगलों का जो खनन है अर्थात्

विदारण (भंग) किया करता है वह बगलामुखी सिद्ध होता है। खन् अवारदर्ण इस धातु से डत् और सबसे मुट होता है और वह उदात्त है। इस उणादि सूत्र से मुख शब्द की सिद्धि होती है।

''मुखं निःसरणे वक्त्रे प्रारम्भोपाययोरपि।
सन्ध्यन्तरे नाटकादेः द्यौशब्देऽपि नपुंसकम्॥''

इति मेदिनीकोशाद अनेकाऽर्था मुखशब्द स्ताऽवगता भवन्ति। अत्र वेदार्थानुगतत्वात् तन्त्रार्थसम्मतत्वाच्च निः सारण मेवाभिप्रेतं भवति। वलगानां तथात्वात्। न य नखमुखात् संज्ञायाम् इति ङीषो निवृत्तिरिति वाच्यम् स्वाङ्गवाचके तत्प्रवृत्तत्वात्। नह्यत्र स्वाङ्गवाचकत्वं, तस्माद् गौरादित्वात् ङीष् भवत्येव। एवं कृते ज्वाला मुखी, गोमुखीत्यादयः संज्ञाशब्द अपि सिध्यन्ति क्वयिद् बगलानना क्वचिद् बगला, बगलावक्राऽपि संज्ञा दृश्यते मुखशब्दस्य स्थाने। तथापि मुख शब्दस्य सादृश्ये एव मन्तुः योग्यम् पदार्थमात्र वविक्षितत्वात् नतु स्वांगत्वम्। ननु बगलामुखीति सत्ता कथम्, वैदिकग्रन्थेषु सर्वत्र बलगेति दर्शनात् इति येन्न, 'परोक्षप्तिया हि देवाः' इति श्रुतिमनु सृत्य बलगामुखीति स्थाने बगलामुखीति प्रयुज्यते। 'पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम' इति सिंहो वर्णविपर्ययाद् इतिवद् विपर्ययम्। केचिद वग वाच लातांतिनिरुक्त्या वगलाशब्दं साधयन्ति केचिद वाचा अलति भूषयतीति बगला अत एव बगला वाक्प्रदायिनी, इति सङ्गच्छते। सत्यभामा भीम इतिवत् बगला इत्यपि व्यवह्रियते। बगलेति नाम ललितमिति स्तोत्र प्रमाणाच्च।

हिन्दी अनुवाद : कोश में मुख शब्द का अर्थ इस तरह से दिया गया है – मुख शब्द निःसरण में (बाहर निकलने का मार्ग), मुख में, प्रारम्भ में और उपाय में भी होता है तथा नाटक आद के अभ्यान्तर में (बीच का समय) तथा द्यौ शब्द में भी नपुंसक होता है। इस प्रकार से मेदिनी कोश में मुख शब्द के अनेक अर्थ दिये हुए हैं। वेदों और तन्त्रों के अर्थानुसार निःसरण ही अभिमत अर्थ होता है क्योंकि बगलों

का तथात्व होता है – 'नखमुखात्संज्ञाम्' इस सूत्र से ङीष की निवृत्ति हो जाती है- ऐसा कथन ठीक नहीं है क्योंकि वह स्वांगवाचक में प्रवृत्त होता है। यहां पर उसकी स्वांगवाचकता ही नहीं है। इस कारण से गौरादि होने से ङीष् हो ही जाता है। ऐसा मानने पर ही ज्वालामुखी, बगला, बगलावक्त्रा भी इस मुख शब्द के स्थान में संज्ञा दिखलाई देती है। तो भी मुख शब्द के सदृश्य में ही मानना उचित है क्योंकि वहां पर पदार्थ मात्र ही विवक्षित (इच्छित) है स्वांगत्व नहीं है सवाल यह उठता है कि बगलामुखी यह संज्ञा किस तरह से है क्योंकि वैदिक ग्रन्थों में सभी जगह पर बगला ही दर्शित होती है। ऐसा कहना ठीक नहीं है 'देवगण' परोक्षप्रिय होते हैं इस श्रुति का अनुकरण करके बल्गामुखी के स्थान में बगलामुखी प्रथुक्त किया जाता है। पृषोदरादिक जैसे उपदिष्ट किये गये हैं – सिंह वर्ण के विपर्यय (परिवर्तित) से होता है इसी तरह से यहां पर भी विपर्यय है। कुछ मनीषी, वर्ग तो अर्थवाक् करके उसको लगाते हैं – इस निरुक्ति से बगला शब्द की साधना करते हैं। कतिपय विद्वानानुसार – बगला वाक् की प्रदान करने वाली है इस तरह संगति किया करते हैं। सत्यभामा भीम इसी तरह से बगला इसका भी व्यवहार किया जाया करता है। बगला यह नाम ललित है यह स्तोत्र का प्रमाण भी है।

सरल शब्दों में – 'बगलामुखी' वह महादेवी हैं जो अपने भक्तों के लिये, उनके शत्रुओं का दमन करती हैं – उनका नाश करती हैं। अर्थात् शत्रुओं का दमन करने वाली देवी ही 'बगलामुखी' हैं क्योंकि 'वल्गा' शब्द का अर्थ 'दमन करना' होता है और 'वल्गामुखी' को ही बगलामुखी देवी के नाम से जाना जाता है।

द्वितीय भाग

साधना से पूर्व आवश्यक ज्ञान खण्ड

साधना का अर्थ

पाठको ! साधना का अर्थ है मन को किसी विषय में एकनिष्ठ भाव से संयुक्त करना। किसी साध्य वस्तु की प्राप्ति के लिये जो प्रयत्न किया जाता है उसे 'साधना' कहते हैं। अथवा 'साधना' का अर्थ है प्रयत्न करना, उद्योग करना लगना। साधना का अर्थ सिद्ध भी है। आत्मानुसंधान के मार्ग में, अपनी आत्मा को परमात्मा में लीन कर 'पूर्णमदः पूर्णमिदम्' की अनुभूति के पथ में हमारी जो कुछ भी आध्यात्मिक चेष्टायें होती हैं इन सबका नाम 'साधना' है। नदी की धारा ऊंचे चढ़ती है, नीचे ढलती है, वन-पर्वतों को लांघती हुई बढ़ती जाती है। क्यों, किस लिये ? इसलिये कि वह अन्त में अपने-आपको समुद्र की गोद में सुला दें, लीन कर दे, मिटा दें। मनुष्य की आत्मा भी भाग्य के चढ़ाव-उतार, सुख-दुःख, हर्ष-विषाद और ऐसे ही जीवन के विविध खट्टे-मीठे अनन्त अनुभवों को पार करती हुई सत्, चित् और आनन्द के एक अनन्त महासागर में अपने-आपको समुद्र की गोद में सुला दे, लीन कर दे, मिटा दे। मनुष्य की आत्मा भी भाग्य के चढ़ाव-उतार, सुख-दुःख, हर्ष-विषाद और ऐसे ही जीवन के विविध खट्टे-मीठे अनन्त अनुभवों को पार करती हुई सत्, चित् और आनन्द के एक अनन्त महासागर में अपने-आपको ढाल देने के लिये व्याकुल है, बेचैन है। नदी का लक्ष्य है समुद्र मनुष्य का लक्ष्य है भगवान। भगवान के मार्ग में चलने के लिये जो भी अनुष्ठान किया जाता है, जो भी व्रत लिया जाता है, वह सभी 'साधना' है और जो कुछ भी इस मार्ग में अवरोधक है, वह है अन्तराय, वह है साधना में विघ्न।

साधना क्यों की जाती है ?

हर बात में उपयोगिता ढूंढने वाले यह पूछ सकते हैं कि आखिर साधना क्यों की जाती है, उससे क्या लाभ है ? क्यों न मनुष्य खाये-पिये, मौज करे, धन संग्रह करे, बम बरसावे, दुनियां को जीतकर उसकी छाती पर अपना शासन स्थापित करे, हुकूमत कायम करे ? उसे इस बात की आवश्यकता ही क्या है कि वह भगवान

और साधना के विषय में सोचे-विचारे, माथापच्ची करे ? परन्तु यह भी कोई जीवन है ? यह तो अज्ञान-तिमिर में भटकना है। यह जगत् त्रिगुणमयी माया की अनन्त क्रीड़ा स्थली है। मनुष्य आँख मिचौनी खेल रहा है। उसकी आंखों पर अज्ञान की पट्टियां बंधी है। अहंकार के कारण वह दुःख के गर्त में जा पड़ा है। कभी इसे छूता है कभी उसे, दुनिया भर की खाक छानता फिरता है। अटक से कटक तक, चीन से पेरू तक चक्कर लगाता फिरता है और सुख-दुःख, हर्ष-विषाद के थपेड़े खाता फिरता है। जहां जाता है, वहीं धक्के खाता है, दुरदुराया जाता है। कहीं भी शान्ति नहीं, सुख नहीं, स्वतन्त्रता नहीं, सन्तोष नहीं। अपने ही आप अपनी इच्छाओं में आबद्ध है, वासनाओं में जकड़ा हुआ है, अपनी ही इच्छाओं का गुलाम है। वह जितना भी सोचता-विचारता है, जितना भी हाथ-पैर मारता है, उतना ही वह दुःखों की जर्जरों से अधिकाधिक जकड़ा जाता है, उलझता जाता है।

इतने में ही अन्तर की घण्टी बज उठती है और भगवान का नाम हृदय में गूंजने लगता है। शास्त्र एक स्वर से कहते हैं - डंके की चोट कहते हैं कि भगवान ही एकमात्र विशुद्ध आनन्द हैं, वास्तविक ज्ञान हैं, परात्पर सत्य हैं, सर्वसमर्थ प्रेम हैं। भगवान के श्रीचरणों में केवल एक बार के स्पर्श से ही आंखों की पट्टी खुल जाती है, जीवन उन्मुक्त हो जाता है, सत्य उतर आता है और हृदय के अन्तःस्थल में आनन्द की तरंगे उठने लगती हैं। नाम का अनुसरण और भगवान के चरणों का स्मरण साधना की पहली सीढ़ी है। भगवान के परम पावन चरणयुगल ही हमारे सच्चे आश्रय हैं, एकमात्र शरण्य हैं, और तमाम आधार व्यर्थ हैं, धोखे में डालने वाले हैं, भरमाने वाले और सारी प्राप्ति व्यर्थ है, महान हानि है। भगवत चेतना के बिना जीवन दारुण आत्महत्या है, भयानक आत्महनन है। आज की दुनियां में, जहां विज्ञान के नवीन-नवीन अनुसन्धानों में मनुष्य का अहंकार इतरा उठा है, जहां भोगमय साम्राज्यवाद की दानवी ज्वाला से मानवता पीड़ित एवं क्षुब्ध है - सर्वत्र इसी आत्महनन का दौर-दौरा है। यह पैशाचिकता नहीं तो और क्या है कि समुद्र के गर्भ में लोहचुम्बक तारों का जाल बिछाकर जहाजों को डुबा देते हैं और निरीह मानवों पर बम बरसाये जा रहे हैं ? इस अज्ञान से मनुष्य को ऊपर उठना होगा, इस अहंकार से पल्ला छुड़ाना पड़ेगा और तभी वह अपने सत्य स्वरूप की, उस सनातन शाश्वत सत्य की उपलब्धि कर सकेगा, जिसके लिये उसके भीतर तड़प है, व्याकुलता है, अभाव का बोध है। दूसरे शब्दों में, उसे साधना करनी होगी और तब उसे अपने सत्य स्वरूप का पता लगेगा। यह साधना जीवन के लिये आवश्यक है, अनिवार्य है।

साधना का केन्द्र

मनुष्य वस्तुतः दिव्य भागवत प्राणी है। वह आत्म दृष्टि साक्षात् श्रीभगवती ही है, मनुष्यता का तो उसने चोला धारण किया है। मनुष्य की तमाम पहेलियों का बस, एक ही हल है और वह यही है कि मनुष्य अपने दिव्य भगवती के स्वरूप की उपलिब्ध करे। मनुष्य के भीतर भगवती पंचकोषों में छिपी हुई है। मनुष्य का भौतिक रूप आत्मा का परिच्छेद है, यही है अन्नमय कोष। उसके बाद है प्राणों का कोष अर्थात् स्नायुजल, जो शरीर को धारण किये हुए हैं। इस स्नायुजल में ही जीवन की धारायें प्रवाहित होती रहती हैं। मन इन स्नायुओं का पोषण और संचालन करता है। शरीर, मन और प्राण मनुष्य के निम्न स्तर के केन्द्र हैं। मन के परे विज्ञान है। इस विज्ञान की दृष्टि में एक ही तत्त्व बहुत ही स्पष्ट एवं प्रांजल रूप में रह जाता है। विज्ञान के परे आनन्दमय कोष है और इसमें प्रवेश करने पर मनुष्य आत्मानन्द के हृदय में प्रवेश कर जाता है। आत्मा इन पांचों की कोषों से परे है और हमारे हृदय-कमल के कोष में जगमगा रहा है। साधना की तीव्रता के द्वारा जब दिव्य चेतना का स्फुरण और जागरण होता है, तब इन पंचकोषों की प्रक्रिया स्पष्ट समझ में आ जाती है। शरीर के सभी अंगों में भगवती के दिव्यसंस्पर्श की अनुभूति होनी चाहिये। इसके लिये आवश्यकता इस बात की है कि हमारे समग्र अंग सक्रिय साधना में लगे। साधना कोई भी क्यों न हो, यह आवश्यक है कि वह हमारी मन्द बुद्धि को उद्‌बोधित करे और हृदय को स्पर्श करे और वस्तुतः सच्ची साधना मन-बुद्धि और हृदय और बुद्धि में ही भगवती का निवास है। मन-बुद्धि साधना में स्थिर हो जायें और हृदय सके आनन्द रस का निरन्तर आस्वादन करता रहे - यही तो साधना की सफलता के लक्षण है। मन-बुद्धि और हृदय के केन्द्रों को जो साधना स्पर्श नहीं करती, वह अधूरी ही साधना समझी जायेगी।

साधना के सिद्धान्त

साधारणतः हमारी चेतना बर्हिमुखी होती है। बाहर के विषयों में यह मनमाना बेलगाम दौड़ लगाती है, खूब उछल-कूद मचाती है और उसकी प्रत्येक उछल-कूद में हमारी शक्ति और शान्ति का क्षरण होता रहता है और मन क्षुब्ध और चंलल बना रहता है। मन पर अच्छी तरह लगाम कसकर और इस प्रकार समग्र बिखरी हुई चेतना को अपने अन्दर समेटकर उसे हृदय में डुबा देना ही साधना का गुह्य तत्त्व है। जिस प्रकार मरजीवा समुद्र में गोते लगाकर रत्न ढूंढ निकालता है, उसी प्रकार

साधक को अपने हृदय में डूबना होगा। हमारे सभी अंग, हमारे अस्तित्व का एक-एक कण-कण भगवत प्राप्ति की सजग अभीप्सा में पुलकित हो उठे, हमारे अन्दर दृढ़ निश्चय चाहिये, अटल निष्ठा चाहिये साधना के प्रति अटूट अनुराग। 'अन्तर्मुख होओ, भीतर की ओर लौटो' - समस्त साधना का एकमात्र यही सूत्र है।

साधना का मूल आधार

हृदय में स्थित भगवती बगलामुखी का साक्षात्कार करने के लिये तथा समस्त जगत् में उनका संस्पर्श अनुभव करने के लिये अनेक प्रकार की साधनायें हैं। उनमें से कोई भी साधना लगन और उत्साह के साथ की जाये तो साधक अवश्यमेव अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर लेगा ; क्योंकि हमारी अन्तरात्मा ही हमें यन्त्र बनाकर साधना करती है। मन, वचन और कर्म की पवित्रता, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सात्विक एवं युक्त आहार-विहार, सत्संग, एकान्तसेवन, आंख, कान, जिह्वा और उपस्थेन्द्रिय का पूर्ण संयम, भगवान में पूर्ण, नाम-स्मरण, नम्रता, निरपेक्षता, सद्ग्रन्थ सेवन, साधु-सेवन, श्री गुरु का आज्ञापालन ये ही हैं साधना के मूल आधार और कोई भी साधक, चाहे जिस शैली की साधना हो, इन तत्वों की अवहेलना नहीं कर सकता।

साधना में समर्पण

भगवती बगलामुखी की साधना हो या अन्य किसी भी देव या देवी की साधना, उसमें जब तक साधक अपने आपको उस आराध्य के चरणों में समर्पित न क दे तब तक उसको साधना में सफलता नहीं मिल सकती। इसमें साधक को अपनी आराध्य माता के चरणों में प्रार्थना करनी पड़ती है कि -

माते! मैं यह भूलूं नहीं कि तुम सदैव मेरे हृदय देश में निवास करते हो। तुम्हीं मेरे जीवन के सूत्रधार हो। इस क्षण-क्षण बदलने वाले, पल-पल में बनने-मिटने वाले संसार में जो कुछ भी हो रहा है, जो कुछ भी सामने आ रहा है, जो कुछ भी हिल-डुल रहा है और फिर आंखों से ओझल हो रहा है वह सारा ही तुम्हारी सत्ता से अनुप्राणित है, स्पन्दित है। मेरे मन-प्राण तुममें ही निवास करे, बसे और मेरा यह ज्ञान, यह चेतना बनी रहे कि तुम्हारी इच्छा के सिवा मेरी कोई गति नहीं, कोई आश्रय नहीं, कोई शरण नहीं, कोई अस्तित्व नहीं। यह शरीर तो मृत पिण्ड है, यह सजीव इसलिये है कि तुम इसमें सांस लेते हो। ओ मेरी माँ, मेरे आराध्य। मैं अपने हृदय में सतत तुम्हारी भक्ति का रस पाता रहूँ। जो कुछ करुं तुम्हारी प्रेरणा और

संकेत से, तुम्हीं मेरे द्वारा अपना कार्य करो, अपना उद्देश्य साधो ; मेरे हृदय में तुम्हारी भक्ति ही विराजे ; मेरी बुद्धि में तुम्हीं प्रकाश रूप बने रहो। मैर मस्तिक में तुम्हीं विचार करो। मेरे अन्दर तुम्हारे सिवा कुछ भी रह न जाय, तुम्हीं-तुम रह जाओ। हे सर्वशक्तिमान, सर्वसमर्थ स्वामिन्। भले ही मैं समाधि की अवस्था में तुम से एकाकार होकर तुम्हारी ही तरह हो जाऊं ; परन्तु यह भूल कर भी मैं यह न मान बैठूँ कि मैं तुम्हारे सदृश हूँ। मैं ही हूँ क्या। एक तुच्छ नगण्य नाचीज़ - जो अपनी एक-एक सांस के लिये तुम्हारी कृपा पर अवलम्बित है, तुम्हारी दया का मुंह जोहता है। तुम्हारे अनन्त महासागर के सम्मुख इस कण की क्या हस्ती है, माते! मेरा अहंकार तुम ले लो, मेरी दयामय मातेश्वरी! और मुझे नम्रता, दीनता प्रदान करो। तुम्हारी इच्छा मेरे जीवन में पूर्ण हो, तुम्हारी जो इच्छा हो वही मेरे भीतर बाहर हो - तुम्हीं मेरे भीतर साधना करो और तुम्हीं मेरे भीतर सिद्ध होकर मेरी इच्छा पूर्ण करो।

साधना की आवश्यकता

विचारशील मनुष्य के सामने सबसे पहले यह प्रश्न आता है कि हमें क्या चाहिये ? और जो चाहिये, उसके लिये हमें क्या करना चाहिये। पहले उद्देश्य का निश्चय, तत्पश्चात् उसकी साधना का निश्चय होता है। मनुष्य कुछ न कुछ चाहता है, कोई मान-प्रतिष्ठा और कीर्ति चाहता है, कोई सुन्दर शरीर चाहता है और कोई चाहता है अप्ततिहत शासन। इस चाह के और भी अनेकों नाम रूप हो सकते हैं। परन्तु ये भी जीवन के उद्देश्य नहीं, क्योंकि इनके द्वारा भी सुख ही चाहा जाता है। यदि ये दुःख के कारण बन जायें तो इनके भी परित्याग की इच्वा होती है और परित्याग कर दिया जाता है। इसलिये यह बात स्वयं सिद्ध हो जाती है कि मनुष्य-जीवन का परम लक्ष्य सुख की प्राप्ति होता है - ऐसी प्राप्ति जिसमें किसी प्रकार की सीमा, अन्तराय अथवा विच्छेद न हो - चाहे वह संग्रह से हो चाहे त्याग से। यही कारण है कि मनुष्य जिसको सुख समझता है उसको प्राप्त करने के लिये दौड़ पड़ता है, सम्पूर्ण शक्ति से उसके लिये प्रयत्न करता है। इस प्रयत्न का नाम ही साधना है।

साधारण मानव समाज की ओर दृष्टि डाली जाये तो यह प्रत्यक्ष ही दिख पड़ता है कि सभी किसी न किसी साधन में लगे हुए हैं। ऐसा होने पर भी वे दुःखी हैं, निराश हैं और साधना करके जिस आत्मतुष्टि का अनुभव करना चाहिये उससे वंचित हैं। इसका कारण यह है ? शान्त और गम्भी चित्त से विचार करने पर जान

पड़ता हैं कि जीवन का गम्भीर चित्त से विचार करने पर जान पड़ता है कि जीवन का उद्देश्य निश्चय करने में ही उन्होंने भूल की है। धधकती हुई आग को शीतल मणि-खण्ड समझकर गोद में उठा लेना जैसे सुख का कारण नहीं हो सकता, विष को अमृत समझकर पीना जैसे अमरत्व कारण नहीं हो सकता, ठीक वैसे ही विनाशी वस्तुओं को सुख समझकर अपनाने से ठीक वैसे ही विनाशी वस्तुओं को सुख समझकर अपनाने से सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। जिन स्थूल और जड़ की सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। जिन स्थूल और जड़ वस्तुओं में सुख की कल्पना करके साधारण मनुष्य जी तोड़ परिश्रम कर रहे हैं, उनकी प्राप्ति होने पर भी सुख नहीं मिलता ; क्योंक उनमें सुख है ही नहीं। इसी से वे दुःखी हैं और तब तक उनका दुःख नहीं मिट सकता, जब तक सुख के वास्तविक स्थान का पता लगाकर वे उसको प्राप्त नहीं कर लेते।

वास्तविक सुख क्या है ? इसका एकमात्र उत्तर है – परमात्मा ! क्योंकि संसार में जब कभी इच्छाओं के शान्त हो जाने पर यत्किंचित् सुख की अनुभूति होती है और कई बार कई कारणों से होती है तब इस निश्चय का कारण मिल जाता है कि इन समस्त छिटपुट सुखों का अवश्य ही कोई न कोई भण्डार है। उसी का नाम तो परमात्मा है। ऐसी ही सत्ता है, जो समस्त परिवर्तनों में सदा एक रस है। एक ही सत्ता है, जो समस्त परिवर्तनों में सदा एक रस है। एक ऐसा ज्ञान जो सम्पूर्ण ज्ञानों का उद्गम है, जिसमें अज्ञान का लेश भी नहीं है। एक ऐसा आनन्द है, जिसका निवर्चन मन और वाणी से मौन होकर ही किया जाता है और जिसके आस्वादन में आस्वाध और अस्वाद का भेद नहीं रहता। यह मधुरातिमधुर, नित्यनूतन, परम मनोहर, सत्य परमात्मा ही तो है। उसको देखे बिना आंखें अतृप्त ही रहेगी। उसके बिना ह्रदय की सेज सूनी ही रहेगी, उसका आलिंगन प्राप्त किये बिना बाहें फैली ही रहेगी। तात्पर्य यह कि उसको प्राप्त करने में ही जीव-जीवन की पूर्णता है और जिस जीवन का लक्ष्य है, वही सच्चा जीवन है। इस सच्चे जीवन का नाम ही साधन है। जिन्हें यह साधन प्राप्त है, साध्य भी उन्हें प्राप्त ही है। क्योंकि साधन ही साध्य है और यही सिद्धी भी है। यही वास्तविक सुख भी है।

साधना में उत्साह

पाठको! साधना में उत्साह की एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। साधक में यदि उत्साह का गुंण उच्च स्तर होता है, वह पूर्ण उत्साह के साथ साधना में प्रवृत्त होता है तो सफलता उसके कदम शीघ्र ही चूमती है। उत्साह से विहीन साधक उसी तरह होता है जैसे छेद वाली पानी की टंकी। उसमें चाहे जितना भी पानी भरा हो या भरदो वह धीरे-धीरे खाली हो जाता है। इसी तरह उत्साह से रहित किये गये साधनाओं में साधक को बार-बार असफलता का मुंह देखना पड़ता है।

साधना की प्रारम्भिक अवस्था में, और पीछे भी बहुत काल तक, आध्यात्मिक अनुभव का शीघ्र विकास होना, सब मुख्यत: साधना की अभीप्सा और वैयक्तिक चेष्टा पर अवलम्बित रहता है। योग साधना का अर्थ यही है कि उसकी अहं भावापन्न चेतना, जो विषयों के वाह्य रूपों और उनके मोह में डूबी रहती है, अपनी इस अहंता से मुंह फेर ले और चैतन्य की उस स्थिति के सम्मुख हो जाये, जिसमें ही विश्व चैतन्य और विश्वातीत परम चैतन्य मनुष्य के वैयक्तिक आधार में उतर कर उसे रूपान्रित कर सकते हैं। अत: सिद्धी की सब से पहली सीढ़ी इस जगत के विषयों से दृढ़तापूर्वक पीछे हटना और अन्तर्मुख होना है। इस दृढ़ता की ठीक पहचान हृदय की अभीप्सा के बल से, संकल्प शक्ति से, मन की एकाग्रता से और साधना में लगी हुई शक्ति के अध्व्यवसाय और तीव्रता से ही होती है। उत्तम साधक का भाव ऐसा होना चाहिये कि बाइबिल की भाषा में वह यह कह सके कि - "My zeal for the Lord has eaten me up." अर्थात् 'भगवान के लिये मेरा उत्साह मुझे खा गया।' भगवान के लिये इस प्रकार का जो उत्साह है समस्त प्रकृति की अपने दिव्य पर्यवसान के लिये यह जो व्याकुलता है, भगवान प्राप्ति की यह जो हृदय की छटपटाहट है, वह अहंकार निगल जाती है और उसकी तुच्छ और संकीर्ण सीमाओं तोड़ डालती है ताकि वह अपनी डस ध्येय वस्तु को पूर्ण रूप से, सब तरफ से ग्रहण कर सके, जो वस्तु विश्वात्मक होने से विशालत्तम और उच्च व्यष्टि पुरुष और प्रकृति से महान और विश्वातीत परमतत्व होने से सर्वोत्तम है।

परन्तु यह उस शक्ति का केवल एक पहलू है, जो शक्ति पूर्णता की साधिका है। पूर्ण योग के साधन क्रम की तीन अवस्थायें हैं ; अवश्य ही ये तीनों अवस्थायें एक दूसरे से सर्वथा भिन्न या पृथक नहीं हैं, बल्कि एक हद तक परस्पर सम्बद्ध हैं। इसमें पहली अवस्था वह है, जिसमें साधक का यथासम्भव अपने अहम् भाव के परे जाने तथा भगवान के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न कता है ; उसके बाद की अवस्था है, जिसमें साधक अपनी सारी सचेतन सत्ता को रूपान्तरित करने के लिये अपने अन्दर उसे धारण कता है, जो उससे परे है तथा जिसके साथ उसने

सम्बन्ध स्थापित किया है ; उसके बाद की अन्तिम अवस्था वह है, जिसमें साधक संसार में भगवान के एक केन्द्र के रूप में अपनी रूपान्तरित मानव-सत्ता का उपयोग करता है। जब तक भगवान के साथ साधक का सम्बन्ध पर्याप्त मात्र में नहीं स्थापित हो जाता, जब तक वह एक हद तक भगवान के साथ सायुज्य नहीं प्राप्त कर लेता, तब तक साधारण तौर पर साधना में व्यक्तिगत प्रयत्न की प्राधनता रहती ही है। परन्तु जैसे-2 यह सम्बन्ध स्थायी होता जाता है, वैसे-2 साधक को यह ज्ञान होता जाता है कि उसकी शक्ति से भिन्न कोई शक्ति, उस के अपने अहंकारपूर्ण प्रयत्न और योग्यता के परे की कोई शक्ति उसके अन्दर कार्य कर रही है और वह फिर धीरे-धीरे उस शक्ति के अधीन होना सीख जाता है और अपने योग का सारा भार उसे सौंप देता है। अन्त में उसकी अपनी इच्छा और शक्ति उस उच्चतर शक्ति के साथ एक हो जाती है ; वह अपनी इच्छा और शक्ति को भगवदिच्छा और उनकी परम्परा तथा विश्वात्मिका शक्ति के अन्दर मिला देता है। इसके बाद वह स्पष्ट रूप में देखता है कि वह शक्ति उसके मन, प्राण और शरीर के आवश्यक रूपान्तर के कार्य का संचालन निष्पक्ष ज्ञान और पूर्व दृष्ट साफल्य के साथ कर रही है, जो आतुर और आसक्त अहंकार से नहीं बन पड़ सकता। जब इस प्रकार साधक भगवान के साथ पूर्ण तादात्म्य लाभ कर लेता है और अपने आपको पूर्ण रूप से उनके अन्दर मिला देता है, तब वह जगत् में भगवान का केन्द्र हो जाता है। तब वह शुद्ध, मुक्त, भगवदिच्छा-ग्रहणक्षम, ज्ञानोज्वल पुरुष मानव-जाति या देव-मानव जाति के बृहत्तर योग में भगवान की परमा शक्ति के प्रत्यक्ष कर्म-साधन का एक यन्त्र बनकर कर्म करना आरम्भ कर सकता है। इस प्रकार उत्साह को नजरान्दाज़ करके साधना में साधक आगे नहीं बढ़ सकता।

साधना में काल

साधना क्रम के पूर्ण होने में काल की भी अपेक्षा होती है। मानव-प्रयास के सामने काल शत्रु बनकर सामने आता है या मित्र बनकर, बाधक होकर खड़ा होता है या साधक होकर। परन्तु यथार्थ में वह सदा ही आत्मा का एक उपकरण मात्र होता है।

काल परिस्थितियों और त्रिगुण की शक्तियों के मिलने और परिणाम स्वरूप विकास-साधन करने का एक क्षेत्र है। काल विकास-साधन के इस क्रम का मापक यन्त्र है। अहंकार को यह बड़ा उत्पीड़क या प्रतिरोध स्वरूप प्रतीत होता है, परन्तु भगवान के हाथ का यह एक यन्त्र है। इसीलिये जब तक हमारा प्रयत्न अपने पुरुषार्थ के बल पर होता है, तब तक काल बाधक ही प्रतीत होता है; क्योंकि काल हमारे सामने उन सब शक्तियों को ला खड़ा कर देता है, जो हमारे पुरुषार्थ से संघर्ष

र हमारा रास्ता रोक देती हैं। जब भागवत क्रिया और हमारे वैयक्तिक पौरुष की क्रिया दोनों हमारी चेतना में एक-दूसरे से मिलते हैं, तब काल एक साधन और उत्पादन बनता है। जब ये दोनों क्रियायें एक हो जाती हैं, तब काल सेवक और उपकरण बन जाती है।

काल के सम्बन्ध में साधक का सर्वोत्तम भाव यही है कि वह यह जानकर कि उसकी पूर्ण योग-सिद्धि के लिये अनन्त काल उसके हाथ में है, अनन्त धैर्य धारण करे और साथ ही आपकी शक्ति को इस तरह बढ़ावे कि वह उसे अभी सिद्ध करने में लगे और ऐसी सततवर्द्धनशील आत्मशिता और वेगवती क्षिप्तता के साथ लग जाये कि वह परम भागवत रूपान्तर की आश्र्र्यमयी त्वरा को प्राप्त हो।

साधना में सदाचार की उपयोगिता

सत्पुरुषों द्वारा प्रमाणित आचरण ही सदाचार है। सत्य, अहिंसा आदि दैवी गुणों से युक्त पुरुष ही सत्पुरुष है। सत्पुरुष को साधु और असत्पुरुष को असाधु कहा जाता है। संसार में दो ही प्रकार के पुरुष कहे गये हैं। भले-बुरे, सज्जन दुर्जन, पुण्यात्मा नामों से लोक में और शास्त्रों में मनुष्यों को दो ही विभागों में विभाजित किया गया है - देव और असुर।

'श्री गीता' में भी दैवी सम्पदा से युक्त पुरुष को ही 'देव' कहा गया है। दैवी सम्पद् का वर्णन करते हुए 16वें अध्याय में सम्पूर्ण सदाचार के लक्षण दिये गये हैं:

अभयं सत्त्वसंशुद्धि-र्ज्ञानयोग-व्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्॥ 1॥
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं भार्दवं ह्रीरचापलम्॥ 2॥
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत॥ 3॥

सदाचारी अर्थात् दैवी प्रकृतिवाला पुरुष मोक्ष को प्राप्त होता है और दुराचारी अर्थात् आसुरी प्रकृति वाला बन्धन में पड़ा रहता है - 'दैवी संषद् विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता।' श्री रामायण में भी श्रीगोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है:

संत असंतन्हि कै असि करनी। जिमि कुठार चंदन आचरनी॥
काटइ परसु मलय सुनु भाई। निज गुन देइ सुगंध बसाई॥
ताते सुर सीसन्ह चढ़त जग बल्लभ श्रीखंड।
अनल दाहि पीटत धनहि परसु बदन यह दंड॥

विषय अलंपट सील गुनाकर। पट दुख दुख सुख सुख देखे पर॥
सम अभूतरिपु बिमद बिरागी। लोभामरष हरष भय त्यागी॥
कोमल चित दीनन्ह पर दाया। मन बच क्रम मम भगति अमाया॥
सवहि मानप्रद आपु अमानी। भरत प्रान सम मम ते प्रानी॥
सम दम नियम नीति नहिं डोलहिं। परुष बचन कबहं नहिं बोलहि॥
निंदा अस्तुति उभय सम ममता मम पद कंज।
ते सज्जन मम प्रानप्रिय गुन मंदिर सुख पुंज॥

सदाचारी पुरुषों की संख्या और शक्ति जैसे-जैसे क्षीण होती जाती है, वैसे-वैसे ही संसार में घोर अशान्ति बढ़ती जाती है और बिना समय ही प्रलय का सा संकट आ उपस्थित पुरुष के द्वारा सदाचार की रक्षा तथा वृद्धि करवाकर शान्ति की तरित होकर स्वयं उत्तम पुरुषों के आचरण करके सारे जगत् को सदाचार की शिक्षा देकर और संसार में पूर्ण शान्ति का साम्राज्य स्थापित करके अन्तर्हित हो जाते हैं।

सदाचार की स्थापना प्राणिमात्र के लिये कल्याणप्रद है। भगवान श्रीराम चन्द्र जी ने मनुष्यों के लिये सर्वश्रेष्ठ आचरण करने के कारण ही मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये। सदाचारी पुरुषों का परिणाम में सुख तथा दुराचारी पुरुषों को दुःख हमेशा मिलता रहा है। सभी इतिहास-पुराण इसके साक्षी हैं। अतएव वर्तमान काल में भी प्रत्येक समाज में सदाचार की स्थापना से ही सुख-शान्ति मिल सकती है। प्रायः यह सभी के अनुभवों में आ रहा है कि सदाचारी पुरुषों के प्रति सबकी श्रद्धा होती है और श्रद्धेय पुरुष का ही प्रभाव संसार में अधिक समय तक टिकता है। कला-कौशल, भौतिक विद्या अथवा शारीरिक बल का प्रभाव क्षणिक होता है।

साधना मार्ग में उन्नति चाहने वाले के लिये परमावश्यक है कि वह सदाचार की निरन्तर वृद्धि करते हुए तमोगुणी और रजोगुणी पदार्थों को छोड़कर सत्वगुणी पदार्थों वाले पुरुष सात्त्विक बन सकते हैं। जिन पुरुषों को यह भ्रम हो कि तामसी या राजसी प्रकृति वाले पुरुषों के स्वभाव में परिवर्तन हो ही नहीं सकता, वे इस साधन को आचरण में लावें तो उनका भ्रम दूर हो सकता है। वर्तमान में अनेकों साधक इसके प्रयोग से सुधर गये हैं और सुधर रहे हैं। दुर्गुणों को छुड़ाने के लिये अपराधियों को दण्ड देने के बजाय यदि इन पदार्थों का संशोधन करके सेवन कराया जाये तो दुर्गुणी भी सदाचारी बन सकते हैं। सदाचार के साधन के प्रचार से संसार में सुख-शन्ति की बहुत कुछ वृद्धि हो सकती है। सदाचार का प्रचार सदाचारी पुरुष ही कर सकते हैं। सदाचार के प्रचार की प्रत्येक समाज में परमावश्यकता है।

साधना के पथ में दो सोपान त्याग और पवित्रता

वेद-वेदान्त और पुराणादि ग्रन्थों का बहुत-सा अध्ययन और अनुशीलन करके भी जिज्ञासु को अन्त में निराश ही होना पड़ता है, यदि त्याग और पवित्रता की उपेक्षा उसके जीवन में हुई हो ; क्योंकि साधना मार्ग में प्रथम दो सोपान, जिनके बिना कोई इस मार्ग पर आगे नहीं बढ़ सकता, त्याग और पवित्रता ही हैं। साधक को साधना पथ पर स्वयं ही चलना होगा, अधिक से अधिक आत्मसमर्पण और आत्मोत्सर्ग करना होगा ; तब जाकर उसके हृदय की अन्धेरी कोठरी में ज्योति का उजियाला होगा। सेंट बर्नर्ड कहते हैं :

"बाह्य प्रकृति ईश्वर की छाया है और अन्तरात्मा उसका प्रतीक। विशुद्ध अन्तरात्मा जो अपने-आपको ढूंढ रहा है, उसका मुख्य और विशिष्ट दर्पण है। यदि ईश्वर की दिव्य अदृश्य सत्तायें सृष्टि की सृष्ट वस्तुओं द्वारा समझी और साफ-साफ देखी जा सकती हैं तो मैं कहता हूँ कि ईश्वर सम्बन्धी वह ज्ञान उसके इसी प्रतीक में, हमारे अन्तःस्थित अन्तरात्मा में ही अंकित है ; इससे अधिक गहरी छाप उस ज्ञान की भला और कहां हो सकती है ? इसलिए जो कोई अपने ईश्वर के दर्शन का प्यासा हो वह अपने इस दर्पण को, इसका एक-एक दाग छुड़ाकर, निर्मल बना दें ; अपने हृदय को श्रद्धा से विशुद्ध कर दे।"

जब तक मनुष्य अपने जीवन को शुद्ध बनाने का कार्य आरम्भ नहीं करता, जब तक वह अपने आचार-विचार में सच्चाई नहीं ले आता, जब तक वह सन्मार्ग पर इस दृढ़ता के साथ नहीं डट जाता कि बाहर के कोई प्रलोभन उसे उससे हटा न सकें अथवा पैर फिसलने या गिरने की अवस्था में उसे पतन जानकर उस पात से पुनः उठने की चेष्टा नहीं करता, जब तक वह कम से कम अपने सामने सदाचार का कोई आदर्श रखकर उसके अनुरूप अपना जीवन बनाने का यत्न नहीं करता, तब तक उसकी बातें कोरी बातें ही हैं ; उससे और कुछ नहीं बन पड़ सकता।

शान्ति के धाम को जाने वाला और कोई मार्ग नहीं है ; जो है वह वही पुरातन संकीर्ण मार्ग है - यही कि सब बुरे रास्तों को छोड़ दो और शुद्ध बनो, सबके सहायक बनो, दूसरो के लिये त्याग करना सीखो।

जब अहंकार के त्याग से हृदय की आंखों पर पड़ा हुआ परदा हट जाता है, तब मनुष्य अपने-आपको उसी रूप में देवता है जिस रूप में उसे ईश्वर देखता है और उत्तम कर्म करने में समर्थ होता है। उत्तम गुणों का चिन्तन करने से उत्तम कार्य करने की शक्ति बढ़ती है और उसका आकर्षण भी बढ़ता है।

साधना का मनोवैज्ञानिक आधार

हमें मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखना है कि वास्तव में सुख की खोज साधना के द्वारा करनी चाहिये अथवा भौतिक प्रकार से। साधना करने वाले व्यक्ति को आज संसार के लोग प्राय: मन्दबुद्धि समझते हैं। हम देखते हैं कि साधक निरर्थक ही अपने शरीर को त्रास दिया करता है और अनेक प्रकार से अपने-आपको संसार के सुखों से वंचित करता है। क्या ऐसा करना निरी भूल है ? मनोविज्ञान इस विषय में क्या कहता है ?

मनोवैज्ञानिक भौतिक विज्ञानों के समान ही एक विज्ञान है, अतएव अध्यात्मिकता की पुष्टि करना मनोवैज्ञानिक के लिये कठिन है ; तथापि कुछ मनोवैज्ञानिकों ने ऐसी मौलिक बात कही है, जिससे हमें यह ज्ञात हो सकता है कि हमें सुख की खोज कहां करनी चाहिये। उनमें से एक विलियम जेम्स द्वारा कथित आनन्द का सिद्धांत है। विलियम जेम्स ने इस विषय को एक महत्त्वपूर्ण फारमूले में बतलाया है-

$$\text{आनन्द} = \frac{\text{लाभ}}{\text{तृष्णा}} \qquad \text{Satisfaction} = \frac{\text{Achievement}}{\text{Expectation}}$$

यदि किसी मनुष्य का किसी विषय में लाभ अधिक हो और उसकी आशा (तृष्णा) कम हो तो उसको आनन्द अधिक होगा। यदि उसकी तृष्णा या आशा अधिक हो और लाभ कम तो आनन्द कम होगा। हम आनन्द की वृद्धि लाभ को बढ़ाकर अथवा आशा को कम करके कर सकते हैं। यदि लाभ को इतना कम किया जाये कि शून्य हो जाये तो हमारा आनन्द शून्य हो जायेगा, किन्तु यदि लाभ को जैसा का तैसा रखते हुए आशा को शून्य कर दिया जाये तो हमारा आनन्द अनन्तानन्द हो जायेगा अर्थात् जिसे ब्रह्मानन्द कहा गया है, उसकी प्राप्ति इस गणित के फारमूले के अनुसार आशा या तृष्णा की शून्यता से ही सिद्ध होती है। विलियम जेम्स महाशय स्वयं उपर्युक्त निष्कर्ष पर नहीं पहुंचे हैं, किन्तु उनके दिये हुए मनोवैज्ञानिक फारमूले से हम गणित विज्ञान की सहायता से इस निष्कर्ष पर सरलता से पहुंच सकते हैं। जिसकी बुद्धि कुशाग्र है, उसे यह सत्य हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष हो जाना चाहिये।

अब प्रश्न यह है कि हम आशा की शून्यता कैसे प्राप्त करें। यह सहज ही प्राप्ति नहीं हो जाती। संसार के सभी मनीषियों ने तृष्णा या आशा की शून्यता में आनन्द और सुख की प्राप्ति का उपाय बताया है। इस तृष्णा की शून्यता के लिये साधना की आवश्यकता है। आशा या तृष्णा मन की तरंगे हैं। विचलित मन आशा तृष्णामय होता है। प्रशान्त मन आशा और तृष्णा से रहित होता है। इस प्रशान्त स्थिति को प्राप्त करने के लिये नित्य ही साधना आवश्यक होती है।

साधना का स्थान

साधना आरम्भ करने से पूर्व साधना का स्थान कैसा है, उसे भलीभांति समझ लेना चाहिये। जहां भी पायें वहीं बैठकर साधना नहीं करनी चाहिये। साधना करते समय साधक बाह्य रूप से कोई कर्म नहीं कर रहा होता, वह निश्छल-निश्चल बैठा रहता है, इसलिए कि साधना पूर्ण रूप से मानसिक क्रिया है। कोई भी मानसिक क्रिया या ऐसा कार्य जिसमें आप हृदय की सम्पूर्ण गहराई से जुड़कर अपना तन-मन सुध तक भूल जायें - भीड़भाड़ वाले स्थान पर हो ही नहीं सकती। चाहे वह गम्भीर विषयों का अध्ययन हो या आध्यात्मिक चिन्तन-मनन। अतः साधना विशिष्ट स्थान पर क़िया जाये तभी लाभप्रद है।

प्राचीन शास्त्रों में साधना - स्थान के सम्बन्ध में निर्देश है कि काशी, प्रयाग जैसे तीर्थ स्थानों अथवा गंगा तट पट या कोई वाटिका, पार्क और खेत-खलिहानों में बताया गया है। अंततः इसके लिये आप अपने निवास स्थान के साफ और पवित्र कमरे को भी प्रयोग में ला सकते हैं।

साधना के मार्ग में आने वाली बाधायें

साधको! साधना के मार्ग में बहुत सारे विघ्न आते हैं। यदि साधक इन विघ्नों को सावधानी पूर्वक नहीं दूर करता है तो साधक को साधना में सफलता नहीं मिल सकती।

बुरी कमाई का, चोरी के पैसों का, दूसरों के हक का अन्त न खाओ ; खान-पान, परिश्रम-व्यायाम और नियमादि के द्वारा शरीर को नीरोग रखो ; आज का काम कल पट, अभी का काम पीछे मत छोड़ो, करने योग्य कर्म का त्याग और न करने योग्य हानिकर कर्मों का ग्रहण न करो ; हमेशा उद्योगशील और पुरुषार्थी बने रहो, प्रारब्ध को दोष लगाकर सत्कर्म और भजन से चित्त को न हटाओ ; भगवान पर, उनकी दया पर, उनकी महान शक्ति पर, आत्मा के अनन्त बल पर और अपने पुरुषार्थ पर श्रद्धा रखो ; बेसिर पैर का व्यर्थ तर्क न करो ; धीरज छोड़कर साधना का त्याग कभी न करो ; मन में निश्चय रखो कि साधना में सिद्धि मिलेगी ही - या सिद्धि प्राप्त करके ही छोड़ेंगे। मन में किसी सन्देह को न आने दो, संशयात्मा पुरुष गिर जाते हैं ; आहार, व्यवहार, शयन, भाषण और चिन्तन में सभी बातों में संयम करो - आसन प्राणायामादि से शरीर का संयम करो, अपना काम अपने हाथ से करो, शरीर से परिश्रम करो, हिंसा और मैथुनादि से बचो, सत्य-मधुर हितकर और परिमित वचनों से वाणी का संयम को - झूठ न बोलो, कड़वी बात न कहो, किसी की चुगली न करो, शाप न दो, हित की बात कहो और व्यर्थ चर्चा मत करो -

फजूल न बोलो : मन में विषाद, क्रूरता, चंचलता, अपवित्रता और व्यर्थ चिन्तन आदि दोषों का त्याग करके मन का संयम करो। मन में कभी शोक विषाद न करो, किसी का बुरा न चाहो, मन को भगवान के ध्यान में लगाओ, मन के अन्दर द्वेष, वैर, क्रोध, हिंसा, काम आदि अपवित्र वृत्तियों को न आने दो, मन के द्वारा विषयों का चिन्तन न कर केवल श्री भगवान का और भगवत सम्बन्धी साधना का चिन्तन करो। बहुत कम बोलो और बहुत कम संसार का चिन्तन करो। इन्द्रियों को विषयों से रोको। जन्म, यज्ञोपवीत, विवाह, कर्णछेदन और श्रद्धादि में अधिक खर्च का संयम रखो, बहुत कीमती चीजें मत खाओ, मास, मद्य आदि का सर्वथा त्याग करो; अपवित्र और जूठी चीजें न खाओ, ज्यादा मत खाओ। स्वाद के लिये रोग पैदा करने वाली चीजें मत खाओ। नशैली चीजें त्याग दो। तम्बाकू, भांग, बीड़ी आदि छोड़ दो। खर्च सभी बातों में कम करो। अधिक खर्च करने वाले को धन का अभाव होता है और उसे धन की चाह बनी रहती है इससे उसका चित्त सदा ही चंचल बना रहता है और पापयुक्त रहता है। उससे साधना नहीं हो सकती। अपनी आवश्यकताओं को जितना घटा सको, घटा दो। देखा-देखी न करो, बहुत शान्ति मिलेगी। सन्यासी हो तो अपने आश्रम के अनुरूप मन वचन शरीर का संयम करो। संयम के बिना साधना कठिन है। सुख-दुःख, लाभ-हानि, सर्दी-गर्मी आदि द्वन्द्वों को और विपत्तियों को भगवान की देन समझकर सहन करो। सुख और सम्पत्ति को भी सहन करो। जो सुख-सम्पत्ति को पाकर हर्ष के मारे कर्तव्यच्युत हो जाते हैं, वे भी असहिष्णु ही हैं। दुःख में उद्विग्न मत होओ ; सुख में हर्षित मत होओ। शरीर और मन को पवित्र रखो, प्रसिद्धि से सदा बचो। साधक के लिये प्रसिद्धि विष के समान त्याज्य है। प्रसिद्धि होने पर लोगों की भीड़ लगेगी, जगत का संग बढ़ेगा, परिग्रह बढ़ेगा, साधन लुट जायेगा। उपदेशक मत बनो - अपने आपको साधक बोलकर प्रसिद्ध न करो, पुजवाने की और मन की चाह कभी भूलकर भी न करो, जिस साधक के मन में पुजवाने की और मन की और मान प्राप्त करने की चाह पैदा हो जाती है, वह कुछ दिनों में भगवत् प्राप्ति का साधक न रहकर भोगों का साधक बन जाता है। किसी भी जीव में घृणा न करो, किसी में द्वेष न करो - किसी के साध निर्दयता मत करो। ये दोष हैं - पाप हैं और सर्वथा व्याज्य हैं।

यों तो अनुराग और दया भी बन्धन कारक हैं, परन्तु उनका उपयोग भगवदर्थ कर्तव्य बुद्धि से करना चाहये। किसी बात पर हठ मत करो ; शरीर मन वाणी से चपलता व्यर्थ कार्य न करो ; जल्दबाजी में किसी कर्म को न कर बैठो, न छोड़ दो - किसी व्याख्यान को सुनते ही, पुस्तक पढ़ते ही, बिना सोचे-समझे जोश में आकर घट-द्वार छोड़कर न निकल भागो। यों भागने वाले जोश उतरने पर प्रायः पीछे बहुत पछताया करते हैं। किसी आरम्भ किये हुए काम को जल्दी करके न

बिगाड़ो। जो कुछ करो व्यवस्था, धीरता और नियम के साथ श्रद्धा सत्कारपूर्वक अच्छी तरह करो। न बीच में अटको और न घबड़ाकर छोड़ो। दूसरे के दोष न देखो, दूसरे की निन्दा न करो, परचर्चा का सावधानी से त्याग करो। अपनी वेश-भूषा साधारण रखो ; जटा बढ़ाना, मूंड़ मुड़ाना, किसी खास ढंग से कपड़े पहनना, खास तरह से चलना-मतलब यह कि लोग कुछ विलक्षणता देखकर तुम्हारी ओर खिचें, ऐसा पहनावा न पहनो। जैसे साधारण लोग रहते हैं, वैसे ही रहो। किसी से विवाद या शास्त्रार्थ न करो - तुम्हें अपनी साधना से जरा भी अवकाश नहीं मिलना चाहिये। शरीर के आराम की चाह न करो - शरीर के आराम के पीछे पागल रहने वाले साधना कभी नहीं कर सकते। फैशन और शौकीनी के फेर में बिल्कुल न पड़ो। दूसरे से सेवा न कराओ ; जो सेवा कराने के लिये साधना करते हैं, वे शरीर का आराम और भोग चाहने वाले हैं - भगवान को चाहने वाले नहीं हैं। ऐसी चेष्टा करो जिसमें मनुष्य की अपनी आत्मा पर श्रद्धा हो - अपने पुरुषार्थ पर श्रद्धा हो - वह अपनी सेवा आप करे। किसी की आत्मश्रद्धा को न डिगाओ, न डिगने दो और न किसी की श्रद्धा को आत्मा से हटाकर अपनी ओर लगाने की चेष्टा करो।

साधना में गृहस्थों के लिये साधारण नियम

1. प्रात:काल सूर्योदय से पहले उठें।
2. उठते ही भगवान का स्मरण करें।
3. शौच-स्नानादि से निवृत्त होकर भगवान या भगवती की साधना, संध्या, तर्पण करे।
4. बलिवैश्वदेव करके समय पर सात्त्विक भोजन करें।
5. रोज प्रात:काल माता, पिता, गुरु आदि बड़ों को प्रणाम करें।
6. इन्द्रियों के वश में न होकर, उनको वश में करके उनसे यथा योग्य काम लें।
7. धन कमाने में छल, कपट, चोरी, असत्य और बेईमानी का त्याग करो। अपनी कमाई के धन में यथायोग्य सभी का हक समझें।
8. माता-पिता, भाई-भौजाई, बहन-फूआ, स्त्री-पुत्र आदि परिवार का आदर और प्रेम से पालन करें।
9. अतिथि का सच्चे मन से सत्कार करें।
10. अपनी हैसियत के अनुसार दान करें। पड़ोसियों तथा ग्रामवासियों की सत्कारपूर्ण सेवा सदा करें।
11. सब कर्मों को बड़ी सुन्दरता, सफाई और नेक नीयती से करें।
12. किसी का अपमान, तिरस्कार और अहित न करें।
13. अपने किसी कर्म से समाज में विशृंखलता और प्रमाद न पैदा करें।

14. मन, वचन और शरीर से पवित्र, विनयशील और परोपकारी बनो।
15. सब कर्म नाटक के पात्र की भांति अपने न मानकर करें, परन्तु करें ठीक सावधानी के साथ।
16. विलासिता से बचे रहें – अपने लिये खर्च कम करें। बचत के पैसे गरीबों में खर्च करें।
17. स्वाव लम्बी बनकर रहें – दूसरों पर अपने जीवन का भार न डालें।
18. निकम्मे कभी मत रहें।
19. इस बात का पूरा ख्याल करें – अन्याय का पैसा, दूसरे के हक पैसा घट में न आने पावे।
20. सब कर्मों को भगवान की सेवा के भाव से निष्काम भाव से करने की चेष्टा करें।
21. जीवन का लक्ष्य भगवत् प्राप्ति है, भोग नहीं – इस निश्चय से कभी न टलें और सारे काम इसी लक्ष्य की साधना के लिये करें।

साधु साधकों के लिये नियम

1. साधु दो ही चीज छोड़ता है – पैसे और स्त्री। यदि इनसे सम्बन्ध बना रहा तो साधु ही क्या हुआ ? साधु को पैसा मांगना और बांधना दोनों ही पाप हैं। साधु होकर गृहस्थों के ऊपर भूलकर भी किसी प्रकार का भार मत डालें, केवल रोटी ही मांगे। अच्छा भोजन तो गृहस्थों के लिये है, साधु को उसकी इच्छा नहीं करनी चाहिये। शरीर को ऐसा बनाएं कि कहीं भी पड़ा रहे, किसी की परवाह न हो। गर्मी पड़े तो ठण्डाई मत पियें और सर्दी पड़े तो बादाम मत चबायें।
2. अपनी इन्द्रियों को काबू में रखें। जो चीजें दुनियादार आदमी के लिये हैं, वे साधुओं के लिये हराम हैं। आजाद फकीर दुनिया की किसी वस्तु को पास फटकने नहीं देते। वे तो आकाश के नीचे रहते हैं और अपनी सब प्रकार की इच्छाओं की बरबादी करना ही अपना कर्तव्य समझते हैं। वे अच्छे पदार्थ मिलने पर भी नहीं लेते, केवल सूखी रोटी खाकर रहते हैं – स्वाद के लिये कुछ नहीं खाते।
3. साधु को इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि अपना काम किसी से न कराया जाये, स्वयं ही अपना सारा काम कर लें, अपने को किसी के अहसान के बन्धन में न बांधे। भूलकर भी नया जूता न पहनें। पैदल चलने का अभ्यास करें। निरन्तर भगवान का भजल करें।
4. यदि तुम्हारे साथ कोई बुराई करे, तो भी तुम्हें इसकी भलाई ही करनी

चाहिये। साधु के लिये तो किसी से नाराज होना अथवा किसी को नाराज करना दोनों ही पाप हैं। कुत्ते को भी डंडा उठाकर मत धमकायें।

5. जिस घर के द्वार पर कोई दूसरा साधु भिक्षा मांग रहा हो, वह आप मत जायें।
6. विरक्त को चाहिये कि एक गुदड़ी, दो कौपीन, एक झोली और एक जलपात्र के सिवा एक इलायची भी पास न रखे। जो विरक्त होकर सुख की सामग्रियों का संचय करता है, वह तो सन्यास श्रम से पतित हो जाता है। यदि का भूषण तो त्याग और निःसंगता ही है।
7. याद रखें इच्छाओं की पूर्ति कभी नहीं होती। इनके कारण तो गृहस्थ ही महादुःखी रहते हैं। फिर तुम इस में फंसकर क्यों व्यर्थ आपत्ति मोल लेते हो ? इच्छाओं के कारण ही सांसारियों का संग बढ़ता है। सन्यासी को तो संसारी पुरुष, स्त्री, धन, बहुमूल्य वस्त्र, मकान एवं पूजा-प्रतिष्ठा आदि का दूर से ही त्याग कर देना चाहिये। उसे या तो सर्वथा निःसंग रहना चाहिये या केवल बोधवान विरक्त महात्माओं के सहवास में ही।
8. शास्त्रों में ब्राह्मणादि तीन वर्णों की भिक्षा करने का ही विधान है। अन्तयजों की भिक्षा करने से तेज, उत्साह धैर्य एवं शान्ति सभी नष्ट हो जाते हैं। त्रिवर्ण में भिक्षा करने पर प्रारब्ध जो कुछ दे, उसी को खाकर देहयात्रा का निर्वाह करो। कच्ची-पक्की, बासी-ताजी इसका विचार मत करें।
9. जब तक सो या मर न जायें, तब तक ब्रह्मचिन्तन में ही समय व्यतीत करें - इस नियम के अनुसार साधु को अपना सारा समय स्वरूपानुसन्धान में ही व्यतीत करना चाहिये। इसके लिये प्रणव जप, वेदान्त ग्रन्थों का स्वाध्यायत तथा तत् और त्वंपद का शोभन करना चाहिये। इस प्रकार तत्त्व विचार द्वारा जब जीवात्मा और परमात्मा के अभेद का निश्चय हो जाये, तो चित्त की शान्ति के लिये सारी प्रवृत्तियों को त्यागकर निरन्तर ब्रह्माकार वृत्ति का अभ्यास करें और चौबीसों घण्टे निर्विकल्प स्थिति में रहें।

साधना को गुप्त रखना का रहस्य

साधको ! प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों में साधना को गुप्त रखने का निर्देश मिलता है। उपनिषदों में जिस 'पराविद्या' का वर्णन है उसे स्थान-स्थान पर 'गुह्य' या रहस्यमय कहा गया है। उसे प्रकट करने का निषेध किया गया है। गीता में भगवान ने 'राजयोग' को 'गुह्य' शब्द से प्रकट किया है। तन्त्रों में स्थान-स्थान पर -

गोपनीय गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नः।
त्वयापि गोपितव्यं हि न देयं यस्य कस्यचित्॥

इत्यादि शब्दों के द्वारा साधना को प्रकट करने का निषेध किया गया है। किन्तु साथ ही यह भी कहा गया है कि ये साधनायें भोग-मोक्ष देने वाली, जीव और ब्रह्म को एक बनाने वाली और आगमन के बन्धन से मुक्त करने वाली हैं। इनसे बढ़कर प्राणियों का हितकर साधन दूसरा नहीं। अब प्रश्न उठता है कि ऐसी हितकर साधनाओं को गुप्त क्यों रखा जाये ? इनका तो सर्वसाधारण में इतना प्रचार करना चाहिये कि एक भी व्यक्ति इनसे अपरिचित न रहे। सभी इनसे लाभ उठाकर आवागमन के चक्र से मुक्त हो जायें, संसार के दुःखों में न भटक कर भगवान तक पहुंच जायें। हमारे शास्त्रों में स्वादिष्ट वस्तु दूसरों को न देकर स्वयं खा लेने और धन न व्यय करके कंजूस की भांति गाड़ देने को घोर पाप बतलाया गया है। यदि इतनी साधारण वस्तुओं को दूसरों को न देक स्वयं उपभोग करने से ही पातक लगता है तो परब्रह्म को प्राप्त करने वाली विद्या को छिपाने में कितना घोर पातक लगेगा ?

यह प्रश्न विचारणीय है। धर्म शास्त्रों में साधनाओं को गुप्त रखने का जो आदेश हैं उसके दो कारण हैं। पहला कारण तो यह है कि साधना के प्रकट होने से स्वयं साधक को ही हानि पहुंचती है। साधारण से साधारण साधना भी जब जन साधारण के सम्मुख प्रकट हो जाती है तो लोग साधक का सम्मान करने लगते हैं, या यों कहिये कि उससे साधक का यश जनसाधारण में फैलने लगता है। इस प्रकार यश का फैलना साधक के लिये उत्यन्त हितकर है। तन्त्रों में लिखा है कि 'यदि जनता को यह ज्ञात हो जाये कि यह व्यक्ति तान्त्रिक साधक है तो उसी दिन तान्त्रिक की मृत्यु समझ लेनी चाहिये।' साधना के प्रकट होने पर साधक को जितना ही यश प्राप्त होगा, उतना ही मात्रा में वह साधना के फल को कम कर देगा।

सर्वसाधारण में यश फैलने से जनता साधक का सम्मान करने लगती है, धीरे-धीरे साधक भी यह समझने लगता है कि मैं अवश्य सम्मान के योग्य हूँ। इससे उसके हृदय में सम्मान के प्रति राग उत्पन्न होता है, उससे अहंकार बढ़ता है। इधर यदि किसी व्यक्ति विशेष ने उसी प्रकार सम्मान न किया तो द्वेष या दुःख होता है,

उससे क्रोध उत्पन्न होता है। इस प्रकार साधक अपनी साधना को प्रकट करने से फिर उसी राग-द्वेष, अहंकार, क्रोधादि के कीचड़ में फंस जाता है, जिससे ऊपर निकलने का प्रयत्न वह कर रहा है। राग-द्वेष या अहंकार क्रोध के कीचड़ में फंसते ही यह समझ लेना चाहिये कि आज ही साधना नष्ट हो गयी है और गीता के शब्दों में क्रोध से सम्मोह, सम्मोह स्मृतिविभ्रम, स्मृतिविभ्रम से बुद्धि नाश और बुद्धिनाश से सर्वनाश ही हो जाता है।

साधना के प्रकट होने पर अनेको व्यक्ति अनेकों लालसाओं से साधक के पास आकर उसे घेर लेते हैं। कोई पुत्र कामना से उसके चरण छूता है, कोई धन की कामना से पंखा झलता है, कोई शत्रु के भय से मुक्त होने के लिये सेवा करने लगता है। इस प्रकार भीड़ के उपस्थित होने से साधक की साधना में बाधा पड़ती है। उचित समय पर उसका अपना कार्यक्रम पूरा नहीं होता। मौन व्रत भंग करना पड़ता है। उसका ध्यान साध्य की ओर न रहकर उन्हीं लोगों की बातों में लग जाता है। वे सारी सांसारिक बातें होती हैं, इसलिए ध्यान भगवान के चरणों में न रहकर सांसारिक बातों में लग जाता है। इस प्रकट कई प्रकार की भावनाओं से प्रेरित होकर साधक कभी-कभी इन सेवा करने वाले व्यक्तियों को कुछ आशीर्वाद दे देता है। यदि उसकी साधना इतनी अधिक हुई कि उसका आशीर्वाद सफल हो गया तो आशीर्वाद का फल उसकी साधना के फल में से काट लिया जायेगा। इस प्रकार उसे अपनी साधना का जो फल मिलना चाहिये था, वह नष्ट होता जायेगा। दूसरी ओर यदि साधना थोड़ी ही हुई और उससे आशीर्वाद सफल न हुआ तो साधक झूठा गिना जायेगा और उसका अपमान अपयश होगा।

साधना को प्रकट करने से दूसरी हानि यह होती है कि वह अनधिकारियों के पास प्रकट होती है। कितनी ही साधनायें इतनी रहस्यमय होती हैं जिनके तत्त्व को समझना अत्यन्त कठिन है। तान्त्रिक या वाममार्गी साधना के रहस्य को तो विरले व्यक्ति ही समझ पाते हैं। जब लोग किसी बात को नहीं समझ पाते तो उसकी निन्दा करने लगते हैं। जनता उसका मज़ाक उड़ाती है, जिसे वह समझ नहीं सकता। इसलिए सभी साधनाओं में उन्हें गुप्त रखने के लिये कहा गया है। संत मत्ती के सुसमाचार में कहा गया है -

"To you it is given to know the mysteries of God, but to them it is not."

''तुम्हें भगवान के रहस्यों को जानने की आज्ञा दी जाती है, किन्तु उनको नहीं जो इसके अधिकारी नहीं है।''

प्राचीन यूनान में जब शिष्य गुरु से दीक्षा लेते थे तो उन्हें अग्नि के सम्मुख शपथ लेनी होती थी कि वे कभी भी अनधिकारियों के सामने अपनी साधना प्रकट नहीं

करेंगे। आरम्भ में ईसाई धर्म के मानने वालों में से कुछ विशेष व्यक्तियों को एक प्रकार के सामने वालों में से कुछ विशेष व्यक्तियों को एक प्रकार की दीक्षा दी जाती थी, जिसको जन-साधारण के पास प्रकट करने पर मृत्युदण्ड दिया जाता था। इसका कारण यह है कि जो लोग रहस्य गुप्त न रखकर अनधिकारियों के पास प्रकट कर देते हैं, वे उस रहस्य को जानने के सर्वथा अयोग्य हैं और ऐसे अयोग्य व्यक्तियों का रहस्य से परिचित होना सारे सम्प्रदाय के लिये हानिप्रद होता है। वेट ने लिखा है –

"It is a fatal law of the arcane sanctuaries that the revelation of their secrets entails death to those who are unable to preserve them."

"अनाधिकारी साधना के रहस्य से कुछ भी लाभ नहीं उठा सकते और दूसरी ओर अधिकारी साधक को हानि पहुंचाते हैं।"

अत: आप चाहे कैसी भी साधना करें, उसका महत्त्व अधिक हो या कम, उसे कभी प्रकट न करें। अन्तर्यामी भगवान उसे स्वयं ही देख लेते हैं। वे ही उसका फल देने वाले हैं।

साधना से पूर्व मुख्य निर्देश

साधना अथवा मन्त्रानुष्ठान हेतु नियमों का पालन करना तो अपरिहार्य है ही, कुछ अन्य नियम हैं, जिनका पालन करना आवश्यक होता है। अनेक विद्वानों-मर्मज्ञों ने परक्षिण करके इनकी व्यावहारिक उपयोगिता और प्रभाव को स्वीकार किया है।

यदि आप भगवती बगलामुखी की साधना या मन्त्रानुष्ठान करने जा रहे हैं तो निम्नलिखित निर्देशों का पालन अवश्य करें :

1. स्नान करके शुद्ध स्वच्छ वस्त्र पहनकर साधना स्थल में जाना चाहिये।
2. वस्त्र दो ही हों और सिले हुए न हों।
3. साधना स्थल पूर्णतया शान्त, सुरक्षित और एकान्त में हो।
4. दिन भर के पहने हुए वस्त्र, अनुष्ठान के समय नहीं पहनना चाहिये।
5. आसन पर एक बाट बैठ जाने पर, बाट-बाट उठना उचित नहीं होता।
6. बैठने में शरीर सदैव सीधा रहे, मेरु दण्ड को झुकाना नहीं चाहिये।
7. अनुष्ठान या साधना में पूजन-जप और आहुतियों की पूर्ति आवश्यक होनी चाहिये।
8. अनुष्ठान से सम्बन्धित मंत्र का जप पूर्ण रूप से करना चाहिये।
9. अनुष्ठान आरम्भ करते समय शुभ दिन, तिथि, मुहूर्त्त आदि का विचार अवश्य कर लेना चाहिये।

10. जप काल में नित्य देवता का आवाहन-विसर्जन करते रहना आवश्यक होता है।
11. धूप, दीप, अक्षत, चन्दन, बिल्वपत्र, पुष्प, गंगाजल, नैवेद्य आदि का नियमानुसार प्रयोग अवश्य करना चाहिये।
12. अनुष्ठान की समाप्ति पर हवन, तर्पण और मार्जन क्रिया भी बहुत आवश्यक है। इसके पश्चात् दान और ब्राह्मणों एवं कुमारी कन्याओं के भोजन को भी वरीयता दी गई है।
13. पूरी साधना काल में 'ब्रह्मचर्य व्रत' का पालन करना चाहिये।
14. श्रृंगार, सज्जा, स्वादेच्छा, परस्पर्श न करके अपना कार्य स्वयं करें। कार्य और विचार दोनों ही पवित्र हो।
15. अनुष्ठान प्रारम्भ करने के पूर्व जैसा कुछ संकल्प किया जाये, उसका अन्त तक पालन करना चाहिये।
16. अनुष्ठान से बचे समय में भी धार्मिक विष्यों का चिन्तन, धर्म चर्चा, आध्यत्मिक विचार वाले लोगों का सामीप्य और इष्ट देवता का स्मरण कल्याणकारी होता है।
17. मन्त्र का उच्चारण पूर्णतः शुद्ध हो।

साधना में निषेध

1. प्रतिकूल भोजन सर्वथा व्याज्य है। गरिष्ठ तामसिक तामसिक भोजन से साधक की मनोशान्ति और शुचिता नष्ट होती है।
2. कुत्संग, अश्लील दृश्य, अनैतिक विषयों की चर्चा, काम चिन्तन, श्रृंगार उत्तेजक वस्तुयें, दृश्य अथवा वार्तालाप सर्वथा वर्जित है।
3. मादक द्रव्यों का निषेध। बहुतेरे साधु फकीर गांजे-चरस का दम लगाकर कहते हैं - 'इससे ध्यान लगता है' यह सर्वथा असंगत है। साधकों के लिये किसी भी प्रकार के मादक पदार्थ की स्वीकृति नहीं दी गई है। साधना काल में समस्त प्रकार का विलासित और मादक पदार्थों का निषेध किया गया है। साधक के लिये अनुष्ठान काल में गांजा, भांग, चरस, शराब, ताड़ी, सिगरेट, बीड़ी, तम्बाकू, मांस-मछली अण्डे आदि को सर्वथा त्याग कर संयमित जीवन व्यतीत करना चाहिये। साधना में मन लगाने के लिये नशे का नहीं, आस्था का अवलम्ब लेना चाहिये।
4. बिना स्नान किये, अपवित्र अवस्था में साधना करना वर्जित है।
5. शिखा खोलकर साधना नहीं करना चाहिये।
6. बिना आसन बिछाये नंगी भूमि पर साधना वर्जित है।

7. साधना के समय किसी से वार्तालाप नहीं करना चाहिये।
8. भीड़भाड़ वाले में साधना करने का निषेध है।
9. माला जपते समय हाथ और सिर खुले नहीं रहने चाहिये।
10. राह चलते समय या राह में कहीं बैठकर साधना करना वर्जित है।
11. भोजन करते समय अथवा शयन काल में जप करने पर निषेध है।
12. आसन विरुद्ध किसी भी स्थिति में बैठकर, लेटकर या पैर पसार कर जप नहीं किया जाता।
13. छींक, खखाट, खांसी, थूकना जैसी व्याधि के समय जप न करें।
14. जप करते समय निर्धारित मणियों की बनी हुई माला ही होनी चाहिये।
15. जप में माला का प्रयोग बायें हाथ से न करें।
16. माला के मणियों में नाखून का स्पर्श न होने दें।
17. जप के समय माला पूरी हो जाने पर 'सुमेरु' उलंघन नहीं किया जाता। वहां से (सुमेरु) फिर उलटी दिशा में लौट जाना चाहिये।
18. माला जपते समय उंगलियों और मणियों के बीच कोई व्यवधान-अन्तर नहीं आना चाहिये।

साधना में आसन और मालाओं का प्रयोग खण्ड

प्रिय भगवती बगलामुखी के भक्तों! किसी भी साधना-उपासना में निम्नलिखित आसनों का प्रयोग होता है -

1. कुशा का आसन 2. मृगचर्म 3. व्याघ्र चर्म 4. ऊनी वस्त्र का आसन 5. रेशमी वस्त्र का आसन।

कुशा आसन की उपयोगिता

क. साधारण कोई भी उपासना या साधना हो, यदि कुशा आसन पर बैठकर की जाती है तो सफलता अवश्य मिलती है।

ख. अन्तःकरण पवित्र होता है।

ग. साधक को फल की प्राप्ति में सुविधा हो जाती है।

घ. साधक की दृढ़ इच्छाशक्ति और स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है।

ङ. दूषित प्रभावों अर्थात् भूत-बाधाओं का शमन होता है।

च. साधक की साधनात्मक उपलब्धि प्रबल होती है।

मृगचर्म आसन के लाभ

मोक्ष प्राप्ति अथवा धन के उद्देश्य से की जाने वाली साधना में 'कृष्ण मृग चर्म' विशेष रूप से अनुकूल प्रभाव देता है।

व्याघ्रचर्म आसन के लाभ

राजसिक वृत्ति वाले साधकों द्वारा राजसी उद्देश्य की पूर्ति की जाने वाली साधना में इसका प्रयोग विशेष रूप से प्रभावकारी होता है। सिंह के स्वभाव वाले सभी गुण इसमें आंशिक रूप से विद्यमान रहते हैं।

परीक्षणों से सिद्ध हुआ है कि व्याघ्रचर्म के पास कोई जीव-जन्तु नहीं जाते। इस पर बैठे हुए साधक को सांप-बिच्छु का भय नहीं रहता, क्योंकि ये जीव व्याघ्र चर्म पर चढ़कर उस पर आसीन साधक को छूने का साहस नहीं कर पाते। निर्विघ्न साधना के लिये व्याघ्रचर्म विशेष उपयोगी है।

वैसा इसका वैज्ञानिक महत्त्व भी है और पवित्रता में भी यह किसी से कम नहीं। आर्य संस्कृति के सबसे बड़े देवता और सृष्टि और सृष्टि के सबसे बड़े महान योगी तथा मन्त्र साधक भगवान शिव को यह इतना प्रिय है कि वे इसे ओढ़ने-बिछाने और पहनने तक के काम में लाते हैं।

कम्बल के आसन का महत्त्व

कर्म सिद्धि की लालसा के किये जाने वाली साधना में कम्बल का आसन लाभदायक होता है।

रेशमी आसन की उपयोगिता

ऊनी आसन तथा रेशमी आसन भी साधना में अति लाभदायक होते हैं। इन पर बैठकर जप करने वाले साधक की शारीरिक विद्युत शक्ति पृथ्वी में प्रवेश न करके सुरक्षित रहती है। वस्तुत: ये दोनों आसन भी कुचालक पदार्थों की कोटि में आते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टि से ऊनी आसन को विशेष महत्त्वपूर्ण माना गया है। भगवती बगलामुखी की साधना में पीले रंग के कम्बल के प्रयोग का विधान है।

इनके अतिरिक्त अभिचार कृत्य (मारण, मोहन, उच्चाटन) हेतु बकरे के चर्म का आसन विशेष रूप से उपयोगी है।

त्याग करने योग्य आसन

क. बांस के बने आसन पर बैठकर उपासना करने से दरिद्रता आती है।

ख. पत्थर का आसन साधक को व्याधिग्रस्त बनाता है।

ग. बिना कोई आसन बिछाये, जो उपासक नंगी भूमि पर बैठकर उपासना करते हैं, वे सदा दु:ख से आक्रांत रहते हैं और उनकी उपासना का आधा फल स्वयं धरती प्राप्त कर लेती है अत: खुली भूमि पर उपासना करना वर्जित है।

घ. आसन में छेद वाली लकड़ी का प्रयोग दुर्भाग्यकारी होता है।

ङ. तिनकों के बने आसन का प्रभाव साधक को धन-हानि और यश क्षीण का संताप देता है।

च. पत्तों से निर्मित आसन मानसिक विघ्न उत्पन्न करते हैं।

छ. सामान्य वस्त्र-कपड़ा और कुर्सी का प्रयोग भी उपासना में निन्दित किया गया है।

माला की उपयोगिता और फेरने का नियम

प्राचीन काल से ही ऋषियों-मुनियों ने जप-तप, पूजा पाठ के लिये माला के सम्बन्ध में विशेष नियम बनाया है। व्यावहारिक रूप में हम रुद्राक्ष, तुलसी, शंख, कमल गट्टे, बैजयन्ती, चन्दन, राजमणि, पुत्रजीवा, स्फटिक आदि की मालायें जप कार्य में लाते हैं।

मंत्र जप के लिये प्रयोग में लाई जाने वाली माला का पूर्ण और शुद्ध होना आवश्यक है। माला के दाने टूटे-फूटे कीड़ों से छिद्र किया हुआ उपयोग नहीं

करना चाहिये। प्रायः माला 108 दाने की होती है। जपते समय माला का एक फेरा पूर्ण हो जाने पर सुमेरु तक पहुंचकर, वहीं से विपरीत दिशा में जप प्रारम्भ कर देना चाहिये। सुमेरु को लांघकर आगे बढ़ना वर्जित है।

विभिन्न जप कार्यों में विभिन्न मालाओं का प्रयोग

1. माता बगलामुखी साधना हेतु – हल्दी की माला।
2. शत्रु नाश के लिये – कमलगट्ठे की माला।
3. संतान प्राप्ति हेतु – पुत्रजीवा की माला।
4. धन प्राप्ति हेतु – मूंगा की माला।
5. पाप नाश हेतु – कुशा जड़ की माला।
6. भैरवी विद्या सिद्धि हेतु – मूंगा, शंख, मणि अथवा स्फटिक की माला।
7. देवी–देवता उपासना हेतु – लाल चन्दन या रुद्राक्ष की माला।
8. वैष्णवी मत साधना हेतु – तुलसी की माला।
9. गणेश पूजन हेतु – हाथ दांत की माला।

माता बगलामुखी की साधना में विहित पुष्प

माता बगलामुखी को पीले रंग की वस्तुयें बहुत प्रिय है इसलिये उनकी साधना में कनेर और पीला गेंदा के पुष्पों को चढ़ाना सर्वोत्तम माना गया है :

फूल तोड़ने का मंत्र

प्रातः कालिक स्नानादि कृत्यों के बाद देवपूजा का विधान है। एतदर्थ स्नान के बाद तुलसी, बिल्वपत्र और फूल तोड़ने चाहिये। तोड़ने से पहले हाथ–पैर धोकर आचमन कर लें। इसके बाद पूर्व की ओर मुख कर, हाथ जोड़कर निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करे :

मा नु शोकं कुरुष्व त्वं स्थान त्याग च मा कुरु।
बगलामुखी माता पूजनार्थाय प्रार्थयामि वनस्पते॥

पहला फूल तोड़ते नमः।

ॐ व्योमाय नमः।

दूसरा फूल तोड़ते समय –

ॐ व्योमाय नमः।

तीसरा फूल तोड़ते समय –

ॐ पृथिव्यै नमः।

इसके पश्चात् इच्छानुसार फूल तोड़ लें।

बिल्वपत्र तोड़ने का मंत्र

पुष्प तोड़ने के समान ही बिल्वपत्र तोड़ने के समय निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें :

अमृतोद्भव श्रीवृक्ष मातेश्वरी प्रियः सदा।
गृहामि तव पत्राणिश्रीबगलामुखी पूजार्थ मादरात॥

नोट : उपरोक्त मंत्र हाथ जोड़कर, बिल्वपत्र वृक्ष में माता बगलामुखी का ध्यान कर पढ़ें। मंत्र उच्चारण करने के बाद – तीन पत्ते वाला, शुद्ध व स्वच्छ बिल्वपत्र आवश्यकतानुसार वृक्ष से तोड़ लें।

बिल्वपत्र तोड़ने का निषिद्ध काल

साधको ! चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी और अमावस्या तिथियों को, संक्रांति के दिन और सोमवार को बिल्वपत्र न तोड़ें। निषिद्ध समय में पहले दिन का तोड़ा बिल्वपत्र चढ़ाना चाहिये।

शास्त्र ने तो यहां तक कहा है कि –

अर्पितान्यपि बिल्वानि प्रक्षाल्यापि पुनः पुनः।
शंकरायार्पणीयान न नवानि यदि क्वचित्॥

हिन्दी अनुवाद : यदि नूतन बिल्वपत्र न मिल सके तो चढ़ाये हुए बिल्वपत्र को धोकर बार–बार चढ़ाते रहें। (स्कन्द पुराण, आचारेन्दु पृ० 165)

बासी जल और फूल का निषेध

हमारे प्राचीन धर्म ग्रन्थों का कहा गया है कि :

वर्ज्यं पर्युषितं पुष्पं वर्ज्यं पर्युषितं जलम्।
न वर्ज्यं तुलसीपत्रं न वर्ज्यं जाह्नवी जलम्॥

हिन्दी अनुवाद – जो फूल, पत्ते और जल बासी हो गये हों, उन्हें देवताओं पर न चढ़ायें। किन्तु तुलसीदल और गंगाजल बासी नहीं होता।

तीर्थों के जल के बारे में कहा गया है –

न पर्युषित दोषोऽस्ति तीर्थतेयस्य चैवहि।

हिन्दी अनुवाद : तीर्थों का जल भी बासी नहीं होता।

(स्मृति सारावली)

इसी प्रकार शास्त्रों में कहा गया है कि यज्ञोपवीत और आभूषण में भी निर्माल्य का दोष नहीं आता।

माली के घर में रखे हुए फूलों में बासी दोष नहीं आता। मणि, रत्न, वस्त्र आदि से बनायें गये फूल बासी नहीं होते। इन्हें प्रोक्षण कर चढ़ाना चाहिये।

नारद जी ने मानस फूल को सबसे श्रेष्ठ फूल माना है। उन्होंने देवराज इन्द्र को बताया है कि हजारों-करोड़ों बाह्य फूलों को चढ़ाकर जो फल प्राप्त किया जा सकता है, वह केवल एक मानस फूल चढ़ाने से प्राप्त हो जाता है। इससे मानस पुष्प ही उत्तम पुष्प है। मानस पुष्प में बासी आदि कोई दोष नहीं होता। इसलिये पूजा करते समय मन से गढ़कर फूल चढ़ाने का आनन्द अवश्य प्राप्त करना चाहिये।

सामान्यतया निषिद्ध फूल

यहां न निषेधों को दिया जा रहा है जो सामान्यतया सब पूजा में सब फूलों पर लागू होते हैं -

भगवान पर चढ़ाया हुआ फूल निर्माल्य कहलाता है, सूंघा हुआ या अंग में लगाया हुआ फूल इसी कोटि में आता है। इन्हें न चढ़ायें।

भौरे के सूंघने से फूल दूषित नहीं होता। जो फूल अपवित्र बर्तन में रख दिया गया हो, अपवित्र स्थान में उत्पन्न हो, आग में झुलस गया हो, कीड़ों से विद्ध हो, सुन्दर न हो, जिसकी पंखुडियां बिखर गयी हो, जो पृथ्वी पर गिर पड़ा हो, जो पूर्णतः खिला न हो, जिसमें खट्टी गंध या सड़ांध आती हो, निर्गन्ध हो या उग्र गंध वाला हो, ऐसे पुष्पों को नहीं चढ़ाना चाहिये।

जो फूल बायें हाथ, पहनने वाले वस्त्र, रेंड के पत्ते पर रखकर लाये गये हों, वे फूल त्याज्य है। कलियों को चढ़ाना मना है। फूल को जल में डुबाकर धोना मना है। फूल को केवल जल से प्रोक्षण कर देना चाहिये।

पुष्पादि चढ़ाने की विधि

फूल, फल और पत्ते जैसे उगते हैं, वैसे ही इन्हें चढ़ाना चाहिये। उत्पन्न होते समय फूल और पत्ते का मुख ऊपर की ओर होता है, अतः चढ़ाते समय इनका मुख ऊपर की ओर ही रखना चाहिये। इनका मुख नीचे की ओर न करें।

दूर्वा एवं तुलसीदल को अपनी और बिल्वपत्र नीचे मुख कर चढ़ाना चाहिये। इनके भिन्न पत्तों को ऊपर मुखकर या नीचे मुखकर दोनों ही प्रकार से चढ़ाया जा सकता है।

दाहिने हाथ के करतल को उतानकर मध्यमा, अनामिका और अंगूठे की सहायता से फूल चढ़ाना चाहिये।

चढ़े हुए फूल को दूसरे दिन या उसी दिन अंगूठे और तर्जनी की सहायता से उतारें।

तृतीय भाग

माता बगलामुखी पूजन खण्ड

माता बगलामुखी के दीवाने भक्तों! इस खण्ड में मैं माँ बगलामुखी के विभिन्न तरह की पूजन पद्धतियों का वर्णन कर रहा हूँ जिसमें मातेश्वरी की वृहद 'वैदिक षोड़शोपचार पूजन' 'नित्य पूजन' और 'मानस पूजन' शामिल है। भक्तगण अपने समय और सुविधानुसार कोई भी पूजन-पद्धति अपनाकर माता बगलामुखी को प्रसन्न कर अपनी मनोवांछित कामनाओं की पूर्ति कर सकते हैं।

माता बगलामुखी का 'वैदिक षोड़शोपचार पूजन'

(सभी प्रकार के विपत्तियों से मुक्ति एवं धन-ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु)

साधको! वेदों और शास्त्रों में देवी-देवताओं को प्रसन्न करने हेतु उपासना विधि में सर्वोत्तम उपासना विधि षोड़शोपचार पूजन को माना गया है। षोड़शोपचार पूजन का अर्थ होता है - सोलह उपचारों द्वारा पूजन विधि सम्पन्न करना और ये सोलह उपचार हैं -

1. आवाहन, 2. आसन, 3. पाद्य, 4. अर्घ्य, 5. स्नान, 6. वस्त्र, 7. यज्ञोपवीत, 8. गन्ध, 9. पुष्पमाला, 10. दीप, 11. अक्षत, 12. पान-सुपारी, 13. नैवेद्य, 14. दक्षिणा, 15. आरती, 16. प्रदक्षिणा, पुष्पांजलि।

पूजन सामग्री

माँ बगलामुखी को पीला रंग अत्यन्त प्रिय है अत: उनके पूजन में पीले रंग की वस्तुओं का ही प्रयोग किया जाता है। इनके पूजन में निम्न प्रकार की पूजन सामग्री की आवश्यकता पड़ती है :

माता बगलामुखी की तस्वीर या मूर्ति, सिंहासन, पंचपात्र, अरघी, मिट्टी का कलश, घण्टी, पांच बत्ती वाला आरती स्टैण्ड, कम्बल या कुशा आसन, दीपक, अभिषेक पात्र, भगोने (मिट्टी की ढकनी) गिलास, थाली, कटोरी, पान, सुपरी, अक्षत (चावल), तिल, जौ, केला, मिठाई, चम्मच, हल्दी की माला, पीला चन्दन, भगवती का सम्पूर्ण पीले रंग का वस्त्र व आभूषण, पूजन की पुस्तक, तस्वीर को पोछने हेतु पीला कपड़ा, चन्द्रोटा, शंख, गंगा-जल, केसर, बिल्वपत्र, कनेर का पुष्प, पुष्पमाला, तुलसीपत्र, दूर्वा, सात रंग के गुलाल, सिन्दूर, अगरबत्ती रूई,

माचिस, गाय का कच्चा दूध, दही, देसी शुद्ध घी, शहद, गुड़, गुलाबजल, गन्ने का रस, पानी वाला नारियल, लौंग, इलायची, पंचमेवा, आम का पल्लव, केले का पत्ता, हवन सामग्री, पंचरत्न, मौली, रोली चन्दन, यज्ञोपवीत, समयानुसार फल, पीले रंग में रंगाया चावल, आम की सूखी लकड़ी, पुरोहित एवं यजमान का पीला या सफेद नवीन वस्त्र, भेंट में देने के लिये द्रव्य, कलश हेतु सालूक (लाल कपड़ा), सूखा नारियल हवन हेतु, गाय का गोबर आदि।

पूजन आरम्भ से पूर्व

यजमान और पुरोहित दोनों ही स्नान से पवित्र होकर पीली धोती पहनें। शरीर के ऊपर भी पीली चादर डाल लें। तत्पश्चात् पूजन स्थल पर गंगाजल छिड़क कर पूज़न की सभी सामग्री अपने समीप एकत्रित कर लें। फिर आम की लकड़ी के सिंहासन को स्थापित करें। सिंहासन पर भी गंगाजल छिड़क दें। इसके बाद सिंहासन पर पीला कपड़ा बिछाकर भगवती बगलामुखी की तस्वीर स्थापित करें। तत्पश्चात् कम्बल या कुशा आसन पर पुरोहित उत्तर मुख होकर और यजमान पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। सभी सामग्री अपने इतने समीप रखें जहां हाथ आसानी से पहुंच सके। सुगन्धित अगरबत्ती, धूप तथा गाय के घी का चौमुखी दीपक जलावें। पूजन आरम्भ होने से पहले यजमान अपने सिर पर पीला या सफेद रूमाल रख लें।

इसके बाद सर्वप्रथम दाहिने हाथ की अंजुलि में गंगाजल लेकर निम्न मंत्र पढ़ें और मंत्र समाप्ति के बाद अंजुलि का जल अपने शरीर पर छिड़क लें :

शरीर पवित्र करने का मंत्र

ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
य स्मरेत पुण्डरी काक्षं स बाह्याभ्यन्तर शुचिः॥
ॐ पुण्डरीकाक्षं पुनातु॥

हिन्दी अनुवाद – कोई पवित्र हो, अपवित्र हो अथवा किसी भी अवस्था में क्यों न हो, जो भगवान पुण्डरीकाक्ष का स्मरण करता है, वह बाहर और भीतर से परम पवित्र हो जाता है, अतः हे ॐ रूप पुण्डरी काक्ष हमें पवित्र करें।

नोट : अब निम्न मंत्र का उच्चारण करके कुशा की पवित्री अथवा स्वर्ण की मुद्रिका अंगूठे से चौथी उंगली (अनामिका) में धारण करें।

पवित्री धारण मंत्र

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुणा म्याछिद्रेण पवित्रेण सूर्यश्च रश्मिभिः। तस्यते पवित्र पते पूतरस्य यत्कामः पुणे तच्छकेचम्॥

नोट – अब पुरोहित यजमान के हाथ (दाहिने कलाई यदि औरत हो तो बाईं कलाई) में रक्षा सूत्र (मौली) निम्न मंत्र पढ़कर बांध दें :

रक्षा सूत्र बंधन मंत्र

ॐ मंगलं भगवान विष्णु मंगलं गरूड़ध्वज।
मंगलं पुण्डरीकाक्ष मंगलाय च तनो हरिः॥

नोट – अब पुरोहित यजमान को नीचे लिखित मंत्र का उच्चारण कराते हुए मस्तक, दोनों बाजू, सीना और कण्ठ पर पीला चन्दन लगावें।

यजमान मस्तक चन्दन लेपन मंत्र

ॐ चंदनं वन्दिते चन्द्रस्थ महत्व-पुण्यं,
पवित्र पाप नाशनम्।
आपदं हरते नित्य,
लक्ष्मी स्तिस्थि सर्वदा॥

नोट – अब निम्न मंत्र पढ़कर शिखा बांधें :

शिखा बंधन मंत्र

ॐ मानस्तोके तनयेमानङ्ग आयुषि मानौ,
गोषु मानोऊ अश्वेषु रीरिषः।
मानो विरान भामिनो वधीर्ह है।
विष्भन्तः सदमित्वा हवामहे॥

नोट – अब दीपक की पूजा करें। दीपक की पूजा करने से पूर्व दीपक के नीचे चावल रख दें और दीप माता बगलामुखी की तस्वीर की दाहिनी ओर स्थापित करें।

प्रज्जवलित दीप पूजन मंत्र

ॐ दीप ज्योतिषे नमः।

नोट – निम्न मंत्र का उच्चारण कर (गंगाजल मिश्रित) जल, अक्षत, पुष्प, चन्दन, बिल्वपत्र और नैवेद्य दीपक के पास चढ़ावें। फिर दीप की ज्योति में भगवती बगलामुखी के ज्योतिर्मय रूप की भावना करते हुए कर जोड़ कर यह श्लोक बोलें:

प्रज्जवलित दीप प्रार्थना मंत्र

भो दीप श्रीबगलामुखी स्वरूपं कर्म-साक्षी ह्वविहन कृत।
यावम कर्म समाप्तिः स्यात् तावत त्वं सुस्थि रोभव॥

हिन्दी अनुवाद – हे दीप! आप ज्योतिर्मय श्रीबगलमुखी स्वरूप हैं, कर्म के साक्षी तथा विघ्न के निवारक हैं। जब तक पूजन कर्म पूरा न हो जाय, तब तक आप सुस्थित भाव से सन्निकर रहें।

नोट : इसके पश्चात् निम्न मंत्रों को पढ़कर 'आचमन' करें। आचमन करने की प्रक्रिया है – दाहिनी हथेली के बीच में पांच कतरा (बूंद) जल लें और होठों से लगायें। यह जल कण्ठ के अन्दर नहीं जाना चाहिये। आचमन निम्न मंत्रों से क्रमशः तीन बार करें :

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः।
ॐ माधवाय नमः।

तत्पश्चात् अंतिम आचमन–

ॐ हृषिकेशवाय नमः॥

नोट : अब दाहिने अंजुलि में जल लेकर नीचे लिखित मंत्र का उच्चारण करें। उच्चारण समाप्त होते ही जल पूजा स्थल की भूमि पर छिड़क दें :

पृथ्वी पवित्री मंत्र

ॐ अपर्सषन्तु ये भूता ये भूता संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्ता-रस्ते-नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

नोट – इसके पश्चात् भगवान श्री गणेश का ध्यान करें। किसी भी पूजा पाठ या उपासना में सर्वप्रथम शुभता के दाता श्री गणेश की पूजा व ध्यान की जाती है, तभी उसमें सफलता मिलती है। हाथ जोड़कर ध्यान करें :

श्री गणेश ध्यान मंत्र

ॐ विश्वेश माधवं ढुण्ढि दण्डपाणि।
वन्दे काशी गुह्या गंगा भवानी माणिक कर्णिकाम्।।
वक्रतुण्ड महाकाय कोटि सूर्य सम्प्रभम्।
सुविघ्न कुरु मे देव सर्व-कार्येषु सर्वदा।।
सुमुखश्यै-कन्तस्य कपिलो गजकर्ण कः।
लम्बोदरस्य विकटो विघ्न नाशो विनायकः।।
धूर्मकेतु गणाध्यक्ष तो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशै-तानि नमामि च पठेच्छणु-यादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्ला वर धरं देवं शशि-वर्ण चतुर्भुजम्।
प्रसन्न बदनं ध्यायते सर्व विघ्नोप शान्तये।।
अभित्स तार्थ सिद्धयर्थ पूजितो य सुरेश्वरः।
सर्व विघ्नच्छेद तस्मै गणाधिपतये नमः।।

हिन्दी अनुवाद - हे विश्वनाथ, माधव, ढुण्ढिराज, गणेश, दण्डपाणि, भैरव, काशी, गुह्या, गंगा तथा भवानी कर्णिका का मैं वन्दना करता हूँ। टेढी सूंड़ वाले गणपति देव! आप सदा सर्वदा समस्त कार्यों में मेरे विघ्नों का निवारण करें।

सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, लम्बोदर, विकर विघ्ननाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र, गौराधि पति और गजानन ये विवाह, गृह प्रवेश, यात्रा, संग्राम तथा संकट के अवसर पर इन बारह नामों का जो पाठ व श्रवण करता है, उनके कार्य में विघ्न उत्पन्न नहीं होता है।

शुक्ल धारण करने वाले चन्द्रमा के समान गौर, चार भुजाधारी और प्रसन्न मुख वाले गणपति देव! मैं आपका ध्यान करता हूँ, आप हमारे सम्पूर्ण विघ्नों को शान्त करें।

देवताओं और असुरों ने भी अभीष्ट सिद्धि के लिये जिनकी पूजा की है, विघ्न बाधाओं के हरने वाले हैं, उन गणपति जी को नमस्कार है।

नोट : अब आप 'स्वस्तिवाचन' के पांच मंत्र पढ़ें। इस मंत्र का उच्चारण करते समय उपासक हाथ में चावल लेकर दो-चार दाने कर पूजा स्थल के सिंहासन पर छिड़कते जायें। यह चावल तब तक छिड़कते रहें, जब तक सम्पूर्ण मंत्र पढ़कर पूर्ण न कर लें।

'स्वस्ति वाचन' के पांच मंत्र

ॐ स्वस्तिनः इन्द्रो वृद्धश्रवा स्वस्तिनः पूषा विश्वदेवाः।
स्वस्तिन स्ताक्षर्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनः बृहस्पति-र्दधातु॥

हिन्दी अनुवाद - अत्यन्त यशस्वी इन्द्र हमारा कल्याण करने वाले हों। जिनके संकट नाशक चक्र को कोई रोक नहीं सकता, वह परमात्मा गरुड़ और बृहस्पति हमारा कल्याण करें।

(य.वे. 25/19 से प्राप्त)

(दूसरा मंत्र)

पंचः पृथियां पचः औषधिषु पयो दिव्यन्त।
रिक्षे पयोधाः पश्यवतिः प्रदिशाः सन्तु मह्यम्॥

हिन्दी अनुवाद - हे अग्ने! तुम पृथ्वी में रस को धारण करो, औषधि में रस की स्थापना करो, स्वर्ग में और अंतरिक्ष में भी रस को स्थापित करो। मेरे लिये दिशा-प्रदिशा सभी रस देने वाले हों। (य. वे. 18/39 से प्राप्त)

(तीसरा मंत्र)

ॐ द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षग्वं शान्तिः पृथिवी शान्तिः रापः शान्तिः रोषधयः शान्तिः शान्ति-र्वनस्पतयः शान्ति विश्वदेवाः शान्तिः स्वर्ग्वं शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्ति शान्ति रेधि। सुशान्तिर्भवतु॥

हिन्दी अनुवाद - स्वर्ग, अन्तरिक्ष और पृथ्वी शान्त रूप हो। जल, औषधि, वनस्पति, विश्वदेवता, ब्रह्मरूप ईश्वर, सब संसार शान्ति रूप हो। जो साक्षात शान्ति हैं, वह भी मेरे लिये शान्ति देने वाली हो।

(य.वे. 36/17 से प्राप्त)

(चौथा मंत्र)

इमा रूद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्विराय प्रभामहे-मतिः। यथा शमशादि द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन् नातुरम्॥

हिन्दी अनुवाद - पुत्रोदि मनुष्यों में जैसे कल्याण की प्राप्ति हो और इस ग्राम के मनुष्य उपद्रव से रहित हों, उसी प्रकार मैं अपने श्रेष्ठ मतियों को जटाधारी रुद्र के निर्मित अर्पित करता हूँ।

(पांचवा मंत्र)

ॐ गणानांत्वा गणपतिग्वं हवामहे प्रियानांत्वा प्रयपतिग्वं हवामहे निधिनांत्वा निधिपतिग्वं हमावहे वसोमम आहम जानि-गर्भद मात्व मजासि गर्भधम्।

हिन्दी अनुवाद - हे गणपति! तुम सब गणों के स्वामी हो, हम तुम्हें आहुत करते हैं। प्रियो के मध्य निवास करने वाले प्रियों के स्वामी हम तुम्हें आहुत करते हैं, हे निधियों के मध्य निवास करने वाले निधिपते! हम तुम्हें आहुत करते हैं। तुम श्रेष्ठ निवास करने वाले रक्षक होवो। मैं गर्भ धारण जल को सब प्रकार से आकर्षित करता हूँ, तुम गर्भधारण करने वाले को अभिमुख करते हो। तुम सब पदार्थ के रचयिता होते हुए सब प्रकार से अभिमुख होते हो। (य.वे. 23/19 से प्राप्त)

नोट : अब पूजन का संकल्प करें। इस सन्दर्भ में दाहिनी हथेली पर, पान, सुपारी, द्रव्य, अक्षत, गंगाजल, पुष्प, तिल आदि लेकर निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण कें। संकल्प मंत्र के मध्य जहां भी 'अमुक' शब्द का उच्चारण किया गया है, वहां क्रमशः नगर, ग्राम, स्थान, मास, तिथि, नक्षत्र, योग, वार, गोत्र आदि का नाम उच्चारण करें। संकल्प मंत्र उच्चारण पूर्ण होने के पश्चात् हथेली की वस्तुयें भगवती के सिंहासन पर अर्पित कर दें।

पूजन संकल्प मंत्र

हरि ॐ तत्सत। ॐ विष्णु-र्विष्णु नमः परमात्मने श्री पुराणं-पुरुषोत्भाय श्रीमद् भगवते महापुरुषस्य विष्णो राज्ञया प्रर्वत-मानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोह्निं द्वितीय प्रहरार्द्धे, श्री श्वतवाराह-कल्पे पैवस्वत मनवन्तरे अष्टां विशतितमे युगे कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोक जम्बू-द्विपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्त-देशे 'अमुक' नगरे अमुक ग्रामे, अमुक स्थाने, वा वोद्धावतारे अमुक नाम, संवत्सरे श्री सूर्य अमुकायने अमुक तौ महामांगल्यप्रद मासोत्तमे मासे अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक नक्षत्रे, अमुक वासरे

अमुक योगे, अमुक करणे, अमुक राशि स्थित देव-गुरौ शेषसु ग्रहेषु च यथा अमुक शर्मा महात्मनः मनोकामना पूर्ति, विद्या-बुद्धि-ज्ञान-प्रगति-सफलता हेतु, धन-जन-सुख-सम्पदा, प्रसन्नता, परिवार सुख-शान्ति, ग्राम सुख-शान्ति हेतु श्री बगलामुखी मातेश्वरी सहित सर्व देवता पूजन, कलश स्थापन, हवन कर्म, आरती कर्म अहम् करिष्येत्।

नोट - इसके पश्चात् पंचदेवता का पूजन करें। इस सन्दर्भ में केले के पत्ते पर सिंहासन के दाहिने तरफ पांच पान के पत्ते, पांच सुपारी और नैवेद्य रखें और उसी पर पंचदेवता की पूजा करें। इस क्रम में सर्वप्रथम दाहिने हाथ की अंजुलि में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़ें। मंत्र समाप्ति के बाद जल पान पत्ते पर रख दें। इसी प्रकार क्रमशः अक्षत, तिल, चन्दन, बिल्वपत्र, पुष्प, तुलसी पत्ते, नैवेद्य और पुनः जल से पूजन करें।

भगवान पंचदेवता का पूजन

गंगाजल से :

ॐ गंगाजले स्नानियम भगवते श्री पंचदेवता नमः।

अक्षत से :

इदम् अक्षतम् समर्पयामि भगवते श्री पंचदेवता नमः।

तिल से :

एते तिला समर्पयामि भगवते श्री पंचदेवता नमः।

चन्दन :

इदम् चन्दनम् लेपनम समर्पयामि भगवते श्री पंचदेवता नमः।

बिल्वपत्र से :

इदम् बिल्वपत्रानियम्र समर्पयामि भगवते श्री पंचदेवता नमः।

पुष्प से :

इदम् पुष्पम् समर्पयामि भगवते श्री पंचदेवता नमः।

नैवेद्य से :

इदम् नैवेद्यं समर्पयामि भगवते श्री पंचदेवता नमः।

पुन: गंगाजल से :

एतानि गंध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बुल यथा भाग नैवेद्यानि भगवते श्री पंचदेवता नमः।

नोट : पंचदेवता पूजन समाप्त होने के पश्चात् माता बगलामुखी के कलश की स्थापना करें।

'कलश पूजन' समाप्त होने के पश्चात् कलश पर ही क्रमशः निम्नलिखित देवी-देवताओं का पूजन उपरोक्त लिखित भगवान पंचदेवता पूजन के ही समान करें :

ॐ इन्द्रादिक-दस्तिकपालेभ्यो नमः, श्री इष्ट देवता भ्यो नमः, श्री ग्राम देवताभ्यो नमः, श्री कुलदेवताभ्यो नमः, श्री कुबेरभ्यो नमः, श्री नवदुर्गा भ्यो नमः, श्री महाकाली भ्यो नमः, श्री महालक्ष्मी भ्यो नमः, श्री रामलक्ष्मण सहित मातेश्वरी सीता भ्यो नमः, श्री राधा कृष्णाय नमः, श्री गौरी शंकराय नमः, श्री सर्वदेवता कुलदेवता भ्यो नमः।

अब भगवती बगलामुखी का सोलह उपचार पूजन आरम्भ करें।

पूजन क्रम को बढ़ाते हुए भगवती माता बगलामुखी के कलश स्थापना का विधान आरम्भ करें :

कलश स्थापना विधि और कलश पूजन

सर्वप्रथम सतरंगे चावल या गुलाल से अष्ट दल कमल पूजन स्थान पर भगवान के सिंहासन के आगे बनावें। तत्पश्चात् शुद्ध मिट्टी या जौ का थड़ा बनाएं। उस थड़ा के मध्य सिन्दूर के पांच तिलक किया हुआ जल से भरा घड़ा रखें। तत्पश्चात् कलश के पेंदे के पास हाथ रखकर यह मंत्र पढ़ें :

कलश भूमि स्पर्श मंत्र

ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वछाया विश्वस्य भुवनस्य धत्रीं पृथिवीं दुखहिं पृथिवीं मांहिसी।

नोट - इसके पश्चात् कलश के मुख को दाहिनी हथेली से बंद करके निम्नलिखित मंत्र पढ़ें :

ॐ वरूणस्योत्तत्भ वरूणस्य-स्कम्भ सर्जनीस्थां-वरूणस्य ऋत-सदन्यसि वरूणस्य ऋत-सदनमीस वरूणस्य ऋत-सदन-मासीद।

नोट - अब कलश में सर्वोसधि डालें :

कलश सर्वौसधि समर्पण मंत्र

ॐ या औषधि पूर्वाजाता देवेभ्य स्वि-युगमपुरा।
मनैनुव-भ्रणा-महग्व शतन्धा-मणि सप्त च॥

नोट – अब कलश में दूर्वा (घास) डालें –

कलश दूर्वादल समर्पण मंत्र

ॐ काण्डात-काण्डात पुरुषः पुरुषपरिः।
एवानो दुर्वे-प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥

नोट – अब कलश में 'पंचरत्न' डालें :

कलश पंचरत्न समर्पण मंत्र

ॐ परिवाज पतिः कविरग्निः र्हव्यान्य-क्रमी दधद्रत्नानि दाशुषे।

नोट – अब कलश में पुंगीफल (सुपारी) डालें –

कलश पुंगीफल समर्पण मंत्र

ॐ या फलिनीयां अकलां अपुष्पा यास्य पुविषणीः।
वृहस्पतिः प्रसुता-स्तानो मुञ्चंत्वग्वं हसः॥

नोट – अब कलश में सुवर्ण या द्रव्य डालें –

कलश द्रव्य समर्पण मंत्र

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीद्या मुतोमाङ्ग कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

नोट – अब कलश में 'आम का पल्लव' डालें –

कलश श्रीफल समर्पण मंत्र

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्य पत्न्यां ब्रहोरात्रो पाश्वे नक्षत्राणि-रूप मश्विनो व्याप्तम्। इष्पान्नि षाणां मुम्म इषाण सर्व लोकम्प इषाण॥

नोट – अब कलश में लाल वस्त्र एवं मौली लपेटें :

शरीर वस्त्र समर्पण मंत्र

ॐ वस्त्रो पवित्रमसि शतधारं वसो पवित्र मसि-सहस्त्र धारम। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण-शतधारेण सुत्वा काम धुक्षः ॥

नोट - अब कलश के साथ गाय का गोबर स्पर्श करावें :

कलश में गाय गोबर स्पर्श मंत्र

ॐ मानस्तोषे तनयेमान आयुष्मान व्यर्दि-वृविषः। सदमित्वा हवामहे इति गोमयेन् कलश स्पर्शयत॥

नोट - अब कलश पे जल देवता 'वरुण देव' का आवाहन करें। इस क्रम में सटे हुए दोनों तलहथी कलश के सामने करें और निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें :

श्री वरुण देव आवाहन मंत्र

ॐ तत्वा-यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्त यजमानो हविर्भिः। अहेऊ मानो वरूणोह वोध्यु-षग्वं आयुः प्रमोषिः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो वरूण इहतिष्ठ स्थापयामि पूजयामि॥

नोट - इसके पश्चात् सम्पूर्ण तीर्थों एवं नदियों का कलश पर आवाहन करें :

सम्पूर्ण तीर्थ एवं नदियों का आवाहन मंत्र

ॐ सर्वे-समुद्रा सरितसं तीर्थानी जलदा नदाः-आयान्तु देविः पूजार्थ दुरि-तक्ष्कारकाः। कलशस्य मुखे श्री बगलामुखी कण्ठे-रूद्रः समाश्रितः॥

नोट - अब निम्न मंत्र पढ़ते हुए कलश पर अक्षत छिड़कें :

कलश प्राण-प्रतिष्ठा मंत्र

ॐ मनोज्योर्ति-जुषता भाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञामिवं तनो-त्वरिष्टं यज्ञ सीममं दधातु।
विश्व-देवास इह महासरस्वती सर्व देव सर्व देवी माद-यन्तामे इह प्रतिष्ठ्।

नोट - अब निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण कर मातेश्वरी बगलामुखी का आवाहन करें।

माता बगलामुखी आवाहन मंत्र

ॐ सहस्त्र शीर्षा: सहस्त्राक्ष: सहस्त्र-पातस-
भूमिग्वं सव्वेत्-स्तपुत्वाऽ यतिष्ठ दर्शागुलाम्।
आगच्छ भगवती बगलामुखी स्थाने-चात्र स्थिरो भव॥
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्वं सिन्धौर भव।
ॐ भगवती बगलामुखी आवाह यामि स्थापयामि॥

नोट - सिंहासन पर बिछे वस्त्र का स्पर्श करते हुए यह मंत्रोच्चारण करें -

माता बगलामुखी आसन समर्पण मंत्र

ॐ विचित्र रत्न-खचितं दिव्या-स्तरण-संयुक्तम।
स्वर्ण-सिंहासन चारू गृहिष्व भगवती बगलामुखी पूजित:॥

हिन्दी अनुवाद - हे शत्रुओं का संहार करने वाली माता! यह सुन्दर स्वणमय सिंहासन ग्रहण कीजिये। इसमें विचित्र रत्न जड़े गये हैं तथा इस पर दिव्य बिस्तर बिछा हुआ है।

नोट : अब हाथ की अंजुलि में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़ें, मंत्र समाप्त होते ही जल सिंहासन पर छोड़ दें :

पाद्य जल समर्पण मंत्र

ॐ सर्वतीर्थ समुदभूतं पाद्यं गन्धदिभिर्युतम्।
अनिष्टहर्ता गृहाणेदं भगवती भक्त-वत्सल:॥
ॐ श्री बगलामुखी नम:। पाद्ययो पाद्यं समर्पयामि॥

हिन्दी अनुवाद - हे भक्त वत्सला बगलामुखी माँ! यह सारे तीर्थों के जल से तैयार कया गया तथा चन्दन आदि से मिश्रित 'पाद्य जल' पैर पखारने हेतु ग्रहण करें।

नोट : अब अरघी से चन्दन युक्त जल सिंहासन पर निम्न मंत्र उच्चारण कर समर्पित करें।

अर्घ्य समर्पण मंत्र

ॐ शत्रुविनाशकर्ती नमस्तेस्तु गृहाण करूणाकर:।
अर्घ्यं च फलं संयुक्तं गंधमाल्या-क्षतैयुतम्॥

हिन्दी अनुवाद - हे शत्रुविनाशकर्ते! आपको नमस्कार है। आप गन्ध, पुष्प, अक्षत और फलादि रसों से युक्त यह अर्घ्य जल स्वीकार करें।

नोट : अब निम्न मंत्र उच्चारण करते हुए अरघी से तीन बार जल-सिंहासन पर छोड़ें:

शववाहनधात्री नमस्तुभ्यं त्रिदशै-रभिवन्दित।
गंगोदकेन देवेशि कुरूष्वा-यमनं भगवती॥

हिन्दी अनुवाद - हे दयालु मातेश्वरी! आपको नमस्कार है। आप गंगाजल से आचमन करें।

नोट : इसके बाद अरघी में दूध भरकर माता की प्रतिमा या तस्वीर को स्नान कराएं। इस क्रम में थोड़ा-सा दूध अरघी के द्वारा प्रतिमा के चरणों पर डालें :

दुग्ध स्नान मंत्र

कामधेनु समुदभूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञ हेतुश्चः पयः स्नानार्थम-समर्पितम्॥

हिन्दी अनुवाद - हे माते! कामधेनु के थन से निकला, सबके लिये पवित्र जीवनदायी तथा यज्ञ के हेतु यह दुग्ध आपके स्नान के लिये अर्पित है।

नोट : अब अरघी में दही लेकर मातेश्वरी को स्नान कराएं :

दधि स्नान मंत्र

पयस्तु मातेश्वरी समुदभूतं मधुराम्लं शशि-प्रभम्।
दध्या-नीतं मया स्नानार्थं प्रति-गृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद - हे भगवती! यह दूध से निर्मित मीठा-खट्टा, चन्द्र के समान उज्जवल दही ले आया हूँ, आप इससे स्नान करें।

नोट : इसके पश्चात् माता बगलामुखी को गाय के घी से स्नान कराएं :

घृत स्नान मंत्र

ॐ नवनीतं समुत्पन्नं सर्व-संतोष-कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदस्यामि स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद - हे बगलामुखी माते! मक्खन से उत्पन्न तथा सबको संतुष्ट करने वाला यह घृत मैं आपको अर्पित करता हूँ, इससे स्नान करें।

नोट : अब शहद से स्नान कराएं।

शहद स्नान मंत्र

पुष्प रेणु समुद-भूतं सुस्वाद मधुरं मधु।
तेज पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थ प्रति गृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद – हे दया की सागर जगदम्बे! पुष्प के पराग से उत्पन्न तेज की पुष्टि करने वाला दिव्य स्वादिष्ट मधु आपके समक्ष प्रस्तुत है, इसे स्नान के लिये ग्रहण करें।

नोट : इसके पश्चात् गन्ने के रस से स्नान कराएं :

शर्करा स्नान मंत्र

इक्षुसार-समुदभूतं शर्करा पुष्टि वा शुभा।
मलाप-हारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद – हे महादेवी! ईख के सारतत्त्व से तथा मैल को दूर करने वाली है, आपकी सेवा में प्रस्तुत है, इसे स्नान हेतु ग्रहण करें।

नोट : अब माता बगलामुखी जी की तस्वीर को पुनः गंगाजल से स्नान कराएं:

शुद्धोदक स्नान मंत्र

गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्वदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद – हे मातेश्वरी बगलामुखी! यह शुद्ध जल के रूप में गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, सिन्धु और काबेरी का जल यहां विद्यमान है। शुद्धोदक स्नान के लिये यह जल ग्रहण करें।

नोट : अब दया की देवी माता बगलामुखी पर सुगन्धित इत्र छिड़कें :

सुवासित स्नान मंत्र

चम्पा-काशोप मालती मोगरा-दिर्भिः।
वासित स्निग्धता हेतु तैल चारु प्रति-गृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद – हे माता! चम्पा, अशोक, मौलसरी, मालती और मोगरा आदि से वासित तथा चिकनाहट के हेतु यह तेल, इत्र आप ग्रहण करें।

नोट : अब माता को पीला वस्त्र समर्पित करें :

वस्त्र समर्पण मंत्र

शीत-वातोष्णं-संत्राणां लज्जाया रक्षणं परम्।
देहा-लंकारणं वस्त्रमतः शान्ति प्रयच्छ मे॥

हिन्दी अनुवाद – हे शत्रुओं का संहार करने वाली महादेवी! यह वस्त्र आपकी सेवा में समर्पित है। यह सर्दी, गर्मी, हवा से बचाने वाला, लज्जा का उत्तम रक्षक तथा शरीर का अलंकार है, इसे ग्रहण कर मुझे शान्ति प्रदान करें।

नोट : अब माता को पीला चादर ओढ़ाएं।

उत्तरीय वस्त्र समर्पण मंत्र

उत्तरीयं तथा देवी नाना-चित्रित मुत्तमम्।
गृहणेदं मया भक्तनया दत्तं तत सफलं कुरू॥

हिन्दी अनुवाद – हे देवी! भिन्न-भिन्न प्रकार के चित्रों से सुसज्जित यह उत्तम उत्तरीय वस्त्र मैंने भक्ति पूर्वक अर्पित किया है। इसे ग्रहण कर मेरा जीवन सफल बनायें।

नोट : अब भगवती को यज्ञोपवीत चढ़ायें :

यज्ञोपवीत समर्पण मंत्र

नव-भिस्तन्तु-भिर्यक्तं त्रिगुणं देवता मयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरी॥

हिन्दी अनुवाद – हे परमेश्वरी! नौ तन्तुओं से बना त्रिगुण और देवता-स्वरूप यज्ञोपवीत मैंने समर्पित किया है, आप इसे ग्रहण करें।

नोट : अब मातेश्वरी को पीला चन्दन लगाएं :

चन्दन विलेपन मंत्र

ॐ श्रीखण्ड-चन्दनं दिव्यं गंधाद्यं सुमनोहरम्।
विलेपन कलिहरा चन्दनं प्रतिगृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद – हे कलिहरा! यह दिव्य श्रीखण्ड चन्दन सुगन्ध से पूर्ण तथा मनोहर है। विलेपन के लिये यह चन्दन स्वीकार करें।

नोट : अब अक्षत चढ़ाएं :

अक्षत समर्पण मंत्र

अश्ताश्च भगवती कुंकुं - भाक्ता सुभोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वरी॥

हिन्दी अनुवाद – हे परमेश्वरी! ये कुंकुम में रंगे हुए सुन्दर अक्षत हैं। मैं भक्ति भाव से आपकी सेवा में अर्पित करता हूँ, इन्हें ग्रहण कीजिये।

नोट : अब भगवती को पुष्प चढ़ावें :

पुष्प समर्पण मंत्र

बन्दारूज-नाम्बदार कनेर प्रिये धीमहि।
कनेर जानि पुष्पाणि चमेली-र्दीन्मु-पेहि भो॥

हिन्दी अनुवाद - वन्दना करने वाले भक्तों के लिये कनेर कल्पवृक्ष के समान कामना पूरक है। हे कनेर प्रिय भगवती! कनेर तथा चमेली आदि के पुष्प ग्रहण कीजिये।

नोट : अब दूर्वा चढ़ायें :

दूर्वा अर्पण मंत्र

दूर्वा-कुरान सुहरि तान्मृताण मंगल प्रदान।
अनीतां स्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वरी॥

हिन्दी अनुवाद - हे जगत् की अम्बे! आपकी पूजा के लिये मेरे द्वारा अत्यन्त हरे अमृतमय तथा मंगलप्रद दूर्वांकुर लाये गये हैं। आप इन्हें ग्रहण करें।

नोट : अब सिन्दूर समर्पित करें -

सिन्दूर समर्पण मंत्र

सिन्दुरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुख वर्द्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद - हे मातेश्वरी बगलामुखी! सुन्दर लाल, सौभाग्य सूचक, सुख वर्द्धक, शुभद तथा कामपूरक सिन्दूर आपकी सेवा में अर्पित है, इसे स्वीकार करें।

नोट : इसके पश्चात् माता के चरणों में पांच रंगा गुलाल बारी-बारी से चढ़ावें।

पचरंग गुलाल अर्पण मंत्र

नाना-परिमले द्रव्यौ-निर्मितं-चूर्ण-मुत्तमम्।
गुलाल नामकं चूर्ण गन्धाद्यं चारू प्रतिगृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद - हे माते! तरह-तरह के सुगन्धित द्रव्यों से निर्मित यह गन्ध युक्त गुलाल नामक उत्तम चूर्ण ग्रहण कीजिये।

नोट : अब सुगन्धित अगरबत्ती जलाकर दिखावें :

सुगन्धित गन्ध अर्पण मंत्र

वनस्पति रसोद भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोद्यं प्रतिग्रहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद – हे भक्त वत्सला जगदम्बे! वनस्पतियों के रस से निर्मित सुगन्धित, सुगन्ध रूप और समस्त देवी-देवताओं के सूंघने योग्य यह अगरबत्ती आपकी सेवा में अर्पित है, इसे ग्रहण करें।

नोट : अब जगत्-जननी मातेश्वरी को प्रज्जवलित दीप दिखावें :

दीप-दर्शन मंत्र

साज्यं च वर्ति-संयुक्तं वाहिनां योजितं मया।
दीप गृहाण त्रैलोक्य तिमिरा-पहम्॥
भक्तया दीपं प्रयच्छामि देवी महेश्वरी॥
त्राहि मां निरयाद घोरा-हो पञ्चोतीर्ण भो स्तुते॥

हिन्दी अनुवाद – हे ममतामयी देवी! घी में डुबोई रूई की बत्ती को अग्नि से प्रज्जवलित करके दीपक आपकी सेवा में अर्पित कर रहा हूँ, इसे ग्रहण कीजिये। यह दीप त्रिभुवन के अन्धकार को मिटाने वाला है। मैं अपनी भगवती को यह दीप अर्पित करता हूँ। हे देवी! आप हमें घोर नरक से बचाइये।

नोट : इसके पश्चात् मिठाइयां एवं मौसमानुसार फल, पंचमेवा आदि नैवेद्य समर्पित करें :

नैवेद्य समर्पण मंत्र

नैवेद्यं गृहयन्ताम् देवी भक्तिमे-ह्याचलं कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां-गतिम्॥
शर्करा खण्ड खाद्यानि दिव्य-क्षीर घृताणि च।
आहारं भक्ष्य भोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद – हे जगदीश्वरी! आप यह नैवेद्य ग्रहण करें तथा मेरी भक्ति को अविचल करें। मुझे वांछित वर दीजिये और परलोक में परमगति प्रदान कीजिये। शक्कर व चीनी से तैयार किये गये खाद्य-पदार्थ, दही, दूध, घी एवं भक्ष्य-भोज्य विभिन्न फल आहार नैवेद्य के रूप में अर्पित है, इसे स्वीकार कीजिये।

नोट : अब सिंहासन पर पान-बीड़ा चढ़ावें :

पान-बीड़ा समर्पण मंत्र

ॐ पूंगीफलं महादिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एला-चूर्णादि संयुक्तं ताम्बुलं प्रतिगृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद - हे माँ कलिनाशिनी! महान् दिव्य पूंगीफल (सुपारी), इलायची और चूना आदि से युक्त पान का बीड़ा आपकी सेवा में अर्पित है, इसे ग्रहण करें।

नोट : अब नारियल फल अर्पित करें -

नारियल पल अर्पण मंत्र

इदं फलं मया देवी स्थापित पुर-तस्तव।
तेन मे सफलानत्ति भरवेजन्मनि जन्मनि॥

हिन्दी अनुवाद - हे शक्तिदात्री! यह नारियल फल मैंने आपके समक्ष समर्पित किया है, जिससे हमें जन्म-जन्मांतर तक सफलता प्राप्त हो।

नोट : अब माता बगलामुखी को दक्षिणा (द्रव्य) समर्पित करें।

दक्षिणा अर्पण मंत्र

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः।
अनन्तं पुण्यफल दमतः शान्ति प्रयच्छ मे॥

हिन्दी अनुवाद - हे करुणा की सागर नित्या! सुवर्ण हिरण्य गर्भ ब्रह्मा के गर्भ में स्थित 'अग्नि का बीज' है। यह अनन्त पुण्यफलदायक है। मातेश्वरी यह आपकी सेवा में अर्पित है। इसे ग्रहण कर हमें शान्ति प्रदान करें।

नोट : इसके पश्चात् दोनों हथेलियो में पुष्प भरकर, खड़े होकर, मंत्र पढ़ने के पश्चात् हथेलियों का पुष्प पुष्पांजलि के रूप में भगवती के सिंहासन पर समर्पित करें।

पुष्पांजलि समर्पण मंत्र

माना सुगन्धि पुष्पाणि यथा कलोद भवा च।
पुष्पांजलिर्मया दत्तौ गृहाण परमेश्वरी॥

हिन्दी अनुवाद - हे परमेश्वरी! यथा समय पर उत्पन्न होने वाले तरह-तरह के सुगन्धित पुष्प, मैं पुष्पांजलि के रूप में समर्पित करता हूँ, इन्हें स्वीकार कीजिये।

नोट : अब खड़े होकर, हाथ जोड़कर जगत्-माता बगलामुखी जी के सिंहासन या प्रतिमा के चारों ओर घूम-घूम कर पांच बार परिक्रमा करें और निम्न मंत्र का उच्चारण करते रहें –

प्रदक्षिण मंत्र

यानि-कानि च पापानि च ज्ञाता-ज्ञात कृताणि च।
तानि-सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे-पदे ॥

हिन्दी अनुवाद – हे भक्तों की रक्षा करने वाली जगत् रक्षिका माते ! मनुष्यों से जाने-अनजाने में पाप हो जाते हैं, वे पाप आपकी परिक्रमा करते समय पद-पद पर नष्ट हो जाते हैं।

नोट : इसके पश्चात् लोटे में जल भरकर, खड़े होकर लोटे का जल बूंद-बूंद करके सिंहासन के पास गिराएं और निम्न मंत्र का उच्चारण करें :

अर्घ्य समर्पण मंत्र

रक्ष-रक्ष भक्त-वत्सला रक्ष त्रिलोक्य रक्षिका।
भक्तानां भयं कर्त्ता त्राता भाव भवार्ण-वात्॥

हिन्दी अनुवाद – हे त्रिलोक की रक्षा करने वाली मातेश्वरी ! रक्षा कीजिये, रक्षा कीजिये। आप भक्तों को अभय देने वाले और भवसागर से उनकी रक्षा करने वाले हैं, आपको करोड़ों नमस्कार हैं।

नोट : साधको ! अब यहीं पर भगवती बगलामुखी का 'षोड़शोपचार पूजन' समाप्त है, परन्तु पूजन समाप्ति के पश्चात् मातेश्वरी बगलामुखी के 108 नामों का पाठ, स्तुति पाठ, हवन, आरती एवं विसर्जन कर्म करना अनिवार्य है।

माता बगलामुखी के 108 नामों का पाठ

ॐ बगलामुखी, कलिहरा, वेदमाता नमो नमः।
ॐ कृष्णा, कोटिसूर्य प्रतीकाश, विष्णुवनिता नमो नमः।
ॐ कलिदुर्गर्तिनाशिनी, रुद्राणी, नक्षत्र रूपा नमो नमः।
ॐ कपर्दिनी, कृत्या, कलहा नमो नमः
ॐ कलिनाशिनी, बुद्धिरूपा, बुद्धभार्या नमो नमः।
ॐ केवला, कठिना, काली नमो नमः।
ॐ नक्षत्ररूपा, नक्षत्रा, नक्षत्रेण नमो नमः।
ॐ नीरदा, पीता, श्यामा नमो नमः।

ॐ नीला, घना, शुभ्रा नमो नमः।
ॐ सुन्दरा, सौम्या, सुभगा नमो नमः।
ॐ भामिनी, तथामया, स्तभिनी नमो नमः।
ॐ परमेश्वरी, पराणुरूपा, परमा नमो नमः।
ॐ वरदानपरायणा, वरदेशप्रियावीरा, वसुदा नमो नमः।
ॐ वरिभूषणभूषिता, बहुदा, वाणी नमो नमः।
ॐ बलदा, पीतवसना, पीतभूषणभूषिता नमो नमः।
ॐ श्वेता, सौभाग्यदायिनी, स्वर्णभा नमो नमः।
ॐ स्वर्गातिप्रदा, रिपुत्रासकरी, रेखा नमो नमः।
ॐ शत्रुसंहारकारिणी, मोहिनी, रागद्वेषकरी नमो नमः।
ॐ कलाकैवल्यदायिनी, केशवी, किशोरी नमो नमः।
ॐ कोटिकन्दर्प, केशवाराध्या, केशवस्तुता नमो नमः।
ॐ रुद्ररूपा, रूद्रमूर्ति, नित्या नमो नमः।
ॐ वह्निप्रिया, ब्रह्मास्त्र, ब्रह्मविद्या नमो नमः।
ॐ ब्रह्ममाया, ब्रह्मोशी, ब्रह्मचारिणी नमो नमः।
ॐ ब्रह्मकैवल्यबगला, नित्यानन्दा, नित्यरूपा नमो नमः।
ॐ कमला, विलमा, कामप्रिया नमो नमः।
ॐ मंगला, विजया, सर्वमंगलकारिणी नमो नमः।
ॐ प्राणप्रिया, कामाख्या, कामबीजस्था नमो नमः।
ॐ कालाक्षी, कालिका, कमलानना नमो नमः।
ॐ खंगहस्ता, खंगरता, खर्परप्रिया नमो नमः।
ॐ गौरांगी, गोपिकामूर्तिर्गोपी, गोष्ठवासिनी नमो नमः।
ॐ उत्तमा, उन्नता, उत्तमस्थानवासिनी नमो नमः।
ॐ चामुण्डा, मुण्डिता, उग्रचण्डा नमो नमः।
ॐ चण्डरूपा, प्रचण्डा, चण्डशरीरिण नमो नमः।
ॐ जयिनी, जायिनी, ज्योत्स्ना नमो नमः।
ॐ ईमना, मानसी, टमनप्रिया नमो नमः।
ॐ दिगम्बरा, पुष्पावती, पीतपुष्पार्चना नमो नमः।

मातेश्वरी बगलामुखी का 'नित्य पूजन'

निष्काम भाव से नित्य ही मातेश्वरी बगलामुखी की साधना करने वाले साधक को चाहिये कि वे ब्रह्म मुहूर्त्त (प्रातः चार बजे) में निद्रा को त्यागे। शौचस्नानादि से निवृत्त हो पवित्र हो जायें। फिर स्वच्छ वस्त्र धारण कर, पूर्व दिशा की ओर मुख करके भगवती बगलामुखी की तस्वीर के सामने पीला कम्बल के आसन पर बैठ जाएं। बैठने से पूर्व निम्नलिखित पूजन सामग्री अपने पास एकत्रित कर लें। भगवती की तस्वीर कनेर की लकड़ी (अभाव में आम की लकड़ी) के सिंहासन पर पीला वस्त्र बिछाकर स्थापित करें। तत्पश्चात् धूप या सुगन्धित अगरबत्ती व शुद्ध गाय के घी का दीपक लगाएं। इसके पश्चात् पूजन आरम्भ करें। सर्वप्रथम निम्नलिखित पूजन सामग्री अपने पास एकत्रित कर लें।

नित्य पूजन सामग्री

भगवती बगलामुखी की तस्वीर, कनेर की लकड़ी (अभाव में आम की लकड़ी) का बना सिंहासन, सिंहासन पर बिछाने हेतु पीले रंग का वस्त्र, दीपक, रूई, अगरबत्ती या धूप, गाय का घी, पीला चन्दन या हल्दी का चन्दन, गंगाजल, तुलसी के पत्ते, कनेर का पुष्प अथवा कोई भी पीला पुष्प, बिल्वपत्र, पीले रंग में रंगा अखा चावल, नैवेद्य, दूर्वा, सिन्दूर, माचिस आदि।

पूजन आरम्भ

सर्वप्रथम दाहिने हाथ की अंजुलि में गंगाजल लेकर नीचे लिखित मंत्र को पढ़ें। मंत्र समाप्त होते ही अंजुलि का जल शरीर पर छिड़क लें।

पवित्र होने का मंत्र

हे मन्दाकिनी गंगे माँ, तन मन करो पवित्र।
हो जायें देव, नाग, गन्धर्व व मानव मित्र॥
'श्री बगला' प्रेम की भावना, देहु हृदय जगाय।
रोम-रोम माँ बगलामुखी जपे और नहीं कुछ भाय॥
मेरी विनती गंगे माँ, चरण करें स्वीकार।
तन-मन-हृदय पवित्र करें, मांग रहा हूँ प्यार॥

नोट : मंत्रोच्चारण समाप्त होते ही अंजुलि का जल शरीर पर छिड़क लें। तत्पश्चात् हाथ जोड़कर गणनायक श्री गणेश की वन्दना करें, क्योंकि किसी भी पूजन के आरम्भ में सर्वप्रथम श्रीगणेश पूजन न करें तो साधना-उपासना सफल नहीं होती। अतः आत्मशुद्धि के बाद गणेश जी का ध्यान करें।

श्री गणेश ध्यान मंत्र

कृपा करें गणनायक जी, शुभता करदें साथ।
ऋद्धि-सिद्धि, शुभ लाभ जी, सब है तेरो हाथ॥
सर्व सिद्धि मम साथ करें, हे गणपति भगवान।
पूर्ण करे प्रभु कामना, बारम्बार प्रणाम॥

नोट : इसके बाद दाहिने हथेली पर अक्षत, चन्दन, पुष्प, बिल्वपत्र, दूर्वा, सिन्दूर, गंगाजल एवं लड्डू लेकर नीचे लिखित मंत्र का उच्चारण करें। मंत्र समाप्त होते ही हाथ की वस्तुयें भगवान गणपति को समर्पित कर दें :

श्री गणेश पूजन सामग्री समर्पण मंत्र

नाना-विविध वस्तुओं से, गणपति तुझे रिझाता हूँ।
हृदय समर्पित करके प्रभु जी, अपना विनय सुनाता हूँ॥
पूजा की विधि न जानूं, न पूजन का सामान।
तन-मन-हृदय समर्पित है, हे गणपति भगवान॥

नोट : अब पुनः गंगाजल अंजुलि में लेकर निम्न मंत्र पढ़ें। मंत्र समाप्ति के पश्चात् अंजुलि का जल भगवती बगलामुखी के सिंहासन पर छिड़क दें :

माता बगलामुखी आसन शुद्धि मंत्र

हे त्रिवेणी गंगे माँ, आसन करो पवित्र।
होंगे विराजित माँ बगलामुखी, संग में सारे इष्ट॥
आसन मते पवित्र किये, होवें विराजमान।
पास मेरी एक भावना, पूजन का सामान॥
दीन-हीन पर दया को, हे देवी सरताज।
शत्रुओं का संहार करो, विनती सुन लो आज॥

नोट : इसके पश्चात् गंगाजल से भगवती को स्नान कराऐं। इस क्रम में अंजुलि में गंगाजल लेकर निम्न मंत्र पढ़ें। मंत्र समाप्ति के बाद अंजुलि का जल भगवती बगलामुखी की तस्वीर पर छिड़क दें :

स्नान कराने का मंत्र

गंगा की ये पावन जल, अमृत रूप समान।
उस जल से माँ बगला जी, आप करें स्नान॥
अपना तन वो मन मेरा, मात करो पवित्र।
भक्ति हमको दान दें, हे सृष्टि के इष्ट॥

नोट : इसके पश्चात् निम्न मंत्र पढ़कर महादेवी दिगम्बरा के चरणों पे पीला अक्षत (चावल) चढ़ाऐं :

अक्षत समर्पण मंत्र

शक्ति व सामर्थ्य नहीं, तण्डुल अर्पित करता हूँ।
मातेश्वरी केवल मैं तुझको, स्नेह समर्पित करता हूँ॥
भक्तों की रक्षा हेतु, सदा विराजें द्वार।
निर्बल की सुन याचना, कर मेरा उद्धार॥
हे दयामयी जगदम्बे माँ, सुन ले मेरी पुकार।
हृदय कलश पर बैठे जी, विनय करें स्वीकार॥

नोट : अब जगत्-जननी माता बगलामुखी को पीला चन्दन लगायें :

चन्दन लेपन मंत्र

मेरे हृदय में सदा विराजें, चन्दन तुझे लगाऊं मैं।
नेह लगाकर तेरे चरणों में, पुलकित हो लिपटाऊं मैं॥
कराइये माँ अधम से, मस्तक चन्दन लेप।
क्यों बालक से रूठी हो, नैन खोलकर देख॥
भवसागर में डूब रहा माँ जी सुनो पुकार।
जीवन नैया पार करो, बनकर खेवनहार॥

नोट : अब माता बगलामुखी को कनेर का पुष्प चढ़ायें :

पुष्प समर्पण मंत्र

पुष्प की पंखुडियों से, अपना स्नेह जताता हूँ।
सफल करो सब कामना, नित्य ही विनय सुनाता हूँ॥
मेरा मस्तक कमल समझ के, अपने चरण विराजो जी।
शत्रुओं से मुक्त रहू, यही मैं कृपा पाऊं जी॥

नोट : अब निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए भगवती को तुलसीदल चढ़ाऐं।

तुलसी पत्र समर्पण मंत्र

तुलसी की पंखुड़ियों में, छिपा है हृदय पराग मेरा।
श्रद्धा सुमन समर्पित है, जगा दे अम्बे भाग्य मेरा॥
भक्ति ऐसी दान दें, युग-युग नहीं भुलाऊ मैं।
जब भी देखूं जहां भी देखूं, एक तुम्हीं को पाऊं मैं॥

नोट : अब मातेश्वरी को सुगन्धित अगरबत्ती या धूप दिखाएं :

सुगन्धित धूप समर्पण मंत्र

मन को माँ हर्षित करने, सुगन्ध करें स्वीकार।
सबको तूने तारी मैया, हमको भी अब तार॥
शक्ति सकल मनोरथ दें, पूरण कर सब काम।
बारम्बार नमन करुं, हे कृपा निधान॥

नोट : अब माता बगलामुखी को प्रज्वलित दीप दिखावें :

प्रज्वलित दीप समर्पण मंत्र

दीपक की लौ से माते, भेज रहा सन्देश।
विनती बारम्बार करुं, पूरा करो उदेश॥
तुम बिनु मेरा जीवन है, कीट-पतंग समान।
हर्षित होकर तनुज का, पूर्ण करें अरमान॥

नोट : अब भगवती को नैवेद्य चढ़ावें :

नैवेद्य समर्पण मंत्र

भक्ष्य पदारथ मधुर भोज्य, अम्बे कर स्वीकार।
और नहीं कुछ पास में, कर मैया उद्धार॥
कृपा करो अनाथ पे, कर दो हमें सनाथ।
सदा विराजें मेरे घर में, संग में दीना नाथ॥

नोट : अब दोनों हाथों की अंजुलि में पुष्प भरकर, घुटने के बल बैठकर या खड़े होकर नीचे लिखित मंत्र समाप्त होने के पश्चात् हाथों का पुष्प माता बगलामुखी के चरणों में समर्पित कर दें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुष्पांजलि प्रार्थना

हे शत्रुसंहारकारिणी, कर शत्रु संहार।
मईया कर मेरा उद्धार, मईया कर मेरा उद्धार॥
बाधा से कहदो जगदम्बे, सीने न लिपटाये।
कहो निराशा से माता जी, प्रीति नहीं बढ़ाये॥
दिल से कहदो दरिद्रता से, करे न हमसे प्यार।
मईया कर मेरा उद्धार, मईया कर मेरा उद्धार॥ 1॥
दारुण दुख ने हे माता जी, जीवन मेरा जलाये।
डूबा गम के सागर दिल की, ज्योति बुझती जाये॥
चिन्ता ने नित ही लटकाये, गर्दन पे तलवार।
मईया कर मेरा उद्धार, मईया कर मेरा उद्धार॥ 2॥
सदा के लिये माँ बगला, मेरे घर बस जायें।
चरणों में ये दास पड़ा है, इतनी दया दिखायें॥
कहदो उलझन से हे माता, करे नहीं लाचार।
मईया कर मेरा उद्धार, मईया कर मेरा उद्धार॥ 3॥
मातेश्वरी तुम बिन जग में, और न कोई मेरा।
अंधकार में मेरा जीवन, मांगू नया सवेरा॥
मैं भी तनुज तुम्हारा ही हूँ, कर नैया मेरी पार।
मईया कर मेरा उद्धार, मईया कर मेरा उद्धार॥ 4॥
हे शत्रुसंहारकारिणी, कर शत्रु संहार।
मईया कर मेरा उद्धार, मईया कर मेरा उद्धार॥

नोट : इसके पश्चात् माता बगलामुखी जी के निम्नलिखित दिव्य मंत्र का ग्यारह बार जाप करें। इस मंत्र का जाप आप सुविधा और समयानुसार अधिक भी कर सकते हैं :

बगलामुखी मंत्र

(शत्रु को स्तम्भित, जिह्वा कीलन एवं बुद्धि विनाश करने हेतु)

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ॐ ह्लीं स्वाहा।

नोट : मंत्र जाप समाप्त होने के बाद पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर लिखी हुई आरती गावें, साथ ही थाल में पान–पत्ते पर कपूर की बाती जलाकर माता बगलामुखी को दिखावें। इसके पश्चात् प्रणाम कर आप अपने नित्य कार्यों में लग सकते हैं।

वैदिक बगलामुखी मानस पूजन

साधको ! मानस पूजन का अर्थ होता है – 'मन के द्वारा की गई पूजा।' वैसे तो भगवती की पूजा चाहे जिस प्रकार की भी हो, वह सच्चे मन-कर्म-वचन से ही की जाती है किन्तु जब बात 'मानस पूजन' की आती है तो भगवती जी की इस पूजा में मन की भावना से ही माता को सारी पूजन सामग्री अर्पित की जाती है। मन की भावना से ही मातेश्वरी बगलामुखी की मूर्ति स्थापित की जाती है। उनका आवाहन करना, धूप-दीप दिखाना, फल-फूल नैवेद्य चढ़ाना आदि समस्त पूजन क्रियाये मन के भावों द्वारा ही निर्मित होते हैं। इसमें सांसारिक भौतिक वस्तुओं की आवश्यकता नहीं होती है।

शास्त्रों में भी कहा गया है कि मातेश्वरी बगलामुखी को मनः कल्पित यदि एक फूल भी चढ़ा दिया जाये तो वह करोड़ों बाहरी फूल चढ़ाने के बराबर है। इसी प्रकार मानस-चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य भी भगवती को करोड़ों गुणा संतोष प्रदान करते हैं। अतः मानस पूजा बहुत अपेक्षित है।

अब माता बगलामुखी जी की मानस पूजा आरम्भ करते हैं :

मानस पूजन आरम्भ

प्रातः काल स्नानादि से पवित्र होकर माता बगलामुखी की तस्वीर के सामने कम्बल का आसन बिछाकर बैठ जायें। एक अगरबत्ती तस्वीर के समक्ष जलावें। इसके पश्चात् एक लोटे में जल भरकर अपने पास रखें। (ऊपरलिखित पूजन सामग्री के बिना भी आप यह पूजन आरम्भ कर सकते हैं।) अब अंजुलि में जल लेकर निम्न श्लोक का उच्चारण कर अंजुलि-जल भगवती की तस्वीर पर छिड़क दें। क्रमानुसार नीचे लिखे हर श्लोक में ऐसा ही करें :

प्रथम श्लोक

रत्नैः कल्पित मासनं हिम जलैः स्नानं च दिव्याम्बरम्।
नाना रत्न विभूषितं मृगमदा मोदाङ्कितं चन्दनम्॥
कनेर बिल्वपत्र रचितं पुष्पं च धूपं तथा।
दीपं देवि दयानिधे बगलामुखी हत्कल्पितं गृहयन्ताम्॥

हिन्दी अनुवाद : हे देवी दयानिधे! हे बगलामुखी! यह रत्नों से निर्मित सिंहासन, शीतल जल से स्नान, नाना रत्नावली विभूषित दिव्य वस्त्र, कस्तूरी का

गन्ध समन्वित चन्दन, कनेर और बिल्वपत्र से रचित पुष्पांजलि तथा धूप और दीप ये सब मानसिक पूजोपहार ग्रहण कीजिये।

नोट : जो साधक संस्कृत मंत्र नहीं पढ़ सकते हैं, वे हिन्दी अनुवाद पढ़कर पूजन का सम्पूर्ण लाभ उठा सकते हैं।

द्वितीय श्लोक

सौवर्णै नवरत्नखण्ड रचिते पात्रे घृतं पायसं।
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधि युतं रम्भाफलम् पानकम्॥
शाकानाम युतं जलं रूचिकरं कर्पूरखण्डोजज्वलम्।
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या माते स्वीकुरु॥

हिन्दी अनुवाद : हे शत्रुओ का संहार करने वाली भवानी! मैंने नवीन रत्न खण्डों से रचित सुवर्ण पात्र में घृत युक्त खीर, दूध और दधि सहित पांच प्रकार का व्यंजन, कदली फल, शर्बत, अनेकों शाक, कपूर से सुवासित किया और स्वच्छ किया हुआ मीठा जल और ताम्बुल ये सब मन के द्वार ही बनाकर प्रस्तुत किये हैं। माते, कृपया इन्हें स्वीकार कीजिये।

तृतीय श्लोक

छत्र चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं।
वीणा भेरि मृदगकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा॥
साष्टांग प्रणतिः स्तुतिर्वहुविधा ह्वेतसमस्तं मया।
संकल्पेण समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण मातेश्वरि॥

हिन्दी अनुवाद : छत्र, दो चंवर, पंखा, निर्मल दर्पण, वीणा, भेरी, मृदंग, दुन्दुभि वाद्य, गान और नृत्य साष्टांग प्रणाम, नानाविधि स्तुति – ये सब मैं संकल्प से ही आपको समर्पण करता हूँ। मातेश्वरी, मेरी यह पूजा ग्रहण कीजिये।

चतुर्थ श्लोक

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं।
पूजाते विषयोपभोग रचना निद्रा समाधि स्थितिः॥
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः सतोत्राणी सर्वा गिरो।
यद्यतकर्म करोमि तत्तदिखिलं दयानिधे तवाराधनम्॥

प्रातः सायं अरु मध्याना,
धरे ध्यान होवै कल्याना।
कहँ लगि महिमा कहौं तिहारी,
नाम सदा शुभ मंगलकारी।
पाठ करै जो नित्य चालीसा,
तेहि पर कृपा करहिं गौरीशा।

॥ दोहा ॥

सन्तशरण को तनय हूँ, कुलपति मिश्र सुनाम।
हरिद्वार मण्डल बसूँ, धाम हरिपुर ग्राम॥
उन्नीस सौ पिचानवे सन् की, श्रावण शुक्ला मास।
चालीसा रचना कियौं, तव चरणन को दास॥

चतुर्थ भाग

श्री बगलामुखी स्तोत्र, स्तुति, कवच खण्ड

श्री बगलामुखी स्तोत्रम्

शत्रुओं पर विजय प्राप्ति हेतु

(श्लोक)

चलत्-कनक-कुण्जलोल्लासित-चारु-गण्ड-स्थलिम्।
लसत्-कनक-चम्पक-द्युतिमदिन्दु-बिम्बाननाम्॥
गदाहत विपक्षकां कलित-लोल-जिह्वाञ्चलाम्।
स्मरामि बगलामुखीं विमुखवाङ्मनस-स्तम्भिनीम्॥ 1॥
पीयूषोदधि-मध्य-चारु-विलसद-रत्नोज्ज्वले मण्डपे।
तत्-सिंहासन-मूल-पातित-रिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम्॥
स्वर्णाभ्यां कर-पीड़ितारि-रसनां भ्राम्यद विभ्रतीम।
यस्त्वां ध्यायति यान्ति तस्य विलयं सघोऽथ सर्वापदः॥ 2॥

हिन्दी अनुवाद - चंचल सोने के कुण्डलों से शोभित कपोलोंवाली तथा कनक एवं चम्पा के पुष्प समान शरीर की कान्तिवाली चन्द्रमुखी, गदा-प्रहार से विपक्षियों का सदा विनाश करने वाली, सुन्दर चंचल जिह्वा वाली, विमुखों की वाणी और मन का स्तम्भन करने वाली बगलामुखी मातेश्वरी का स्मरण करता हूँ॥ 1॥ जो भक्त साधक सुधा-समुद्र के बीच में रत्नोज्ज्वल मण्डप में अनेकानेक रत्न-जटित स्वर्ण-सिंहासन पर आसीन, सुवर्ण कान्ति वाली, एक हाथ से शत्रु की जिह्वा और दूसरे में घूमती हुई गदा को धारण किये, प्रेत के आसन पर बैठी हुई, शत्रुओं के शिरों को झुकानेवाली आपको ध्यान करता है, उसकी समस्त आपदायें तुरन्त समाप्त हो जाती हैं॥ 2॥

(श्लोक)

देवि! त्वच्चरणाम्बुजार्चन कृते यः पीत पुष्पाञ्जलिम्।
भक्त्या वामकरे निधाय च मनुं मन्त्री मनोज्ञाक्षरम्॥
पीठ-ध्यान-परोऽथ कुम्भक-वशाद बीजं स्मरेत् पार्थिवम्।
तस्यामित्र-मुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत् तत्क्षणात्॥ 3॥
वादी मूकति रङ्कति क्षिति-पतिर्वैश्वानरः शीतति।

क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्तानुगः खञ्जति॥
गर्वी खर्वति सर्व-विच्च जऽति त्वन्मन्त्रिणा यन्त्रितः।
श्री नित्ये, बगलामुखि! प्रतिदिन कल्याणि! तुभ्यं नमः॥ 4॥

हिन्दी अनुवाद - हे देवी बगलामुखि! जो भक्त आपके चरण-कमलों के अर्चन में पीत-पुष्पों की अंजलि भक्तिपूर्वक निज बायें हाथ में रचकर, पीठ-ध्यान में तत्पर होकर, कुम्भक प्राणायाम द्वारा हमारे मनोज्ञ-मनोहर अक्षर वाले मन्त्र लं का स्मरण करता है, उसके शत्रु के मुख-वचन और हृदय में तुरन्त जड़ता व्याप्त हो जाती है॥ 3॥ मंत्र के जानकार साधक के द्वारा यन्त्रित किया गया वादी गूंगा, राजा रंक, अग्नि शीतल, क्रोधी शान्त, दुष्टजन सुजन, तीव्र गतिवाला लंगड़ा, घमण्डी छोटा, सर्वज्ञ लड़ हो जाता है। इसीलिये हे कल्याणि, श्री स्वरूपे-नित्ये भगवति बगलामुखि! मैं तुम्हें प्रतिदिन नमस्कार करता हूँ॥ 4॥

(श्लोक)

मन्त्रस्तावदलं विपक्ष दलने स्तोत्रं पवित्रं च ते।
यन्त्रं वादि-नियन्त्रणं त्रि-जगतां जैत्रं च चित्रं च ते॥
मातः! श्रीबगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे।
त्वन्नाम-स्मरणेन संसदि मुख-स्तम्भो भवेद् वादिनाम्॥ 5॥
दुष्ट-स्तम्भनमुग्र-विघ्न-शमनं दारिद्रय-विद्रावणम्।
भूमुद-संदभनं चलन्मृग-दृशां चेतः समाकर्षणाम्॥
सौभाग्यैक-निकेतनं समदृशः कारुण्य पूर्वेक्षणम्।
मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः॥ 6॥

हिन्दी अनुवाद - शत्रुओं के दमन के लिये आपका मन्त्र ही पर्याप्त है और तद-वत पवित्र स्तोत्र भी। वादियों के नियन्त्रण के निमित्त आपका विजयशाली यन्त्र भी विचित्र है। हे मातेश्वरी! श्रीबगले यह ललित आपका नाम जिस साधक के मुख को शोभित करता है, वह भाग्यशाली है क्योंकि सभा में आपके नाम का स्मरण करते ही वादियों का मुख स्तम्भित हो जाता है॥ 5॥ दुष्टजनों का स्तम्भक, उग्र विघ्नों को शांत करने वाला, दरिद्रता-निवारक, राजाओं का दमन कारक, मृग के समान नेत्र के चंचल चित्त का समाकर्षक एवं समदर्शियों के लिये सौभाग्य का एकमात्र निकेतन, करुणापूर्ण नेत्रों वाला और मृत्यु का भी मारक आपका सुन्दर शरीर है माते! मेरे समक्ष प्रकट हो।

(श्लोक)

मातर्भञ्जय मद्-विपक्ष-वदनं जिह्वां च संकीलय।
ब्राह्मीं मुद्रय दैत्य-देवि-धिषणामुग्रं गतिं स्तम्भय॥
शत्रुंश्चूर्णय देवि! तीक्ष्ण-गदया गौराङ्गि पीताम्बरे।

विघ्नौध बगले! हर प्रणमतां कारुण्य-पूर्णेक्षणे ॥ 7 ॥
मातर्भैरवि! भद्रकालि विजये! वाराहि! विश्वाश्रये!
श्रीविद्ये! समये! महेशि! बगले! कामेशि! वामे रमे!!
मातङ्गि ! त्रिपुरे ! परात्परा-तरे ! स्वर्गापवर्ग-प्रदे ।
दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि! त्राहि माम ॥ 8 ॥

हिन्दी अनुवाद : हे गौरागिं, पीताम्बरे, माँ देवी! मेरे विपक्षियों के मुख को तोड़ दो, उनकी जिह्वा को कील दो, वाणी को बन्द कर दो, देव और दैत्यों की उग्र बुद्धि तथा गतियों को स्तम्भित को, अपनी तीक्ष्ण गदा से शत्रुओं को मसल कर रख दो, अपनी करुणापूर्ण दृष्टि से भक्तों के विघ्नों-पीड़ाओं के अम्बार को दूर करो ॥ 7 ॥ हे मैया! भैरवी, भद्रकाली, वाराही, भुवनेश्वरी, श्रीविद्या, षोडशी, बाला त्रिपुरसुन्दरी, कमलादि सभी आप ही हो। स्वर्ग और मोक्ष भी आप ही देती हो, परात्पर ब्रह्मा भी आप ही हो, मैं आपका शरणागत हूँ। हे विश्वेश्वरि! दया करके मेरी रक्षा करो ॥ 8 ॥

(श्लोक)

त्वं विद्या परमा त्रिलोक-जननी विघ्नौध-संच्छेदिनी ।
योषाकर्षणकारिणी त्रिजगतामानन्द-सम्वर्द्धिनी ॥
दुष्टोच्चाटन-कारिणी पशुमनः सम्मोह-सन्दायिनी ।
जिह्वा-कीलन-भैरवी विजयते ब्रह्मास्त्रविद्या परा॥ 9 ॥
वद्या-लक्ष्मीर्नित्य-सौभाग्यमायुः, पुत्रैः पौत्रैः सर्व-साम्राज्य सिद्धिः ।
मानं भोगो वश्यमारोग्य-सौख्य, प्राप्तं सर्वं भू-तले त्वत्-परेण ॥ 10 ॥

हिन्दी अनुवाद - आप परमविद्या हो, तीनों लोकों की जननी हो, विघ्नों के अम्बार का नाश करने वाली हो, स्त्रियों को आकर्षित करने वाली हो, जगत्-त्रय का आनन्द बढ़ाने वाली हो, दुष्टों का उच्चाटन करने वाली हो, पशु जन के मन को सम्मोह देने वाली हो और शत्रु की जिह्वा कीलन करने में भैरवी हो। सदैव विजय देने वाली परा ब्रह्मास्त्र-विद्या हो ॥ 9 ॥ सम्पूर्ण विद्यायें लक्ष्मी, नित्य सौभाग्य, दीर्घायु, पुत्र-पौत्रादि सहित सर्व-साम्राज्य-सिद्धि, मान, भोग, वश्यता, आरोग्यता, सुखादि समस्त जो-जो भी मनुष्य को प्राप्त होना चाहिये, वह सब कुछ आपकी कृपा से इस पृथ्वी पर ही साधक को प्राप्त होता है ॥ 10 ॥

(श्लोक)

पीताम्बरां च द्वि-भुजां त्रिनेत्रां गात्रकोमलम् ।
शिला-मुदगर-हस्तां च स्मरेत तां बगलामुखीम् ॥ 11 ॥
पीत-वस्त्र-लसिताभारि-देह-प्रेत-वासनं-निवेशित देहाम् ।
कुल्ल-पुष्प-रव-लोचन-रम्यां दैत्य-जाल-दहनोज्ज्वलभूषा ॥

पर्यङ्कोपरि-लसद्-द्विभुजां कम्बु-जम्बु-नद-कुण्डल-लोलाम्।
वैरि-निर्दलन-कारण-रोषां चिन्तयामि बगलां हृदयाब्जे॥ 12॥

हिन्दी अनुवाद - कोमल शरीरवाली, वज्र और मुद्गर हाथों में धारण करने वाली, त्रिनेत्र एवं दो भुजाओं वाली पीताम्बरा बगलामुखी का मैं स्मरण करता हूँ॥ 11॥ पीले वस्त्र धारण करने वाली, शत्रु के शव पर विराजमान, फूल की तरह विकसिता और सूर्य की तरह दीप्त नेत्र, असुरों के निधन के लिये जो उजले वस्त्र धारण करती है, पलंग पर शोभा पाने वाली द्विभुजा देवी, वलयाकार स्वर्णकुण्डल सुशोभिता, शत्रुओं के निधन के लिये जो अत्यन्त क्रोधी हैं, उन्हीं बगला का हृदय-कमल में ध्यान करता हूँ॥ 12॥

(श्लोक)

गेहं नाकमि, गर्वितः प्रणमति, स्त्री-सङ्गमो मोक्षति।
द्वेषि मित्रति, पातकं सु-कृतति, क्षमा वल्लभो दासति॥
मृत्युवैद्यति, दूषण सु-गणति, त्वत्-पाद-संसेवनात्।
वन्दे त्वां भव-भीति-भञ्जन-करीं गौरीं गिरिश प्रियाम्॥ 13॥
आराध्या जगदम्ब! दिव्य-कविभिः सामाजिकैः स्तोतृभि-
र्माल्यैश्चन्दन-कुंकमैः परिमलैरभ्यर्च्चिता सादरात्।
सम्यङ्न्यासि-समस्त-निवहे, सौभाग्य-शोभा-प्रदे।
श्रीमुग्धे बगले! प्रसीद विमले, दुःखापहे! पाहि माम॥ 14॥

हिन्दी अनुवाद : हे मातेश्वरी! आपके चरणों की सेवा से घर स्वर्ग बन जाता है, अहंकारी विनम्र तथा विनीत बन जाता है, स्त्री-संसर्ग करने वाला मोक्ष प्राप्त करता है, शत्रु मित्र बन जाता है, पापी पुण्यवान बन जाता है, राजा दास बन जाता है, यम भी वैद्य बन जाता है तथा दुर्गुणी सगुणी बन जाता है। हे संसार - भय दूर करने वाली, शिव-प्रिया, गौरी, बगला! आपकी वन्दना करता हूँ॥ 14॥ अध्यात्मवादी कवि, सामाजिक जनता और स्तुति करने वाले भक्त जगजननी बगला की सादर पूजा करते हैं। पुष्पमाला, चन्दन, कुंकम के शरीर में सम्यक् रूप से रहने वाली, सौभाग्यप्रदा, श्रीमुग्धा, विमला, दुःखहारिणी माँ बगला मेरी रक्षा करे॥ 14॥

(श्लोक)

यत्-कृतं जप-सन्नाहं गदितं परमेश्वरि।
दुष्टानां निग्रहार्थाय तद गृहाण नमोऽस्तु ते॥ 15॥
सिद्धिं साध्येऽवगन्तुं गुरु-वर-वचनेष्वार्ह-विश्वास-भाजाम्,
स्वान्तः पद्मासनस्थां वर-रुचि-बगलां ध्यायतां तार-तारम्।
गायत्री-पूत-वाचां हरि-हर-नमने तत्पराणां नराणाम्,
प्रातर्मध्याह्न-काले स्तव-पठनमिदं कार्य-सिद्धि-प्रदंस्योतु॥ 16॥

हिन्दी अनुवाद - हे महादेवी बगलामुखी! दुष्टों के निग्रहार्थ आपके विषय में जो मैंने जपादि - पूर्वक कहा है, उसे आप स्वीकार करो, आपको नमस्कार है॥ 15॥ हे जगत्-जननी जगदम्बे! सद्‌गुरु के वचनों में विश्वास रखने वाला, आपमें अटल भक्ति रखने वाला, गायत्री सिद्ध व्यक्ति साध्य-विषय में सिद्धि प्राप्ति के लिये अपने हृदय में पद्मासना, उत्तम ज्योति-विशिष्टा बगला का ध्यान कर प्रातः और मध्याह्न में इस स्तव का निरन्तर पाठ करे, तो कार्य सिद्ध होता है॥ 16॥

(श्लोक)

विद्या लक्ष्मीः सर्व-सौभाग्यमायुः पुत्रैः पौत्रैः सर्व-साम्राज्य-सिद्धिः।
मानं भोगो वश्यमारोग्य-सोख्यम्, प्राप्तं सर्वं भू-तले त्वत्-परेण॥ 17॥
यत-कृतं जप-संध्यानं, चिन्तन परमेश्वरि।
शत्रुणां स्तम्भनार्थाय, तद गृहाण नमोऽस्तुते॥ 18॥

हिन्दी अनुवाद - हे माते! विद्या, लक्ष्मी, सारे सौभाग्य, आयु, पुत्र-पौत्रादि के साथ सारे साम्राज्य की प्राप्ति, सम्मान, भागे, यश, आरोग्य तथा सुख आदि सांसारिक वस्तुयें आपकी आराधना से मिल जाता है॥ 17॥ हे देवी बगलामुखी! शत्रुओं के स्तम्भन के लिये मैंने जो जप, ध्यान तथा चिन्तन किया, वह सब ग्रहण करो। आपको मेरा प्रणाम।

श्री बगलामुखी स्तोत्र के पाठ करने का लाभ

(श्लोक)

नित्य स्तोत्रामिदं पवित्रमहि यो देव्याः पठत्यादरात्।
धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले॥
राजानोऽप्यरयो मदान्ध-करणिः सर्पा मृगेन्द्रादिकाः।
ते व यान्ति विमोहिता रिपु-गणा लक्ष्मी स्थिरा सर्वदा॥ 1॥
संरम्भे चोरसङ्गे प्रहरणसमये बन्धने व्याधि-मध्ये।
विद्यावादे विवादे प्रकुपित-नृपतौ दिव्य-काले निशायाम्॥
वश्ये वा स्तम्भने वा रिपु-वध-समये निर्जने वा वने वा।
गच्छंस्तिष्ठस्त्रि कालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीरः॥ 2॥
अनुदिनमभिसमं साधको यस्त्रि-कोलम्, पठति सा भुवनेऽसौ पूज्यते देववैंगः।
सकलममवकृत्यं तत्त्वद्रष्टा च लोके, भवति परम-सिद्धा लोकमाता पराम्बा॥ 3॥

हिन्दी अनुवाद : मातेश्वरी बगलामुखी के प्रिय भक्तो! पीताम्बरा के इस पवित्र स्तोत्र का पाठ जो साधक नित्य आदरपूर्वक करता है तथा इनके यन्त्र को बाजु में अथवा कलाई या गले में युद्धकाल में धारण करता है, तो राजा एवं शत्रुगण विमोहित हो जाते हैं। इतना ही नहीं, ऐसे साधक को लक्ष्मी की भी स्थिरता प्राप्त

होती है ॥ 1 ॥ हे जगदम्बा ! विकट परिस्थिति में, चोरों के समूह में, शत्रु पर प्रहार काल में, बन्धन में, व्याधि-पीड़ा में, विद्या-सम्बन्धी विवाद में, मौखिक कलह में, नृप-कोप में और रात्रि के दिव्य काल में, वश्य कार्य में, स्तम्भन में तथा शत्रु-वध के समय, निर्जन स्थान में अथवा वन में कहीं भी चलता हुआ, बैठा हुआ तीनों काल में जो साधक आपके स्तोत्र का पाठ करता है, वह धीर पुरुष शीघ्र ही कल्याण प्राप्त करता है ॥ 2 ॥ जो साधक प्रतिदिन त्रिसन्धया में इसका पाठ करता है, वह इस जगत् में देवताओं के द्वारा पूजित होता है। उसके सारे काम बन जाते हैं और वह संसार में तत्त्वदर्शी बनता है। जगत-जननी पराम्बा उसके लिये परम सिद्ध देवी बन जाती हैं।

बगलामुखी रक्षा स्तोत्र

(समस्त प्रकार के रोगों-व्याधियों-पीड़ाओं से मुक्ति हेतु)

(श्लोक)

बगला मे शिराः पातुः ललाटं ब्रह्मसंस्तुता।
बगला मे भ्रुवो नित्यं कर्णयोः क्लेशहारिणी॥
त्रिनेत्रा चक्षुषी पातु स्तम्भिनी गण्डयोस्तथा।
मोहिनी नासिकां पातु श्री देवि बगलामुखी॥

हिन्दी अनुवाद : मातेश्वरी बगलामुखी मेरे शिर की सुरक्षा करें और ब्रह्मा द्वारा स्तवन की हुई मेरे ललाट का त्राण करे। मेरी भ्रुओं को बगला तथा क्लेश हारिणी मेरे कानों की सुरक्षा करे। नेत्र वाली देवी नेत्रों की रक्षा करे तथा स्तम्भिनी नित्य ही मेरे गण्डों का त्राण करें। मोहिनी श्रीदेवी बगलामुखी नासिका का परित्राण करे।

(श्लोक)

ओष्ठयोर्दुर्धरा पातु सर्वदन्तेषु चञ्चला।
सिद्धान्नपूर्णा जिह्वायां जिह्वाग्रं शारदाम्बिके॥
अकल्मषा मुखे पातु चबुके बगलामुखी।
धीरा मे कण्ठदेशे तु कण्ठाग्रे कालकर्षिणी॥

हिन्दी अनुवाद : दुर्धरा मेरे ओष्ठों की रक्षा करे तथा चञ्चला सब दांतों की रक्षा करे। मेरी जिह्वा में सिद्धान्नपूर्ण रक्षा करें तथा जिह्वा के अग्रभाग में शारदा और अम्बिका परित्राण करें। मेरे मुख की सुरक्षा अकल्मषा करे, चिबुक की बगलामुखी सुरक्षा करे। मेरे कण्ठ देश में धीरा रक्षा करे और कालकर्षिणी कण्ठ के अग्रभाग में रक्षा करे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(श्लोक)

शुद्धस्वर्णनिभा पातु कण्ठमध्ये तथाऽम्बिका।
कण्ठमूले महाभोगा स्कन्धौ शत्रु विनाशिनी॥
भुजां मे पातु सततं बगला सुस्मिता परा।
बगला मे सदा पातु कर्पूरे कमलोदभवा॥

हिन्दी अनुवाद : शुद्ध सुवर्ण के सदृश कण्ठे के मध्य में सुरक्षा करे तथा अम्बिका भी परित्राण करे। महाभोगा कण्ठ मूल में तथा शत्रु विनाशिनी दोनों स्कन्धों की रक्षा करे। मेरी दोनों भुजाओं की सुरक्षा परा सुस्मिता-बगला निरन्तर करे। कमलोद्भवा बगला सदा मेरे कर्पूरों की रक्षा करे।

(श्लोक)

बगलाऽम्बा प्रकोष्ठौ तु मणिबन्धं महाबला।
बगला श्रीर्हस्तयोश्च कुरुकुल्ला कराङ्गुलिम्॥
नखेषु व्रजहस्ता च हृदये ब्रह्मवादिनी।
स्तनौ मे मन्दगमना कुक्ष्योर्योगिनी तथा॥

हिन्दी अनुवाद : प्रकोष्ठों की रक्षा अम्बा बगला करे और महाबला मणिबन्ध में त्राण करे। बगला और श्रीहाथों का त्राण करे एवं कुरुकुल्ला करों की रक्षा करे। वज्र हस्ता नखों में त्राण करे तथा ब्रह्मवादिनी हृदय में रक्षा करे। मन्दगमना मेरे स्तनों की सुरक्षा करे तथा योगिनी कुक्षियों का त्राण करे।

(श्लोक)

उदरं बगला माता नाभिं ब्रह्मास्त्रदेवता:।
पुष्टिं मुद्गरहस्ता च पातु नो देववन्दिता॥
पार्श्व-योर्हनुमद्वन्धा पशुपाश विमोचनी।
करौ रामप्रिया पातु डरुयुग्म महेश्वरी॥

हिन्दी अनुवाद : बगला माता उदर का और ब्रह्मास्त्र देवता नाभि का परित्राण करे। देवों के द्वारा वन्दिता मुदगर हाथों में धारण करने वाली हमारी पुष्टि की सुरक्षा करे। हनुमान जी द्वारा वन्द्यमाना पशुपाश विमोचिनी दोनों पार्श्वों का त्राण करे। रामप्रिया दोनों करो की रक्षा करे और महेश्वरी ऊरुओं के युग्म का त्राण करे।

(श्लोक)

भगमाला तु गुह्यं मे लिङ्गं कामेश्वरी तथा।
लिङ्गमूले महाक्लिन्ना वृषणौ पातु दूतिका॥
बगला जानुनी पातु जानुयुग्मं च नित्यशः।
जङ्घे पातु जगद्धात्री गुल्फौ रावणपूजिता॥

हिन्दी अनुवाद : मेरे गुह्य को भगमाला सुरक्षित करे तथा लिंग की कामेश्वरी रक्षा करे। लिंग के मुख को महाक्लिन्न रक्षा करे और दूतिका दोनों वृषणों की रक्षा करे। बगला देवी जानुओं की तथा जानुयुग्म की रक्षा करे। जगद्धात्री जंघाओं और रावणपूजिता दोनों गुल्फों की सुरक्षा करे।

(श्लोक)

चरणौ दुर्जया पातु पीताम्बरा चरणाङ्गुलीः।
पादपृष्ठं पद्महस्ता पादा-धरचक्रधारिणी॥
सर्वाङ्गं बगला देवी पातु श्रीबगलामुखी।
ब्राह्मी में पूर्वतः पातु माहेशी वह्निभागतः॥

हिन्दी अनुवाद : दुर्जया चरणों और पीताम्बर चरणों की अंगुलियों की रक्षा करे। पद्महस्ता पादों के पृष्ठ और चक्र धारिणी पादों के नीचे के भाग का संरक्षण करे। श्रीबगलामुखी बगलादेवी सर्वाङ्ग की सुरक्षा करे। ब्राह्मी मेरी पूर्व दिशा में रक्षा कर – आग्नेयी में महेशी रक्षा करे।

(श्लोक)

कौमारी दक्षिणे पातु वैष्णवी स्वर्गमार्गतः।
ऊर्ध्व पाशधरा पातु शत्रुं जिह्वाधरा ह्याधः॥
रणे राजकुले वादे महायोगे महाभये।
बगला भैरवी पात नित्यं क्लीं काररूपिणी॥

हिन्दी अनुवाद : कौमारी दक्षिण में रक्षा करे। वैष्णवी स्वर्ग मार्ग से रक्षा करे। उर्ध्व में पाशधरा रक्षा करे। अधोभाग में शत्रु की जिह्वा को धारण करने वाली रक्षा करे, रणक्षेत्र में, राजकुल में, वाद में महायोग में और महाभय में बगला भैरवी क्लींकाररूपिणी नित्य ही परित्राण करें। में बगला भैरवी क्लींकाररूपिणी नित्य ही परित्राण करें।

(श्लोक)

इत्येवं वज्रकवचं महाब्रह्मास्त्रसंज्ञकम्।
त्रिसन्धयं यः पठेद धीमान सर्वैश्वर्यमवाप्नुयात्॥
न तस्य शत्रवः केऽपि सखायः सर्व एव च।
बलेनाकृष्य शत्रुं स्यात् सोऽपि मित्रत्वमाप्नुयात्॥

हिन्दी अनुवाद : इस प्रकार से इस ब्रह्मास्त्र संज्ञा वाले वज्र कवच का जो धीमान पुरुष तीनों संध्या कालों में नित्य नियम से पाठ किया करता है। वह सभी प्रकार के ऐश्वर्य को प्राप्त कर लिया करता है। इसके कोई भी शत्रु समुत्पन्न नहीं होते हैं और सभी उसके सखा ही होते है। वह शत्रु को भी बल से आकर्षित कर लिया करता है और वह शत्रु भी मित्र भाव को प्राप्त हो जाया करता है।

(श्लोक)

शत्रुत्वे मरुता तुल्यो धनेन धनदोपमः।
रूपेम कामतुल्य स्याद् आयुषा शूलधृक्समः॥
सनकादिसमो धैर्ये श्रिया विष्णुसमो भवेत्।
तत्तुल्यो विद्यया ब्रह्मन् यो जपेत् कवचं नरः॥

हिन्दी अनुवाद : इसका पाठ करने वाला शत्रुता में मरुत के तुल्य होता है, और धन में कुबेर के तुल्य होता है। रूप-सौन्दर्य में कामदेव के समान और आयु में शूलधृक् के सदृश हो जाता है। धैर्य में सनकादि के समान हो जाता है और बुद्धि से भगवान विष्णु के तुल्य हो जाया करता है। हे ब्रह्मा जी, विद्या से भी उसी के सदृश हो जाया करता है।

(श्लोक)

नारी वापि प्रयत्नेन वाञ्छितार्थमवाप्नुयात्।
द्वितीया सूर्यवारेण यदा भवति पद्मभूः॥
तस्यां जातं शतावृत्या शीघ्रं प्रत्यक्षमाप्नुयात्।
याता तरीयं संध्यातां भू शय्यायां प्रयत्नतः॥
सर्वान् शत्रून क्षयं कृत्वा विजयं प्राप्नुयात नरः।
दारिद्रयान मुच्यते चाऽऽशु स्थिरा लक्ष्मीर्भवेद गृहे॥

हिन्दी अनुवाद : अथवा नारी हो वह भी इसके पाठ करने से अपने मनोवांछित अर्थ की प्राप्ति कर लिया करती है। द्वितीय सूर्य बार से जब पद्मभू होती है उसमें उत्पन्न सौ आवृत्ति से शीघ्र ही प्रत्यक्ष को प्राप्त होती है। संध्या में तुरीय को गई हुई प्रयत्न से भुशाया में रहकर समस्त शत्रुओं का क्षय करके नर विजय को लोभ किया करता है और शीघ्र ही दरिद्रता से मुक्त हो जाया करता है और फिर लक्ष्मी घर में सुस्थिर हो जाती है।

(श्लोक)

सर्वान कामानवाप्नोति सविषो निर्विषो भवेत्।
ऋण-निर्मोचनं स्याद् वै सहस्त्रावर्तनाद विधेः॥
भूतप्रेतपिशाचादि पीडा तस्य न जायते।
द्युर्मणर्भ्राजते यद्वत तद्वत स्याच्छ्री प्रभावतः॥
स्थिराभया भवेत् तस्य यः स्मरेद् बगलामुखीम्।
जयदं बोधदं देवि कामधुक् देहि मे शिवे॥
जपस्यान्ते स्मरेत यो वै सोऽभीष्ट-कलमाप्नुयात्।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम्॥
न स सिद्धिमवाप्नोति साक्षाद् वै लोकपूजितः।

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन कवचं ब्रह्मतेजसम् ॥
नित्यं पदाम्बुजध्यानात् महेशानसमो भवेत् ।

हिन्दी अनुवाद : सभी कामनाओं को प्राप्त करता है तथा विष से युक्त भी निर्विष हो जाता है। हे ब्राह्मन्! एक सहस्त्र आवृति के करने से ऋण से छुटकारा प्राप्त होता है। उसकी फिर भूत-प्रेत और पिशाच आदि की पीड़ा निश्चय ही कभी नहीं होती है। श्री के प्रभाव से जिस प्रकार भगवान् भास्कर चमका करते हैं वह भी वैसे ही दीप्तिमान हो जाता है। जो बगलामुखी का स्मरण किया करता है उसको वह स्थिरामया होती है। यह कहना चाहिये कि हे शिवे! जय देने वाला और मुझे अमुक कामना को प्रदान करो। जाप के अन्त मैं जो बगलामुखी का स्मरण कया करता है वह निश्चय अपना अभीष्ट फल प्राप्त कर लेता है। इस कवच का ज्ञान न प्राप्त करके जो भी बगलामुखी के मन्त्र का जाप करता है चाहे यह साक्षात् लोक द्वारा पूजित भी क्यों न होवे। उस कारण सब प्रकार के प्रयत्न से इस ब्रह्म तेज वाले कवच का पाठ अवश्य ही करना चाहिये। नित्य प्रति पदाम्बुओं के ध्यान से मनुष्य महेशान के ही समान हो जाया करता है।

पीताम्बरा बगलामुखी कवच

प्रिय साधको! इस कवच का पाठ करने से पूर्व अपने पूज्य गुरु का स्मरण करते हुए करजोड़ कर उन्हें प्रणाम कीजिये। इस श्रीपीताम्बरा बगलामुखी कवच के महादेव ऋषि हैं, उष्णिक छन्द हैं, पीताम्बरा देवता हैं, स्थिर मायाबीज है, स्वाहा शक्ति है, अष्ट कीलक है, मेरे समीप तथा दूर स्थित समस्त दुष्टों की वाणी, मुख, पद, जिह्वा, अपवर्गों के स्तम्भन सहित सम्पूर्ण सम्पदा की प्राप्ति के साथ चतुवर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के फल के साधन के लिये जप करने में विनियोग है।

(श्लोक)

मध्येसुधाब्धि मेणिमण्डपरत्नवेधां
सिंहासनोपरि गतां परिपीतवर्णाम्
पीताम्बरा-भरणमाल्य विभूषितांगी
देवीं भजामि धृतमुदगर-वैरिजिह्वाम ॥ 1 ॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून परिपीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ॥ 2 ॥

हिन्दी अनुवाद : सुध के महासागर के मध्य में मणियों से विरचित मण्डप में रत्नों की वेदी पर सिंहासन के ऊपर विराजमान परिपीतवर्ण वाली पीतभूषण, माला, वस्त्र से विभुअङ्ग-प्रत्यङ्गों से संयुक्त, मुदगर और शत्रु की जिह्वा को धारण करती

हुई देवी का मैं भजन करता हूँ॥ 1॥ अपने एक कर से शत्रु की जिह्वा को ग्रहण करके वाम कर से शत्रुओं को परिपीड़ित करती हुई तथा दाहिने हाथ से गदा के संघात से मारती हुई दो भुजाओं वाली पीत वस्त्र धारिणी देवी के लिये नमन करता हूँ।

(श्लोक)

इति ध्यात्वा पठेत्।
हिमवत्तनया गौरी कैलासोऽथ शिलोच्चाये।
अपृच्छद गिरिशं देवी साधक-अनुग्रहेच्छया॥ 3॥
श्रीपार्वत्युवाच -
देवदेव महादेव भक्तानुग्रहकारक।
शृणु विज्ञाप्यते यत्तु युक्त्या सर्वं निवेदय॥ 4॥

हिन्दी अनुवाद : इस प्रकार से देवी के स्वरूप का ध्यान करके कवच का पाठ करना चाहिए। गिरियों के राजा हिमवान् की परमप्रिय पुत्री गौरी ने कैलाश पर्वत पर एक उच्च शिलाओं के समूह पर विराजमान भगवान् शिव से अपनी साधना करने वाले भक्तों पर अनुग्रह करने को इच्छा से पूछा था। श्री पार्वती ने कहा – हे देवों के भी पूज्य देवेश्वर! आप तो सर्वोपरि महान् देव हैं और सर्वदा अपने भक्तों पर कृपा करने वाले हैं। आप मेरी प्रार्थना सुनिये जो इस समय मैं आपकी सेवा में विज्ञप्ति की जा रही है और फिर कृपया उसका समाधान कीजिए।

(श्लोक)

विशुद्धा कौलिका लोके ये मत्कर्म परायणाः।
तेषां निन्दाकरा लोके बहवः किल दुर्जनाः॥ 5॥
मनोबाधा विदधते मुहः कटुभिरुक्तिभिः।
तेषामाश् विनाशाय त्वया देव प्रकाशितः॥ 6॥
यो मन्त्रौ बगलामुख्याः सर्वकामसमृद्धिदः।
कवचं तस्य मन्त्रस्य प्रकाशय दयानिधे॥ 7॥

हिन्दी अनुवाद : कौलिक मत के मानने वाले लोक में परम विशुद्ध हैं जो कि सभी मेरे ही कर्मों में परायण रहा करते हैं। तात्पर्य यह है कि कौलिकों में विशुद्धता है और साथ ही मेरे ही कर्मों में उनकी तत्परता एवं संलग्नता भी है। किन्तु लोक में उनकी निन्दा करने वाले बहुत से दुर्जन रहा करते हैं। ये लोग अत्यन्त कटु वचनों के द्वारा कौलिकों के मन को बाधा पहुंचाया करते हैं और बराबर ऐसा ही किया करते हैं। उनके विनाश करने के लिए हे देव! आपने एक मंत्र प्रकाशित किया है जो-जो बगलामुखी देवी का मंत्र समस्त कामनाओं की समृद्धि का देने वाला है। हे दयानिधे! उस मंत्र के कवच को अब प्रकाशित कर दीजिए।

(श्लोक)

यस्य स्मरणमात्रेण पशूनां निग्रह्यो भवेत्।
आत्मानं सततं रक्षेद व्याघ्राग्नि-रिपुराजतः॥ 8॥
श्रुत्वाऽथ पार्वतीवाक्यं ज्ञात्वा तस्या मनोगतम्।
विहस्य तां परिष्वज्य साधु साध्वित्य पूजयत॥ 9॥

हिन्दी अनुवाद – जिसके केवल स्मरण ही करने से पशुओं का भी निग्रह हो जाया करता है और जो अपनी आत्मा को निरन्तर व्याघ्र, अग्नि, शत्रु और राजा से सुरक्षित किया करता है। भगवान शिव अपनी प्रिया पार्वती के इस वचन का श्रवण करके और उनके मन में स्थित भाव को समझ करके परम प्रसन्न हुए और हंसकर उनका समालिंगन करते हुए कहा था – बहुत ही अच्छा प्रश्न है – इस तरह से पार्वती से परम प्रशंसा की थी।

(श्लोक)

तदाह कवचं दैव्यै कृपया करुणनिधिः।
शृणु त्वं बगलामुख्याः कवचं सर्वकामदम्॥ 10॥
यस्य स्मरणमात्रेण बगलामुखी प्रसीदति।
सर्वसिद्धिप्रदा प्राच्यां पातु मां बगलामुखी॥ 11॥

हिन्दी अनुवाद – इसके पश्चात् करुणा के सागर सदाशिव प्रभु ने देवी के लिए कृपाकर उस कवच को कहा था। भगवान शिव-शंकर ने कहा – हे देवी! अब आप बगलामुखी के सब कामनाओं के प्रदान करने वाले कवच का श्रवण कीजिए। यह कवच ऐसा है कि इसके स्मरण भर कर लेने से ही देवी बगलामुखी परम प्रसन्न हो जाया करती हैं। यह सब सिद्धियों को प्रदान करने वाली बगलामुखी मेरा पूर्व दिशा में परित्राण करे।

(श्लोक)

पीताम्बरा तु चाग्नेय्यां याम्यां महिषमर्दिनी।
नैर्ऋत्यां चण्डिका पातु भक्तानुग्रहकारिणी॥ 12॥
पातु नित्यं महादेवी प्रतीच्यां शूकरानना।
वायव्ये पातु मां काली कौवेर्या त्रिपुराऽवतु॥ 13॥

हिन्दी अनुवाद : आग्नेयी दिशा में पीताम्बरा और याम्य दिशा में महिषमर्दिनी तथा नैर्ऋत्य दिशा में भक्तों पर अनुग्रह करने वाली चामुण्डा देवी रक्षा करें। शूकर के समान मुख वाली महादेवी नित्य ही पश्चिम में मेरी रक्षा करे। वायव्य दिशा में मेरा परित्राण काली करे तथा कौबेरी दिशा में मेरा रक्षण त्रिपुरादेवी करे।

(श्लोक)

ईशान्यां भैरवी पातु पातु नित्यं सुरप्रिया।
ऊर्ध्वं वागीश्वरी पातु मध्ये मां ललिताऽवतु॥ 14॥
अधस्ताद अपि मां पातु वाराही चक्रधारिणी।
मस्तकं पातु मे नित्यं श्रीदेवी बगलामुखी॥ 15॥

हिन्दी अनुवाद – ईशानी दिशा में भैरवी रक्षा करें और सुरप्रिया नित्य ही परिपालन करे। उर्ध्व भाग में वागीश्वरी सुरक्षा करे तथा मध्य भाग में ललिता देवी मेरा परित्राण करें। नीचे की ओर भी चक्र के धारण करने वाली वाराही मेरी रक्षा करें। मेरे मस्तक की रक्षा नित्य ही श्रीदेवी बगलामुखी करें।

(श्लोक)

भालं पीताम्बरा पातु नेत्रे त्रिपुरभैरवी।
श्रवणौ विजया पातु नासिकायुगलं सुरेश्वरी॥ 16॥
शारदा वचनं पातु जिहवां पातु सुरेश्वरी।
कण्ठं रक्षतु रुद्राणी स्कन्धौ मे विन्ध्यावासिनी॥ 17॥

हिन्दी अनुवाद – मेरे भाल को पीताम्बरा रक्षित करें और मेरे नेत्रों को त्रिपुर भैरवी सुरक्षित करें। श्रवणों का त्राण विजया करे और जयादेवी मेरी दोनों नासिकाओं की रक्षा करे। शारदा देवी मेरे वचन का त्राण करें। सुरेश्वरी देवी मेरी जिह्वा की सुरक्षा करें। रुद्राणी कण्ठ का और विन्ध्वासिनी स्कन्धों का परित्राण करें।

(श्लोक)

सुन्दरी पातु वाहू मे जया पातु करौ सदा।
भवानी हृदयं पातु मध्यं मे भुवनेश्वरी॥ 18॥
नाभिं पातु महामाया कटिं कमल-लोचना।
उरू मे पातु मातङ्गी जानुनी चापराजिता॥ 19॥

हिन्दी अनुवाद – मेरे बाहूओं की रक्षा सुन्दरी करें और जयादेवी सर्वदा मेरे करौं का परित्राण करें। भवानी हृदय को रक्षित करें और मध्य भाग की सुरक्षा भुवनेश्वरी करें। महामाया देवी मेरी नाभि का तथा कमल-लोचना कटि का त्राण करें। मातंगी दोनों ऊरुओं की और अपराजिता दोनों जानुओं का परित्राण करें।

(श्लोक)

जंघां कपालिनी पातु चरणौ चंचलेक्षणा।
सर्वतः पातु मां तारा योगिनी पातु चाग्रतः॥ 20॥
पृष्ठं मे पातु कौमारी दक्षपार्श्वे शिवाऽवतु।
रुद्राणी वामपार्श्वे तु पातु मां सर्वश्रेष्ठदा॥ 21॥

हिन्दी अनुवाद – जंघाओं की सुरक्षा कपालिनी देवी करें तथा चंचलेक्षणा मेरे चरणों का त्राण करें। तारा सभी ओर से मेरी रक्षा करे और अगले भाग में योगिनी मेरा परित्राण करें। कौमारी मेरे पृष्ठ भाग की रक्षा करें और दाहिने पार्श्व में शिवा मेरी रक्षा करें। रुद्राणी वाम पार्श्व में रक्षा करें जो सभी श्रेष्ठों को प्रदान करने वाली हैं।

(श्लोक)

स्तुता सर्वेषु देवेषु रक्तबीजविनाशिनी।
इत्येतत कवचं दिव्यं धर्मकामार्थ साधनम्॥ 22॥
गोपनीयं प्रयत्नेन कस्यचिन्न प्रकाशयेत।
यः सकृच्छृणुयादू एतत कवचं मन्मुखोदितम्॥ 23॥
स सर्वान लभेत कामान् मूर्खो विद्यामवाप्नुयात।
तस्या शत्रवो यान्ति यमस्य भुवने शिवे॥ 24॥

हिन्दी अनुवाद – समस्त देवों में रक्तबीज के विनाश करने वाली का स्तवन किया गया है। यही परम दिव्य कवच है जो समस्त कार्यों के अर्थ को समझने वाला है। इसको गोपन अत्यधिक प्रयत्नों के द्वारा करना चाहिए और इसको किसी के भी सामने प्रकाशित न करें। जो कोई भी पुरुष मेरे मुख से कहे हुए कवच का एक अक्षर भी श्रवण कर लेता है वह समस्त मनोरथों की प्राप्ति कर लिया करता है और मूर्ख भी हो तो भी वह विद्या को प्राप्त कर लिया करता है। हे शिवे! उसके सर्व शत्रुगण यमराज के भवन में चले जाते हैं।

शत्रु विनाशम् – सर्वसुखम श्री बगलामुखी स्तोत्रम्

समस्त प्रकार के शत्रुओं पर विजय पाने हेतु और
सभी सुखों की प्राप्ति के लिए 'श्री नारद' जी द्वारा रचित
श्री बगलामुखी का परम तेजस्वी स्तोत्र

ओं अस्य श्रीबगलामुखीस्तोत्रस्य भगवान नारद ऋषिः श्रीबगलामुखी देवता, त्रिष्टुप छन्दः ममसन्निहिता-नामसन्निहितानां विरोधिनां दुष्टानां वाङ्मुख-बुद्धिनां स्तम्भनार्थ श्रीमहामाया बगलामुखी वर प्रसादसिद्धयर्थ जपे विनियोगः। ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट, ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय, अनामिकाभ्यां हुम ॐ जिह्वा कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवं हृदयादिषु।

हिन्दी अनुवाद : इस महातेजस्वी श्री बगलामुखी स्तोत्र रचयिता भगवान नारद ऋषि हैं। श्री बगलामुखी देवता है, त्रिष्टुप छन्द है, मेरे सन्निहित विरोधी दुष्टों की वाणी – मुख और बुद्धि के स्तम्भन के लिए श्री महामाया बगलामुखी के वरदान के प्रसाद की सिद्धि के लिए जप में विनियोग है। ॐ ह्लीं अंगुष्ठों के लिए नमस्कार है, ॐ बगलामुखी तर्जनियों के लिए वषट् है, ॐ सर्वदुष्टों का मध्यमाओं के लिए वषट् है, ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाओं को हुम है ॐ जिह्वा कीलय इति कनिष्ठिकाओं के लिए वौषट् है। ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतल करपृष्ठों के लिए फट् है। इसी प्रकार से कर न्यासों के समान हृदयादि पर न्यास की समाचरण करना चाहिए।

सौवर्णासन-संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं
हेमाभांगरुचिं शशांकमुकुटां सच्चम्पकस्त्रग्युताम्।
हस्तैर्मुदगर-पाशवज्ररसनाः संबिभ्रतीं भूषणैः
व्याप्ताङ्गी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्।

हिन्दी अनुवाद : सुवर्ण निर्मित आसन पर विराजमान तीन नेत्रों से समन्वित, पीतवर्ण के वस्त्रों से उल्लास वाली, हेम की आभा से युक्त अंगों वाली, मुकुट में चन्द्र बिम्ब को धारण करती हुई, सुन्द्र पीतचम्पा की मालाओं से समन्वित, अपने चारों कर-कमलों में मुदगर (एक प्रकार का शस्त्र), पाश, वज्र और शत्रु की जिह्वा को धारण करने वाली, सुन्दर भूषणों से देदीप्यमाना तथा भूषणों से अंगों वाली, तीन भुवनों का संस्तम्भन करने वाली श्रीबगलामुखी देवी का चिन्तन करना चाहिए।

स्तोत्र का आरम्भ :

(श्लोक)

मध्येसुधाब्धि मणिमण्डपरत्नवेद्यां।
सिंहासनो-परिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बरा-भरणमाल्य-विभूषिताङ्गीं देवीं नमामि
धृतमुद्गर-वैरिजिह्वाम्॥ 1॥
जिह्वाग्रभादाय करेण देवीं वामेन शत्रुन
पीरिपीडयन्तीम् गदाभिधातेन च दक्षिणन
पीताम्बराढ्यां द्विभुजा नमामि॥ 2॥

हिन्दी अनुवाद : सुधा के सागर में स्थित मणियों के द्वारा सुनिर्मित रत्नों की वेदी में पीतवर्ण के आभरण एवं वस्त्रों से तथा मालाओं से विभूषित अंगों वाली मुदगर, शत्रु की जिह्वा को धारण करती हुई देवी श्री बगलामुखी को नमस्कार करता

प्रातः सायं अरु मध्याना,
धरे ध्यान होवै कल्याना।
कहँ लगि महिमा कहौं तिहारी,
नाम सदा शुभ मंगलकारी।
पाठ करै जो नित्य चालीसा,
तेहि पर कृपा करहिं गौरीशा।

॥ दोहा ॥

सन्तशरण को तनय हूँ, कुलपति मिश्र सुनाम।
हरिद्वार मण्डल बसूँ, धाम हरिपुर ग्राम॥
उन्नीस सौ पिचानवे सन् की, श्रावण शुक्ला मास।
चालीसा रचना कियौं, तव चरणन को दास॥

चतुर्थ भाग

श्री बगलामुखी स्तोत्र, स्तुति, कवच खण्ड

श्री बगलामुखी स्तोत्रम्

शत्रुओं पर विजय प्राप्ति हेतु

(श्लोक)

चलत्-कनक-कुण्जलोल्लासित-चारु-गण्ड-स्थलिम्।
लसत्-कनक-चम्पक-द्युतिमदिन्दु-बिम्बाननाम्॥
गदाहत विपक्षकां कलित-लोल-जिह्वाञ्चलाम्।
स्मरामि बगलामुखीं विमुखवाङ्मनस-स्तम्भिनीम्॥ 1॥
पीयूषोदधि-मध्य-चारु-विलसद-रत्नोज्ज्वले मण्डपे।
तत्-सिंहासन-मूल-पातित-रिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम्॥
स्वर्णाभ्यां कर-पीड़ितारि-रसनां भ्राम्यद विभ्रतीम।
यस्त्वां ध्यायति यान्ति तस्य विलयं सघोऽथ सर्वापदः॥ 2॥

हिन्दी अनुवाद - चंचल सोने के कुण्डलों से शोभित कपोलोंवाली तथा कनक एवं चम्पा के पुष्प समान शरीर की कान्तिवाली चन्द्रमुखी, गदा-प्रहार से विपक्षियों का सदा विनाश करने वाली, सुन्दर चंचल जिह्वा वाली, विमुखों की वाणी और मन का स्तम्भन करने वाली बगलामुखी मातेश्वरी का स्मरण करता हूँ॥ 1॥ जो भक्त साधक सुधा-समुद्र के बीच में रत्नोज्जवल मण्डप में अनेकानेक रत्न-जटित स्वर्ण-सिंहासन पर आसीन, सुवर्ण कान्ति वाली, एक हाथ से शत्रु की जिह्वा और दूसरे में घूमती हुई गदा को धारण किये, प्रेत के आसन पर बैठी हुई, शत्रुओं के शिरों को झुकानेवाली आपको ध्यान करता है, उसकी समस्त आपदायें तुरन्त समाप्त हो जाती हैं॥ 2॥

(श्लोक)

देवि! त्वच्चरणाम्बुजार्चन कृते यः पीत पुष्पाञ्जलिम्।
भक्त्या वामकरे निधाय च मनुं मन्त्री मनोज्ञाक्षरम्॥
पीठ-ध्यान-परोऽथ कुम्भक-वशाद बीजं स्मरेत् पार्थिवम्।
तस्यामित्र-मुखस्य वाचि हृदये जाऽयं भवेत् तत्क्षणात्॥ 3॥
वादी मूकति रङ्कति क्षिति-पतिर्वैश्वानरः शीतति।

क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्तानुगः खञ्जति॥
गर्वी खर्वति सर्व-विच्च जऽति त्वन्मन्त्रिणा यन्त्रितः।
श्री नित्ये, बगलामुखि! प्रतिदिन कल्याणि! तुभ्यं नमः॥ 4॥

हिन्दी अनुवाद - हे देवी बगलामुखि! जो भक्त आपके चरण-कमलों के अर्चन में पीत-पुष्पों की अंजलि भक्तिपूर्वक निज बायें हाथ में रचकर, पीठ-ध्यान में तत्पर होकर, कुम्भक प्राणायाम द्वारा हमारे मनोज्ञ-मनोहर अक्षर वाले मन्त्र लं का स्मरण करता है, उसके शत्रु के मुख-वचन और हृदय में तुरन्त जड़ता व्याप्त हो जाती है॥ 3॥ मंत्र के जानकार साधक के द्वारा यन्त्रित किया गया वादी गूंगा, राजा रंक, अग्नि शीतल, क्रोधी शान्त, दुष्टजन सुजन, तीव्र गतिवाला लंगड़ा, घमण्डी छोटा, सर्वज्ञ लड़ हो जाता है। इसीलिये हे कल्याणि, श्री स्वरूपे-नित्ये भगवति बगलामुखि! मैं तुम्हें प्रतिदिन नमस्कार करता हूँ॥ 4॥

(श्लोक)

मन्त्रस्तावदलं विपक्ष दलने स्तोत्रं पवित्रं च ते।
यन्त्रं वादि-नियन्त्रणं त्रि-जगतां जैत्रं च चित्रं च ते॥
मातः! श्रीबगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे।
त्वन्नाम-स्मरणेन संसदि मुख-स्तम्भो भवेद् वादिनाम्॥ 5॥
दुष्ट-स्तम्भनमुग्र-विघ्न-शमनं दारिद्रय-विद्रावणम्।
भूमुद-संदभनं चलन्मृग-दृशां चेतः समाकर्षणाम्॥
सौभाग्यैक-निकेतनं समदृशः कारुष्य पूर्वेक्षणम्।
मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः॥ 6॥

हिन्दी अनुवाद - शत्रुओं के दमन के लिये आपका मन्त्र ही पर्याप्त है और तद-वत पवित्र स्तोत्र भी। वादियों के नियन्त्रण के निमित्त आपका विजयशाली यन्त्र भी विचित्र है। हे मातेश्वरी! श्रीबगले यह ललित आपका नाम जिस साधक के मुख को शोभित करता है, वह भाग्यशाली है क्योंकि सभा में आपके नाम का स्मरण करते ही वादियों का मुख स्तम्भित हो जाता है॥ 5॥ दुष्टजनों का स्तम्भक, उग्र विघ्नों को शांत करने वाला, दरिद्रता-निवारक, राजाओं का दमन कारक, मृग के समान नेत्र के चंचल चित्त का समाकर्षक एवं समदर्शियों के लिये सौभाग्य का एकमात्र निकेतन, करुणापूर्ण नेत्रों वाला और मृत्यु का भी मारक आपका सुन्दर शरीर है माते! मेरे समक्ष प्रकट हो।

(श्लोक)

मातर्भञ्जय मद्-विपक्ष-वदनं जिह्वां च संकीलय।
ब्राह्मीं मुद्रय दैत्य-देवि-धिषणामुग्रं गतिं स्तम्भय॥
शत्रुंश्चूर्णय देवि! तीक्ष्ण-गदया गौराङ्गि पीताम्बरे।

विघ्नौध बगले! हर प्रणमतां कारुण्य-पूर्णेक्षणे॥ 7॥
मातर्भैरवि! भद्रकालि विजये! वाराहि! विश्वाश्रये!
श्रीविद्ये! समये! महेशि! बगले! कामेशि! वामे रमे!!
मातङ्गि! त्रिपुरे! परात्परा-तरे! स्वर्गापवर्ग-प्रदे।
दासोऽहं शरणागतः करुणया विश्वेश्वरि! त्राहि माम॥ 8॥

हिन्दी अनुवाद : हे गौरागिं, पीताम्बरे, माँ देवी! मेरे विपक्षियों के मुख को तोड़ दो, उनकी जिह्वा को कील दो, वाणी को बन्द कर दो, देव और दैत्यों की उग्र बुद्धि तथा गतियों को स्तम्भित को, अपनी तीक्ष्ण गदा से शत्रुओं को मसल कर रख दो, अपनी करुणापूर्ण दृष्टि से भक्तों के विघ्नों-पीड़ाओं के अम्बार को दूर करो॥ 7॥ हे मैया! भैरवी, भद्रकाली, वाराही, भुवनेश्वरी, श्रीविद्या, षोडशी, बाला त्रिपुरसुन्दरी, कमलादि सभी आप ही हो। स्वर्ग और मोक्ष भी आप ही देती हो, परात्पर ब्रह्मा भी आप ही हो, मैं आपका शरणागत हूँ। हे विश्वेश्वरि! दया करके मेरी रक्षा करो॥ 8॥

(श्लोक)

त्वं विद्या परमा त्रिलोक-जननी विघ्नौध-संच्छेदिनी।
योषाकर्षणकारिणी त्रिजगतामानन्द-सम्वर्द्धिनी॥
दुष्टोच्चाटन-कारिणी पशुमनः सम्मोह-सन्दायिनी।
जिह्वा-कीलन-भैरवी विजयते ब्रह्मास्त्रविद्या परा॥ 9॥
वद्या-लक्ष्मीर्नित्य-सौभाग्यमायुः, पुत्रैः पौत्रैः सर्व-साम्राज्य सिद्धिः।
मानं भोगो वश्यमारोग्य-सौख्य, प्राप्तं सर्वं भू-तले त्वत्-परेण॥ 10॥

हिन्दी अनुवाद - आप परमविद्या हो, तीनों लोकों की जननी हो, विघ्नों के अम्बार का नाश करने वाली हो, स्त्रियों को आकर्षित करने वाली हो, जगत्-त्रय का आनन्द बढ़ाने वाली हो, दुष्टों का उच्चाटन करने वाली हो, पशु जन के मन को सम्मोह देने वाली हो और शत्रु की जिह्वा कीलन करने में भैरवी हो। सदैव विजय देने वाली परा ब्रह्मास्त्र-विद्या हो॥ 9॥ सम्पूर्ण विद्यायें लक्ष्मी, नित्य सौभाग्य, दीर्घायु, पुत्र-पौत्रादि सहित सर्व-साम्राज्य-सिद्धि, मान, भोग, वश्यता, आरोग्यता, सुखादि समस्त जो-जो भी मनुष्य को प्राप्त होना चाहिये, वह सब कुछ आपकी कृपा से इस पृथ्वी पर ही साधक को प्राप्त होता है॥ 10॥

(श्लोक)

पीताम्बरां च द्वि-भुजां त्रिनेत्रां गात्रकोमलम्।
शिला-मुदगर-हस्तां च स्मरेत तां बगलामुखीम्॥ 11॥
पीत-वस्त्र-लसिताभारि-देह-प्रेत-वासनं-निवेशित देहाम्।
कुल्ल-पुष्प-रव-लोचन-रम्यां दैत्य-जाल-दहनोज्जवलभूषा॥

पर्यङ्कोपरि-लसद्-द्विभुजां कम्बु-जम्बु-नद-कुण्डल-लोलाम्।
वैरि-निर्दलन-कारण-रोषां चिन्तयामि बगलां हृदयाब्जे॥ 12॥

हिन्दी अनुवाद – कोमल शरीरवाली, वज्र और मुद्गर हाथों में धारण करने वाली, त्रिनेत्र एवं दो भुजाओं वाली पीताम्बरा बगलामुखी का मैं स्मरण करता हूँ॥ 11॥ पीले वस्त्र धारण करने वाली, शत्रु के शव पर विराजमान, फूल की तरह विकसिता और सूर्य की तरह दीप्त नेत्र, असुरों के निधन के लिये जो उजले वस्त्र धारण करती है, पलंग पर शोभा पाने वाली द्विभुजा देवी, वलयाकार स्वर्णकुण्डल सुशोभिता, शत्रुओं के निधन के लिये जो अत्यन्त क्रोधी हैं, उन्हीं बगला का हृदय-कमल में ध्यान करता हूँ॥ 12॥

(श्लोक)

गेहं नाकमि, गर्वितः प्रणमति, स्त्री-सङ्गमो मोक्षति।
द्वेषि मित्रति, पातकं सु-कृतति, क्षमा वल्लभो दासति॥
मृत्युवैद्यति, दूषण सु-गणति, त्वत्-पाद-संसेवनात्।
वन्दे त्वां भव-भीति-भञ्जन-करीं गौरीं गिरिश प्रियाम्॥ 13॥
आराध्या जगदम्ब! दिव्य-कविभिः सामाजिकैः स्तोतृभि-
र्माल्यैश्चन्दन-कुंकमैः परिमलैरभ्यर्च्चिता सादरात्।
सम्यङ्न्यासि-समस्त-निवहे, सौभाग्य-शोभा-प्रदे।
श्रीमुग्धे बगले! प्रसीद विमले, दुःखापहे! पाहि माम॥ 14॥

हिन्दी अनुवाद : हे मातेश्वरी! आपके चरणों की सेवा से घर स्वर्ग बन जाता है, अहंकारी विनम्र तथा विनीत बन जाता है, स्त्री-संसर्ग करने वाला मोक्ष प्राप्त करता है, शत्रु मित्र बन जाता है, पापी पुण्यवान बन जाता है, राजा दास बन जाता है, यम भी वैद्य बन जाता है तथा दुर्गुणी सगुणी बन जाता है। हे संसार - भय दूर करने वाली, शिव-प्रिया, गौरी, बगला! आपकी वन्दना करता हूँ॥ 14॥ अध्यात्मवादी कवि, सामाजिक जनता और स्तुति करने वाले भक्त जगजननी बगला की सादर पूजा करते हैं। पुष्पमाला, चन्दन, कुंकम के शरीर में सम्यक् रूप से रहने वाली, सौभाग्यप्रदा, श्रीमुग्धा, विमला, दुःखहारिणी माँ बगला मेरी रक्षा करे॥ 14॥

(श्लोक)

यत्-कृतं जप-सन्नाहं गदितं परमेश्वरि।
दुष्टानां निग्रहार्थाय तद गृहाण नमोऽस्तु ते॥ 15॥
सिद्धिं साध्येऽवगन्तुं गुरु-वर-वचनेष्वार्ह-विश्वास-भाजाम्,
स्वान्तः पद्मासनस्थां वर-रुचि-बगलां ध्यायतां तार-तारम्।
गायत्री-पूत-वाचां हरि-हर-नमने तत्पराणां नराणाम्,
प्रातर्मध्याह्न-काले स्तव-पठनमिदं कार्य-सिद्धि-प्रदंस्योतु॥ 16॥

हिन्दी अनुवाद – हे महादेवी बगलामुखी ! दुष्टों के निग्रहार्थ आपके विषय में जो मैंने जपादि – पूर्वक कहा है, उसे आप स्वीकार करो, आपको नमस्कार है ॥ 15 ॥ हे जगत्-जननी जगदम्बे ! सद्‌गुरु के वचनों में विश्वास रखने वाला, आपमें अटल भक्ति रखने वाला, गायत्री सिद्ध व्यक्ति साध्य-विषय में सिद्धि प्राप्ति के लिये अपने हृदय में पद्मासना, उत्तम ज्योति-विशिष्टा बगला का ध्यान कर प्रातः और मध्याह्न में इस स्तव का निरन्तर पाठ करे, तो कार्य सिद्ध होता है ॥ 16 ॥

(श्लोक)

विद्या लक्ष्मीः सर्व-सौभाग्यमायुः पुत्रैः पौत्रैः सर्व-साम्राज्य-सिद्धिः ।
मानं भोगो वश्यमारोग्य-सोख्यम्, प्राप्तं सर्वं भू-तले त्वत्-परेण ॥ 17 ॥
यत-कृतं जप-संध्यानं, चिन्तन परमेश्वरि ।
शत्रुणां स्तम्भनार्थाय, तद गृहाण नमोऽस्तुते ॥ 18 ॥

हिन्दी अनुवाद – हे माते ! विद्या, लक्ष्मी, सारे सौभाग्य, आयु, पुत्र-पौत्रादि के साथ सारे साम्राज्य की प्राप्ति, सम्मान, भागे, यश, आरोग्य तथा सुख आदि सांसारिक वस्तुयें आपकी आराधना से मिल जाता है ॥ 17 ॥ हे देवी बगलामुखी ! शत्रुओं के स्तम्भन के लिये मैंने जो जप, ध्यान तथा चिन्तन किया, वह सब ग्रहण करो। आपको मेरा प्रणाम ।

श्री बगलामुखी स्तोत्र के पाठ करने का लाभ

(श्लोक)

नित्य स्तोत्रामिदं पवित्रमहि यो देव्याः पठत्यादरात् ।
धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले ॥
राजानोऽप्यरयो मदान्ध-करणिः सर्पा मृगेन्द्रादिकाः ।
ते व यान्ति विमोहिता रिपु-गणा लक्ष्मी स्थिरा सर्वदा ॥ 1 ॥
संरम्भे चोरसङ्घे प्रहरणसमये बन्धने व्याधि-मध्ये ।
विद्यावादे विवादे प्रकुपित-नृपतौ दिव्य-काले निशायाम् ॥
वश्ये वा स्तम्भने वा रिपु-वध-समये निर्जने वा वने वा ।
गच्छंस्तिष्ठस्त्रि कालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीरः ॥ 2 ॥
अनुदिनमभिसमं साधको यस्त्रि-कोलम्, पठति सा भुवनेऽसौ पूज्यते देववैगः ।
सकलममवकृत्यं तत्त्वद्रष्टा च लोके, भवति परम-सिद्धा लोकमाता पराम्बा ॥ 3 ॥

हिन्दी अनुवाद : मातेश्वरी बगलामुखी के प्रिय भक्तो ! पीताम्बरा के इस पवित्र स्तोत्र का पाठ जो साधक नित्य आदरपूर्वक करता है तथा इनके यन्त्र को बाजु में अथवा कलाई या गले में युद्धकाल में धारण करता है, तो राजा एवं शत्रुगण विमोहित हो जाते हैं। इतना ही नहीं, ऐसे साधक को लक्ष्मी की भी स्थिरता प्राप्त

होती है ॥ 1 ॥ हे जगदम्बा ! विकट परिस्थिति में, चोरों के समूह में, शत्रु पर प्रहार काल में, बन्धन में, व्याधि-पीड़ा में, विद्या-सम्बन्धी विवाद में, मौखिक कलह में, नृप-कोप में और रात्रि के दिव्य काल में, वश्य कार्य में, स्तम्भन में तथा शत्रु-वध के समय, निर्जन स्थान में अथवा वन में कहीं भी चलता हुआ, बैठा हुआ तीनों काल में जो साधक आपके स्तोत्र का पाठ करता है, वह धीर पुरुष शीघ्र ही कल्याण प्राप्त करता है ॥ 2 ॥ जो साधक प्रतिदिन त्रिसन्धया में इसका पाठ करता है, वह इस जगत् में देवताओं के द्वारा पूजित होता है। उसके सारे काम बन जाते हैं और वह संसार में तत्त्वदर्शी बनता है। जगत-जननी पराम्बा उसके लिये परम सिद्ध देवी बन जाती हैं।

बगलामुखी रक्षा स्तोत्र

(समस्त प्रकार के रोगों-व्याधियों-पीड़ाओं से मुक्ति हेतु)

(श्लोक)

बगला मे शिराः पातुः ललाटं ब्रह्मसंस्तुता।
बगला मे भ्रुवो नित्यं कर्णयोः क्लेशहारिणी॥
त्रिनेत्रा चक्षुषी पातु स्तम्भिनी गण्डयोस्तथा।
मोहिनी नासिकां पातु श्री देवि बगलामुखी॥

हिन्दी अनुवाद : मातेश्वरी बगलामुखी मेरे शिर की सुरक्षा करें और ब्रह्मा द्वारा स्तवन की हुई मेरे ललाट का त्राण करे। मेरी भ्रुओं को बगला तथा क्लेश हारिणी मेरे कानों की सुरक्षा करे। नेत्र वाली देवी नेत्रों की रक्षा करे तथा स्तम्भिनी नित्य ही मेरे गण्डों का त्राण करें। मोहिनी श्रीदेवी बगलामुखी नासिका का परित्राण करे।

(श्लोक)

ओष्ठयोर्दुर्धरा पातु सर्वदन्तेषु चञ्चला।
सिद्धान्नपूर्णा जिह्वायां जिह्वाग्रं शारदाम्बिके॥
अकल्मषा मुखे पातु चबुके बगलामुखी।
धीरा मे कण्ठदेशे तु कण्ठाग्रे कालकर्षिणी॥

हिन्दी अनुवाद : दुर्धरा मेरे ओष्ठों की रक्षा करे तथा चञ्चला सब दांतों की रक्षा करे। मेरी जिह्वा में सिद्धान्नपूर्ण रक्षा करें तथा जिह्वा के अग्रभाग में शारदा और अम्बिका परित्राण करें। मेरे मुख की सुरक्षा अकल्मषा करे, चिबुक की बगलामुखी सुरक्षा करे। मेरे कण्ठ देश में धीरा रक्षा करे और कालकर्षिणी कण्ठ के अग्रभाग में रक्षा करे।

(श्लोक)

शुद्धस्वर्णनिभा पातु कण्ठमध्ये तथाऽम्बिका।
कण्ठमूले महाभोगा स्कन्धौ शत्रु विनाशिनी॥
भुजां मे पातु सततं बगला सुस्मिता परा।
बगला मे सदा पातु कर्पूरे कमलोदभवा॥

हिन्दी अनुवाद : शुद्ध सुवर्ण के सदृश कण्ठे के मध्य में सुरक्षा करे तथा अम्बिका भी परित्राण करे। महाभोगा कण्ठ मूल में तथा शत्रु विनाशिनी दोनों स्कन्धों की रक्षा करे। मेरी दोनों भुजाओं की सुरक्षा परा सुस्मिता-बगला निरन्तर करे। कमलोद्भवा बगला सदा मेरे कर्पूरों की रक्षा करे।

(श्लोक)

बगलाऽम्बा प्रकोष्ठौ तु मणिबन्धं महाबला।
बगला श्रीर्हस्तयोश्च कुरुकुल्ला कराङ्गुलिम्॥
नखेषु व्रजहस्ता च हृदये ब्रह्मवादिनी।
स्तनौ मे मन्दगमना कुक्ष्योर्योगिनी तथा॥

हिन्दी अनुवाद : प्रकोष्ठों की रक्षा अम्बा बगला करे और महाबला मणिबन्ध में त्राण करे। बगला और श्रीहाथों का त्राण करे एवं कुरुकुल्ला करों की रक्षा करे। वज्र हस्ता नखों में त्राण करे तथा ब्रह्मवादिनी हृदय में रक्षा करे। मन्दगमना मेरे स्तनों की सुरक्षा करे तथा योगिनी कुक्षियों का त्राण करे।

(श्लोक)

उदरं बगला माता नाभिं ब्रह्मास्त्रदेवताः।
पुष्टिं मुद्गरहस्ता च पातु नो देववन्दिता॥
पार्श्व-योर्हनुमद्वन्धा पशुपाश विमोचनी।
करौ रामप्रिया पातु डरुयुग्म महेश्वरी॥

हिन्दी अनुवाद : बगला माता उदर का और ब्रह्मास्त्र देवता नाभि का परित्राण करे। देवों के द्वारा वन्दिता मुदगर हाथों में धारण करने वाली हमारी पुष्टि की सुरक्षा करे। हनुमान जी द्वारा वन्द्यमाना पशुपाश विमोचिनी दोनों पार्श्वों का त्राण करे। रामप्रिया दोनों करो की रक्षा करे और महेश्वरी ऊरुओं के युग्म का त्राण करे।

(श्लोक)

भगमाला तु गुह्यं मे लिङ्गं कामेश्वरी तथा।
लिङ्गमूले महाक्लिन्ना वृषणौ पातु दूतिका॥
बगला जानुनी पातु जानुयुग्मं च नित्यशः।
जङ्घे पातु जगद्धात्री गुल्फौ रावणपूजिता॥

हिन्दी अनुवाद : मेरे गुह्य को भगमाला सुरक्षित करे तथा लिंग की कामेश्वरी रक्षा करे। लिंग के मुख को महाक्लिन्न रक्षा करे और दूतिका दोनों वृषणों की रक्षा करे। बगला देवी जानुओं की तथा जानुयुग्म की रक्षा करे। जगद्धात्री जंघाओं और रावणपूजिता दोनों गुल्फों की सुरक्षा करे।

(श्लोक)

चरणौ दुर्जया पातु पीताम्बरा चरणाङ्गुलीः।
पादपृष्ठं पद्महस्ता पादा-धरचक्रधारिणी॥
सर्वाङ्गं बगला देवी पातु श्रीबगलामुखी।
ब्राह्मी में पूर्वतः पातु माहेशी वह्निभागतः॥

हिन्दी अनुवाद : दुर्जया चरणों और पीताम्बर चरणों की अंगुलियों की रक्षा करे। पद्महस्ता पादों के पृष्ठ और चक्र धारिणी पादों के नीचे के भाग का संरक्षण करे। श्रीबगलामुखी बगलादेवी सर्वाङ्ग की सुरक्षा करे। ब्राह्मी मेरी पूर्व दिशा में रक्षा कर – आग्नेयी में महेशी रक्षा करे।

(श्लोक)

कौमारी दक्षिणे पातु वैष्णवी स्वर्गमार्गतः।
ऊर्ध्व पाशधरा पातु शत्रुं जिह्वाधरा ह्याधः॥
रणे राजकुले वादे महायोगे महाभये।
बगला भैरवी पात नित्यं क्लीं काररूपिणी॥

हिन्दी अनुवाद : कौमारी दक्षिण में रक्षा करे। वैष्णवी स्वर्ग मार्ग से रक्षा करे। उर्ध्व में पाशधरा रक्षा करे। अधोभाग में शत्रु की जिह्वा को धारण करने वाली रक्षा करे, रणक्षेत्र में, राजकुल में, वाद में महायोग में और महाभय में बगला भैरवी क्लींकाररूपिणी नित्य ही परित्राण करें। में बगला भैरवी क्लींकाररूपिणी नित्य ही परित्राण करें।

(श्लोक)

इत्येवं वज्रकवचं महाब्रह्मास्त्रसंज्ञकम्।
त्रिसन्धयं यः पठेद धीमान सर्वैश्वर्यमवाप्नुयात्॥
न तस्य शत्रवः केऽपि सखायः सर्व एव च।
बलेनाकृष्य शत्रुं स्यात् सोऽपि मित्रत्वमाप्नुयात्॥

हिन्दी अनुवाद : इस प्रकार से इस ब्रह्मास्त्र संज्ञा वाले वज्र कवच का जो धीमान पुरुष तीनों संध्या कालों में नित्य नियम से पाठ किया करता है। वह सभी प्रकार के ऐश्वर्य को प्राप्त कर लिया करता है। इसके कोई भी शत्रु समुत्पन्न नहीं होते हैं और सभी उसके सखा ही होते है। वह शत्रु को भी बल से आकर्षित कर लिया करता है और वह शत्रु भी मित्र भाव को प्राप्त हो जाया करता है।

(श्लोक)

शत्रुत्वे मरुता तुल्यो धनेन धनदोपमः।
रूपेम कामतुल्य स्याद् आयुषा शूलधृक्समः॥
सनकादिसमो धैर्ये श्रिया विष्णुसमो भवेत्।
तत्तुल्यो विद्यया ब्रह्मन् यो जपेत् कवचं नरः॥

हिन्दी अनुवाद : इसका पाठ करने वाला शत्रुता में मरुत के तुल्य होता है, और धन में कुबेर के तुल्य होता है। रूप-सौन्दर्य में कामदेव के समान और आयु में शूलधृक् के सदृश हो जाता है। धैर्य में सनकादि के समान हो जाता है और बुद्धि से भगवान विष्णु के तुल्य हो जाया करता है। हे ब्रह्मा जी, विद्या से भी उसी के सदृश हो जाया करता है।

(श्लोक)

नारी वापि प्रयत्नेन वाञ्छितार्थमवाप्नुयात्।
द्वितीया सूर्यवारेण यदा भवति पद्मभूः॥
तस्यां जातं शतावृत्या शीघ्रं प्रत्यक्षमाप्नुयात्।
याता तरीयं संध्यातां भू शय्यायां प्रयत्नतः॥
सर्वान् शत्रून क्षयं कृत्वा विजयं प्राप्नुयात नरः।
दारिद्रयान मुच्यते चाऽऽशु स्थिरा लक्ष्मीर्भवेद गृहे॥

हिन्दी अनुवाद : अथवा नारी हो वह भी इसके पाठ करने से अपने मनोवांछित अर्थ की प्राप्ति कर लिया करती है। द्वितीय सूर्य बार से जब पद्मभू होती है उसमें उत्पन्न सौ आवृत्ति से शीघ्र ही प्रत्यक्ष को प्राप्त होती है। संध्या में तुरीय को गई हुई प्रयत्न से भुशाया में रहकर समस्त शत्रुओं का क्षय करके नर विजय को लोभ किया करता है और शीघ्र ही दरिद्रता से मुक्त हो जाया करता है और फिर लक्ष्मी घर में सुस्थिर हो जाती है।

(श्लोक)

सर्वान कामानवाप्नोति सविषो निर्विषो भवेत्।
ऋण-निर्मोचनं स्याद् वै सहस्त्रावर्तनाद विधेः॥
भूतप्रेतपिशाचादि पीडा तस्य न जायते।
द्युर्मणर्भ्राजते यद्वत तद्वत स्याच्छ्री प्रभावतः॥
स्थिराभया भवेत् तस्य यः स्मरेद् बगलामुखीम्।
जयदं बोधदं देवि कामधुक् देहि मे शिवे॥
जपस्यान्ते स्मरेत यो वै सोऽभीष्ट-कलमाप्नुयात्।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम्॥
न स सिद्धिमवाप्नोति साक्षाद् वै लोकपूजितः।

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन कवचं ब्रह्मतेजसम्॥
नित्यं पदाम्बुजध्यानात् महेशानसमो भवेत्।

हिन्दी अनुवाद : सभी कामनाओं को प्राप्त करता है तथा विष से युक्त भी निर्विष हो जाता है। हे ब्राह्मन्! एक सहस्त्र आवृति के करने से ऋण से छुटकारा प्राप्त होता है। उसकी फिर भूत-प्रेत और पिशाच आदि की पीड़ा निश्चय ही कभी नहीं होती है। श्री के प्रभाव से जिस प्रकार भगवान् भास्कर चमका करते हैं वह भी वैसे ही दीप्तिमान हो जाता है। जो बगलामुखी का स्मरण किया करता है उसको वह स्थिरामया होती है। यह कहना चाहिये कि हे शिवे! जय देने वाला और मुझे अमुक कामना को प्रदान करो। जाप के अन्त में जो बगलामुखी का स्मरण कया करता है वह निश्चय अपना अभीष्ट फल प्राप्त कर लेता है। इस कवच का ज्ञान न प्राप्त करके जो भी बगलामुखी के मन्त्र का जाप करता है चाहे यह साक्षात् लोक द्वारा पूजित भी क्यों न होवे। उस कारण सब प्रकार के प्रयत्न से इस ब्रह्म तेज वाले कवच का पाठ अवश्य ही करना चाहिये। नित्य प्रति पदाम्बुओं के ध्यान से मनुष्य महेशान के ही समान हो जाया करता है।

पीताम्बरा बगलामुखी कवच

प्रिय साधको! इस कवच का पाठ करने से पूर्व अपने पूज्य गुरु का स्मरण करते हुए करजोड़ कर उन्हें प्रणाम कीजिये। इस श्रीपीताम्बरा बगलामुखी कवच के महादेव ऋषि हैं, उष्णिक छन्द हैं, पीताम्बरा देवता हैं, स्थिर मायाबीज है, स्वाहा शक्ति है, अष्ट कीलक है, मेरे समीप तथा दूर स्थित समस्त दुष्टों की वाणी, मुख, पद, जिह्वा, अपवर्गों के स्तम्भन सहित सम्पूर्ण सम्पदा की प्राप्ति के साथ चतुवर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के फल के साधन के लिये जप करने में विनियोग है।

(श्लोक)

मध्येसुधाब्धि मेणिमण्डपरत्नवेधां
सिंहासनोपरि गतां परिपीतवर्णाम्
पीताम्बरा-भरणमाल्य विभूषितांगी
देवीं भजामि धृतमुदगर-वैरिजिह्वाम॥ 1॥
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून परिपीडयन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराद्यां द्विभुजां नमामि॥ 2॥

हिन्दी अनुवाद : सुध के महासागर के मध्य में मणियों से विरचित मण्डप में रत्नों की वेदी पर सिंहासन के ऊपर विराजमान परिपीतवर्ण वाली पीतभूषण, माला, वस्त्र से विभुअङ्ग-प्रत्यङ्गों से संयुक्त, मुदगर और शत्रु की जिह्वा को धारण करती

हुई देवी का मैं भजन करता हूँ॥ 1॥ अपने एक कर से शत्रु की जिह्वा को ग्रहण करके वाम कर से शत्रुओं को परिपीड़ित करती हुई तथा दाहिने हाथ से गदा के संघात से मारती हुई दो भुजाओं वाली पीत वस्त्र धारिणी देवी के लिये नमन करता हूँ।

(श्लोक)

इति ध्यात्वा पठेत्।
हिमवत्तनया गौरी कैलासोऽथ शिलोच्चाये।
अपृच्छद गिरिशं देवी साधक-अनुग्रहेच्छया॥ 3॥
श्रीपार्वत्युवाच -
देवदेव महादेव भक्तानुग्रहकारक।
शृणु विज्ञाप्यते यत्तु युक्त्या सर्वं निवेदय॥ 4॥

हिन्दी अनुवाद : इस प्रकार से देवी के स्वरूप का ध्यान करके कवच का पाठ करना चाहिए। गिरियों के राजा हिमवान् की परमप्रिय पुत्री गौरी ने कैलाश पर्वत पर एक उच्च शिलाओं के समूह पर विराजमान भगवान् शिव से अपनी साधना करने वाले भक्तों पर अनुग्रह करने को इच्छा से पूछा था। श्री पार्वती ने कहा – हे देवों के भी पूज्य देवेश्वर! आप तो सर्वोपरि महान् देव हैं और सर्वदा अपने भक्तों पर कृपा करने वाले हैं। आप मेरी प्रार्थना सुनिये जो इस समय मैं आपकी सेवा में विज्ञप्ति की जा रही है और फिर कृपया उसका समाधान कीजिए।

(श्लोक)

विशुद्धा कौलिका लोके ये मत्कर्म परायणाः।
तेषां निन्दाकरा लोके बहवः किल दुर्जनाः॥ 5॥
मनोबाधा विदधते मुहः कटुभिरुक्तिभिः।
तेषामाश् विनाशाय त्वया देव प्रकाशितः॥ 6॥
यो मन्त्रौ बगलामुख्याः सर्वकामसमृद्धिदः।
कवचं तस्य मन्त्रस्य प्रकाशय दयानिधे॥ 7॥

हिन्दी अनुवाद : कौलिक मत के मानने वाले लोक में परम विशुद्ध हैं जो कि सभी मेरे ही कर्मों में परायण रहा करते हैं। तात्पर्य यह है कि कौलिकों में विशुद्धता है और साथ ही मेरे ही कर्मों में उनकी तत्परता एवं संलग्नता भी है। किन्तु लोक में उनकी निन्दा करने वाले बहुत से दुर्जन रहा करते हैं। ये लोग अत्यन्त कटु वचनों के द्वारा कौलिकों के मन को बाधा पहुंचाया करते हैं और बराबर ऐसा ही किया करते हैं। उनके विनाश करने के लिए हे देव! आपने एक मंत्र प्रकाशित किया है जो-जो बगलामुखी देवी का मंत्र समस्त कामनाओं की समृद्धि का देने वाला है। हे दयानिधे! उस मंत्र के कवच को अब प्रकाशित कर दीजिए।

(श्लोक)

यस्य स्मरणमात्रेण पशूनां निग्रह्यो भवेत्।
आत्मानं सततं रक्षेद व्याघ्राग्नि-रिपुराजतः॥ 8॥
श्रुत्वाऽथ पार्वतीवाक्यं ज्ञात्वा तस्या मनोगतम्।
विहस्य तां परिष्वज्य साधु साध्वित्य पूजयत॥ 9॥

हिन्दी अनुवाद – जिसके केवल स्मरण ही करने से पशुओं का भी निग्रह हो जाया करता है और जो अपनी आत्मा को निरन्तर व्याघ्र, अग्नि, शत्रु और राजा से सुरक्षित किया करता है। भगवान शिव अपनी प्रिया पार्वती के इस वचन का श्रवण करके और उनके मन में स्थित भाव को समझ करके परम प्रसन्न हुए और हंसकर उनका समालिंगन करते हुए कहा था – बहुत ही अच्छा प्रश्न है – इस तरह से पार्वती से परम प्रशंसा की थी।

(श्लोक)

तदाह कवचं दैव्यै कृपया करुणनिधिः।
शृणु त्वं बगलामुख्याः कवचं सर्वकामदम्॥ 10॥
यस्य स्मरणमात्रेण बगलामुखी प्रसीददति।
सर्वसिद्धिप्रदा प्राच्यां पातु मां बगलामुखी॥ 11॥

हिन्दी अनुवाद – इसके पश्चात् करुणा के सागर सदाशिव प्रभु ने देवी के लिए कृपाकर उस कवच को कहा था। भगवान शिव-शंकर ने कहा – हे देवी! अब आप बगलामुखी के सब कामनाओं के प्रदान करने वाले कवच का श्रवण कीजिए। यह कवच ऐसा है कि इसके स्मरण भर कर लेने से ही देवी बगलामुखी परम प्रसन्न हो जाया करती हैं। यह सब सिद्धियों को प्रदान करने वाली बगलामुखी मेरा पूर्व दिशा में परित्राण करे।

(श्लोक)

पीताम्बरा तु चाग्नेय्यां याम्यां महिषमर्दिनी।
नैर्ऋत्यां चण्डिका पातु भक्तानुग्रहकारिणी॥ 12॥
पातु नित्यं महादेवी प्रतीच्यां शूकरानना।
वायव्ये पातु मां काली कौवेर्या त्रिपुराऽवतु॥ 13॥

हिन्दी अनुवाद : आग्नेयी दिशा में पीताम्बरा और याम्य दिशा में महिषमर्दिनी तथा नैर्ऋत्य दिशा में भक्तों पर अनुग्रह करने वाली चामुण्डा देवी रक्षा करें। शूकर के समान मुख वाली महादेवी नित्य ही पश्चिम में मेरी रक्षा करे। वायव्य दिशा में मेरा परित्राण काली करे तथा कौबेरी दिशा में मेरा रक्षण त्रिपुरादेवी करे।

(श्लोक)

ईशान्यां भैरवी पातु पातु नित्यं सुरप्रिया।
ऊर्ध्वं वागीश्वरी पातु मध्ये मां ललिताऽवतु॥ 14॥
अधस्ताद अपि मां पातु वाराही चक्रधारिणी।
मस्तकं पातु मे नित्यं श्रीदेवी बगलामुखी॥ 15॥

हिन्दी अनुवाद - ईशानी दिशा में भैरवी रक्षा करें और सुरप्रिया नित्य ही परिपालन करे। उर्ध्व भाग में वागीश्वरी सुरक्षा करे तथा मध्य भाग में ललिता देवी मेरा परित्राण करें। नीचे की ओर भी चक्र के धारण करने वाली वाराही मेरी रक्षा करें। मेरे मस्तक की रक्षा नित्य ही श्रीदेवी बगलामुखी करें।

(श्लोक)

भालं पीताम्बरा पातु नेत्रे त्रिपुरभैरवी।
श्रवणौ विजया पातु नासिकायुगलं सुरेश्वरी॥ 16॥
शारदा वचनं पातु जिहवां पातु सुरेश्वरी।
कण्ठं रक्षतु रुद्राणी स्कन्धौ मे विन्ध्यावासिनी॥ 17॥

हिन्दी अनुवाद - मेरे भाल को पीताम्बरा रक्षित करें और मेरे नेत्रों को त्रिपुर भैरवी सुरक्षित करें। श्रवणों का त्राण विजया करे और जयादेवी मेरी दोनों नासिकाओं की रक्षा करे। शारदा देवी मेरे वचन का त्राण करें। सुरेश्वरी देवी मेरी जिह्वा की सुरक्षा करें। रुद्राणी कण्ठ का और विन्ध्वासिनी स्कन्धों का परित्राण करें।

(श्लोक)

सुन्दरी पातु वाहू मे जया पातु करौ सदा।
भवानी हृदयं पातु मध्यं मे भुवनेश्वरी॥ 18॥
नाभिं पातु महामाया कटिं कमल-लोचना।
उरू मे पातु मातङ्गी जानुनी चापराजिता॥ 19॥

हिन्दी अनुवाद - मेरे बाहूओं की रक्षा सुन्दरी करें और जयादेवी सर्वदा मेरे करौं का परित्राण करें। भवानी हृदय को रक्षित करें और मध्य भाग की सुरक्षा भुवनेश्वरी करें। महामाया देवी मेरी नाभि का तथा कमल-लोचना कटि का त्राण करें। मातंगी दोनों ऊरुओं की और अपराजिता दोनों जानुओं का परित्राण करें।

(श्लोक)

जंघां कपालिनी पातु चरणौ चंचलेक्षणा।
सर्वतः पातु मां तारा योगिनी पातु चाग्रतः॥ 20॥
पृष्ठं मे पातु कौमारी दक्षपार्श्वे शिवाऽवतु।
रुद्राणी वामपार्श्वे तु पातु मां सर्वश्रेष्ठदा॥ 21॥

हिन्दी अनुवाद – जंघाओं की सुरक्षा कपालिनी देवी करें तथा चंचलेक्षणा मेरे चरणों का त्राण करें। तारा सभी ओर से मेरी रक्षा करे और अगले भाग में योगिनी मेरा परित्राण करें। कौमारी मेरे पृष्ठ भाग की रक्षा करें और दाहिने पार्श्व में शिवा मेरी रक्षा करें। रुद्राणी वाम पार्श्व में रक्षा करें जो सभी श्रेष्ठों को प्रदान करने वाली हैं।

(श्लोक)

स्तुता सर्वेषु देवेषु रक्तबीजविनाशिनी।
इत्येतत कवचं दिव्यं धर्मकामार्थ साधनम्॥ 22॥
गोपनीयं प्रयत्नेन कस्यचिन्न प्रकाशयेत।
यः सकृच्छृणुयादू एतत कवचं मन्मुखोदितम्॥ 23॥
स सर्वान लभेत कामान् मूर्खो विद्यामवाप्नुयात।
तस्या शत्रवो यान्ति यमस्य भुवने शिवे॥ 24॥

हिन्दी अनुवाद – समस्त देवों में रक्तबीज के विनाश करने वाली का स्तवन किया गया है। यही परम दिव्य कवच है जो समस्त कार्यों के अर्थ को समझने वाला है। इसको गोपन अत्यधिक प्रयत्नों के द्वारा करना चाहिए और इसको किसी के भी सामने प्रकाशित न करें। जो कोई भी पुरुष मेरे मुख से कहे हुए कवच का एक अक्षर भी श्रवण कर लेता है वह समस्त मनोरथों की प्राप्ति कर लिया करता है और मूर्ख भी हो तो भी वह विद्या को प्राप्त कर लिया करता है। हे शिवे! उसके सर्व शत्रुगण यमराज के भवन में चले जाते हैं।

शत्रु विनाशम् – सर्वसुखम श्री बगलामुखी स्तोत्रम्

समस्त प्रकार के शत्रुओं पर विजय पाने हेतु और
सभी सुखों की प्राप्ति के लिए 'श्री नारद' जी द्वारा रचित
श्री बगलामुखी का परम तेजस्वी स्तोत्र

ओं अस्य श्रीबगलामुखीस्तोत्रस्य भगवान नारद ऋषिः श्रीबगलामुखी देवता, त्रिष्टुप छन्दः ममसन्निहिता-नामसन्निहितानां विरोधिनां दुष्टानां वाङ्मुख-बुद्धिनां स्तम्भनार्थ श्रीमहामाया बगलामुखी वर प्रसादसिद्धयर्थ जपे विनियोगः। ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट, ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय, अनामिकाभ्यां हुम ॐ जिह्वा कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवं हृदयादिषु।

हिन्दी अनुवाद : इस महातेजस्वी श्री बगलामुखी स्तोत्र रचयिता भगवान नारद ऋषि हैं। श्री बगलामुखी देवता है, त्रिष्टुप छन्द है, मेरे सन्निहित विरोधी दुष्टों की वाणी – मुख और बुद्धि के स्तम्भन के लिए श्री महामाया बगलामुखी के वरदान के प्रसाद की सिद्धि के लिए जप में विनियोग है। ॐ ह्लीं अंगुष्ठों के लिए नमस्कार है, ॐ बगलामुखी तर्जनियों के लिए वषट् है, ॐ सर्वदुष्टों का मध्यमाओं के लिए वषट् है, ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाओं को हुम है ॐ जिह्वा कीलय इति कनिष्ठिकाओं के लिए वौषट् है। ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा करतल करपृष्ठों के लिए फट् है। इसी प्रकार से कर न्यासों के समान हृदयादि पर न्यास की समाचरण करना चाहिए।

सौवर्णासन-संस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं
हेमाभांगरुचिं शशांकमुकुटां सच्चम्पकस्त्रग्युताम्।
हस्तैर्मुदगर-पाशवज्ररसनाः संबिभ्रतीं भूषणैः
व्याप्ताङ्गी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत्।

हिन्दी अनुवाद : सुवर्ण निर्मित आसन पर विराजमान तीन नेत्रों से समन्वित, पीतवर्ण के वस्त्रों से उल्लास वाली, हेम की आभा से युक्त अंगों वाली, मुकुट में चन्द्र बिम्ब को धारण करती हुई, सुन्द्र पीतचम्पा की मालाओं से समन्वित, अपने चारों कर-कमलों में मुदगर (एक प्रकार का शस्त्र), पाश, वज्र और शत्रु की जिह्वा को धारण करने वाली, सुन्दर भूषणों से देदीप्यमाना तथा भूषणों से अंगों वाली, तीन भुवनों का संस्तम्भन करने वाली श्रीबगलामुखी देवी का चिन्तन करना चाहिए।

स्तोत्र का आरम्भ :

(श्लोक)

मध्येसुधाब्धि मणिमण्डपरत्नवेद्यां।
सिंहासनो-परिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बरा-भरणमाल्य-विभूषिताङ्गीं देवीं नमामि
धृतमुद्गर-वैरिजिह्वाम्॥ 1॥
जिह्वाग्रभादाय करेण देवीं वामेन शत्रुन
पीरिपीडयन्तीम् गदाभिधातेन च दक्षिणन
पीताम्बराढ्यां द्विभुजा नमामि॥ 2॥

हिन्दी अनुवाद : सुधा के सागर में स्थित मणियों के द्वारा सुनिर्मित रत्नों की वेदी में पीतवर्ण के आभरण एवं वस्त्रों से तथा मालाओं से विभूषित अंगों वाली मुदगर, शत्रु की जिह्वा को धारण करती हुई देवी श्री बगलामुखी को नमस्कार करता

हूँ। एक कर से शत्रु की जिह्वा के अग्रभाग को ग्रहण कर वामकर से शत्रुओं को परिपीड़ित करती हुई तथा दाहिने हाथ से गदा के द्वारा अभिघात करने वाली अर्थात् शत्रु के अंग पर चोट करती हुई दो भुजाओं वाली देवी के लिए जो पीत वस्त्रों से शोभित है मैं नमस्कार करता हूँ।

(श्लोक)

त्रिशूल-धारिणीमम्बां सर्वसौभाग्यदायिनीम्।
सर्व-शृङ्गार वेशाद्यां देवीं ध्यात्वा प्रपूजयेत्॥ 3॥
पीतवस्त्रां त्रिनेत्रां च द्विभुजां हाटकोज्ज्वलाम्।
शिला-पर्वतहस्तां च स्मरेत तां बगलामुखीम्॥ 4॥

हिन्दी अनुवाद : त्रिशूल को धारण करने वाली तथा सब सौभाग्य प्रदान करने वाली समस्त शृंगार के उपकरण एवं वेश से समन्वित अम्बा देवी श्रीबगलामुखी का हृदय में भलीभांति चिन्तन करके फिर प्रकृष्ट पूजन देवी का करना चाहिए। पीत वर्ण के वस्त्रों को धारण करती हुई तीन नेत्रों से समन्वित दो भुजाओं से युक्त सुवर्ण के सदृश्य समुज्ज्वल दीप्ति वाले हाथ में पर्वत की शिला को धारण करने वाली उस परम प्रसिद्ध बगलामुखी देवी का स्मरण करना चाहिए।

(श्लोक)

रिपु-जिहवा-गृहां देवी पीतपुष्प-विभूषिताम्।
वैरिनिर्दल-नार्थाय स्मरेत् तां बगलामुखीम्॥ 5॥
गंम्भीरां च मदोन्मत्तां स्वर्णकान्ति-समप्रभाम्।
चतुर्भुजा त्रिनेत्रां च कमलासन-संस्थिताम्॥ 6॥

हिन्दी अनुवाद : शत्रुओं की जिह्वा के अग्रभाग को खींचकर बाहर निकालने वाली पीत वर्णो के कुसुमों से विभूषित देवी बगलामुखी का अपने शत्रुओं का नर्दलन करने के लिए स्मरण कना चाहिए। परम गम्भीर स्वभाव से समन्वित वारुणी के मद से उन्नमत्त, सुवर्ण की कान्ति के आसन पर विराजमान देवी का चिन्तन करें।

(श्लोक)

मुद्गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च वज्रकम्।
पीताम्बरधरां सान्द्रदृढ़पीन-पयोधराम्॥ 7॥
हेमकुण्डलभूषां च पीतचन्द्रार्ध-शेखराम्।
पीतभूषण-पीताङ्गी स्वर्ण सिंहासने स्थिताम्॥ 8॥

हिन्दी अनुवाद : दाहिने करों में मुद्गर और पाश तथा बायें हाथों में शत्रु की जिह्वा और वज्र को धारण करती हुई पीत वस्त्रों वाली पुष्ट एवं पीन पयोधरों से

संयुत देवी बगलामुखी का चिन्तन करना चाहिए। सुवर्ण रचित कुण्डलों के भूषणों वाली, पीत वर्ण वाले आधे चन्द्रमा को धारण करती हुई पीले आभरणों से पीत अंगों वाली सुवर्ण के सिंहासन पर विराजमान देवी बगलामुखी का स्मरण करें।

(श्लोक)

एवं ध्यात्वा जपेत् स्तोत्रमेकाग्र-कृतमानसः।
सर्वसिद्धिम-वाप्नोति मन्त्र-ध्यानपुरः सरम्॥ 9॥
आराध्या जगदम्ब दिव्यकविभिः सामाजिकैः स्तोतृभि-
र्माल्यैश्चन्दन-कुङ्कुमैः परिमलैश्भ्यर्चिता सादरात्।
सम्यङ्-न्यासिमस्त भूतनिवहे सौभाग्य रोभाप्रदे।
श्रीमुग्धे बगले प्रसीद विमले दुःखपहे पाहि माम्॥ 10॥

हिन्दी अनुवाद : उक्त प्रकार से देवी का ध्यान करके एकाग्र मन होकर देवी के स्तोत्र का जप करना चाहिए। देवी के ध्यान के साथ जो भी कोई एकाग्र मन से देवी के स्तोत्र का जप करता है वह सभी प्रकार की सिद्धि प्राप्त कर लिया करता है। दिव्य कवियों के द्वारा जगदम्बा का सामाजिक स्तोत्रों से समराधन करना चाहिए जो कि आदर के साथ माला कुंकुम और चन्दन से परिमलों के द्वारा अभ्यर्चन की गई है। हे भली भांति समस्त भूतों के निग्रह को न्यास करने वाली। हे सौभाग्य की शोभा को प्रदान करने वाली आप प्रसन्न होइये और मेरा परित्राण करिए।

(श्लोक)

आनन्दकारिणी देवी रिपु-स्तम्भनकारिणी।
मदनोन्मादिनी चैव प्रीति-स्तम्भनकारिणी॥ 11॥
महाविद्या महामाया साधकस्य फलप्रदा।
यस्याः स्मरणमात्रेण त्रैलोक्यं स्तम्भयेत् क्षणात्॥ 12॥

हिन्दी अनुवाद : देवी सदा आनन्द के करने वाली है और रिपुओं का स्तम्भन कर देने वाली है। महाविद्या है, महामाया है और साधना करने वाले भक्त साधक को फल देने वाली है जिसके केवल स्मरण करने से एक ही क्षण में तीनों लोकों का स्तम्भन कर दिया करती है।

(श्लोक)

वामे पाशाङ्कुशौ शक्तिस्त-स्याधस्ताद वरं शुभम्।
दक्षिणे क्रमतौ पज्रं गदाजिहवाऽभयानि च॥ 13॥
विभ्रतीं संस्मरेन्नित्यं पीतमालानु-लेपनाम्।
पीताम्बरधरां देवीं ब्रह्मादि-सुखन्दिताम्॥ 14॥

हिन्दी अनुवाद : बायीं और पाश, अंकुश और शक्ति है और उसके नीचे की ओर शुभ वरदान में तथा दाहिनी ओर क्रम से गदा, वज्र, शत्रु-जिह्वा और अभय दान वर्तमान रहा करता है। पीतवर्ण की माला और अनुलेपन को धारण करती हुई देवी का स्मरण नित्य ही करें। पीत अम्बर को धारण करने वाली देवी बगलामुखी सर्वदा ब्रह्मा आदि सुरगणों के द्वारा वन्धमान रहा करती है।

(श्लोक)

केयूराङ्गद कुण्डलभूषां बालार्क-द्युतिरीञ्ज-नितम्बाम्।
कल्पद्रुमतल विहितशिलायां प्रमुदित चित्तोल्ल-सदलकान्ताम्।
पञ्चप्रेत किनेतनबद्धां भक्तजनेभ्यो पितरणशीलाम्॥ 15॥
एवविद्यां बगला ध्यात्वा मनसि साधकः।
सर्वसम्पत् समृद्धयर्थ स्तोत्रमेतमुदीरयेत्॥ 16॥

हिन्दी अनुवाद : केयूर, अंगद और कुण्डलों के भूषण वाली, बाल सूर्य की द्युति के समान द्युति रंजित वेष से युक्त तरुण सूर्य के सादृश्य प्रतिभा से युक्त कौशेय वस्त्र से नितम्बों को बांधे हुए देवी का चिन्तन करना चाहिए। कल्पवृक्ष के नीचे निहित शिला पर प्रमुदित चित्त से संयुत एवं सुशोभित अलकों के छोर वाली पांच प्रेतों के निकेतन में बद्ध अपने भक्तजनों के लिए अभीष्टों के वितरण करने के स्वभाव वाली देवी का चिन्तन करना चाहिए। इस स्वभाव व स्वरूप वाली जगदम्बा का साधक अपने मन में ध्यान करके समस्त सम्पदाओं की समृद्धि के लिए इन स्तोत्र का उदीरण करें।

(श्लोक)

चलत् कनक कुण्डलोल्लसित चारुगण्डस्थलां
लसत् कनक चम्पक द्युतिम-दिन्दुविम्बाननाम्।
गदाहातविपक्षकां कलितलोलजिहवां चलां
स्मराभि बगलामुखीं विमुखवाङ् मुखस्तम्भिनीम्॥ 17॥
पीयूषोदधि मध्यचारुवल सद्रत्नोज्ज्वले मण्डपे
तत्सिंहासन मूलपतितरिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम्।
स्वर्णाभां करपीड़िता रिरसना भ्राम्यद गदां विभ्रमां
यस्त्वां ध्यायति, यान्ति तस्य विलयं सद्यो सर्वापदः॥ 18॥

हिन्दी अनुवाद : हिलते हुए कुण्डलों से सुशोभित मनोहर गण्ड स्थल वाली सुललित पीत चम्पक की द्युति से सम्पन्न इन्दु के बिम्ब के समान् सुख से समन्वित सदा के प्रहरों से अपने तथा अपने भक्तों के विपक्षियों को निहित करती हुई, सुन्दर चंचल जिह्वा वाली विमुखता रखने वालों के मुख और वचनों का स्तम्भन करने वाली देवी बगलामुखी का मैं चिन्तन करता हूँ। सुधा-सागर के मध्य परम सुन्दर

सुशोभित रत्नों के द्वारा निर्मित एवं समुज्ज्वल मण्डप में विराजमान और उस सिंहासन के मूल में रिपुओं का निपतन कर देने वाली तथा प्रेत के आसन पर अध्यासित, स्वर्ण के समान आभा से युक्त, अपने कर से शत्रु की रसना को पीड़ित करने वाली, गदा को घुमाती हुई विभ्रम सम्पन्ना आपका जो भी कोई साधक ध्यान किया करता है उसकी समस्त आपदायें उसी क्षण अर्थात् चिन्तन करने के साथ ही विलीन हो जाया करती है।

(श्लोक)

देवि त्वच्चारणाम्बुजा-र्चनकृते यः पीतपुष्पाञ्जलि
मुद्रां वामकरे निधाय च पुनर्मन्त्री मनोज्ञाक्षरम्।
पीतध्यानपरोऽथ कुम्भकवशाद बीजं स्मरेत पार्थिवं
तस्यारिपु-मुखस्य वाचि हृदय जाड्यं भवेत तत्क्षणात॥ 19॥
मन्त्रस्तावदलं विपक्षदलने स्तोत्रं पवित्रं च ते
यन्त्रं वादिनियन्त्रण त्रिजगतां जैत्रं न चित्रं हि तत्।
मातः श्रीबगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे
तन्नामस्मरणेन संसदि मुखस्तम्भो भवेद्वादिनाम्॥ 20॥

हिन्दी अनुवाद : हे देवी! आपके चरणों का अभ्यर्चन करने के लिए जो पीत-पुष्पों की अंजलि और मुद्रा को बायें कर में रखकर फिर मन्त्रधारी आपके मन्त्र के परम मनोहर अक्षरों का स्मरण करता हुआ पीताम्बरा के ध्यान में तत्पर होता है और कुम्भक प्राणायाम में पार्थिव बीज का स्मरण किया करता है इससे शत्रु के मुख से वाणी में हृदय में जड़ता उसी क्षण हो जाया करती है। आपका मन्त्र ही विपक्षियों के दलन करने के लिए पूर्ण शक्तिशाली होता है और यह पार्थिव स्तोत्र तीनों लोकों के वादियों के वचन के नियन्त्रण कनरे में समर्थ होता है। यह ऐसा ही बीज है - इसमें कुछ भी विचित्रता नहीं है। जिस जन्तु के मुख में हे माता! आपका यह परम सुन्दर बगला नाम होता है उसके केवल नाम के स्मरण से ही सभा में वादियों के मुख का स्तम्भन हो जाया करता है - ऐसा आपके केवल नाम के स्मरण का अद्भुत चमत्कार होता है।

(श्लोक)

वादी मूकति रंकति क्षितिपतिश्वैवानरः शीतति।
क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति।
गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रणा यन्त्रितः
श्रीनित्ये बगलामुखी प्रतिदिनं कल्याणी तुभ्य नमः॥ 21॥
दुष्टस्तम्भन-मुग्रविघ्नशमनं दारिद्रयविद्रावणं

भूभृत्संनमनं च यन्मृगदृशां कारुण्यपूर्णेक्षणं
शत्रो-र्मारणमा-विरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः॥ 22॥

हिन्दी अनुवाद : हे श्री नित्य! हे श्री बगलामुखी! आपकी यन्त्रणा से यन्त्रित होकर वाद करने वाला प्रतिपक्षी मूक हो जाता है, जो क्षिति का स्वामी बहुत ही धनेश्वर होता है वह भी अकिंचन के समान हो जाया करता है, महान् तेजोमय अग्नि भी शीतल हो जाती है, जो प्रचण्ड क्रोध की मूर्ति होता है वह भी परम शान्त स्वभाव वाला बन जाता है, परम दुष्ट प्रकृति का पुरुष भी सज्जन के समान साधु सरल हो जाता है, जो परम शीघ्रगामी होता है वह भी हीन चरणों वाला हो जाता है। अभिमानी पुरुष का गर्व विनष्ट हो जाता है, जो सभी ज्ञान रखने वाला है वह महाजड़ के तुल्य हो जाता है। हे कल्याणी! आपकी सेवा में प्रतिदिन मेरा प्रणाम निवेदित है। हे माता! आपका यह शरीर महादुष्टों का स्तम्भन करने वाला है अर्थात् दुष्टों की सम्पूर्ण काथिक, वाचिक और मानसिक चेष्टाओं को जहां की तहां रोक दिया करती हैं – अतीव उन विघ्नों का शमन कर देने वाला – जीव की दरिद्रता को दूर भगा दिया करता है, बड़े-बड़े महीपतियों को नीचे झुका देता है अर्थात् राजा-महराजा भी नमन करने वाले हो जाते हैं। मृग के समान परम सुन्दर नेत्रों वाली अंगनाओं के चित्त का समाकर्षण कर देता है अर्थात् आपकी कृपा कोर के होते ही सुन्दरियां स्वयं समाकृष्ट हो जाया करती हैं। कारुण्यमय दृष्टि वाली! समान दृष्टि रखने के लिए आपका वपु (शरीर) परम सौभाग्य का आलय है – आपके भक्त साधक के शत्रु का मारण निश्चित रूप से हो जाया करता है। निष्कर्षार्थ यही कि आपकी साधना से षट्कर्मों की अर्थात् मारण, मोहन, आकर्षण, वशीकरण, स्तम्भन और उच्चाटन सभी की सिद्धि प्राप्त हो जाया करती है।

(श्लोक)

मातर्भञ्जय मद्विपक्षिवदनं जिहवां च संकीलय
ब्राह्मीं यन्त्रस्य मुद्रयाशु धिषणामुग्रां गति स्तम्भय।
शत्रुंश्चूर्णय चूर्णयाशु गदया गौराङ्गि पीताम्बरे।
विघ्नौधं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे॥ 23॥
मातर्भैरवि भद्रकाली विजये वाराहि विश्वाश्रये
श्रीविद्ये समये महेशि बगले कामेशि कामे रमे।
मातङ्गि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्गप्रदे दासोऽहं
शरणागतोऽस्मि कृपया विश्वेश्वरि त्राहि माम॥ 24॥

हिन्दी अनुवाद : हे माता! मेरी विपक्षी के मुख का भंजन कर दीजिए और उसकी जिह्वा का कीलन कर दो जिससे उसमें भाषण करने की क्षमता बिल्कुल भी

न रहे। आप उसकी ब्राह्मी को यंत्रित कर दो और उसकी बुद्धि को मुद्रित कर दीजिए। विपक्षी की तेज गति को अर्थात् गमन करने की गति शक्ति को स्तम्भन कर दीजिए अर्थात् उसकी गतिशीलता को एकदम रोक दीजिए। आप अपनी गदा से शत्रुओं को चूर्ण कर नष्ट-भ्रष्ट करें। पीताम्बरे! हे गौर अंगों वाली! हे बगले! मेरे समस्त विघ्नों के समुदाय का विनाश कर दीजिए। हे करुणा से परिपूर्ण दृष्टि वाली! आपकी सेवा में मेरा प्रणाम है। हे भैरवि! हे माता! हे भद्रकाली! हे विजये! हे वाराहि! हे विश्व की आश्रय स्वरूपे! हे श्री विद्ये! हे समये महेशि! हे बगले! हे कामेशि! हे वामे! हे रमे! हे मातंगि! हे त्रिपुरे! आप पर से भी परतर हैं और स्वर्ग तथा अपवर्ग अर्थात् मोक्ष को प्रदान करने वाली हैं। ऐहिक सुख-सौभाग्य के अतिरिक्त स्वर्ग और मोक्ष की माता हैं। मैं आपका दास हूँ और अब आपकी शरण में गत हो गया हूँ। विश्वेश्वरि! अब आप मेरे ऊपर परमानुकम्पा करके मेरा परित्राण कीजिए।

श्लोक

त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नौंधविध्वंसिनी
योषाकर्षण कारिणी त्रिजगतां आनन्दसंवर्धिनी।
दुष्टोच्चाटन कारिणी पशुमनः सद्यः समोहदायिनी
जिह्वाः कीलय पैरिणां विजयसे ब्रह्मास्त्र विद्यापरा॥ 25॥
मातर्यस्तु मनोरमस्तवमिदं देव्याः पठेत् सादरम्
धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे वाहवोः करे वा गले।
राजानो वरयोषितोऽध करिणाः सर्पा मृगेन्द्राः
खलास्ते वै यान्ति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीः स्थिरा सर्वदा॥ 26॥

हिन्दी अनुवाद : आप तो परम विद्या है। आप तीनों लोकों की जननी हैं। आप विघ्नों के समूहों का भी विध्वंस करने वाली हैं। आप परम सौन्दर्य का वर्ग रखने वाला मानिनी नारियों का आकर्षण कर लेने वाली हैं। आप तीनों भुवनों में आनन्द का सम्वर्धन करने वाली हैं। आप दुष्टजनों का तुरन्त उच्चाटन कर देने वाली तथा पशुओं के समान मन वालों का भी सम्मोहन करने वाली हैं। आप मेरे शत्रुओं की जिह्वा कीलित कर दीजिए। आप परब्रह्मास्त्र विद्या हैं, आपकी विजय होवे। हे माता! आपके इस परम स्तोत्र का जो भी कोई आदर के साथ प्रेम पाठ किया करता है और आपके इस मन्त्र अर्थात् स्तोत्र रूपी तन्त्र को उसी प्रकार के बाहु या गले में धारण करके समर में जाता है तो उसके समक्ष चाहे राजा-महाराजा होवे या खल जन होवे वे सभी रिपुगण एकदम विमोहित हो जाया करते हैं और उसकी लक्ष्मी सदा स्थिर हो जाती है।

श्लोक

अनुदिनमभिरामं साधको यस्त्रिकालं पठति
स भुवनेऽसौ पूज्यते देववर्गैः।
सकलभमलकृत्यं तत्वद्रष्टा च लोके
भवति परमसिद्धा लोकमाता पराम्बा॥ 27॥
पीतवस्त्र-वसनामरि-देहप्रेतजास-विवेशितदेहाम्।
फुल्लपुष्पर-विलोचनरम्यां दैत्यजाल-दहनोज्ज्वलभूषाम्॥ 28॥
पर्यकोंपरि लसद्द्विभुजां कम्बुहेमनत कुण्डललोलाम्।
वैरिनिर्दलन कारण रोषाम् चिन्तयामि बगलां हृदयाब्जे॥ 29॥

हिन्दी अनुवाद : जो साधनानिष्ठ साधक तीनों कालों में अर्थात् प्रातः मध्याह्न सायं प्रतिदिन इस देवी के अभिराम स्तोत्र का पाठ किया करता है वह लोक में परलोक में देवगणों के भी द्वारा पूजा जाया करता है। वह सकल विमल कृत्यों के करने वाला और लोक में तत्वों का द्रष्टा हो जाता है। उसके लिए लोकों की जननी पराम्बा बगलामुखी परम सिद्धि हो जाया करती है। पीतवर्ण के वस्त्रों का परिधान करने वाली, शत्रु के देह और प्रेत पर अपने देह को निवेशित करने वाली, विकसित पुष्प और रवि के समान लोचनों से सुरम्य दैत्यों के समुदाय के दहन के समान उज्ज्वल भूषा से संयुत पर्यंक के ऊपर शोभित दो भुजाओं वाली, कम्बु हेम के नंत कुण्डलों से चंचल, बैरियों का निर्दलन (संहार) करने के कारण क्रोध वाली बगलादेवी का मैं अपने हृदय कमल में चिन्तन करता हूँ।

श्लोक

चिन्तयामि सुभुजां शृणिहस्तां सद्भुजां च
सुरवन्दितचरणाम्। षष्टिसप्ततिशतंर्धृ
तास्त्रबाहुभिः परिवृतां बगलाम्बाम्॥ 30॥
चौराणां संकटे च प्रहरसमये बन्धने वारिमध्ये
वहनौ वादे विवादे प्रकुपितनृपतौ दिव्यकाले निशायाम्।
वश्ये वा स्तम्भने या रिपुवधसमये प्राणबाधे रणे वा
गच्छंस्तष्ठं-स्त्रिकालं स्तवपठनमिदं कारयेदाशु धीरः॥ 31॥

हिन्दी अनुवाद : मैं सुन्दर भुजाओं से समन्वित, शृणि हाथ में धारण करने वाली, अच्छी भुजाओं से युक्त और सुरगणों के द्वारा वन्धमान चरणों वाली शस्त्रधारी साठ सत्तर सौ बाहुओं से परिवृत्ता बगला का चिन्तन करता हूँ। चोरों के द्वारा आये हुए संकट के अवसर पर आयुधों के प्रहारों में किसी के द्वारा बन्धन हो समय पर जल के मध्य में जबकि प्राण संकट समुपस्थित हो जावे, अग्नि में गिर जाने पर, वाद-विवाद होने के अवसर पर, किसी भी राजा के कोप का भाजन बन जावे तो

उस समय, निशा के दिव्य काल में अर्थात् निशीथ (रात्रि) समय में, वश्य में स्तम्भन में, रिपु द्वारा वध के समय, प्राण की बाधा उपस्थित हो जाने पर अथवा रणक्षेत्र में, गमन करते हुए स्थित रहते हुए तीनों कालों में शीघ्र ही धीर पुरुष को इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

श्लोक

विद्या लक्ष्मीः सर्वसौभाग्यमायुः पुत्राः सम्पद्राज्य मिष्टं चसिद्धिः। मातः श्रेयः सर्ववश्यत्वसिद्धिः प्राप्तं सर्व भूतले त्वत्परेण॥ 32॥

गेहं नाकति गर्वितः प्रणमति स्त्रीसंगतो मोक्षति द्वेषो मित्रति पाठकं सुकृतति-क्ष्मावल्लभो दासति। मृत्युर्वैधति दूषणं गुणति वै यत्पादसं सेवनात् तां वन्दे भवभीति-भञ्जनकरीं गौरीं गिरीशप्रियाम्॥ 33॥

हिन्दी अनुवाद : हे माता! जो आपको ही एक मात्र अपना इष्टदेव मानकर आराधना किया करता है उसको इस भू-मण्डल में विद्या, लक्ष्मी, सब प्रकार का सौभाग्य आयु, पुत्र सम्पदा, इष्ट राज्य सिद्धि, श्रेय और सबके वश्य करने की सिद्धि अवश्य ही प्राप्त होता है। आपके साधक का गृह स्वर्ग के समान हो जाता है - गर्व करने वाला भी प्रणाम करने वाला बनजाता है। स्त्री का संगम होते ही मोक्ष प्राप्त करता है। द्वेषी भी मित्रवत आचरण करने लगता है। पातक भी सुकृत हो जाता है और राजा भी दास बन जाया करता है। मृत्यु भी वैधवत हो जाता है। दूषण गुण हो जाया करता है। जिस बगला के चरण कमलों के सेवन करने से ऐसा अद्भुत प्रभाव होता है उस संसार के भय का भंजन करने वाली गिरीश की प्रिया गौरी की मैं वन्दना करता हूँ।

श्लोक

यत कृतं जपसंध्यानं परमेश्वरि चिन्तमं तव। शत्रूणां स्तम्भनार्थाय यत् गृहाण नमोऽस्तुते॥ 34॥

ब्रह्मास्त्रमेतद् विख्यातं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम्। गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित॥ 35॥

हिन्दी अनुवाद : हे परमेश्वरी! मैंने अपने शत्रुओं के स्तम्भन के लिए जो भी आपका ध्यान और चिन्तन किया है वह सब आपकी सेवा मं निवेदित किया जाता है। उसको आप ग्रहण कीजिए। मेरा आपके लिए नमस्कार है। यह तीनों लोकों में ब्रह्मास्त्र के नाम से विख्यात है और भक्त हो उसी को देनी चाहिए और चाहे जिस किसी के लिए भूलकर भी नहीं देनी चाहिए।

श्लोक

पीताम्बरां च द्विभुजां त्रिनेत्रां गात्रकोज्वलाम्।
शिलामुद्गर हस्तां च स्मरेत बगलामुखीम्॥ 36॥
सिद्धि साध्येऽवगंतं गुरुवचनेष्वा-र्जविश्वास भावः।
स्वान्तः पद्मासनस्था वररुचिबगलां ध्यायतां तारतारम्।
गायत्रीपूत वाचां हरिहरमनने यत्पराणां नराणां।
प्रातर्मध्याहन-काले स्तवपठनमिदं कार्यसिद्धिप्रदं स्यात्॥ 37॥

हिन्दी अनुवाद : पीत वस्त्रों को धारण वाली दो भुजाओं से युक्त नेत्रों वाली अंगों से परमोज्ज्वल शिला और मुद्गर को हाथों में रखने वाली उस परम प्रसिद्ध बगलामुखी देवी का स्मरण करें। गुरु के वचनों में उचित विश्वास रखने वालों की सिद्धि साध्य में जानने के लिए अपने अन्तःकरण रूपी पद्मासन पर विराजमान सुन्दर रुचि से संयुत बगलादेवी का बार-बार ध्यान करना चाहिए। गायत्री से पवित्र वाणी वाले हरि या हर के भजन में तत्पर नरों को प्रातः मध्याह्न और सायंकाल में इस स्तवन का पाठ करना कार्यों की सिद्धि में सफलता दिलाने वाला होता है।

श्री बगलामुखी रक्षा पंजर स्तुति

श्री सूतोवाच -

सहस्त्रादित्य-संकाशं शिवं साम्वं सनातनम्।
प्रणन्य नारदः प्राह विनम्रो नतकन्धरः॥ 1॥

श्री नारदोवाच -

भगवन् साम्ब तत्वज्ञ सर्वदुःखापहारक।
श्रीमत्पीताम्बरादेव्याः पंजरं पुण्यदं सताम्॥ 2॥
प्रकाशय विभो नाथ कृपां कृत्वा ममोपरि।
यद्यहं तव पादाब्ज धूलिसंसरितो-ऽभवम्॥ 3॥

हिन्दी अनुवाद : सूत जी ने कहा - सहस्त्रों (हजारों) सूर्यों के समान, सनातन, साम्ब शिव को नारद जी ने प्रणाम करके विनीत भाव से अपना सिर उनके सामने झुकाकर कहा था।

श्री नारद जी ने कहा - हे भगवन साम्ब! आप तो तत्त्वों के पूर्ण जानकार हैं और सबके दुःखों को हरने वाले हैं। हे विभो! श्री पीताम्बरा देवी का सत्पुरुषों को पुण्य प्रदान करने वाला पंजर है। हे नाथ! मुझ पर अनुकम्पा कर उसे बतलाइए यदि मैं आपकी चरण रूपी कमलों की धूलि से पवित्र हो गया हूँ।

श्री शिवोवाच -

ॐ अस्य श्रीमद् बगलामुखी पीताम्बरा पंजर
रूपस्तोत्रमन्त्रस्य भगवते नारदऋषिये नमः

शिरसि, अनुष्टुप् छन्दसे नमो मुखे, जगद्वश्यकरी श्रीपीताम्बरा बगलामुखी देवतायै नमो हृदये, ह्लीं बीजाय नमो दक्षिणस्तने, स्वाहा शक्तये नमो वामस्तने, क्लीं कीलकाय नमो नाभौ, मम परसैन्य मन्त्र-तन्त्र-यन्त्रादि कृतविपक्षक्षयार्थं श्रीमद् पीताम्बरा बगलादेव्याः प्रीतये जपे विनियोगः कर सन्पुटेन मूलेन करशुद्धि। ह्लीमिति षट् दीर्धेन षडंगः। मूलेन व्यापकम्।

हिन्दी अनुवाद : भगवान शिव ने कहा – इस श्रीमद् बगलामुखी पीताम्बरा के स्तोत्र के मन्त्र, जो पंजर रूप में है भगवान् नारद ऋषि के लिए सिर में नमस्कार है। अनुष्टुप छन्द के लिए मुख में नमस्कार है, जगत को दृश्य करने वाली श्री पीताम्बरा बगलामुखी देवता के लिए हृदय में नमस्कार है, ह्लीं बीज के लिए दक्षिण स्तन में नमस्कार है, स्वाहा शक्ति के लिए वाम स्तन में नमस्कार है, क्लीं कीलक के लिए नाभि में नमस्कार है, परों की सैन्य, मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र आदि के द्वारा किए गए विपक्ष के क्षय के लिए श्रीमद् पीताम्बरा बगलादेवी की प्रीति के लिए विनियोग है। कर सम्पुट के द्वारा मूलमन्त्र से करों की शुद्धि करे। ह्लीं इस षट् दीर्घ से षडंगन्यास और फिर मूलमन्त्र से व्यापक न्यास करना चाहिए।

अभ्यर्चन –

मध्येसुधाब्धि मणिमण्डित रत्नवेद्यां
सिंहासनो परिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बरा भरण माल्यविभूषितांगी
देवीं नमामि धृतमुदगर पैरिजिह्वाम्॥
इति ध्यात्वा, मनसा संपूज्य मुद्रां प्रदर्श्य, ऋष्यादि न्यासं कृत्वा पंजरंन्यसेत्।

हिन्दी अनुवाद : सुधा के सागर में मणियों से मण्डित रत्नों की वेदी के सिंहासन पर विराजमान सब ओर से पीतवर्ण वाली, पीतवस्त्र और आभूषण तथा मालाओं से विभूषित अंगों वाली मुदगर और रिपुओं की जिह्वा को ग्रहण करने वाली देवी की सेवा में प्रणाम करता हूँ। इस प्रकार से मन में ही उनका अभ्यर्चन करें और मुद्रा को प्रदर्शित करके ऋषि आदि का न्यास करना चाहिए फिर पंजर का न्यास करें।

श्री शिवोवाच –

श्लोक

पंजरं तत् प्रवक्ष्यामि देव्याः पापप्रणाशनम्।
यं प्रविश्य न बाधन्ते बाणैरपि नराः क्वचित॥ 1॥

ॐ ऐं ह्लीं श्री श्रीमत्पीताम्बरा देवी बगला बुद्धिबर्धिनी।
पातु मामनिशं साक्षात सहस्त्रार्कसमद्युतिः॥ 2॥

हिन्दी अनुवाद : भगवान शिव ने कहा – मैं देवी के उस पापों के विनाश करने वाले पंजर को बतलाऊंगा जिसका प्रवेश करके मनुष्य कहीं पर भी वाणों के द्वारा भी कभी बाधित नहीं हुआ करते हैं। ओ३म् ऐं ह्लीं श्रीमत्यपीताम्बरी बगलादेवी बुद्धि के वर्धन करने वाली है। सहस्त्रों रूपों के समान द्युति वाली देवी मेरी साक्षात् निरन्तर रक्षा करे।

श्लोक

शिखादि पादपर्यन्तं वज्रपंजरधारिणी।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीमद्ब्रह्मास्त्रविद्या पीताम्बरविभूषिता॥ 3॥
बगला मामवत्वत्र मूर्धभागं महेश्वरी।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं कामांकुशलता पातु बगला शास्त्रबोधिनी॥ 4॥
पीताम्बरा सहस्त्राक्षा ललाटं कामिनामर्थदा।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं पातु बगला पीताम्बरा सुधारिणी॥ 5॥

हिन्दी अनुवाद : शिखा से आरम्भ करके चरणों पर्यन्त वज्र पंजर की धारणा करने वाली ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीमद् ब्रह्मास्त्र विद्या जो पीतवस्त्रों से विभूषित है। महेश्वरी श्रीमत्बगलादेवी मेरे मूर्धा के भाग को रक्षित करें। ॐ ऐं ह्लीं श्रीं सहस्त्र नेत्रों वाली, पीतवस्त्रों का परिधान करने वाली, कामना किए हुए अभीष्ट अर्थों को प्रदान करने वाली पीताम्बरा सुधारिणी बगलामुखी देवी रक्षा करें।

श्लोक

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं पातु बगला नासिकां मे गुणाकरा॥ 6॥
पीतपुष्पैः पीतवस्त्रैः पूजिता वेददायिनी।
ह्लं ऐं ह्लीं श्रीं पातु बगला ब्रह्मविष्णवादि सेविता॥ 7॥

हिन्दी अनुवाद : ॐ ऐं ह्लीं श्री रत्नों से अतीव सुशोभित, गुणों की खान बगला मेरे दोनों कानों की एक साथ और नासिका की रक्षा करे। ॐ ऐं ह्लं श्रीं पीले वस्त्रों से और पीतपुष्पों से पूजिता वेदों के देने वाली – ब्रह्मा, विष्णु आदि के द्वारा पसेविता बगलामुखी मेरी रक्षा करें।

श्लोक

पीताम्बरा प्रसन्नानेत्र योर्युगपद्भ्रुवोः।
ॐ ऐं ह्लीं श्री पातु बगला बलिदा पीतवस्त्रधृक्॥ 8॥
अधरोष्ठौ तथा दन्तान् जिह्वां च मुखगा मम।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं पातु बगला पीताम्बरासुधारिणी॥ 9॥

हिन्दी अनुवाद : ॐ ऐं ह्लीं श्रीं पीताम्बरा प्रसन्न मुख से समन्विता पीत वस्त्र धारण करने वाली, बलिदा बगलादेवी मेरे नेत्रों की और भौहों की एक साथ रक्षा

करें। ॐ ऐं ह्रीं पीताम्बर को धारण करने वाली बगलादेवी मेरे अधरोष्ठों की, दांतों की और मुख में रहने वाली जिह्वा की रक्षा करें।

श्लोक

गले हस्ते तथा बाह्वी युगपद् बुद्धिदा सताम्।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला दिव्यस्त्रागनुलेपना॥ 10॥
हृदये च स्तनयोर्नाभौ फरावपि कृशोदरि।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला पीतवस्त्रधनावृता॥ 11॥

हिन्दी अनुवाद : ॐ ऐं ह्रीं श्रीं दिव्यमाया और अनुलेपन से समन्विता सत्यपुरुषों को वृद्धि देने वाली बगलादेवी, हाथ में और बाहुओं में एक साथ मेरी रक्षा करे। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पीतवस्त्र से धनावृत्ता, कृश उदारवाली बगलादेवी मेरे हृदय, नाभि और दोनों स्तनों और करों की रक्षा करे।

श्लोक

जंघाय च तथा चोर्वोर्गुल्फ-योश्चातिवेगिनी।
अनुक्तमपि यत् स्थानं त्वक्केश-नखलोमभाक्॥ 12॥
असृङ्भांस तथाऽस्थीनि सन्ध्यश्चापि मे परा।
इत्येतद् वरदं गोप्यं कलावपि विशेषतः॥ 13॥

हिन्दी अनुवाद : अत्यन्त वेष से युक्ता बगलादेवी मेरी जंघा, दोनों ऊरूओं, गुल्फों, त्वचा, नख, केश और रोमों की रक्षा करे और जो स्थान नहीं बताया गया है उसकी भी रक्षा करे। मेरे रक्त की, मांस की अस्थियों की तथा सन्धियों की भी बगलादेवी रक्षा करे। श्रीशिव ने कहा है - यह देवी का पंजर वरदाता तथा परम गोपनीय है। विशेष रूप से इस कलियुग में अवश्य ही गुप्त रखने योग्य है।

श्लोक

पंजरं बगलादेव्या दीर्घदारिद्रय नाशनम्।
पंजरं य पठेत् भक्तया स विघ्नै-र्नाभि भूयते॥ 14॥
अव्याहत-गतिश्चाऽसौ ब्रह्मविष्णवादि सत्पुरे।
स्वर्गे मर्त्ये च पाताले नाऽरयस्तु कदाचन॥ 15॥

हिन्दी अनुवाद : यह बगलादेवी का पंजर बड़े भारी दारिद्रय का भी नाश करने वाला है। जो इस पंजर का भक्तिभाव से पाठ करता है वह कभी विघ्नों से कभी पराजित नहीं हुआ करता है। इसका पाठ करने वाले पुरुष की ब्रह्मा और विष्णु के श्रेष्ठ में भी गति बिना रुकावट वाली हो जाया करती है। इसके पाठ करने वाले को स्वर्ग, पाताल और मृत्युलोक में कहीं पर भी शत्रु बाधा नहीं दिया करते हैं।

श्लोक

प्रवोधन्ते नरव्याघ्रं पंजरस्थं कदाचन।
अतो भक्तैः कौलिकैश्च स्वरक्षार्थ सदैव हि॥ 16॥

पठनीयं प्रयत्नेन सर्वाऽनर्थं विनाशम्।
महादारिद्रय शमन सर्वमांगल्य वर्धनम्॥ 17॥
विद्याविनय सत्साख्यं महासिद्धि करं परम्।
इदं ब्रह्मास्त्रविद्यायाः पंजरं साधु गोपितम्॥ 18॥

हिन्दी अनुवाद : पंजरं में स्थित रहने वाले पुरुष सिंह को कोई बाधा नहीं करते हैं। अतएव कौलिकों और भक्तों के द्वारा सदा ही अपनी रक्षा के लिए बड़े ही प्रयत्न से इसका पाठ करना चाहिए। यह सभी अनर्थों का विनाश करने वाला है। यह दरिद्रता का भी शमन करने वाला है और परासिद्धि देने वाला होता है। यह ब्रह्मास्त्र विद्या का पंजर भलि-भांति गोपित रखना चाहिए।

श्री बगलामुखी रक्षा पंजर स्तोत्र की महत्ता :

पठेत स्मरेद ध्यानसंस्थः स जीव्या मरणान् नरः।
यः पंजरं पविश्यैव मन्त्रं जपति वै भुवि॥
कौलिकोऽकौलिको वापि व्यासवद् विचरेद भुवि।
चन्द्रसूर्य प्रभुर्भूत्वा वसेत् कल्पायुतं दिवि॥

हिन्दी अनुवाद : ध्यान में संस्थित होकर जो इस पंजर का स्मरण किया करता है और पाठ करता है वह नर मरण में भी जीवित हो जाता है, उसकी मृत्यु भी टल जाती है। जो भूमण्डल में पंजर में प्रवेश करके मन्त्र का जप करता है वह मौत की बाधा से भी दूर रहता है। चाहे कौलिक हो अथवा अकौलिक हो वह व्यास की भांति भूमि में विचरण किया करता है। चन्द्र और सूर्य का प्रभु होकर स्वर्ग लोक में दश सहस्त्र कल्प पर्यन्त निवास किया करता है।

श्री सूतोवाच -

इति कथितमशेषं श्रेयसामादिबीजं,
भवशतदुरितध्नं ध्वस्तमोहान्धकारम्।
स्मरण मतिशयेन प्राप्तिरेवात्र मर्त्यो,
यदि विशाति सदा वै पंजरं पण्डितः स्यात्॥

हिन्दी अनुवाद : श्री सूत जी ने कहा - यह क्षेमों का आदि बीज पूरा-पूरा मैंने कह दिया है। यह सैकड़ों सांसारिक जन्मों के पापों को नष्ट करने वाला है और मोह रूपी अन्धकार को नष्ट कर देता है। इसका पर्याप्त स्मरण करने से मनुष्य को सबकी प्राप्ति यहां पर ही हो जाया करती है। जो इस पंजर का बार-बार स्मरण किया करता है वह विद्वान हो जाता है।

विपत्ति नाशक-सुख प्रदायक श्री बगलामुखी हृदय-स्तुति

श्लोक

इदानीं खलु मे देव बगलाहृदयं प्रभो।
कथयस्व महादेव यद्यहं तव वल्लभा॥ 1॥
साधु साधु महाप्रज्ञे सर्वतन्त्रार्थ साधिके।
ब्रह्मास्त देवतायाश्च हृदयं वच्मि तत्वम:॥ 2॥

हिन्दी अनुवाद : श्री देवी ने कहा – हे प्रभो! अब इस समय मुझको हे देव! बगलामुखी का हृदय-स्तुति बतलाइए। हे महादेव! अगर मैं आपकी परम प्रिया हूँ तो आप इसे मुझे बताएं। महादेव ने पार्वती से कहा – हे महाविदूषी! बहुत अच्छा, तुमने बहुत उत्तम प्रश्न किया है। ऐसा हो भी क्यों न, आप तो सब प्रकार के तन्त्रों की साधिका हैं। अब मैं आपके समक्ष ब्रह्मास्त्र देवता के हृदय स्तुति को बतलाता हूँ।

श्लोक

प्रणवं पूर्वमुच्चार्य स्थिरमायां ततो वदेत्।
सम्बोधन पदेनैव बगलामुखी उद्धरेत॥ 3॥
तदग्रे सर्वदुष्टानां ततो वाचं पदं मुखम्।
स्तम्भेयति ततो जिह्वा कीलयेति पदं ततः॥ 4॥
बुद्धि विनाशय इति स्थिरमायां ततोऽग्रतः।
वदेच्चा पुनर्मेकारं स्वाहेति च पदं ततः॥ 5॥
षट्त्रिंशदक्षरीं विद्यां सद्यः स्तम्भकारिणी।
अङ्गन्यासं ततः कुर्यात् स्थिरयमायां हृदि न्यसेत्॥ 6॥

हिन्दी अनुवाद : सर्वप्रथम प्रणव (ॐ) का उच्चारण करके फिर स्थिर माया का अर्थात् ह्रीं को कहना चाहिए। फिर सम्बोधन पद के द्वारा 'बगलामुखी।' इसका उच्चारण करे। इसके आगे 'सर्वदुष्टानां' और फिर 'वाचं मुखं पदं स्तम्भय' यह कहकर फिर 'जिह्वा कीलय' उद्दृत करे फिर 'बुद्धि विनाशय' कहकर स्थिर माया अर्थात् 'ह्रीं' का उच्चारण कर फिर 'ओंकार' और 'स्वाहा' बोले। यह छत्तीस अक्षरों वाली विद्या है।

श्लोक

बगलामुखी तु शिरसि सर्वदुष्टानां शिरवासु च।
वाचं मुखं पदं चैव कवचे विन्यसेत्ततः॥ 7॥
जिह्वां कीलय नेत्रयुग्मे आस्ये बुद्धयादिक तथा।
गम्भीरां च मदोन्मतां स्वर्ण कान्ति समप्रभाम्॥ 8॥

हिन्दी अनुवाद : जोकि तुरन्त ही स्तम्भन करने वाली है। इसके पश्चात् अंगों का न्यास करे और स्थिर माया (ह्लीं) का हृदय पर न्यास करना चाहिए। 'बगलामुखी' इसका सिर में न्यास करे और 'सर्वदुष्टानां' इसका शिखा में न्यास करे और 'सर्वदुष्टानां' इसका शिखा में न्यास करे। फिर 'वाचं मुखं पदं' का कवच में न्यास करना चाहिए, 'जिह्वा कीलय' इसका दोनों नेत्रों में न्यास करे और बुद्धि आदि का मुख में न्यास करे।

श्लोक

चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासन संस्थिताम्।
ऊर्ध्वकेश जटाजूटां कराल वदनाम्बुजाम्॥ 9॥
मुदगरं दक्षिणे हस्ते पाशं वाभेन धारिणीम्।
रिपोजिर्हवां त्रिशूलं च पीतगन्ध अनुलेपनाम्॥ 10॥
पीताम्बरधरां सान्द्रदृढ़ पीनपयोधराम्।
हेमकुण्डल भूषां च पीत चन्द्रार्धशेस्वराम्॥ 11॥
पीतभूषण भूषाढ्यां स्वर्णसिंहासने स्थिताम्।
स्वानन्दानुमयीं देवीं रिपु स्तम्भन कारिणीम्॥ 12॥

हिन्दी अनुवाद : अब निम्न विधि से बगलामुखी देवी ध्यान करें।

गम्भीर स्वभाव वाली मद से उन्मत्त स्वर्ग की कान्ति के समान प्रभा से युक्त, चार भुजाओं से समन्वित तीन नेत्रों वाली कमल के आसन पर विराजमान ऊपर की ओर केशों और जटाजूट वाली परम कराल मुख कमल से युक्त दाहिने करों में मुद्गर और पाश को धारण करने वाली और वाम करों में शत्रु की जिह्वा तथा त्रिशूल को रखने वाले पीत वर्ण के गन्ध के अनुलेपन से युक्त पीत वस्त्रों को धारण करती हुई घने और पीन तथा दृढ़ पयोधरों से समन्वित सुवर्ण रचित कुण्डलों के भूषण वाली पीत एवं अर्ध चन्द्र के शेखर अर्थात् मुकुट धारण करती हुई पीत भूषण और भूषा से संयुक्त सुवर्ण के सिंहासन पर विराजमान अपने ही आनन्द से परिपूर्ण रिपुओं का स्तम्भन करने वाली देवी का चिन्तन करना चाहिए।

श्लोक

मदनस्य रतेश्चापि प्रीति स्तम्भकारिणी।
महाविद्या महामाया महामेधा महाशिवा॥ 13॥
महामोहा महासूक्ष्मा साधकस्य वरप्रदा।
राजसी सात्विकी सत्या तामसी तेजसी स्मृता॥ 14॥

हिन्दी अनुवाद : यह देवी कामदेव और उसकी पत्नी रति की भी प्रीति का स्तम्भन करने वाली है, जिनकी परम प्रगाढ़ प्रीति हुआ करती है। यह महाविद्या, महामाया, महामेधा, महाशिवा, महामोहा, महासूक्ष्मा और साधना करने वाले साधक

को वर प्रदान कने वाली है। यह तीन स्वरूपों वाली – सात्विकी, राजसी और तामसी है। इन्हें सत्या और तेजस्वी भी कहा गया है।

श्लोक

तस्याः स्मरणमात्रेण त्रैलोक्यं स्तम्भयेत् क्षणात्।
गणेशो वटुकश्चैव योगिन्यः क्षेत्रपालकः॥ 15॥
गुरवश्च गुणास्तिस्त्रो बगला स्तम्भिनी तथा।
जृम्भिणी मोदनी चाम्बा बालिका भूधरा तथा॥ 16॥
कलुषा धात्री कालकर्षिणिका परा।
भ्रामरी मन्दगमना भगस्था चैव भाषिका॥ 17॥
ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी रमा।
वाराही च तथैन्द्राणी चामुण्डा भैरवाऽष्टकम्॥ 18॥

हिन्दी अनुवाद : उसके केवल स्मरण भर करने से ही तीनों लोकों का क्षणभर में स्तम्भन हो जाता है। इसके साथ गणेश, बटुक, योगिनयां और क्षेत्रपाल का भी अर्चन करना। गुरुगण तीनों गुण बगला स्तम्भिनी, जृम्भिणी मोदिनी, अम्बा, भूधरा, बलिका, कलुषा, करुणा, धात्री, कालकर्षिणिका परा, भ्रामरी, मन्दगमता, भगस्था, मासिका, ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, रमा, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा, भैरवाष्टक।

श्लोक

सुभगा प्रथमा प्रोक्ता द्वितीया भगमालिनी।
भगवाहा तृतीया तु भगसिद्धाब्धि मध्यगा॥ 19॥
भगस्य पातिनी पश्चात् भगमालिनी षष्टिका।
उड्डीयान पीठनिलया जालन्धर पीठसंस्थिता॥ 20॥
कामरूपे तथा संस्था देवीत्रितयदेव च।
सिद्धौ मानवौधाश्य दिव्यौधा गुरवः क्रमात्॥ 21॥

हिन्दी अनुवाद : प्रथमा सुभगा कही गयी है, द्वितीया भगमालिनी है, तृतीया भगवाहा है भगसिद्धा, अब्धिमध्यगा पीछे भाग की पातिनी षष्ठी का, भगमालिनी उड्डीयाना पीठ के निलय वाली जालन्धर पीठ पर विराजमान तथा कामरूप पर स्थित और तीन देविया सिद्धियों के समुदाय और मानवों के समूह क्रम से गुरुगण।

श्लोक

क्रोधिनी जृम्भिणी चैव देव्याश्चो-भयपार्श्वयोः।
पूजयास्त्रि पुरनाथश्च योनिमध्ये-ऽम्बिकायुतः॥ 22॥
स्तम्भिनी या महाविद्या सत्यं सत्यं वरानने।
एषा सा वैष्णवी माया विद्या यत्नेन गोपयेत॥ 23॥

हिन्दी अनुवाद : और देवी के दोनों पार्श्वों में क्रोधनी था जृम्भिणी है। योनि के मध्य में जम्बिका से युक्त त्रिपुर नाथ पूजन करने के योग्य है। हे वरानने! जो स्तम्भिनी है वह महाविद्या है, यह सर्वदा सत्य है। यह वैष्णवी वह माया है और विद्या है जिसको यत्न से गुप्त रखना चाहिए।

श्लोक

ब्रह्मास्त्रदेवता याश्च हृदयं परिकीर्ततम्।
ब्राह्मास्त्रं त्रिषु लोकेषु दुष्प्राप्यं त्रिदशैराय॥ 24॥
गोपनीयं प्रयत्नेन न देयं यस्य कस्यचित्।
गुरुभक्ताय दातव्यं वत्सरं दुःखिताय व॥ 25॥

हिन्दी अनुवाद : और मैंने तुम्हारे सामने ब्रह्मास्त्र देवता का हृदय बता दिया है। यह ब्रह्मास्त्र तीनों लोकों में देवों के द्वारा भी परम दुष्प्राप्य है। इसको बहुत प्रयत्न से गोपनीय रखना चाहिए और चाहे जिस किसी को नहीं देना चाहिए। परम गुरु के भक्त को ही तथा जो वर्षों तक दुःखित हो उसको ही देना चाहिए।

श्लोक

मातृपितृरतो यस्तु सर्वज्ञानपरायणः।
तस्मै देयमिदं देवि बगलाहृदयं परम्॥ 26॥
सर्वार्थ साधकं दिव्यं पाठनाद भोगमोक्षदम्।
इति श्री शिवपार्वती संवादे बगला हृदयं समाप्तम्॥ 27॥

हिन्दी अनुवाद : जो अपनी माता और पिता के चरणों में रति रखने वाला हो और सब प्रकार के ज्ञान में परायण होवें हे देवी! उसी का यह परम गोपनीय बगला हृदय देना चाहिए। यह बगला हृदय समस्त अर्थों का साधक है और इसके पठन करने से यहं भोगों का उपभोग तथा अन्त में मोक्ष के देने वाला है।

समस्त शत्रुओं के विनाश हेतु – विपत्तियों के निवारण हेतु और सुख-सम्पत्ति-धन-वैभव-राजभोग और मोक्ष की प्राप्ति के लिए अति चमत्कारी

'श्री बगलामुखी प्रत्यंगिरा स्तोत्र'

(श्री शंकर सम्वाद)

अधुनाहं प्रवक्ष्यामि बगलायाः सुदुर्लभम्।
यस्य पठन मात्रेण पवनोपि स्थिरायते।
प्रत्यङ्गिरा ता देवेशि शृणुष्व कमलानने।

हिन्दी अनुवाद : श्री भगवान शंकर ने कहा – इस समय मैं आपको श्री बगलामुखी परम दुर्लभ स्तोत्र के बारे में बताऊंगा जो ऐसा युगल स्तम्भन वाला है और जिसके केवल स्मरण करने मात्र से ही निरन्तर अवाध गति से चलने वाला ायु भी स्थिर हो जाता है फिर औरों की तो बात ही क्या है। हे सुभगे! आपका मुख तो कमल के समान परम सुन्दर है अब आप उस दिव्य प्रत्यंगिरा के बारे में सुनिये जिसके स्मरण करने मात्र समस्त शत्रुओं का लोप हो जाता है।

श्री पार्वती सम्वाद

स्नेहोऽस्ति यदि मे नाथ संसारार्णवतारक।
तथा कथय मां शम्भो बगला-प्रत्यङ्गिरा मम।

हिन्दी अनुवाद : श्री पार्वती ने कहा – हे नाथ! आप तो इस संसार रूपी महासागर से पार लगाने वाले भगवन् हैं। यदि आपका मुझ पर अगाध स्नेह है तो दया करके हे भगवन्! उस प्रत्यंगिरा बगला स्तोत्र के बारे में बताइए।

श्री शंकर सम्वाद

अधुना हि महादेवी परानिष्ठा मतिर्भवेत्।
अतएव महेशानि किंचिन्नवक्तुमर्हसि।

हिन्दी अनुवाद : भगवान शंकर ने कहा – हे महादेवी! निश्चय ही इस समय परमाधिक निष्ठा वाली बुद्धि चाहिए। हे महेशानि! इसीलिए आप कुछ भी कहने के योग्य नहीं होती हो।

श्री पार्वती सम्वाद

जिघासन्तं विघान्सीयान्नतेन ब्रह्महा भवेत्।
श्रुति रेषाहिगिरिश कथं मांत्वं निन्दसि।

हिन्दी अनुवाद : श्री पार्वती जी ने कहा – जो प्राणघात करने वाला अपने खपर प्रहार करता हुआ आ रहा है उसको मार ही देना चाहिए क्योंकि प्राण रक्षा सबसे बड़ा धर्म है। इस प्रकार की स्थिति में मार देने से भी कभी ब्रह्महत्या नहीं होती है। हे गिरिश! ऐसी निश्चय ही श्रुति है। फिर आप मेरी किस तरह से विशेष निन्दा कर रहे हैं। क्योंकि मेरी निन्दा करने का ऐसा कोई उचित कारण दिखाई नहीं देता है।

श्री शंकर सम्वाद

साधु साधु प्रवक्ष्यामि शृणुष्वाहितानघे।
प्रत्यङ्गिरा बगलायाः सर्वशत्रुनिवारिणीम्।
नाशिनीं सर्वदुष्टानां सर्वपापौघहारिणीम्।
सर्वप्राणिहितां चैव सर्व दुःख विनाशिनीम्।
भोगदां मोक्षदां चैव राज्यसौभाग्य दायिनीम्।
मन्त्र दोष प्रमोचनीं ग्रहदोष निवारिणीम्।

हिन्दी अनुवाद : भगवान शंकर ने कहा – बहुत अच्छा। हे देवी! मैं अब आपके सामने कहूंगा। आप सावधानी पूर्वक इसे सुनिये। बगला की प्रत्यंगिरा देवी सब शत्रुओं के निवारण करने वाली होती है। यह समस्त दुष्टों का विनाश कर देने वाली है – और सब प्रकार के पापों के समूह का हरण करने वाली है। देवी सभी प्राणियों का हित करने वाली है और सभी दुःखों का हनन किया करती है। यह भोगों को प्रदान करती है – सुखोपभोग देने के पश्चात् मोक्ष भी देती है। यह द्वेवी राज्य और सौभाग्य को भी प्रदान करती है। मन्त्र में जो भी दोष हो जिनसे हानि होती हो, उन दोषों से मुक्त करने वाली है। भौम, शन आदि ग्रहों के द्वारा प्राप्त होने वाले दोषों का निवारण किया करती है।

अस्य श्री बगला-प्रत्यङ्गिरा-मन्त्रस्य नारदो
ऋषिः स्त्रिष्टुप छन्दः प्रत्यंगिरा देवता ह्लीं बीजम्
हुं शक्तिः ह्रीं कीलकं ह्लीं ह्लीं ह्लीं प्रत्यङ्गिरा
मम शत्रु विनाशे विनियोगः।
ॐ प्रत्यङ्गिरायै नमः प्रत्यङ्गिरे सकलकामान साधय
मम रक्षां कुरुकुरु सर्वान् शत्रून खादय खादय
मारय मारय घाताय घाताय ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।

हिन्दी अनुवाद : ॐ इस बगला प्रत्यंगिरा मन्त्र का नारद ऋषि है, त्रिष्टुप् छन्द प्रत्यंगिरा देवता ह्लीं बीजम् हुं शक्ति है, ह्रीं कीलक है ह्लीं ह्लीं ह्लीं प्रत्यंगिरा मेरे शत्रुओं के विनाश में इसका विनियोग है।

मन्त्र – ॐ प्रत्यंगिरा के लिए नमस्कार है। हे बगलादेवी आप सब कार्यों को सिद्ध करो, सब शत्रुओं का भक्षण करो, खा जाओ, मार दो, मार डालो, घात करो – घात करो।

ॐ भ्रामरी स्तम्भिनीदेवी क्षोभिणी मोहिनी तथा।
संहारिणी द्राविणी च जृम्भिनी रौद्ररूपिणी।
इत्यष्टौ शक्तयो देवी शत्रु-पक्षे नियोजिताः।
धारयेत् कण्ठदेशे च सर्व शत्रु विनाशिनीः।

1. **ॐ ह्रीं भ्रामरी सर्व शत्रून् भ्रामय ॐ ह्रीं स्वाहा।**
2. **ॐ ह्रीं स्तम्भिनी मम शत्रून् क्षोभय क्षोभय ॐ ह्रीं स्वाहा।**
3. **ॐ ह्रीं क्षोभिणि मम शत्रून् क्षोभय क्षोभय ॐ ह्रीं स्वाहा।**
4. **ॐ ह्रीं मोहिनि मम शत्रून् मोहय मोहय ॐ ह्रीं स्वाहा।**
5. **ॐ ह्रीं संहारिणि मम शत्रून् संहारय संहारय ॐ ह्रीं स्वाहा।**
6. **ॐ ह्रीं द्राविणि मम शत्रून् द्रावय द्रावय ॐ ह्रीं स्वाहा।**
7. **ॐ ह्रीं रौद्रि मम शत्रून् सन्तापय सन्तापय ॐ ह्रीं स्वाहा।**

हिन्दी अनुवाद : ॐ भ्रामरी, स्तम्भिनी देवी, क्षोभिणी, मोहनी, संहारिणी और रौद्ररूपिणी – इन शक्तियों को हे देवी ! मेरे शत्रु के पक्ष में नियोजित करके कण्ठ देश में धारण करना चाहिए। यह सब शत्रुओं का विनाश कर देने वाली है।

1. ॐ ह्रीं भ्रामरी ! सब शत्रुओं को भ्रमित करो, भ्रामित कर दो। ॐ ह्रीं स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं स्तम्भिनी ! मेरे शत्रुओं को स्तम्भित कर दो, स्तम्भन कर दो। ॐ ह्रीं स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं क्षोभिणी ! मेरे शत्रुओं को क्षोभित करो, क्षोभ युक्त बना दो। ॐ ह्रीं स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं मोहिनी ! मेरे शत्रुओं को मोहित करो, मोहन-मुग्ध कर दो। ॐ ह्रीं स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं संहारिणी ! मेरे शत्रुओं का संहार करो, संहार कर दो। ॐ ह्रीं स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं द्राविणी ! मेरे शत्रुओं का द्रावण करो, द्रावण कर दो। ॐ ह्रीं स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं रौद्री ! मेरे शत्रुओं को सन्तप्त कर दो, सन्तप्त युक्त कर दो। ॐ ह्रीं स्वाहा।

ॐ ह्रीं इयं विद्या महाविद्या सर्वशत्रु निवारिणी।
धारिता साधकेन्द्रेण सर्वान दुष्टान् विनाशयेत्।
त्रिसंध्य-मेकसंहर्यं वाथ पठेत्स्थिर मानसवः।
न तस्य दुर्लभं लोके कल्पवृक्ष इव स्थितः।
यं यं स्पृशति हस्तेन यं यं पश्यति चक्षुषा।
स एव दासतां याति सारात्सारमिमं मनुम्।

हिन्दी अनुवाद : यह एक महान् विद्या है जो सम्पूर्ण शत्रुओं का विनाश र देने में सक्षम है। जो उत्तम यानि श्रेष्ठतम साधक इस विद्या को धारण करता है तो उसके सभी रिपुओं को नाश हो जाता है। जो साधक तीनों कालों - प्रातः काल, मध्याह्न काल, सायंकाल अथवा इनमें से किसी एक काल में स्थिर मन से पवित्र होकर इसका पाठ किया करता है उसे समस्त लौकिक वस्तुओं की प्राप्ति सवयमेव अर्थात् अपने-आप ही हो जाया करती है। यह विद्या उसके लिए तो कल्प वृक्ष के समान है। कल्पवृक्ष के आगे कोई भी इच्छा करने पर वह तुरन्त पूरी हो जाती है। इसका साधक जिन-जिन वस्तुओं को हाथ से स्पर्श करता है और जिन-जिन वस्तुओं पर अपनी दृष्टि डालता है वह वस्तु उसकी गुलाम हो जाती है। यह विद्या सम्पूर्ण सारों का सार है।

श्री बगलामुखी का अति तेजस्वी सहस्त्रनाम स्तोत्र

प्रिय पाठको! यहां इस शीर्षक के अन्तर्गत मैं मां बगलामुखी के सहस्त्रनाम स्तोत्र का वर्णन कर रहा हूँ। सहस्त्रनाम स्तोत्र का वर्णन कर रहा हूँ। सहस्त्रनाम का अर्थ है - एक हजार नाम। स्तोत्र का अभिप्राय है - 'अपने आराध्य की स्तुति', 'प्रशंसा', 'वन्दना' या 'उनके सम्मान में कहे जाने वाले सुन्दर-सुन्दर वचन।'

अब श्रीबगलामुखी सहस्त्रनाम स्तोत्र का अर्थ हैं - 'पीताम्बरी बगलामुखी के एक हजार अलग-अलग नामों द्वारा उनकी स्तुति करना उनकी वन्दना करना।'

इस घोर कलियुग में इस सहस्त्रनाम स्तोत्र की अपनी ही महानता है। जो व्यक्ति विकट परिस्थिति में फंस गया हो उसके शत्रु उसको दुःख पे दुःख पीड़ा-पे-पीड़ा दिये जा रहे हों, चारों ओर से उसके हाथ निराशा ही लग रही हो और वह अत्यन्त व्याकुल हो चित्कार कर रहा हो। श्रीबगलामुखी सहस्त्रनाम स्तोत्र का पाठ करते ही न केवल उसकी समस्त कष्ट परेशानियां समाप्त हो जायेंगी बल्कि उसके जीवन में किसी लौकिक वस्तु तक का अभाव नहीं रहेगा। यह सहस्त्रनाम स्तोत्र कर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी चारों वर्ग के फल की प्राप्ति करवाता है।

आपकी सुलभता को ध्यान में रखकर श्री बगलामुखी सहस्त्रनाम स्तोत्र का वर्णन 'हिन्दी' और 'संस्कृत' दोनों में किया गया है। आप अपने ज्ञान तथा रुचि के अनुसार इस पवित्र स्तोत्र का पाठ कर सकते हैं।

श्लोक

सुरालयप्रधाने तु देवदेवं महेशवरम्।
शैलाधिराज तनया संग्रहे तमुवाच ह॥ 1॥

श्री पार्वती सम्वाद :

परमेष्ठिन् परं धाम प्रधान परमेश्वर।
नाम्नां सहस्त्रनाम परमं वद वद देवस्य फस्यचित्॥ 2॥

श्री शंकर सम्वाद :

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि नामधेय-सहस्त्रकम्।
परब्रह्मास्त्र विद्याश्चतुर्वर्ग फलप्रदम्॥ 3॥

हिन्दी अनुवाद : सुरों के निवास करने के प्रधान स्थान में देवों के देव भगवान महेश्वर से शैलाधिराज की पुत्री पार्वती ने संग्रह में कहा था॥ 1॥ श्री पार्वती ने कहा – हे परमष्ठिन्! आप कृपया बगलामुखी जो आद्या है उसके सहस्त्रनाम मुझे बतलाइए॥ 2॥ महादेव जी ने कहा – हे देवी! अब आप ध्यान से सुनिये, मैं बगला के सहस्त्रनामों को बतलाता हूँ। यह सहस्त्रनाम जो परब्रह्मस्त्रविद्या के हैं वे चारों वर्गों के फल को प्रदान किया करते हैं अर्थात् इनसे कर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी की प्राप्ति आसानी से हो जाती है॥ 3॥

श्लोक

गुह्याद् गुह्यतरं देवि सर्वसिद्धैक वन्दितम्।
अतिगुप्ततरं विद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता॥ 4॥
विशेषतः कलियुगे महासिद्धौध दायिनी।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः॥ 5॥
अप्रकाश्यमिदं सत्यं स्वयोनिखि सुव्रते।
रोधिनी विघ्नसंधानां मोहिनी सर्वयोषिताम्॥ 6॥

हिन्दी अनुवाद : यह विद्या अत्यन्त ही गुप्त है और सभी तन्त्रों में इसको छिपाकर रखा गया है॥ 4॥ यह विद्या विशेष रूप से इस महान घोर कलियुग में जिसमें अन्य सभी साधन भस्मता को प्राप्त हो गये हैं महासिद्धियों के समुदाय को देने वाली है। इसको छिपाकर रखना चाहिए, यह बहुत ही गोपनीय है और प्रयत्नपूर्वक इसको गुप्त रखना आवश्यक है॥ 5॥ हे सुव्रते! यह विद्या तो अपनी योनि के ही समान प्रकाशित न करने के योग्य है। यह समस्त विघ्नों को दूर कर देती है और समस्त स्त्रियों का मोहन कर देने वाली है॥ 6॥

श्लोक

स्तम्भिनी राजसैन्यानां वादिनी परवादिनाम्।
पुरा चैकार्णवे घोरे काले परमभैरवः॥ 7॥

सुन्दरीसहितो देवं केशवं क्लेशनाशनः।
उरगासन मासीनं योगनिद्रामु-पागतम्॥ 8॥
सहस्त्रनाम परमं वद वद देवस्य फस्यचित्।
निद्राकाले च ते काले मया प्रोक्ताः सनातनः।
महास्तम्भकरं देवि स्तोत्रं वा शतनामकम्॥ 9॥

हिन्दी अनुवाद : यह राजाओं की सेनाओं का स्तम्भन करने वाली और दूसरे वादियों के लिए यह वादिनी है, पहले जब एक ही सागर परम घोर स्वरूप में था तब उस समय में परम भैरव जो क्लेशों का नाश करने वाला है सुन्दरी के सहित केवल देव जो उरग (शेष) की शय्या पर समासीन थे और योगनिद्रा को प्राप्त हो रहे थे। निद्रा के समय में उन सनातन प्रभु से मैंने कहा था। हे देवि! महान् स्तम्भन करने वाले सनातन स्तोत्र अथवा सहस्त्रनाम या शतनाम का परमोत्तम वर्णन कीजिए जो किसी भी देव का होवे॥ 7-9॥

श्री विष्णु सम्वाद :

श्लोक

श्रृणु शंकर देवेश परमाति रहस्यकम्॥ 10॥
अजोऽहं यत्प्रसादेन विष्णुः सर्वश्वरेश्वरः।
गोपनीयं प्रयत्नेन प्रकाशात् सिद्धिहानिकृत्॥ 11॥
अस्य श्रीपीताम्बरी सहस्त्रनाम स्तोत्रमन्त्रस्य भगवान्
सदाशिव ऋषिः अनुष्टुप छन्दः श्रीजगदवश्यकारी
पीताम्बरी देवता, सर्वाभीष्ट सिद्धयर्थे विनियोगः।

हिन्दी अनुवाद : श्री विष्णु भगवान ने कहा - देवेश्वर! शंकर! परम रहस्य से युक्त का अब आप श्रवणं कीजिए जिसके प्रसाद से मैं अज और सर्वेश्वरों का भी विष्णु हो गया हूँ। इसका गोपन प्रयत्नपूर्वक करना चाहिए। इसके प्रकार के करने से इससे होने वाली सिद्धि को हानि करने वाला यह हो जाता है॥ 10-11॥ इस पीताम्बरी के सहस्त्रनम स्तोत्र का साक्षात् सदाशिव प्रभु ऋषि हैं, अनुष्टुप छन्द है, जगत के वश्य करने वाली श्री पीताम्बरी देवी इसका देवता है। इसका विनियोग समस्त अभीष्टों की सिद्धि के लिए होता है।

चिन्तनम् :

श्लोक

पीताम्बर परीधानां पीनोन्नत पयोधराम्।
जटामुकुट शोभाढ्यं पीतभूमि सुखासनाम्॥ 12॥
शत्रोर्जिह्वा मुदगरं च बिभ्रतीं परमां कलाम्।
सर्वागम पुराणेषु विख्यातां भुवनत्रये॥ 13॥

सृष्टिस्थिति विनाशानामादिभूतां महेश्वरीम्।
गोप्यां सर्वप्रयत्नेन शृणु तां कथयामि ते॥ 14॥

हिन्दी अनुवाद : पीत वसनों के परिधान करने वाली – पीन और उन्नत स्तनों से संयुत जटाजूट और मुकुट की शोभा से युक्त पीतवर्ण की भूमि पर सुखपूर्वक विराजमान, शत्रु की जिह्वा, मुद्गर और परमाकला को धारण करती हुई, तीनों भुवनों में समस्त आगमों और पुराणों में विख्यात, सृष्टि, स्थिति और संहार करने वाली आदि भूता, महेश्वरी सब प्रयत्नों से गोपनीया उसके विषय में कहता हूँ उसका आप श्रवण कीजिए॥ 12-14॥

श्लोक

जगद्विध्वंसिनी देवीमजरा-मरकारिणीम्।
तां नमामि महामायां महदैश्वर्य-दायिनीम्॥ 15॥
प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य स्थिरमायां ततो वदेत्।
बगलामुखि सर्वदुष्टानां ततो वाचमेव च॥ 16॥
मुखं पदं स्तम्भयेति जिह्वां कीलय बुद्धिमत्।
विनाशयेति तारं च स्थिरमायां ततो वदेत्॥ 17॥
वह्निप्रियां ततो मन्त्रश्चतुर्वर्ग-फलप्रदः।
ब्रह्मास्त्र ब्रह्मविद्या च ब्रह्ममाया सनातनी॥ 18॥

हिन्दी अनुवाद : सम्पूर्ण जगत् को विध्वंस करने वाली, अजर और अमर मृत्यु से रहित करने वाली महान् ऐश्वर्य को देने वाली उस महामाया की सेवा में प्रणाम करते हूँ॥ 15॥ अब मन्त्र का उद्धार बताया जाता है – सर्वप्रथम प्रणव (ॐ) का उच्चारण करे और फिर स्थित माता (ह्लीं) को कहे। इसके अनन्तर बगलामुखी, सर्वदुष्टानां, वाचं, मुखं, पदं, स्तम्भय, जिह्वां, कीलय, बुद्धिं विनाशय इन पदों को कहक प्र व कहे और अन्त में ह्लीं कहकर स्वाहा पद का उच्चारण करना चाहिए। यही मन्त्र है जो धर्मार्थ काम मोक्ष चारों वर्गों के फल का देने वाला है, अब सहस्त्रनाम को बताया जाता है। ब्रह्मास्त्र, ब्रह्मविद्या, सनातनी है अर्थात् सर्वदा से ही चली आने वाली है॥ 16-18॥

श्लोक

ब्रह्मोशी ब्रह्मकैवल्यबगला ब्रह्मचारिणी।
नित्यानन्दा नित्यारूपा नित्यसिद्धा निरामया॥ 19॥
सन्धारिणी महामाया कटाक्षक्षेमकारिणी।
कमला विमला नीला रत्नकान्तिर्गुणाश्रिता॥ 20॥
कामप्रिया कामरता कामकामस्वरूपिणी।
मंगला विजया जाया सर्वमंगलकारिणी॥ 21॥

हिन्दी अनुवाद : ब्रह्मोशी, ब्रह्मकैवल्य, बगला और ब्रह्मचारिणी है। नित्य ही आनन्दरूपा है, नित्य सिद्धा है, नित्य रूप वाली तथा निरामया है अर्थात् पीड़ा रहित है ॥ 19 ॥ सन्धारिणी, महामाया, अपनी कृपा से पूर्ण दृष्टिपात से ही क्षेम करने वाली है। कमला, विमला, नील रत्नों के समान कान्ति वाली और गुणाश्रिता है ॥ 20 ॥ काम-प्रिया, काम-प्रिया, काम में रत, काम के भी कामना के स्वरूप वाली हैं मंगला, विजया अर्थात् विजय रखने वाली, जया और सभी प्रकार के मंगलों से सम्पन्न करने वाली है ॥ 21 ॥

श्लोक

कामिनी कामनी काम्या कामुका कामचारिणी।
प्राणप्रिया कामरता कामास्वरूपिणी॥ 22॥
कामाख्या कामबीजस्था कामपीठ निवासिनी।
कामदा कामहा काली कपाली च करालिका॥ 23॥
कंसारि: माला कामा कैलासेश्वर-वल्लभा।
कात्यायनी केशवा च करुणा कामकेलिभुक॥ 24॥

हिन्दी अनुवाद : कामिनी, कामनी, काम्या अर्थात् कामना करने के योग्य, कामुका अर्थात् काम के भाव से समन्वित और कामचारिणी अर्थात् अपनी ही इच्छा से संचरण करने वाली है। काम से प्रेम करने वाली काम में रति रखने वाली, कामा और काम के समान ही स्वरूप से समन्वित है ॥ 22 ॥ कामाख्या अर्थात् कामा नाम वाली, काम बीज स्थिरता और काम पीठ पर निवास करने वाली है। काम के देने वाली काम का हनन करने वाली, काली, कपाली और करालिका है ॥ 23 ॥ कंसा का शत्रु, कमला, कामा और कैलाश के स्वामी की प्रिया है। कात्यायनी केशवा करुणा और काय क्रीड़ा के भोग करने वाली है ॥ 24 ॥

श्लोक

क्रिया कीर्ति: कृत्तिका च काशिका मधुरा शिवा।
कालाक्षी कालिका काली कमलानना सुन्दरी॥ 25॥
खेचरी च खमूर्तिश्च क्षुद्रा क्षुद्रक्षुधा खरा।
खंगहस्ता खंगरता खंगिनी खर्परप्रिया॥ 26॥
गंगा गौरी गामिनी च गीता गोत्रविबर्धिनी।
गोधरा गोकरा गोधा गन्धर्वपुर वासिनी॥ 27॥

हिन्दी अनुवाद : क्रिया, कीर्ति, कृत्तिका, काशिका, मधुरा, शिवा, कमलाक्षी, कालिका काली और कमल जैसे मुख वाली सुन्दरी है ॥ 25 ॥ खेचरी, आकाश की मूर्ति क्षुद्रा, क्षुद्रक्षुधा, परा है। हाथ में खंग रखने वाली, खंग में ही रत खंगिनी और खर्परप्रिया है ॥ 26 ॥ गंगा, गौरी, गामिनी, गीता और गोत्र का वर्धन करने वाली है। गोधरा, गोकरा, गोधा और गन्धर्वों के पुर में निवास करने वाली है ॥ 27 ॥

श्लोक

गन्धर्व गन्धर्वकला गोपिनी गरुडासना।
गोविन्द भावा गोविन्दा गान्धारी गन्धमादिनी॥ 28॥
गौरांगी गोपिका मूर्तिर्गोपी गोष्ठवासिनी।
गन्धा राजेन्द्रगा मान्या गदाधरप्रिया ग्रहा॥ 29॥
घोरघोरा घोररूपा घनश्रोणी घनप्रभा।
दैत्येन्द्र प्रबला घण्टावादिनी घोरनिस्वना॥ 30॥

हिन्दी अनुवाद : गन्धर्वा, गन्धर्व की कला वाली, गोपिनी और गरुड़ के आसन वाली गोविन्द के अन्दर भाव रखने वाली, गोविन्दा गान्धारी और गन्धमादिनी है॥ 28॥ गौरांगी, गोपिका की मूर्ति, गोपी और गोष्ठ के निवास करने वाली है। गन्धा, गजेन्द्र की भांति गमन करने वाली अथवा गजेन्द्र केशरी पर गमन करने वाली तात्पर्य सिंह वाहिनी है। मान्या-गदाधार को प्रियतमा और ग्रहा है॥ 29॥ घोर से भी अधिक घोर, घोर रूप वाली, धन श्रोणी वाली धन के समान प्रभा से समन्विता दैत्येन्द्र के (समान) ऊपर प्रबल होने वाली, घण्टान्नाद करने वाली, घोर ध्वनि वाली हैं॥ 30॥

श्लोक

डाकिन्युमा उपेन्द्रा च उर्वशी उरगासना।
उत्तमा उन्नता उत्तमस्थान वासिनी॥ 31॥
चामुण्डा मुण्डिता चण्डी चण्डदर्पहरेति च।
उग्रचण्डा चण्डचण्डा चण्डदैत्य विनाशिनी॥ 32॥
चण्डरूपा प्रचण्डा च चण्डा चण्डशरीरिणी।
चतुर्भुजा प्रचण्डा च चराचर निवासिनी॥ 33॥

हिन्दी अनुवाद : डाकिनी, उमा, उपेन्द्रा, उर्वशी और उरग पर आसन रखने वाली हैं। उत्तमा, उन्नता, उन्ना और उत्तम स्थान पर वास करने वाली है॥ 31॥ चामुण्डा, मुण्डिता, चण्डी, चण्ड दैत्य के दर्प के हरण करने वाली, उग्रचण्डा, चण्ड दैत्य के विनाश करने वाली हैं॥ 32॥ चण्ड रूप वाली, प्रचण्डा चण्डा चण्डे के शरीर वाली है अर्थात् उग्रशरीर वाली है। चारों भुजाओं वाली, प्रचण्डा अर्थात् अत्यन्त तेज स्वभाव वाली, चर और अचरों में निवास करने वाली है॥ 33॥

श्लोक

क्षत्रप्राय शिशरोवाहा छला छलतरा छली।
क्षत्ररूपा क्षत्रधरा क्षत्रिय क्षयकारिणी॥ 34॥
जया च जयदुर्गा च जयन्ती जयदा परा।
जयिनी जायिनी ज्योत्स्ना जटाधर प्रियाऽजिता॥ 35॥

जितेन्द्रिया जितक्रोधा जयमाना जनेश्वरी।
जितमृत्युर्ज-रातीता जाहनवी जनकात्मजा॥ 36॥

हिन्दी अनुवाद : क्षत्रप्रायशिरों वाहा, छला, छलतरा, छली, क्षत्र रूप वाली, क्षत्रधरा और क्षत्रियों के क्षय को करने वाली है॥ 34॥ जया, जय दुर्गा जयन्ती, जय देने वाली परा है। जयिनी, जायिनी, ज्योत्सना, जटाधर की प्रिया और अजिता है॥ 35॥ इन्द्रियों को जीतने वाली, क्रोध को जीत लेने वाली जयमाला, जनेश्वरी अर्थात् सब जनों की स्वामिनी है मृत्यु को जीत लेने वाली, जरा से परे, जाह्नवी और जनक की आत्मजा अर्थात् जानकी है॥ 36॥

श्लोक

झंकारा झंझरी झंटा झंकारी झंकशोभिनी।
झखा झंमेखा झंकारी योनि कल्याण दायिनी॥ 37॥
झंझरा झमुरी झाराझरा झरतरा परा।
झंझा झमेता झंकारी योगि कल्याणदायिनी॥ 38॥
ईमना मानसी चिन्त्या ईमुना शंकरप्रिया।
टंकारी टिटिका टीका टंफिनी चटवर्गगा॥ 39॥

हिन्दी अनुवाद : झंकारा, झंझरी, झण्टा, झंकारी और झंका शोभा वाली है। झखा झमेखा झंकारी और कल्याण के देने वाली है॥ 37॥ झंझरा, झुमरी, झारा, झरा, झरतरात, परा, झंझा, झमेता, झंकार, झाण, कल्याण देने वाली है॥ 38॥ ईमना, मानसी, चिन्त्या, ईमुना, शंकर प्रिया, टंकारी, टिटिका, टीका, टंकनी, चटवर्गाणा है॥ 39॥

श्लोक

टापा टोपा टटपविष्टमनी टमनप्रिया।
ठकारधारिणी ठोका ठंकरी ठिकरप्रिया॥ 40॥
ठेकठासा ठफरती ठामिनी ठमनप्रिया।
डारहा डाकिनी डारा डामरा डमरप्रिया॥ 41॥
डाकिनी ऽऽयुक्ता च डमरूकर वल्लभा।
ढक्का ढक्की ढक्कनादा ढौलशब्द प्रबोधिनी॥ 42॥

हिन्दी अनुवाद : टापा, टोपा, टटपवि, टमनी, टमनप्रिया, ठकारधारिणी, ठोका, ठकरी, ठिकरप्रिया है॥ 40॥ ठकठासा, ठकरनी, ठमिनि, ठमनप्रिया, डारहा, डाकिनी, डारा डामरा, डमरप्रिया है॥ 41॥ डाकिनी, ऽऽयुक्ता, डमरूकर में रखने वाले की प्रियतमा है। ढक्का, ढक्की, ढक्कनादा, ढोलक शब्द से प्रबोध वाली है॥ 42॥

श्लोक

ढामिनी ढामनप्रीता ढगतन्त्रप्रकाशिनी।
अनेक रूपिणी अम्बा अणिमा सिद्धिदायनी॥ 43॥

अमन्त्रिणी अणुकरी अणुमद्भानु संस्थिता।
तारा तन्त्रवती तन्त्रत्वरूपा तपस्विनी॥ 44॥
तरङ्गिणी तत्वपरा तन्त्रिका तन्त्रविग्रहा।
तपोरूपा तत्वदात्री तपः प्रीतिप्रधार्षिणी॥ 45॥

हिन्दी अनुवाद : ढामिनी, ढामनप्रीता, ढंगतन्त्र का प्रकाश करने वाली है, अनेक रूपों वाली अम्ब अणिमा, सिद्धि के देने वाली है॥ 43॥ अमन्त्रिणी अणुकरी, अणुमद्वाली संस्थिता है तारा तन्त्रवती, तन्त्रों के तत्त्वों के रूप वाली है तथा तपस्विनी है॥ 44॥ तरंगिणी, तत्त्व परायुक्ता, तन्त्रिकातन्त्रों के विग्रह वाली, तप के रूप से संयुता तत्त्वों के देने वाली और तप की प्रीति की प्रधार्षिणी है॥ 45॥

श्लोक

तन्त्रयन्त्रार्चन परा तलातल निवासिनी।
तल्पदा त्वल्पदा काम्या स्थिरा स्थिरता स्थितिः॥46॥
स्थाणुप्रिया स्थवरास्थिलता स्थान प्रदायिनी।
दिगम्बरा दयारूपा दावाग्निदमनी दमा॥ 47॥
दुर्गा दुर्गापरा देवी दुष्टदैत्य विनाशिनी।
दमनप्रमदा दैत्यदया द्रव्यपरायणा॥ 48॥

हिन्दी अनुवाद : तन्त्रों और यन्त्रों के द्वारा अभ्यर्चन करने तत्पर और तलातल में निवास करने वाली है। तल्प की दात्री, अल्प के देने वाली काम्या अर्थात् कामना के योग्य, स्थिरा, स्थिरता अर्थात् अधिक स्थिर रहने वाली और स्थिति है॥ 46॥ भगवान शिव की प्रिया, स्थविरास्थिवता, स्थान के प्रदान करने वाली, दिगम्बरा अर्थात् दिशा ही अम्बर वाली दया के रूप वाली, दावाग्नि के दमन करने वाली और दमा है॥ 47॥ दुर्गा, दुर्गापरा, देवी, दुष्ट दैत्यों के विनाश करने वाली, दमन प्रमदा, दैत्य दया और धन देने में तत्पर रहने वाली है॥ 48॥

श्लोक

दुर्गतिनाशिनी दान्ता दम्भिनी दम्भवर्जिता।
दिगम्बरप्रिया दम्भा दैत्यदम्भ विदारिणी॥ 49॥
दमना दशनसौन्दर्या दानवेन्द्र विनाशिनी।
दयाधरा च दमनी दर्भपत्र विलासिनी॥ 50॥
धरिणी धारिणी धात्री धराधरधर प्रिया।
धराधरसुता देवी सुधर्मा धर्मचारिणी॥ 51॥

हिन्दी अनुवाद : दुर्गति का विनाश करने वाली, परम दमनशीला, दम्भिनी, दम्भ से रहित, दिशाओं के ही अम्बरों से प्रेम रखने वाली, दम्भा और दैत्यों के दम्भ का निवारण कने वाली है॥ 49॥ दमना, दशन के सौन्दर्य से सम्पन्न बड़े-बड़े

दानव के स्वामियों का विनाश करने वाली है, दया को धारण करने वाली, दमनी और दर्भ के पत्रों पर विलास करने वाली है। दर्भ जम का नाम है ॥ 50 ॥ धरिणी, धारिणी, धात्री, धराधर, धर प्रिया, भराधर की पुत्री, देवी सुधर्मा और धर्म का चार करने वाली है ॥ 51 ॥

श्लोक

धर्मज्ञा धवला धूला धनदा धनवर्द्धिनी।
धीराऽधीरा धीरतरा धीरसिद्धि प्रदायिनी॥ 52 ॥
धन्वन्तरिधा धीरा ध्येया ध्यानस्वरूपिणी।
नारायणी नारसिंही नित्यानन्दा नरोत्तमा॥ 53 ॥
नक्ता नक्तवती नित्या नीलजीमूत सन्निभा।
नीलाङ्गी नीलवस्त्रा च नीलपर्वत वासिनी॥ 54 ॥

हिन्दी अनुवाद : धर्म के ज्ञान रखने वाली, धबरा, धूला, धन के देने वाली, धन के बर्धन करने वाली, धीरा, अधीरा, अधिक धीरा धीरों की सिद्धि की देने वाली है ॥ 52 ॥ धन्वन्तरि को धारण करने वाली, शीरा ध्यान करने के योग्य, ध्यान के ही स्वरूप से समन्विता, नारायणी, नारसिंही, नित्य ही आनन्द से सम्पन्न, नरों में उत्तमा है ॥ 53 ॥ नक्ता, नक्तावती, नित्य नील मेध के समान, नीलवर्ण के अंगों वाली नील वस्त्र से संयुत तथा नील पर्वत पर निवास करने वाली है ॥ 54 ॥

श्लोक

सुनीलपुष्प खचिता नीलजंबुजा समप्रभा।
नित्याख्या षोडशी विद्या नित्या नित्यसुखावहा॥ 55 ॥
नर्मदा नन्दना नन्दा नन्दानन्द विवर्धिनी।
यशोदा नन्दतनया नन्दनोद्यान वासिनी॥ 56 ॥
नागान्तका नागवृद्धा नागपत्नी च नागिनी।
नमिताशेष जनता नमस्कारवती नमः॥ 57 ॥

हिन्दी अनुवाद : सुन्दर नीलवर्ण के पुष्पों से खचित, नील जम्बु के समान प्रभा वाली नित्यानाम वाली, षोडशो विद्या, नित्या और नित्य ही सुखों का आवाहन करने वाली है ॥ 55 ॥ नर्मदा, नन्दना, नन्द, नन्दा के आनन्द को बढ़ाने वाली यशोदा नन्द की तनया और प्रन्दन (सुरगणों के उद्यान का नाम) उद्यान में वास करने वाली हैं ॥ 56 ॥ नागों का अन्त करने वाली, नागों की वृद्धि करने वाली अथवा नागों में सबसे बड़ी नागों की पत्नी नागिनी सम्पूर्णजनों के समुदाय को नमित करने वाली, नमस्कार वाली और नमस्कार स्वरूप है ॥ 57 ॥

श्लोक

ढामिनी ढामनप्रीता ढगतन्त्रप्रकाशिनी।
पीताम्बरा पार्वती च पीताम्बर पिंगमूर्धजा॥ 58 ॥

पीतपुष्पार्चन रता पीतपुष्प समर्चिता।
परप्रभा पितृपतिः परसैन्य विनाशिनी॥ 59॥
परमा परतन्त्रा च परमन्त्रा परापरा।
पराविद्या परासिद्धि परास्थान प्रदायिनी॥ 60॥

हिन्दी अनुवाद : पीताम्बरों वाली, पार्वती, पीतवर्ण के अम्बरों से भूषिता, पीतवर्ण की मालाओं के शारण करने वाली, पीत आभा से युक्त और पिंग अर्थात् पीले केशों वाली है॥ 58॥ पीले पुष्पों के द्वारा समर्थन करने से प्रसन्न, पीले पुष्पों से पूजित परप्रभा, पितृगणों की पति अर्थात् शत्रुओं की सेना का विनाश कर देने वाली है॥ 59॥ परमा अर्थात् सर्वोपरी विराजमाना, परतन्त्रा, परापरा अर्थात् परम श्रेष्ठ सिद्धि स्वरूपा और अपरा है, पराविद्या, परासिद्धि, परा के स्थान को प्रदान करने वाली है॥ 60॥

श्लोक

पुष्पापुष्पवती नित्या पुष्पमाला विभूषिता।
पुरातना पूर्वपरा परसिद्धि प्रदायिनी॥ 61॥
पीतनिवाम्बिनी पीता पीनोन्नत पयस्विनी।
प्रेमा प्रेमध्यमा शेषा पद्मपत्र विलासिनी॥ 62॥
पद्मावती पद्मनेत्रा पद्मा पद्ममुखी परा।
पद्मासना पद्मप्रिया पद्मराग स्वरूपिणी॥ 63॥

हिन्दी अनुवाद : पुष्पापुष्पवर्ती, नित्या, पुष्पों की मालाओं से विभूषिता पुरातना, पूर्वपरा और पर अर्थात् परमसिद्धि के देने वाली है॥ 61॥ पीत नितम्बों वाली, पीता, पीन तथा उन्नत स्तनों से पयस्विनी, प्रेमा, प्रेमध्यमा, शेषा, पद्मों के दलों पर विलास करने वाली है॥ 62॥ पद्मावती, मुख से संयुत, परा पद्म के आसनों वाली, पद्मों से प्रेम रखने वाली और पद्म के राग से, स्वरूप से समन्वित है॥ 63॥

श्लोक

पावनी पाविका पात्री परदा वरदा शिवा।
प्रेतसंस्था परानन्दा परब्रह्म स्वरूपिणी॥ 64॥
जिनेश्वरप्रिया देवी पशुरक्त रतिप्रिया।
पशुमासप्रिया-अपर्णा परामृत परायणा॥ 65॥
पाशिनी पाशिका चापि पशुघ्नी पशुभाषिणी।
कुल्लारविन्द वदनी फुल्लोत्पल शरीरिणी॥ 66॥

हिन्दी अनुवाद : पवित्र करने वाली, पालिका, पालन करने वाली परदा, वरों के प्रदान करने वाली, शिवा, शाव पर संस्थित रहने वाली, परमानन्द से संयुत और परब्रह्म के स्वरूप वाली है॥ 64॥ जिनेश्वर की प्रिया देवी पशुओं के रक्त में रति और प्रेम

रखने वाली है। पशु के मांस को प्रिय समझने वाली अपर्णा परामृत मैं परायण है॥ ।।65॥ पाशवाली पाशिका पशुओं का हनन करने वाली पशुभाषिणी विकसित कमल के समान मुख वाली, खिले हुए कमल के तुल्य शरीर से सुसम्पन्न है॥66॥

श्लोक

परमानन्द प्रदा वीणा पशुपाश विनाशिनी।
फुत्कारा फुत्कारा फेणी फुल्लेन्दी बरलोचनाः॥67॥
फट्मन्त्रा स्फटिका स्वाहा स्फोटा च फट् स्वरूपिणी।
स्फोटिका घुटिका धीरा स्फाटिकादि स्वरूपिणी॥68॥
बरांगना वरधना वाराही वासुकी वरा।
विन्दुस्था विन्दुनी वाणी विन्दुचक्र निवासिनी॥69॥

हिन्दी अनुवाद : परमाधिक आनन्द के प्रदान करने वाली वीणा पशुओं के पाश का विनाश करने वाली है, फुत्कारा-फुत्कारा, फेणी विकसित इन्दीवर कमल के तुल्य श्रेष्ठ लोचनों वाली है॥67॥ फट्मन्त्र वाली स्फटिक स्वाहा, स्फोटा, फट् के स्वरूप वाली है, स्फाटिका, घुटिका, धीरा, स्फटिक मणि के पर्वत के स्वरूप वाली है॥68॥ श्रेष्ठ अंगना वरों के धारण करने वाली वाराही, वासुकी, बरा बिन्द में स्थित, बिन्दुनी, वाणी और बिन्दु चक्र में निवास करने वाली है॥69॥

श्लोक

विद्याधरी विशालाक्षी काशीवासि जनप्रिया।
वेदविद्या विरूपाक्षी विश्वयुग बहुरूपिणी॥70॥
ब्रह्मशक्ति-विष्णुशक्तिः पञ्चवक्त्रा शिवप्रिया।
बैकुण्ठवासिनी देवी वैकुण्ठपद दायिनी॥71॥
ब्रह्मरूपा विष्णुरूपा परब्रह्म महेश्वरी।
भवप्रिया भवोद्भावा भवरूपा भवोत्तमा॥72॥

हिन्दी अनुवाद : विद्या को धारण करने वाली, विशाल नेत्रों से समन्वित, वाराणसी में निवास करने वाले जनों की प्रिया वेद-विद्या विरूप नेत्रों वाली अर्थात् त्रिनेत्रा विश्वयुक्त और अनेकों रूपों वाली है॥70॥ ब्रह्मा की शक्ति विष्णु की शक्ति पंचवक्त्रा शिव की प्रियतमा बैकुण्ठलोक में निवास करने वाली देवी और वैकुण्ठ का पद प्रदान करने वाली है॥71॥ ब्रह्मा के स्वरूप वाली भगवान विष्णु के स्वरूप से समन्विता परब्रह्म महेश्वरी भगवान् शिव की प्रिया भर के उद्भव वाली भव के ही रूप वाली भव से भी उत्तमा है॥72॥

श्लोक

भवपारा भवधारा भाग्यवत् प्रियकारिणी।
भद्रा सुभ्रदा भवदा शुम्भदैत्य विनाशिनी॥73॥

भवानी भैरवी भीमा भद्रकाली सुभद्रिका।
भगिनी भगरूपा च भगमाना भगोत्तमा॥ 74॥
भगप्रिया भगवती भगवासा भगाकरा।
भगसृष्टा भाग्यवती भगरूपा भगांसिनी॥ 75॥

हिन्दी अनुवाद : भव की पारा भव की धारा भाग्यवानों के प्रिय कार्य करने वाली भद्रा सुभद्रा भवा और शुम्भ नामक दैत्य के विनाश करने वाली है॥ 73॥ भवानी भैरवी भीमा भद्रकाली सुभद्रिका भगिनी भगरूपा भगमाना और भगोत्तमा है॥ 74॥ भगप्रिया भगवती भगवासा भगाकरा भगसृष्टा भाग्यवती भगरूपा और भंगासिनी है॥ 75॥

श्लोक

भगलिङ्गप्रिया देवी भगलिङ्गपरायणा।
भगलिङ्गस्वरूपा च भगलिङ्गविनोदिनी॥ 76॥
भगलिङ्गरता देवी भगलिङ्गनिवासिनी।
भगमाला भगकला भगाधारा भगाम्बरा॥ 77॥
भगावेगा भगाभूषा भगेन्द्रा भाग्यरूपिणी।
भगलिङ्ग सम्भोगा भगलिङ्गा सवावहा॥ 78॥

हिन्दी अनुवाद : भगलिंग की प्रिया देवी भगलिंग में परायण है। भगलिंग के स्वरूप से संयुक्त और भगलिंग से विनोद करने वाली है॥ 76॥ भगलिंग में निरत देवी भगलिंग में निवास करने वाली है। भगमाला भगकला भगधारा और भग के अम्बर वाली है॥ 77॥ भगवेगा भगभूषा भगेन्द्रा भाग्यरूपिणी है। भग और लिंग के अंग का सम्भोग वाली भगलिंग सवावहा है॥ 78॥

श्लोक

भगलिङ्ग समाधुर्या भगलिङ्ग निवेशिता।
भगलिङ्ग सुपूजा च भगलिङ्ग समन्विता॥ 79॥
भगलिङ्ग विरक्ता च भगलिङ्ग समावृता।
माधवी मादवी मान्या मधुरा मधुमानिमी॥ 80॥
मन्दहासा महामाया मोहिनी महदुत्तमा।
महामोहा महाविद्या महाघोरा महास्मृतिः॥ 81॥

हिन्दी अनुवाद : भगलिंग के माधुर्य के सहित भगलिंग निवेशिता भग और लिंग की सुन्दर पूजा भगलिंग से समन्वित है। माधवी–मादवी मान्या मधुरा और मधुमानिनी है भगलिंग विरक्त और भगलिंग से समावृता है॥ 79–80॥ महामोहा वाली महाविद्या महाघोरा और महास्मृतिः है॥ 81॥

श्लोक

मनस्विनी मानवती मोदिनी मधुरानना।
मेनका मानिनी मान्या मणिरत्न विभूषिता॥ 82॥
मल्लिका मौलिका माला मालाधर मदोत्तमा।
मदना सुन्दरी मेधा मधुमत्ता मधुप्रिया॥ 83॥
मतहंसा समोन्नासा मत्तसिंह महासिनी।
महेन्द्र वल्लभा भीमा मौलय मिथुनात्मजा॥ 84॥

हिन्दी अनुवाद : मनस्विनी मानवती मधुर आनन वाली मेनका मानिनी मान्या और मणियों से और रत्नों से भूषिता है ॥ 82 ॥ मल्लिका मौलिका माता, मालाओं को धारण करने वाली उत्तम मद से संयुत है। मदना, सुन्दरी, मेधा, मधुमत्ता और मधु से प्रेम करने वाली है ॥ 83 ॥ मत्तहंसा, समोन्ना, सामद से मस्त सिंह पर अपना महान् आसन रखने वाली है। महेन्द्र की वल्लभा, भीमा, मौलय और मिथुन की आत्मजा है ॥ 84 ॥

श्लोक

महाकाल्या महाकाली मनोबुद्धिर्म-होत्कटा।
माहेश्वरी महामाया महिषासुर-घातिनी॥ 85॥
मधुरा कीर्तिमत्ता च मत्तमांतग-गामिनी।
मदप्रिया मांसरमा मत्तयुक् कामकारिणी॥ 86॥
मैथुन्य वल्लभा देवी महानन्दा महोत्सवा।
मरीचि-र्मारतिर्माया मनोबुद्धि प्रदायिनी॥ 87॥

हिन्दी अनुवाद : महाकाल्या, महाकाली मन और बुद्धि के लिए महोत्कय माहेश्वरी, महामाया और महिष नामक असुर को समाप्त करने वाली है ॥ 85 ॥ मधुरा कीर्त्तिमर्त्ता हाथी के समान झूमती हुई गमन करने वाली है। मद सुर से म्यार करने वाली मांस में रति रखने वाली मत्तयुक्त और कामकारिणी है ॥ 86 ॥ मैथुन्य की प्यारी देवी महान आनन्द से संयुक्त महान उत्सवों वाली है। मरीचि मा रति माया और मन बुद्धि के प्रदान करने वाली है ॥ 87 ॥

श्लोक

महामोक्षा महालक्ष्मीर्म-हत्परदायिनी।
यमरूपा च यमुना जयन्ती च जयप्रदा॥ 88॥
याम्या यमवती युद्धा यदः कुलवर्धिनी।
रमा रामा रामपत्नी रत्नमाला रतिप्रिया॥ 89॥
रत्नसिंहासनस्था च रत्नाभरण-मण्डिता।
रमणी रमणीया च रत्ना रस परायणा॥ 90॥

हिन्दी अनुवाद : मोहा, मोक्षा अर्थात् मोह के स्वरूप वाली और मोक्ष रूप से संयुत है, महालक्ष्मी महान पद के देने वाली है ॥ 88 ॥ याम्या यमवती युद्धा यदु के कुल का विशेष वर्धन करने वाली रमा रामा श्रीराम की पत्नी रत्नों की माला और रति के समान रत्नों आभरणों समलंकृता है। रमणी-रमणीया रत्ना और रस में परायण है ॥ 89-90 ॥

श्लोक

रसानन्दा रसवती रधूंणा कुलवर्धिनी।
रमणारि-परिभ्रज्या रैधाक रत्नजा॥ 91॥
रावी रसस्वरूपा च रात्रिराज सुखावहा।
ऋतुजा ऋतुदा ऋद्धा ऋतुरूपा ऋतुप्रिया॥ 92॥
रक्तप्रिया रक्तवती रंगिणी रक्तदन्तिका।
लक्ष्मीर्लज्जा च लतिका लीलालग्ना विताक्षिणी॥ 93॥

हिन्दी अनुवाद : रस के आनन्द वाली रसवती रघुराज के कुल के बढ़ाने वाली रमण के अरि की परिभाषा रेंधा और अराधिका रत्नजा है ॥ 91 ॥ रावी रस के स्वरूप वाली रात्री के राजा को सुखों का आवाहन करने वाली है, ऋतुजा-ऋतुदा ऋतु के स्वरूप वाली और ऋतु से प्यार करने वाली है ॥ 92 ॥ रक्त से प्रीति रखने वाली, रक्तवती, रंगिणी, रक्त दन्तिका, लक्ष्मी लज्जा, लतिका, लीलाओं में संलग्न रहने वाली और विताक्षणी है ॥ 93 ॥

श्लोक

लीला लीलावती लोभा हर्ष-अह्लादन पट्टिका।
ब्रह्मस्थिता ब्रह्मरूपा ब्रह्मणा वेदवन्दिता॥ 94॥
ब्रह्मोद्भवा ब्रह्मकला ब्रह्माणी ब्रह्मबोधिनी।
वेदांगना वेदरूपा वनिता विनता वसा॥ 95॥
बाला च युवती वृद्धा ब्रह्मकर्म परायणा।
विन्ध्यस्था विन्ध्यवासी च विन्दुयुग विन्दुभूषणा॥ 96॥

हिन्दी अनुवाद : लीला, लीलावती लोभा हर्ष और आह्लादन की पट्टिका ब्रह्म में स्थित ब्रह्म के रूप वाली ब्रह्माणी ब्रह्म का बोध कराने वाली वेदों की अंगना, वेदों के रूप वाली वनिता वसा है। ब्रह्म के द्वारा वन्दिता और वेद वन्दिता है, ब्रह्म से उद्भव प्राप्त करने वाली ब्रह्म की कला है ॥ 94-95 ॥ बाला, युवती वृद्धा ब्रह्म के कर्म में परायण विन्ध्य पर विराजमाना विन्ध्य में वास करने वाली बिन्दु से युक्त और बिन्दु के भूषण वाली है ॥ 96 ॥

श्लोक

विद्यावती वेदधारा व्यापिका वर्हिणी कला।
वामाचारप्रिया वहिनर्वाम-चारपरायणा ॥ 97 ॥
वामाचार रतादेवी वासुदेव प्रियोत्तमा।
बुद्धिन्द्रिया विषुद्धा च बुद्धा वरणमालिनी ॥ 98 ॥
बन्धमोचन कर्त्री च वरुणा वरुणालया।
शिव शिवप्रिया शुद्धा शुद्धांगी शुक्लवर्णिका ॥ 99 ॥

हिन्दी अनुवाद : विद्यावती, वेदों के धारण करने वाली, व्यापिका बर्हिणी, कला, वामाचार से प्रीति रखने वाली वह्नि तथा समाचार में तत्पर रहने वाली है ॥ 97 ॥ वामाचार में निरतदेवी वासुदेव की प्रियतमाओं में सर्वोत्तमा बुद्धिन्द्रिया, विबुद्धा, बुद्धा और वरण मालिनी है ॥ 98 ॥ बन्धन से मुक्त करने वाली, वरुण वरुण में आलय वाली शिवा शिव की प्रिया वृद्धा, शुद्ध अंगों वाली और शुक्ल वर्ण से युक्त है ॥ 99 ॥

श्लोक

शुक्लपुष्प प्रिया शुक्ला शिवधर्म परायणा।
शुक्लस्था शुक्लिनी शुक्लरूपा शुक्लपशु-प्रिया ॥ 100 ॥
शुक्रिणी शुक्रिणी शुक्रा शुक्राकारा च शुक्रिका।
षण्मुखी च षडङ्गा च षट् चक्रविनिवासिनी ॥ 101 ॥
षडग्रान्थियुता षोढा च षणमाता च षडात्मिका।
षडंगयुवती देवी षडंग प्रकृतिर्वशी ॥ 102 ॥

हिन्दी अनुवाद : शुक्ल पुष्पों से प्यार करने वाली, शुक्ला शिव के धर्म परायण, शुक्ल में स्थित, शुक्लिनी, शुक्ल रूपा और शुक्ल वर्ण वाले पशु से प्रेम रखने वाली है ॥ 100 ॥ शुक्रस्थ, शुक्रिणी, शुक्रा, शुक्र के रूप वाली, शुक्राकार, षण्डमुखी, षडंगा, षटचक्र पर विशेष निवास करने वाली है ॥ 101 ॥ षड्ग्रन्थियों से युक्ता, षोढा, षण्माता षडात्मिक, षडंगों से युवती, देवी, षडंग प्रकृति और वशी है ॥ 102 ॥

श्लोक

षडानना षडस्त्रा च षष्ठी षष्ठेश्वरी प्रिया।
षडङ्गवादा षोडशी च षोदा न्यासस्वरूपिणी ॥ 103 ॥
षट्चक्र भेदनकारी षट्चक्रस्थ स्वरूपिणी।
षोडश स्वरूपा च बण्मुखी षड्रदान्विता ॥ 104 ॥
सनकादि स्वरूपा च शिवधर्म परायणा।
सिद्धा सप्तस्वरी शुद्धा सुरमाता स्वरोत्तमा ॥ 105 ॥

हिन्दी अनुवाद : षडानना, षडस्त्राषष्ठी, षष्ठेश्वरी, प्रिया षडग-वादा, षोडशी-षोडा, न्याओं के स्वरूप वाली है ॥ 103 ॥ षट्चक्रों के भेदन करने वाली, षट्चक्र में स्थित स्वरूप वाली हैं षोडश स्वरों के स्वरूप वाली, षण्मुखी, षड्रदों से समन्वित है ॥ 104 ॥ सनक आदि से स्वरूप वाली है और भगवान शिव के धर्म में तत्पर रहने वाली है। सिद्धा, सप्तस्वरों से समन्वित है। षडज, ऋषभ, गन्धार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद - ये सात स्वर है। शुद्धा सुरों की माता और स्वरौत्तमा है ॥ 105 ॥

श्लोक

सिद्धविद्या सिद्धमाता सिद्धासिद्ध स्वरूपिणी।
हरा हरप्रिया हारा हारिणी हारयुक्तथा॥ 106 ॥
हरिरूपा हरिधारा हरिणाक्षी हरिप्रिया।
हेतुप्रिया हेतुरता हिताहित स्वरूपिणी॥ 107 ॥
क्षमा क्षमावती क्षीता क्षुद्रघंटा विभूषिता।
क्षयंकरी क्षितीशा च क्षीण मध्य सुशोभना॥ 108 ॥

हिन्दी अनुवाद : सिद्धविद्या, सिद्धमाता और सिद्ध तथा असिद्ध स्वरूप वाली है। हरा, हर की प्रियतमा - हरा, हरिणी और हार से युक्त है ॥ 106 ॥ हरि के रूप वाली हरि की धारा, हरिणी के समान विशाल और कटीले लोचनों वाली तथा श्रीहरि की प्रिया है। हेतुप्रिया हेतु में रता, हित और अहित के स्वरूप वाली है अर्थात् अपने भक्तों का हित और भक्तों के शत्रुओं का अहित करने वाले स्वरूप से सुसमन्वित है ॥ 107 ॥ स्वयं ही क्षमा है क्षमा के स्वरूप वाली अर्थात् क्षमा से युक्त है। क्षीता और क्षुद्राघण्टा से विभूषित खय करने वाली, क्षिति की स्वामिनी, अपने कृश मध्य भाग से परम शोभित है ॥ 108 ॥

श्लोक

अजा अनन्ता अपर्णा च अहल्या शेषशायिनी।
स्वान्तर्गता च साधूनाम–तरानन्तरूपिणी॥ 109 ॥
अरूपा अमला चार्द्धा अनन्त गुणशालिनी।
स्वविद्या विद्यका विद्याविद्या चारविन्द लोचना॥ 110 ॥
अपराजिता जातवेदा अजपा अमरावती।
अल्पा स्वल्पा अनल्पाऽऽघाअणिमा सिद्धि दायिनी॥ 111 ॥

हिन्दी अनुवाद : अजा, अनन्ता, अपर्णा, अहल्या और शेष नाग की शैया पर शयन करने वाली है। साधु पुरुषों के अन्तःकरण में रहने वाली और अन्तरा अनन्तरूपिणी है ॥ 109 ॥ अरूपा, अमला, अर्द्धा, अनन्त गुणों की शोभा वाली हैं। स्वविद्या, विद्यका, विद्या-अविद्या और अरविन्द के समान परम सुन्दर नयनों वाली

हैं ॥ 110 ॥ अपराजिता जातवेदा, अजय, अमरावती, अल्पा, स्वल्पा, अनल्पा, आद्या अणिमा की सिद्धि देने वाली है। नौ निधियां और आठ सिद्धियां होती हैं। उन आठ सिद्धियों के नामों का निम्न परिगणन है – अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व और वशित्व – ये आठ नाम हैं। अणिमा का अर्थ है बहुत ही छोटा रूप धारण कर लेना ॥ 111 ॥

श्लोक

अष्टसिद्धि प्रदा देवीं रूपलक्षणा संयुता।
अरविन्दमुखी देवी भोगसांख्य प्रदायिनी॥ 112॥
आदि-विद्या आदिभूता आदिसिद्धि-प्रदायिनी।
सीत्कार-रूपिणी देवी सर्वासन विभूषिता॥ 113॥
इन्द्रप्रिया च इन्द्राणी इन्द्रप्रस्थ निवासिनी।
इन्द्राक्षी इन्द्रवज्रा च इन्द्र वन्द्योक्षिणी तथा॥ 114॥

हिन्दी अनुवाद : इन आठों सिद्धियों को प्रदान करने वाली देवी-सांसारिक सुखों के उपभोग को देने वाली है ॥ 112 ॥ सीत्कार (मुख से सी-सी करना) के रूप वाली, अविद्या, आदिभूता आदिसिद्धि की देने वाली तथा सर्वासन पर भूषित है ॥ 113 ॥ इन्द्र की प्रिया, इन्द्राणी, इन्द्रप्रस्थ में निवास करने वाली, इन्द्राक्षी, इन्द्रवज्रा, इन्द्रवन्धा, उक्षिणी है ॥ 114 ॥

श्लोक

ईला कामनिवासा च ईश्वरीश्वर वल्लभा।
जननी चेश्वरी दीना मेदा चेश्वर कर्मकृत्॥ 115॥
उमा कात्यायनी ऊर्ध्वा मीना चोत्तरवासिनी।
उमापति प्रिया देवी शिवा चोंकाररूपिणी॥ 16॥
उरगेन्द्र शिरोरत्ना उरगोरग वल्लभा।
उद्यानवासिनी माला प्रशस्तमणि भूषणा॥ 17॥

हिन्दी अनुवाद : ईला, कामनिवासा, ईश्वरी-ईश्वरी की वल्लभा, जननी, ईश्वरी, दीना, भेदा, ईश्वर के कर्मों के करने वाली है ॥ 115 ॥ उमा, कात्यायनी, ऊर्ध्वा, मीना, उत्तर दिशा में वास करने वाली है ॥ 116 ॥ शेषनाग का शिरोरत्न है सर्पों को उरस्थल में रखने वाले अर्थात् भगवान शिव की वल्लभा है। उद्यान में निवास करने वाली, माला, प्रशस्त मणियों के भूषणों वाली है ॥ 117 ॥

श्लोक

ऊर्ध्व दन्तोत्तमाङ्गी च उत्तमा चोर्ध्वकेशिनी।
उमासिद्धि प्रदा या च उरगासन संस्थिता॥ 118॥
ऋषिपुत्री ऋषिच्छन्दा ऋद्धि सिद्धि प्रदायिनी।

उत्सवोत्सव सीमान्ता कामिका च गुणान्विता॥ 119॥
एला एकारविद्या च एणी विद्याधरा तथा।
ओंकार वलयोपेता ओंकारपरमा कला॥ 120॥

हिन्दी अनुवाद : ऊर्ध्वदन्ता, उत्तम अंगों वाली उत्तमा, ऊर्ध्वकेशों वाली है। उमा, सिद्धियों के प्रदान करने वाली उरगों के अर्थात् भगवान शेष के आसन पर स्थित है॥ 118॥ ऋषि की पुत्री, ऋषिच्छन्दा, ऋषियों और सिद्धियों के देने वाली है। उत्सवा, उत्सवों की सीमा, अन्ता, कामिका और गुणगुणों से समन्विता है॥ 119॥ एला, एकारविद्या, एणी, विद्याधरा, ओंकार के वलय से संयुक्त ओंकार की परमा, कला है॥ 120॥

श्लोक

ओम् वद वेदवाणी च ओंकाराक्षर मण्डिता।
ऐन्द्री कुलिशहस्ता च ओं परलोक वासिनी॥ 121॥
ओंकारमध्य बीजा च ओं नमो रूपधारिणी।
परब्रह्म स्वरूपा च अंश कांशुक-वल्लभा॥ 122॥
ओंकारा फट् मन्त्रा च अक्षाक्षर विभूषिता।
अमन्त्रा मन्त्ररूपा च पदशोभा समन्विता॥ 123॥

हिंन्दी अनुवाद : ओम् वद वेदवाणी, ओंकार के अक्षर से मण्डिता, ऐन्द्री, वज्र हाथ में रखने वाली ओंपर लोक के वास करने वाली है॥ 121॥ ओंकार के मध्य में बीज वाली, ओं नमों रूप के धारण करने वाली, परब्रह्म के स्वरूप से संयुत, अंशुका-अंशुक वल्लभा है॥ 122॥ ओंकार फट् मन्त्र वाली, अक्षर-अक्षर भूषित बिना मन्त्र वाली, मन्त्र रूप से समन्वित और पदों की शोभा से युक्त है॥ 123॥

श्लोक

प्रणवोंकाररूपा च प्रणबोच्चार भाक् पुनः।
ह्रींकाररूपा श्रीकारी वाम्बीजाक्षर भूषता॥ 124॥
हल्लेखा सिद्धियोगा च हत्पद्-मासनसंस्थिता।
बीजाख्या नेत्रहृदया ह्रीं बीजा भुवनेश्वरी॥ 125॥
क्लीं कामराजक्लिन्जा च चतुर्वर्ग फलप्रदा।
क्लीं क्लीं रूपका देवीं क्रीं क्रीं क्रीं नामधारिणी॥ 126॥

हिन्दी अनुवाद : प्रणव ओंकार के रूप वाली, प्रणव के उच्चारण का सेवन करने वाली, ह्रींकार के रूप से युक्त श्रींकारी के रूप पद्म के बीज वाणी भुवनेश्वरी है॥ 125॥ क्लीं कामराज से क्लिन्ना, चारों वर्गों-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के फल को प्रदान करने वाली, क्लीं क्लीं रूपिका देवी, क्रीं क्रीं क्रीं नामों के धारण करने वाली है॥ 126॥

श्लोक

कमला शक्तिबीजा च पाशांकुश विभूषिता।
श्रीं श्रींकारा महाविद्या श्रद्धा श्रद्धावती तथा॥ 127॥
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं परा च क्लींकारी परमा कला।
ह्रां क्लीं श्रींकार स्वरूपा सर्व कर्मफलप्रदा॥ 128॥
सर्वाढ्या सर्वदेवी च सर्वसिद्धिप्रदा तथा।
सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च वाग्विभूति प्रदायिनी॥ 129॥
सर्वमोक्षप्रदा देवी सर्वभोग प्रदायिनी।
गुणेन्द्रवल्लभा वामा सर्वशक्ति प्रदायिनी॥ 130॥

हिन्दी अनुवाद : कमला, शक्तिबीजा, पाश और अंकुश से विशेष रूप से भूषिता है। श्री, श्रीकारा, महाविद्या, श्रद्धा, श्रद्धावती है॥ 127॥ ओम् ऐं क्लीं ह्रीं परा, क्लीकारी, परमा, क्ला, ह्रीं क्लीं श्रीकरा के स्वरूप वाली समस्त कर्मों के फलों को प्रदान करने वाली है॥ 128॥ सभी से संयुता सबकी देवी, सब सिद्धियों की देने वाली, सर्वज्ञा अर्थात् सब कुछ का ज्ञान रखने वाली, सब शक्तियों से परिपूर्ण, वाणी की विभूति देने वाली संसार में बारम्बार जन्म-मरण के दुःख को दूर करा देने वाली है और सभी तरह के भोगों को देने वाली है। शिव की परम प्यारी है और वामा तथा सब प्रकार की शक्तियों को प्रदान किया करती है॥ 129-130॥

श्लोक

सर्वानन्दमयी चैव सर्वसिद्धि प्रदायिनी।
सर्वचक्रेश्वरी देवी सर्वसिद्धिश्वरी तथा॥ 131॥
सर्वप्रियंकरी चैव सर्वसौख्य प्रदायिनी।
सर्वानन्दप्रदा देवी ब्रह्मानन्द प्रदायिनी॥ 132॥
मनोवांछित दात्री च मनोबुद्धि समन्विता।
अकारादिक्ष कारान्ता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी॥ 133॥

हिन्दी अनुवाद : सर्वानन्द से परिपूर्णा और सम्पूर्ण शक्तियों को देने वाली है। सम्पूर्ण चक्रों की ईश्वरी देवी है और समस्त सिद्धों की स्वामिनी है॥ 131॥ सभी प्रिय कामनाओं को पूर्ण करने वाली तथा सब सुखों की दात्री है। सर्वानन्दों का दान देने वाली है तथा ब्रह्मानन्द की भी दात्री है। परब्रह्म परमात्मा में मन को लीन करने में जो सर्वातिशायी अनुपम आनन्द होता है उसे ब्रह्मानन्द कहा जाता है॥ 132॥ मन के जो भी इच्छित मनोरथ होते हैं। उन सबको देने वाली, मन और बुद्धि से समन्वित है। अकार से लेकर क्षकार पर्यन्त स्वरूप वाली है, दुर्गा दुर्गतियों का विनाश करती है॥ 133॥

श्लोक

पद्मनेत्रा सुनेत्रा च स्वधा स्वाहा वषट्करी।
स्ववर्गा च सवर्गा च सुखर्गा समन्विता॥ 134॥
अन्तःस्था वेश्मरूपा च नवदुर्गा नरोत्तमा।
तत्वसिद्धि प्रदा नीला तथा नीलपताकिनी॥ 135॥
नित्यरूपा निशाकारी स्तम्भिनी मोहिनीति च।
वशंकरी तथोच्चाटी उन्मादी कर्षिणीति च॥ 136॥

हिन्दी अनुवाद : पद्म के समान सुवर्गा नेत्रों वाली सुन्दर लोचनों से युक्त स्वदा, स्वाहा, वषट्करी, स्वर्गा, देववर्गा और समन्विता है॥ 134॥ अन्तस्था, वेश्मरूपा, नवदुर्गा, नरोत्तमा तत्त्वों की सिद्धि देने वाली नीला और नील पताका वाली है॥ 135॥ नित्यारूपा निशाकारी स्तम्भन करने वाली, मोहन करने वाली, वशीकरी तन्त्रोच्चारी, उन्मादी और कर्षिणी है॥ 136॥

श्लोक

मातङ्गी मधुमत्ता च अणिमा लघिमा तथा।
सिद्धा मोक्षप्रदा नित्या नित्यानन्द प्रदायिनी॥ 137॥
रक्ताङ्गी रक्तनेत्रा च रक्तचन्दन भूषिता।
स्वल्पसिद्धि सुकल्पा च दिव्याचरण शुक्रभा॥ 138॥
संक्रान्तिः सर्वविद्या च सस्यवासर भूषिता।
प्रथमा च द्वितीया च तृतीया च चतुर्थिका॥ 139॥

हिन्दी अनुवाद : मातंगी, मधुमत्ता अणिमा, लघिमा, सिद्धा मोक्ष देने वाली, नित्या ही आनन्द की दात्री है॥ 137॥ रक्त अंगों से समन्वित, रक्तलोचनों वाली, रक्त चन्दन से भूषित है। स्वल्प सिद्धि अर्थात् थोड़े ही श्रम और प्रयास में सिद्धि देने वाली, सुकल्पा दिव्याचरण शुक्रभा है॥ 138॥ संक्रांति, सर्वविद्या, वासर, भूषिता है। प्रथमा, द्वितीया, तृतीया और चतुर्थी है॥ 139॥

श्लोक

पंचमी चैव षष्ठी च विशुद्धा सप्तमी तथा।
अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा॥ 140॥
द्वादशी त्रयोदशी च चतुर्दश्यथ पूर्णिमा।
अमावस्या तथा पूर्वा उत्तरा परिपूर्णिमा॥ 141॥
खड्गिनी चक्रिणी घोरा गदिनी शूलिनी तथा।
भुशुण्डी चापिनी वाणा सर्वायुध विभीषणा॥ 142॥

हिन्दी अनुवाद : पंचमी, षष्ठी, विशुद्धा, सप्तमी है अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी है॥ 140॥ द्वादशी त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावस्या, पूर्वा उत्तरी

परिपूर्णा है ॥ 141 ॥ खंगिनी, चक्रिणी, धोरा, गदिनी, शूलिनी, भुशुंडी चापिनी, वाणा समस्त आयुधों से भीषणा है ॥ 142 ॥

श्लोक

कुलेश्वरी फुलवती कुलाचार वरायणा।
कुलकर्म्म सुरक्ता च फुलाचार प्रवर्धिनी॥ 143॥
कीर्तिः श्री परमा रामाधर्म्मायै सततं नमः।
क्षमाधृतिः स्मृतिर्मेधा कल्पवृक्ष निवासिनी॥ 144॥
उग्रोग्रप्रभा गौरी वेदविद्या विवर्धिनी।
संध्या सिद्धा सुसिद्धा च विप्ररूपा तथैव च॥ 145॥

हिन्दी अनुवाद : कुलेश्वरी, कुलवती, कुलाचार परायण है। कुल कर्मों में सुरक्त अर्थात् पूर्णराग रखने वाली कुलाचार का प्रकृष्टवर्धन करने वाली है॥ 143 ॥ कीर्ति, श्री परमा, रामा, धर्मा के लिए निरन्तर नमः क्षमा, धृति, स्मृति, मेधा, कल्प वृक्ष पर निवास करने वाली ॥ 144 ॥ उग्रा, उग्रप्रभा, गौरी, वेदों की विद्या का प्रवर्धन करने वाली साध्य, सिद्धा, सुसिद्धा और विप्र के रूप वाली है ॥ 145 ॥

श्लोक

काली कराली काल्या च कालदैत्य विनाशिनी।
कौलिनी कालिकी चैव कचटतप वर्णिका॥ 146॥
जयिनी जययुक्ता च जयदा जृम्भिणी तथा।
स्त्राविणी द्राविणी देवीं भरुण्डा विध्यवासिनी॥ 147॥
ज्योतिर्मता च जयदा ज्वालामाला समाकुला।
भिन्ना भिन्ना प्रकाशा च विभिन्ना-काररूपिणी॥ 148॥

हिन्दी अनुवाद : काली, कराली, कात्या, कालदैत्य का विनाश करने वाली है। कौलिनी, कालिकी, क च ट त प वर्णों वाली है। तात्पर्य क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग से है। प्रत्येक वर्ग में पांच-पांच वर्णों का ग्रहण होता है॥ 146॥ जययक्ता, जयवाली, जय देने वाली, जृम्भिणी, सावित्री द्राविणी देवी, भरुण्डा, विंध्याचल पर निवास करने वाली है ॥ 147 ॥ ज्योतिर्भूता, जलदात्री, ज्वालाओं की मालाओं से समन्विता है अर्थात् घिरी हुई हैं - भिन्न भिन्न प्रकाश वाली, विभिन्ना और भिन्न रूप वाली है ॥ 148 ॥

श्लोक

अश्विनी भरणी चैव नक्षत्र सम्भवानिला।
काश्यप विनता ख्याता दितिजा दितिरेव च॥ 149॥
कृतिः कामप्रिया देवी कीर्त्या कीर्ति विवर्धिनी।
सद्योमांस-समालब्धा सद्यश्छिन्ना-सिशंकरा॥ 150॥
दक्षिणा चोत्तरा पूर्वा पश्चिमा दिक् तथैव च।
अग्नि नैर्ऋति वायव्य ईशान्या दिक् तथा स्मृता॥ 151॥

हिन्दी अनुवाद : अश्विनी, भरणी, नक्षत्रों की सम्भवा और अनिला है॥ 149॥ कृति, कामप्रिया देवी कीर्त्या अर्थात् कीर्तन के करने योग्य, कीर्तन का विवर्धन करने वाली ताजी मांस के द्वारा समालब्ध होने वाली सद्यश्चिनासिशंकर है॥ 150॥ दक्षिणा, उत्तरा, पूर्वा, पश्चिमाइक, अग्नि, निर्ऋति, वायव्य व ईशान्यादिक कही गयी है॥ 151॥

श्लोक

ऊर्ध्वाकाऽधोगता श्वेता कृष्णा रक्ता च पीतका।
चतुर्वर्गा चतुर्वर्णा चतुर्मात्रात्मि-काक्षरा॥ 152॥
चतुर्मुखी चतुर्वेदा चतुर्विद्या चतुर्मुखा।
चतुर्गणा चतुर्माता चतुर्वर्गफलप्रदा॥ 153॥
धात्री विधात्री मिथुना नारी नायकवाहिनी।
सुरामुद्रा मुदवती मोदिनी मेनकात्मजा॥ 153॥

हिन्दी अनुवाद : ऊर्ध्वा का, अधोगता, व्येता, कृष्णा, रक्ता, पीतका, चारों वर्णों वाली, चारों वर्णों से समन्विता। ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय, शूद्र ये चार वर्ण है। चार मात्राओं के स्वरूप आने से युक्त, चारमुखों से सम्पन्ना, चारगणों वाली, चारों की माता और अक्षरा है॥ 152॥ चारमुखों वाली, चार वेदों से संयुक्त, चारों विद्याओं चारों वर्गों के फलों को प्रदान करने वाली है॥ 153॥ धात्री, विधात्री, मिथुरा, नारी नायक वाहिनी सुरा, मुदामुद अर्थात् प्रमोद से युक्त, मोदन करने वाली और मेनका की आत्मजा है॥ 154॥

श्लोक

उर्ध्वाकाली सिद्धिकाली दक्षिणाकालिकाशवा।
नित्या सरस्वती सात्वं बगला छिन्नमस्तका॥ 155॥
सर्वेश्वरी सिद्धिविद्या परा परमदेवता।
हिङ्गुला हिङ्गुलाङ्गी च हिङ्गुला धारवासिनी॥ 156॥
हिङ्गुलोत-तमवर्णाभा हिङ्गुला भरणा च सा।
जाग्रती च जगन्माता जगदीश्वर वल्लभा॥ 157॥

हिन्दी अनुवाद : उर्ध्व काली, सिद्धि काली, दक्षिणा कालिका, शिवा, नित्या, सरस्वती भी आप ही हैं बगला और छिन्नमस्तका हैं॥ 155॥ सर्वेश्वरी सिद्धियों की विद्या परा देवता परम देवता हिंगुला-हिंगुल जैसे अंगों वाली हिंगुल पर्वत पर निवास करने वाली है॥ 156॥ हिंगुल के समान उत्तम वर्ण की आभा वाली है हिंगुल के आभरणों से संयुक्त है। आग्रती जगत् की माता और जगतों के ईश्वर को वल्लभा है॥ 157॥

श्लोक

जनार्दनाप्रिया देवी जययुक्ता जयप्रदा।
जगदानन्दकारी च जगद्-आहलादकारिणी ॥ 158 ॥
ज्ञानदानकरी यज्ञा जानकी जनकप्रिया।
जयन्ती जयदा नित्या ज्वलदग्नि-समप्रभा ॥ 159 ॥
विद्याधरा च बिम्बोष्ठीं कैलास-अचलवासिनी।
विभवा वऽवाग्निश्च अग्निहोत्र फलप्रदा ॥ 160 ॥

हिन्दी अनुवाद : जनार्दन की प्रिया देवी जय से युक्ता जय को देने वाली जनों को आनन्दकारी जनता के आहलाद कराने वाली है ॥ 158 ॥ ज्ञान का दान कराने वाली यज्ञा जानकी जनक की प्रिया जयन्ती जयदान करने वाली नित्य जलती हुई अग्नि के समान प्रभा से युक्त है ॥ 159 ॥ विद्याधरा बिम्ब के समान रक्त ओष्ठों वाली और कैलाश पर्वत के ऊपर निवास करने वाली विभवा बड़वाग्नि और अग्निहोत्र के फलों को प्रदान करने वाली है। तीन गुप्त अग्नियां होती हैं जिनका कार्य अग्नि जैसा प्रत्यक्ष दिखलाई दिया करता है किन्तु स्पष्ट स्वरूप प्रतीत नहीं होता है। 'जठराग्नि' पेट में रहने वाली अग्नि जो खाना-पीना भस्म किया करता है। 'बड़वाग्नि' जो समुद्र के जल में रहकर उसके जल खलबलाया करती है 'दावाग्नि' जो वन के वृक्षों में रहती है और आपस में रगड़ खाकर उत्पन्न होती है और सम्पूर्ण वन को जला दिया करती है ॥ 160 ॥

श्लोक

मन्त्ररूपा परादेवी तथैव गुरुरूपिणी।
गया गंगा गोमती च प्रभासा पुष्करापि च ॥ 161 ॥
विन्ध्याचलरता देवी विन्ध्याचल निवासिनी।
बहु-बहु सुन्दरी देवी च कंसासुर विनाशिनी ॥ 162 ॥
शूलिनी शूलहस्ता च वज्रा वज्राहरिपि च।
दुर्गा शिवा शान्तिकारी ब्रह्माणी ब्राह्मणप्रिया ॥ 163 ॥

हिन्दी अनुवाद : मन्त्र के रूप वाली परा देवी गुरुरूप, गया, गंगा, गोमती, प्रमासा, पुष्करा और विन्ध्य गिरि के ऊपर वास करने वाली बहुत अधिक सुन्दरी तथा कंस नामक असुर का विनाश करने वाली है ॥ 161-162 ॥ शूलिनी, शूल, हाथ में रखने वाली वज्रा, वज्र के हरण करने वाली दुर्गा शिवा शान्ति करने वाली ब्राह्मणी ब्राह्मणों को प्रिय मानने वाली है ॥ 163 ॥

श्लोक

सर्वलोक प्रणेत्री च सर्वरोग हरापि च।
मङ्गला शोभना निष्फला परमा कला ॥ 164 ॥

विश्वेश्वरी विश्वमाता ललिता हसितानना।
सदाशिव उमा क्षेमा चण्डिका चण्डविक्रमा ॥ 165 ॥
सर्वदेवमयी देवी सर्वागम भयापहा।
ब्रह्मोश विष्णुनमिता सर्वकाल्याण कारिणी ॥ 166 ॥

हिन्दी अनुवाद : समस्त लोकों की प्रणेत्री सब रोगों को हरण करने वाली मंगला शोभना शुद्धा निष्फला परमा कला है ॥ 164 ॥ विश्वेश्वरी विश्व की माता अर्थात् सम्पूर्ण विश्व का जनन करने वाली ललिता हासिता अर्थात् हास्य से संयुत मुख वाली है। सदाशिवा उमा क्षेमा चण्डिका और प्रचण्ड विक्रम वाली है ॥ 165 ॥ समस्त देव गणों से परिपूर्ण देवी है अर्थात् सब देवता जिसके अन्दर निवास किया करती हैं। समस्त आगमों के भय का अपहरण करने वाली है। ब्रह्म ईश और विष्णु की वनिता और सब का कल्याण करने वाली है ॥ 166 ॥

श्लोक

योगिनी योगमाता च योगीन्द्र हृदयस्थस्थिता।
योगिजाया योगयुक्ता योगीन्द्रा-नन्द-दायिनी ॥ 167 ॥
इन्द्रदिनमिता देवी ईश्वरी चेश्वरप्रिया।
विशुद्धिदा भयहरा भक्तद्वेषि भयंकरी ॥ 168 ॥
भववेषा कामिनी च भरुण्डा भयकारिणी।
बलभद्र प्रियाकारा संसारार्ण-वतारिणी ॥ 169 ॥

हिन्दी अनुवाद : योगिनी अर्थात् योगभ्यास करने वाली योग के उत्पन्न करने वाली माता योगीन्द्रों के हृदय में विराजमान रहने वाली योगियों की जाया योग से समन्वित और योगीन्द्रा को आनन्द प्रदान करने वाली है ॥ 167 ॥ इन्द्र आदि सभी देवों के द्वारा नमन की गयी देवी ईश्वरी की प्रिया, विशेष शुद्धि देने वाली, भय का हरण करने वाली, जो भक्त है उनके साथ द्वेष करने वाले को भय देने वाली ॥ 168 ॥ शिव के वेश वाली कामिनी भरुण्डा भय करने वाली, बलभद्र की प्रिया के आकार वाली और संसार रूपी महासागर से तारण करने वाली है ॥ 169 ॥

श्लोक

पञ्चभूता सर्वभूता विभूतिर्भूति धारिणी।
सिंहवाहा महामोहा मोहपाश-विनाशिनी ॥ 170 ॥
मन्दुरा मदिरा मुद्रा महामुद्गर दारिणी।
सावित्री च महादेवी परप्रिय-विनायिका ॥ 171 ॥
यमदूती च पिङ्गाक्षी वैष्णवी शंकरी तथा।
चन्द्रप्रिया चन्द्ररता चन्दनारण्य वासिनी ॥ 172 ॥

हिन्दी अनुवाद : पंचभूता, सर्वभूता, विभूति भूति के धारण करने वाली है, सिंह के ऊपर सवार होकर वहन करने वाली ॥ 170 ॥ मन्दुरा, मदिरा, मुद्रा और मुद्‌गर को धारण करने वाली, सावित्री महादेवी, पर प्रियों की निनायिका है ॥ 171 ॥ यमराज की दूती पिंगल वर्ण के चन्द्रमा में रत रहने वाली और चन्दन के वन में निवास करने वाली है ॥ 172 ॥

श्लोक

चन्देन्द्र समायुक्ता चण्डदैत्य विनाशिनी।
सर्वेश्वरी यक्षिणी च किराती राक्षसी तथा ॥ 173 ॥
महाभोगवती देवी महामोक्ष प्रदायिनी।
विश्वहन्त्री विश्वरूपा विश्वसंहार कारिणी ॥ 174 ॥
धात्री च सर्वलोकानां हितकारण कामिनी।
कमला सूक्ष्मदा देवी धात्री हरविनाशिनी ॥ 175 ॥

हिन्दी अनुवाद : चन्देन्द्र से समायुक्त और चण्ड नामक दैत्य का विनाश करने वाली है। सबकी स्वामिनी यक्षिणी, किराती और राक्षसी है ॥ 173 ॥ महान् भोगों से समन्विता देवी महान अर्थात् परम श्रेष्ठ मोक्ष देने वाली है, विश्व का हनन करने वाली विश्व से ही स्वरूप वाली और विश्व का संहार करने वाली है ॥ 174 ॥ समस्त लोकों की धात्री हित के ही हेतु से कामिनी कमला सूक्ष्मदा देवी धात्री हर के विनाश करने वाली है ॥ 175 ॥

श्लोक

सुरेन्द्रपूजिता सिद्धा महातेजोवतीति च।
परा रूपवती देवी त्रैलोक्याकर्ष कारिणी ॥ 176 ॥
इति ते कथितं देवी पीतानाम सहस्त्रकम्।
पठेद् या पाठयेद् वापि सर्वसिद्धिर्भवेत् प्रिये ॥ 177 ॥
इति मे विष्णुना प्रोक्तं महास्तम्भकरं परम्।
प्रातः काले च मध्याघ्ने सान्ध्याकाले च पार्व ॥ 178 ॥
एकचित्तः पठेदेतत् सर्वसिद्धि-र्भविष्यति।
एकवारं पठेद् यस्तु सर्वपापक्षयो भवेत् ॥ 179 ॥

हिन्दी अनुवाद : सुरेन्द्र के द्वारा पूजिता सिद्धा महान तेजवाली परा रूपवती देवी और तीनों लोकों के आकर्षण करने वाली है ॥ 176 ॥ हे देवी ! यह हमने पीता अर्थात् पीताम्बरा देवी के सहस्त्र नाम बतला दिये हैं। हे प्रिये ! इस सहस्त्र नाम का जो पाठ किया करता है या इसका पठन करता है उसको सभी प्रकार की सिद्धि हो जाया करती है ॥ 177 ॥ सहस्त्र नाम को मुझे भगवान विष्णु ने बताया था। यह महास्ताम्भन करने वाला परम श्रेष्ठ है। पार्वती ! प्रातःकाल, मध्याहन और सन्ध्याकाल

में एकाग्रचित्त होकर जो इसका पाठ किया करता है उसको सबकी सिद्धि हो जाया करती है। जो इस सहस्त्रनाम का एक बार ही पाठ कर लेता है उसके समस्त पापों का क्षय हो जाता है॥ 178-179॥

श्लोक

द्विवारं च पठेद् यस्तु विघ्नेश्वरसमो भवेत्।
त्रिवारपठनाद् देवि सर्वं सिध्यति सर्वथा॥ 180॥
स्तवस्यास्य प्रभावेण साक्षाद्भवति सुव्रते।
मोक्षार्थी लभते मोक्षं धनार्थी लभते धनम्॥ 181॥
विद्यार्थी लभते विद्यां तर्क व्याकरणान्विताम्।
महत्वं वत्सरान्ताच्च शत्रु हानिः प्रजायते॥ 182॥

हिन्दी अनुवाद : जो दो बार इसका पाठ करता है वह साक्षात् विश्वेश्वर के समान हो जाता है। हे देवी! तीन बार दन में नित्य इसका पाठ करने से सर्व प्रकार के सभी कुछ की सिद्धि हो जाया करती है॥ 180॥ हे सुब्रते! इस स्तोत्र के प्रभाव से इसका पाठ करने वाला पुरुष साक्षात् प्रभु हो जाया करता है। जो मोक्ष की इच्छा मन में रखता है उसको मोक्ष की प्राप्ति हो जाया करती है जो धन की इच्छा किया करता है उसे धन मिल जाया करता है॥ 181॥ जो विद्या की इच्छा रखने वाला है वह तर्कशास्त्र और व्याकरण से संयुक्त विद्या को प्राप्त कर लेता है। इससे महत्त्व की प्राप्ति होती है और एक ही वर्ष तक शत्रु की हानि हो जाती है॥ 182॥

श्लोक

क्षोणोपतिर्व-शस्तस्य स्मरणे सदृशो भवेत्।
यः पठेत् सर्वदा भक्त्या श्रेयस्तु भवति प्रिये॥ 183॥
गणाध्यक्ष प्रतिनिधिः कविः काव्यपरो वरः।
गोपनीयं प्रयत्नेन जननी जारवत सदा॥ 184॥
हेतुयुक्तो भवेन्नित्यं शक्तियुक्तः सदा भवेत्।
य इदं पठते नित्यं शिवेन सदृशो भवेत्॥ 185॥

हिन्दी अनुवाद : इसका पाठ करने वाले पुरुष के वश में राजा हो जाया करता है और इसके स्मरण से राजा के ही समान हो जाता है। हे प्रिये! जो भी कोई सदा भक्ति भाव से इसको पढ़ता है उसका श्रेय हो जाया करता है॥ 183॥ इसके पाठ को करने वाला पुरुष गणाध्यक्ष गणेश का प्रतिनिधि हुआ करता है और काव्य-रचना करने में परमश्रेष्ठ कवि हो जाता है। उसको गुप्त उसी प्रकार रखना चाहिए जिस तरह से जननी के जार को रखा जाता है। इसके गोपन में पूरा प्रयत्न करना चाहिए॥ 184॥ नित्य ही हेतु से युक्त और सदा शक्ति से सुसम्पन्न हो जाता है। जो इसका नित्य पाठ करता है वह भगवान शिव के तुल्य हो जाता है॥ 185॥

पंचम भाग

श्री बगलामुखी यंत्र-मंत्र साधना खण्ड

पाठको! इस खण्ड के अन्तर्गत मैं माता श्री बगलामुखी की साधना विधि का वर्णन करूंगा। साधना से जुड़ी हुई आम बातें पहले ही की जा चुकी है, आशा है कि आपको उसका ज्ञान अवश्य हो गया होगा। श्री बगलामुखी की साधना आरम्भ करने से पहले, यंत्र-मंत्र से सम्बन्धित सामान्य ज्ञान प्राप्त कर लेना ठीक रहेगा।

यंत्र का परिचय

आज का युग अत्यधिक तीव्र गति से यांत्रिक विकास की ओर निरन्तर अग्रसर होता जा रहा है। इन यांत्रिक शक्तियों का निर्माण 'देवासुर संग्राम' से पूर्व ही हो चुका था। उस समय देवी-देवताओं ने ऐसे स्वचालित यंत्रों का निर्माण किया, जो शत्रुओं पर प्रहार करके पुनः अपने पूर्व स्थान पर लौट आते थे, जिसके प्रत्यक्ष प्रमाण 'सुदर्शन चक्र', 'अग्निबाण', 'ब्रह्मशक्ति' आदि हैं।

शोध से स्पष्ट हुआ है कि पूर्वकाल की मूल यांत्रिक परिभाषाओं को लेकर ही आज के वैज्ञानिकों ने 'परमाणु बम', 'हाइड्रोजन बम', 'नैपाम बम' आदि विश्व संहारक यंत्र तैयार किये हैं, जो आकार में छोटे होते हुए भी संसार को संहारने की शक्ति रखते हैं। इन यंत्रों को हम भौतिक यंत्रों के नाम से जानते हैं।

इस पवित्र पुस्तक में, मैं जिस यंत्र का वर्णन करने जा रहा हूँ वह यंत्र 'सिद्ध यंत्र' के नाम से जाना जाता है। यह यंत्र आड़ी-तिरछी रेखाओं, बिन्दुओं, अंकों, चतुर्भजों और त्रिकोणों आदि से सुसज्जित होकर स्वचालित होता है। इस सिद्ध यंत्र को यही कलपुर्जे चलाते हैं। भौतिक यंत्र दिखाई पड़ता है और इससे हमारा भौतिक जगत् प्रभावित होता है किन्तु, इसकी अपेक्षा 'सिद्ध यंत्र' मनुष्य का जीवन बदलने की शक्ति रखता है।

सिद्ध यंत्रों में इतनी शक्ति छिपी हुई है, जिसे प्राप्त करने के बाद मानव किसी भी असम्भव को सम्भव में बदल सकता है। ये यंत्र जो इतनी विस्फोटक ऊर्जा अपने गर्भ में छिपाए हुए हैं, आखिर इसका रहस्य क्या है ?

पाठको! यंत्रों को समझने से पहले हमें 'मंत्र संसार' में पदार्पण करना होगा, तभी इस रहस्यमयी गुत्थी को सुलझा सकेंगे।

मंत्र का परिचय

पाठको ! 'मंत्र रहस्य' के सम्बन्ध में इस प्रकार समझें। यह सम्पूर्ण विश्व भगवान का स्वरूप है – भगवान ही है। उसी प्रकार शब्द मात्र भगवन्नाम है। जगत् का मूल कारण शब्द है, यह बात 'स्फोटवाद' प्रतिपादित करता है।

प्रत्येक 'शब्द' एक 'कम्पन' उत्पन्न करता है और प्रत्येक कम्पन एक रूप व्यक्त करता है। 'ग्रामोफोन' के रिकार्ड पर कुछ रेखाएं मात्र होती हैं, जो नंगी आंखों से नहीं दिखती। इन्हीं रेखाओं पर सूई घूमती है जो शब्द-ध्वनि उत्पन्न से रिकार्ड पर बनी है। वर्षों पहले फ्रांस में किसी वैज्ञानिक ने एक ऐसा यंत्र बनाया था कि उसके सम्मुख कोई गीत या स्तुति गाने से यंत्र में लगे पर्दे पर रखे रेत के कण उछल-उछल कर एक आकृति बना देते थे। एक भारतीय सज्जन ने उस यंत्र के सम्मुख 'काल भैरव' की स्तुति गायी तो यंत्र के पर्दे पर रेत के कणों से 'काल भैरव' का रूप बन गया।

'मंत्र' शब्दों का समूह है। मंत्र ईश्वरीय शक्ति है। यह निर्माण का मार्ग है। यह शिव और शक्ति का प्रतीक है और साक्षात् देवता है। मंत्र बिन्दु से विराट की ओर ले जाता है जिससे हम आत्मा और परमात्मा का साक्षातकार करते हैं। शब्दों के समूह मंत्रों की अपनी ही भाषा है, अपना ही स्वर है, अपना ही सुर और अपनी ही ताल है, जो मानव इस सुर-ताल को समझ लेता है, जान लेता है वह अपने परमेश्वर के समीप हो जाता है। हर मंत्र का देवता होता है। जब मंत्र को अति श्रद्धापूर्वक सुर व ताल में लयबद्ध होकर बोला जाता है तो मंत्र के देवता उन पर प्रसन्न हो जाते हैं और उन्हें वरदान देते हैं, जिससे साधक साधना में सफल हो जाता है और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति होती जाती है।

पाठको ! शब्दों से कम्पन्न होता है। सृष्टि के सब पदार्थ कम्पन से बनते-बिगड़ते हैं, यह विज्ञान भी मानता है। इसीलिए मंत्रों की शक्ति को समझना कठिन नहीं होना चाहिए। किन्तु, शब्दों में क्या शक्ति है, यह सर्वज्ञ ऋषि जानते थे। उन्होंने ऐसे शब्दों की योजना की तथा उनके प्रयोग की ऐसी विधि निश्चित की, जिससे उन मंत्रों को निर्दिष्ट विधि से काम में लेकर अभीष्ट फल प्राप्त किया जा सके। इसी विचारधारा को लेकर वेदों, पुराणों और अनेक तांत्रिक ग्रन्थों की रचना ऋषि-महर्षियों ने की। युग का परिवर्तन होता गया। युग परिवर्तन के प्रभाव से मंत्रों का प्रभाव घटा। अतः ऋषि-महर्षियों ने मंत्रों को गुप्त रखने की विधि अपनायी। इस विद्या को जीवित रखने के लिए उन्होंने मंत्र की गुप्त विधि का निर्माण किया, जिसे 'यंत्र' कहा गया।

यंत्र के शब्दार्थ 'संयमित करना', केन्द्रित करना। यंत्र धारण करने से मंत्र के अधिष्ठाता देवता से साधक का सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। उसका मन संयमित

और केन्द्रित हो जाता है। मंत्र-देवता की शक्ति यंत्र में प्रवेश कर, यंत्र चैतन्य और जाग्रत करती है। इसी कारण यंत्र धारण करने पर यंत्र में भरी चैतन्य शक्ति यंत्र से निकलकर तुरन्त कार्य करना आरम्भ कर देती है।

यंत्रों के सूक्ष्म शब्द एवं अंकों का महत्त्व

पाठको! यंत्र के सूक्ष्म शब्द एवं समस्त अंक देवी और देवता है। जैसे - वैज्ञानिक छात्र ही समझ सकता है कि 'D_2O' का क्या तात्पर्य है, उसी प्रकार एक तांत्रिक ही समझ सकता है कि 'ह्रीं', 'क्रीं', 'श्रीं' और 'क्लीं' क्या है। ये सभी सूक्ष्म शब्द देवी के स्वरूप हैं। जैसे - 'ह्रीं' का मतलब 'श्री बगलामुखी', 'क्रीं' का मतलब 'महाकाली', 'श्रीं' का मतलब 'महाकाली', 'श्रीं' का मतलब 'लक्ष्मी देवी' और 'क्लीं' का अर्थ 'भगवती दुर्गा' से जुड़ा हुआ। इसी प्रकार यंत्रों के प्रत्येक अंक भी देवता हैं, जो यंत्र में लिखने पर अपना प्रभाव दिखाते हैं।

इतना ही नहीं यंत्र के लाईन, त्रिकोण, भुपूर आदि का भी विशाल और अद्‌भुत अर्थ है। जैसे - 'बिन्दु' का मतलब 'ब्रह्म', 'त्रिकोण' का मतलब 'शिव' और 'भुपूर' की तुलना 'भगवती' से की गयी है। इन यंत्रों के रेखाचित्र अनुभूतियों के सूक्ष्म लोक के और शक्ति के विविध स्वरूपों के रेखाचित्र हैं, जो सूक्ष्म-सशक्त रूप से कार्य करते हैं। इनके ज्ञाता नहीं रहे, समझने वाले नहीं रहे, प्रयोग करने वाले नहीं रहे, इसलिए यह तकनीक इतनी सीमित हो गयी कि इसका अर्थ समझना दुश्वार हो गया।

भारतीय विज्ञान यंत्रों की मांसल नहीं करता। रेखाचित्रों को ठोस रूप नहीं देता, बल्कि उसके माध्यम से 'शक्ति के बीज' को टटोलता है और उसे सक्रिय करता है। परन्तु, हमारा विज्ञान अभी तक यह जान नहीं पाया है कि किसी पदार्थ की अन्तः शक्ति को किस वातावरण और विधि से प्रकट किया जा सकता है।

यंत्र-निर्माण में श्रद्धा की महत्ता

'श्रद्धा' यंत्रों का प्राण है। श्रद्धा सहित रहकर यंत्र का निर्माण करना जीवन है। यंत्रों में रेखाओं, बीजों को, बीजाक्षरों या मंत्रों को विधि विशेष द्वारा संयोजित किया जाता है। यंत्र के प्रति सन्देहकरने से यंत्र मृत हो जाता है और मृत वस्तु कोई भी कार्य नहीं कर सकती। यंत्र के बारे में यह भी कहा गया है कि - 'कर गये तो कसरत, चूक गये तो मौत' क्योंकि यंत्र लिखते समय जरा-सी भी असावधानी मौत के मुंह में झोंक देता है। इसलिए यंत्र की साधना की अभीष्ट सिद्धि प्राप्ति हेतु किसी परम सिद्ध गुरु से दीक्षा लेकर ही, 'सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र' धारण करके ही किसी यंत्र का निर्माण करना चाहिए या मंत्र की सिद्धि करनी चाहिए। यंत्र की

साधना-विधि पुस्तकों में मिलती जरूर है, किन्तु पुस्तकों को मात्र 'ज्ञानवर्धक' ही समझें, क्योंकि इसके सम्बन्ध में सही मार्गदर्शन तो सिद्ध गुरु द्वारा ही सम्भव है।

यंत्र मनुष्य की गुप्त सूक्ष्म शक्तियों को उदय करता है। यंत्र की रचना करते समय रेखाएं शुद्ध भावना से खींचनी चाहिए, क्योंकि रेखाएं ही मनुष्य के अन्त:करण की गुप्त शक्तियों को आन्दोलित करती है। उस समय मन तथा चित्र के सहयोग से आसक्ति उत्पन्न होती है जिसके परिणाम स्वरूप 'भाव तत्त्व' का उदय होता है तथा अन्त:करण निर्मल हो जाता है और साधक की साधना पूर्ण हो जाती है।

यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या वेद और ईश्वरीय शक्ति का सम्मिश्रण

पाठको! अन्तर्राष्ट्रीय शोध है कि वेदों का मूल 'मंत्र' जो शब्दों, अंकों, रेखाओं आदि के रूप में, ईश्वरीय शक्ति के रूप में हम मानव को प्राप्त है। गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में कहा है – 'कलियुग में जीवों का कष्ट देखकर, उसे दूर करने के लिए उमा-महेश्वर ने मंत्रों-यंत्रों-तंत्रों की सृष्टि की। यद्यपि इन यंत्रों और मंत्रों के अक्षर-अंक आदि अनमिल होते हैं तथा इसका कोई अर्थ भी नहीं होता, तथापि महादेव के प्रताप से यंत्र और मंत्र तत्काल अपना फल प्रकट कर देते हैं।' ये विद्या 'वेद' से स्वत: प्रमाणित है अत: इनको किसी और प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। भगवान् शंकर के मुख से निकले होने के कारण ये यंत्र मंत्र तंत्र पूर्णत: सिद्ध हैं।

यंत्र और मंत्र में भेद

यंत्र विद्या भी मंत्र साधना का ही एक अंग है। इसे मंत्र विद्या का 'उपजीव्य' कहते हैं। यंत्र की रचना अंकों, रेखाओं, बीजाक्षरों तथा बिन्दुओं के द्वारा किया जाता है। मंत्र आराधना का मार्ग है तो यंत्र उसका प्रभावशाली माध्यम है।

यंत्र का शाब्दिक अर्थ है – 'संयमित करना' अथवा 'केन्द्रित करना'। यंत्र के धारण करने, यंत्र के पूजन करने से यंत्र के अन्दर स्थापित इष्ट देव से साधक का समन्वय हो जाता है।

मंत्र-यंत्र में एक बड़ा भेद है। 'मंत्र साधना' मौलिक अर्थात् मानसिक होता है। मंत्र सदा ही निरापद कल्याणकारी होता है जबकि यंत्र रचना में रंचमात्र भी त्रुटि रह जाने पर निष्क्रिय तो बनता ही है, साथ ही विपरीत फल देकर साधक को हानि भी पहुंचाता है। यंत्र 'साकार ब्रह्म' की तरह साध्य व पूज्य है तो मंत्र 'निराकार ब्रह्म' की तरह साध्य व पूज्य है।

यंत्र-मंत्र साधना में सावधानी

पाठकों! क्या आप सिद्धि करना चाहते हैं ? सावधान! यदि आप साधना आरम्भ कर मध्य में ही छोड़ देंगे तो आपकी मृत्यु भी हो सकती है, आप पागल भी हो सकते है, आपका सर्वनाश हो सकता है। इसलिए पहले अपने हृदय को दृढ़ बना लें कि यह कार्य हमें करना ही है, चाहे इसमें मेरी मृत्यु भी क्यों न हो जाए। जिद्दी बन, इष्टदेव पर विश्वास कर, विधि पूर्वक जप करने से सफलता अवश्य मिलती है। वैसे तो कोई भी शक्ति किसी के वश में नहीं होना चाहती, फिर भी साधको की अटूट उपासना पर प्रसन्न होकर उन्हें आशीर्वाद देने के लिए आना ही पड़ता है।

साधना काल में अत्यन्त विकराल, डरावने दृश्य, भूत, प्रेत, राक्षस, बैताल, नाचते हुए नर कंकाल, अंगों की वर्षा, भयंकर नाद, भयंकर विकराल जीव आदि भी दिखाई पड़ते हैं, परन्तु साधक को भय से साधना नहीं छोड़नी चाहिए। यदि आप साधना करते रहेंगे तो आपको कुछ नहीं होगा, बल्कि यह डरावना दृश्य आपकी सफलता का पहला राज है। यदि आप उस समय भयभीत हो जाते हैं तो आपकी मृत्यु भी हो सकती है। इसलिए पूर्ण रूपेण दृढ़ होकर, सोच समझकर ही साधना आरम्भ करें।

सूर्य ग्रहण एवं चन्द्र ग्रहण काल में यंत्र-मंत्र सिद्ध करने का फल

साधको! सूर्य ग्रहण अथवा चन्द्र ग्रहण लगने पर साधकों के लिए यंत्र-मंत्र सिद्धि करने का विधान सम्पूर्ण सिद्धि विधि से आसान है। जब ग्रहण लगे तो गंगा नदी में सीने तक पानी में खड़े होकर, ग्रहण के प्रारम्भ से अन्तिम समय तक अपने इष्टदेव का मंत्र जप करें। यदि यंत्र सिद्ध कर रहे हैं तो ग्रहण के प्रारम्भ से अन्तिम समय तक आपके फट्टे पर गुलाल छिड़क कर अनार की कलम से बार-बार यंत्र लिखें, फिर मिटा-मिटा कर मस्तक से लगाते जाएं। यह प्रयोग ग्रहण प्रारम्भ से अन्तिम समय तक करते रहें। तत्पश्चात् गंगा के किनारे वैदिक पंडित के द्वारा विधिपूर्वक 1100 मंत्र का हवन करें। इसके बाद गंगा की आरती करें और यह प्रार्थना करें कि, 'हे गंगे मां, मेरी मनोकामना पूर्ण करें।' बस समजिए कि आपको सिद्धि मिल गयी। आजमाकर तो देखें, चकित रह जाएंगे। परन्तु, ध्यान रहे कि साधना आरम्भ से पहले अपने गले में सिद्ध गुरु से 'गुरु रक्षा कवच यंत्र' प्राप्त कर गले में धारण कर लें, तभी साधना में सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

यंत्र-मंत्र साधना में 'गुरु' और 'सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र' की महत्ता

पाठको! 'सद्‌गुरुदेव' के स्वरूप एवं लीला को जानना सहज नहीं कहा जा सकता। 'गुरु तत्त्व', 'गुरु-शिष्य सम्बन्धी', 'सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र' की कृपा, गुरु योग इत्यादि क्रियाओं की विशद विवेचना से भारतीय संस्कृति की आर्य परम्परा, उपनिषदों में, वेदों और पुराणों में गुरु की परम महत्ता स्वीकार की गयी है। माया से आबद्ध इस संसार के दुखों से त्रस्त जीवों के उद्धार हेतु गुरु की एकमात्र गति हैं। शास्त्रों ने 'गुरु की महिमा' इस प्रकार गायी है :

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु गुरु देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

अर्थात् - गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु ही विष्णु और गुरु ही महादेव महेश्वर हैं। गुरु तो साक्षात परब्रह्म के रूप में हैं। ऐसे गुरु को मैं कोटिशः नमस्कार करता हूँ।

यदि ईश्वर और गुरु की तुलना की जाए तो लोगों ने गुरु को ईश्वर से बढ़कर माना है, क्योंकि गुरु के द्वारा ही ईश्वर की प्राप्ति होती हैं। महात्मा कबीर ने कहा भी है :

गुरु गोबिन्द दोऊ खड़े, काके लागू पांव।
बलिहारी गुरु आपकी गोविन्द दियो बताय॥

शास्त्रकार कहते हैं कि भाग्य प्रतिकूल हो जाए, ईश्वर नाराज हो जाए तो चिन्ता नहीं करनी चाहिए, क्योंकि सत्गुरु की कृपा से ईश्वर और भाग्य दोनों अनुकूल हो सकते हैं। परन्तु, यदि गुरु ही नाराज हो जाए तो फिर इन्सान के लिए कहीं भी ठौर नहीं है। उसके लोक-परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं। 'गुरु', 'सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र' और 'ईश्वर' ये तीनों ही एक शब्द के पर्यायवाची नाम हैं, यह तीनों एक हैं। कहा भी है :

यथा घटश्च कलशः, कुम्भश्चैकार्य वाचकाः।
तथा मंत्रों देवताश्च, गुरुश्चैकार्थ वाचकाः॥

अर्थात् - जैसे 'घट', 'कलश' और 'कुम्भ' तीनों एक ही अर्थ के वाचक हैं, वैसे ही मंत्र, देवता और गुरु भी एक ही अर्थ के बोधक शब्द हैं। इन तीनों में उस परम पिता परमात्मा का अंश प्रतिबिम्बित होता है। गुरु में निश्चय ही सत्व, रजस व तमस तीनों भाव रहते हैं।

किसी प्रकार की साधना, अनुष्ठान या तपस्या हो, उसमें जपने वाले मंत्र 'गुरुमुख' से ही निश्चित होना चाहिए, तभी मंत्र काम करेगा। फिर उनमें चाहे वह 'राम' का 'नाम' ही क्यों न हो ? महर्षि नारद ने तो जब वाल्मीकि जी को 'राम-

राम' शब्द का जाप करने को कहा तो उन्होंने राम-राम की जगह 'मरा-मरा' शब्द का जाप किया। किन्तु, शब्द आप की निरन्तरता के कारण यह 'मरा' शब्द स्वयं 'राम' बन गया और एक साधारण मनुष्य इस नाम के प्रभाव से आदिकवि महर्षि वाल्मीकि के नाम से विश्व प्रसिद्ध, कीर्ति व यश का स्वामी बनकर जगत्-पूज्य हो गए, ये गुरु नारद जी की प्रेरणा का परिणाम था।

मंत्र की मूल चेतना-शक्ति तो ध्वनि में निहित होती है और वह ध्वनि पुस्तक के निर्जीव पृष्ठों में नहीं होती। शुद्धि-अशुद्धि के उच्चारण का ज्ञान भी गुरु के मुख से निश्चित होता है।

साधको! गुरु शब्द में 'गु' अन्धकार का संकेत है और 'रु' प्रकाश का। गुरु वह है जो अज्ञान के अन्धकार को दूर कर स्व-ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। गुरु वह है जो अपने शिष्यों को अन्तिम सत्य और अमर स्वरूप के प्रति जाग्रत करता है। इसीलिए तो भगवान शिव ने हा है :

गुरु भक्ति विहीनस्य तपो विद्या व्रतं कुलम्।
निष्फलं हि महेशानि केवलं लोक रंजनम्॥

अर्थात् - भगवान शिव पार्वती से कहते हैं - हे देवी! कोई मनुष्य बड़ा तपस्वी, विद्वान कुलीन सब कुछ हो, किन्तु यदि गुरु, गुरु रक्षा कवच यंत्र से रहित हो, तो उसका विद्वान आदि होना निरर्थक है अतः उसकी विद्या, उसकी कुलीनता, उसका तर्क लोकरंजन अवश्य कर सकता है, किन्तु उसका फल उसे प्राप्त नहीं होता। गुरु भक्ति रूपी अग्नि से जिसने अपने पाप रूपी कष्ठों को भस्म कर दिया है, वह 'चंडाल' होकर भी संसार में आदरणीय है। किन्तु, विद्वान होते हुए भी 'गुरु देवता को न मानने वाला नास्तिक मनुष्य आदरणीय नहीं होता।'

गुरू बिना भवनिधि तरई न कोई।
जो बिरंचि शंकर सम होई॥

अर्थात् - संसार रूपी सागर से कोई अपने आप तैर नहीं सकता। चाहे ब्रह्मा जी जैसे सृष्टिकर्ता हो अथवा शिवजी जैसे संहारकर्ता, फिर भी अपने मन की चाल से, अपनी मान्यताओं के जंगल से निकलने के लिए पगडंडी दिखाने वाला 'सद्गुरु' अवश्य होना चाहिए।

गुरुदेव की उपस्थिति बिना, उनकी छत्रछाया के बिना कोई भी यंत्र-मंत्र-तंत्र की सिद्धि मिल ही नहीं सकती। सभी साधकों के यंत्र-मंत्र सिद्धि काल में गुरु का उपस्थित होना भी मुश्किल है अतः इसी समस्या के समाधान हेतु (गुरु द्वारा सिद्ध) 'सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र' साधना आरम्भ करने से पूर्व गले में धारण करने का विधान वेदों में दिया गया है। गुरु द्वारा सिद्ध किए गए 'सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र' में गुरु की शक्ति छिपी रहती है, जो गले में 'रिमोट कंट्रोल' बनकर साधक के तन-

मन- मस्तिष्क में ज्ञान का संचालन करते हैं और साधना काल में आने वाली त्रुटियों का नाश करते रहते हैं। इसके परिणाम स्वरूप साधक साधना में प्रथम बार में ही सफलता प्राप्त कर लेता है। इसीलिए 'अन्तर्राष्ट्रीय शोध संस्थान' ने भारतीय वेदों-पुराणों ग्रन्थों का अति सूक्ष्म शोध कर 'सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र' साधना काल में गले में धारण करने का प्रावधान निश्चित किया है।

शोध विद्वानों का मानना है कि 'सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र' गले में स्थित होकर उसकी शक्ति साधक के 'प्राणतत्त्व' में समाहित हो जाता है। शोध से स्पष्ट हुआ है कि साधक के भीतर ऊर्जा है और जब उसका संचरण बाहर की दिशा में होता है तो वह बाहर निकलकर छिन्न-भिन्न हो जाती है। 'सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र' उस ऊर्जा को भीतर से उर्ध्वगति प्रदान करता है, उसे संयोजित करके साधना सफलता की दिशा में मोड़ देता है। यह यंत्र उस ऊर्जा को निरर्थक नहीं होने देता। यंत्र की शक्ति साधक के हृदय में अवस्थित 'आज्ञा-चक्र' को स्पर्श करता है तथा आज्ञा चक्र शरीर में स्थित नीचे 'पुर' अनाहत, विशुद्ध चक्रों में ऊर्जा का प्रवाह जहां भी अवरूद्ध हो गया है, उसे हटाकर आज्ञाचक्र की ओर उर्ध्वगति देता है और वह आज्ञाचक्र से 'सहस्त्रधार' में स्थापित हो जाता है तो साधना काल के रोग, शोक, व्याधि, अनिष्ट ग्रह दशाएं आदि समाप्त हो जाते हैं और साधक अपनी साधना में प्रथम बार में ही सफल हो जाते हैं।

स्वयं भगवान शिव यंत्र-मंत्र-तंत्र के निर्माता

पाठको! यंत्र-मंत्र और तंत्र की प्रक्रिया मानव द्वारा निर्मित नहीं बल्कि 'शिव प्रणीत' है। स्वयं देवाधिदेव महादेव के मुखारबिंद से यंत्र-मंत्र-तंत्र की सृष्टि हुई है। एक बार कैलास पर्वत के शिखर पर संसार का कल्याण करने वाले देवाधि देव महादेव से 'भगवान दत्तात्रेय' ने 'यंत्र-मंत्र-तंत्र कल्प' का वर्णन करने की प्रार्थना की।

श्री दत्तात्रेय उवाच

फलौ सिद्धं महाकृत्य यंत्र-मंत्र-तंत्र विधानम्।
कथस्य महादेव देव देव महेश्वर॥
बिना कीलक यंत्र-मंत्र-तंत्रश्च कथिता शिव।
यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या क्षणात् सिद्धिः कृपां कृत्वा वदस्वं मे॥

(दत्तात्रेय तंत्र से उद्धृत)

अर्थात् - श्री दत्तात्रेय जी ने भगवान शिव से करजोड़ कर विनती करते हुए पूछा - हे महादेव! कलियुग में यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या के द्वारा ही समस्त कार्य मानव पूर्ण कर सकेंगे। अतएव हे महेश्वर! आप उस यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या को प्रकाशित करें। जो यंत्र-मंत्र-तंत्र 'कीलन रहित' हैं, जो अल्प समय में ही सफलताएं प्रदान करती हैं, ऐसी तंत्र विद्या का ज्ञान प्रदान करें।

भगवान शिव उवाच

श्रृणु सिद्धिं महायोगिन! सर्व योग विशारद्।
यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या महागुह्या देवानामपि दुर्लभाः॥
तवाग्रे कथिता देव! तंत्र-विद्या-शिरोमणिः।
गुह्याद गुह्या महा गुह्या, गुह्या-गुह्या पुनः पुनः॥
गुरु भक्ताय दातव्या, ना भक्ताय कदाचन्।
मम भक्त्ये कमन से दृढ़ चित्त युताय च॥

(दत्तात्रेय तंत्र से उद्घृत)

अर्थात् - हे समस्त प्रकारेण योगों का ज्ञान रखने वाले महायोगी दत्तात्रेय! यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या की सिद्धि की बात सुनो। यह विद्या अत्यन्त गुप्त है तथा यह देवताओं के लिए भी दुर्लभ है, जो सर्वोत्तम शिरोमणि विद्या है। यह अत्यन्त गोपनीय अपितु गोपनीय से भी अधिक गुप्त है। यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या उसी को देनी चाहिए जो कि गुरु भक्त है, 'गुरु रक्षा कवच यंत्र' धारण करता है। जिसे गुरु के प्रति भक्ति-श्रद्धा और उनके वचनों पर विश्वास न हो, उसे इस विद्या को नहीं देना चाहिए। यह विद्या सिर्फ मेरे प्रति एक निष्ठावान भक्ति वाले तथा दृढ़ चित्तवान साधक को ही देना चाहिए।

भगवान शिव उवाच

विष्णु र्वरिष्ठो देवानां हृदानामु-दधि-स्तथा।
नदीनाञ्च यथा गंगा, पर्वतानां हिमालयः॥
अश्वत्थः सर्व वृक्षाणां, राज्ञा मिन्द्रो यथा वरः।
देवीनाञ्च यथा दुर्गा, वर्णानां, ब्रह्मणो यथा॥
तथा समस्त शास्त्राणां, यंत्र-मंत्र-तंत्र शास्त्र मनुत्तमम्।
सर्वकामप्रदं पुण्यं यंत्र-मंत्र-तंत्र वै वेद सम्मितम्॥
कीर्तनं देव देवस्थ हरस्य मतभेव च।
पावनं श्रद्धा नानामिह, लोके परत्र च॥

(दत्तात्रेय तंत्र से उद्धृत)

भावार्थ - भगवान शिव ने कहा - हे मुनीश्वर! जिस प्रकार से देवताओं में विष्णु वरिष्ठ एवं प्रधान देवता हैं तथा जलाशयों में समुद्र, नदियों में गंगा, पर्वतों में हिमालय, वृक्षों में अश्वत्थ, राजाओं में इन्द्र तथा देवियों में दुर्गा तथा चारों वर्णों में ब्राह्मण प्रधान है, ठीक उसी प्रकार से सभी शास्त्रों में यंत्र-मंत्र-तंत्र शास्त्र सबसे उत्तम एवं प्रधान हैं। यह यंत्र-मंत्र-तंत्र वेद सम्मत है, जिसका गुणगान स्वयं ब्रह्मा

ने किया है। वस्तुतः यंत्र-मंत्र-तंत्र क्रिया मृत्युलोक एवं स्वर्गलोक में सब प्रकार की सिद्धि देने वाली है।

पाठको! भगवान शिव द्वारा वर्णित उपरोक्त श्लोकों से यंत्र-मंत्र-तंत्र की महिमा महामहान है। इसकी सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता। वेदों में वर्णित इन्हीं सब महान श्लोकों की सच्चाई परखने के लिए ही तो आज अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों ने एक 'अध्यात्म शोधशाला' का निर्माण किया है और वेदों, ग्रन्थों, उपनिषदों तथा पुराणों पर महाशोध हो रहा है। परिणाम स्वरूप भारतीय जनमानस में ही नहीं बल्कि समूचे विश्व में यंत्र-मंत्र और तंत्र के प्रति सम्मान और श्रद्धा उत्पन्न हो रही है। 'अन्तर्राष्ट्रीय भारतीय वेद अध्यात्म अनुसंधान केन्द्र' द्वारा एक सर्वेक्षण के अनुसार लगभग 50 प्रतिशत व्यक्ति भले ही वो किसी धर्म के अनुयायी हों, यंत्र-मंत्र व तंत्र शक्ति के प्रति परोक्ष या अपरोक्ष रूप से श्रद्धावान हो रहे हैं औ इनके चमत्कारों को नमस्कार कर रहे हैं।

यूं तो आज के युग में, यंत्र-मंत्र व तंत्र विषय पर बहुत-सी पुस्तकें उपलब्ध हैं। परन्तु, उनमें जितनी भी जानकारी दी गयी है वह पाठकों के लिए इतनी कठिन है कि साधारण पाठक उसे समझ नहीं पाते या फिर इतनी कम जानकारी दी गयी है कि पाठक उसकी तह में जाकर पूरा ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते। कुछ पुस्तकों में, पुस्तक धड़ा-धड़ बिकवाने हेतु यंत्र-मंत्र-तंत्र साधना के अधूरे, झूठे आसान विधि छप रही है। आसान विधि को पढ़कर पाठकगण अति प्रभावित हो जाते हैं वे सोचने लगते हैं कि यह विधि तो अत्यन्त सरल है इससे तो मैं निश्चित ही साधना सम्पन्न कर लूंगा और झट से पुस्तक खरीद लेते हैं। परन्तु, उन पुस्तकों से सब सिद्धि साधना करते तो सफलता नदारद। इससे साधकों का मनोबल टूट जाता है और वे यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या को ढोंग समझ बैठते हैं।

आज जिधर देखो, गली-गली, शहर-शहर बाजारों में तांत्रिक ही तांत्रिक भरे पड़े हैं। बड़े-बड़े बोर्ड लगाकर भोली-भाली जनता को दोनों हाथों से लूट रहे हैं क्योंकि इन तथाकथित तांत्रिकों को जितना आधा-अधूरा ज्ञान है, उससे तो लोगों की समस्याएं हल होती ही नहीं। ऐसी अवस्था में वे हमारी यंत्र-मंत्र-तंत्र के प्राचीन विद्याओं को बदनाम और कलंकित करते हैं।

मंत्र जप में मंत्र ध्वनि की महत्ता

(अन्तर्राष्ट्रीय शोध द्वारा प्रमाणित)

पाठको ! अन्तर्राष्ट्रीय वेद व अध्यात्म शोधकर्त्ताओं ने प्रमाणित कर दिया है कि मंत्रों में ध्वनि का एक विशेष स्थान है। मंत्र के उच्चारण से उत्पन्न हुई तरंगों से आकृति की रचना 'Photograph of Vibrations' ही यंत्र का प्रतिरूप है। भोजपत्र, कागज, चांदी व स्वर्ण धातु के पत्तरों पर खुदा हुआ मंत्र का स्वरूप ही वास्तव में यंत्र है। इस पत्तर वाले यंत्र को मंत्र स्मरण रखने का साधन कहा जा सकता है। यर्थात् में ध्वन्यात्मक उच्चारण से आकाश में स्थित वायु के माध्यम से, कम्पायमान तरंगों से जो आकृति बनती है और उसका जो ज्ञान, जो पहचान, स्व आत्मा ज्ञान के द्वारा हमें होता है, वही ज्ञान व फल हमें उस यंत्र की पूजा-अर्चना से भी मिलता है। मंत्रों की तरह ही यंत्रों में लौकिक कार्य के सम्पादन की शक्ति छिपी रहती है। उसी शक्ति से भोजपत्र, कागज, चांदी, तांबा जो भी धातु यंत्र के लिए प्रयुक्त की जाए, उसमें चमत्कारिता स्वयं आ जाती है। यही चमत्कारिता साधक में आत्मशक्ति को प्रकट करके उसे लाभान्वित किया करती है। ध्वनि तरंगों से प्रभावित होकर ही कृष्ण भगवान की बांसुरी की ताल पर जंगल से गाय-बछड़े भागकर कृष्ण के पास आ जाया करते थे। सांप भी बीन की ध्वनि पर थिरकते हैं। यही नहीं, नेत्र रोग, स्नायु रोग, पीलियों, पक्षपात व गूंगापन का उपचार भी अब ध्वनि से ही सम्भव हो रहा है। संगीत की ध्वनि से ही तानसेन और बैजू बांबरा आदि गायक दीपक जला दिया करते थे, वर्षा करा दिया करते थे। 'दीपक राग' और 'मेघ राग' इसका प्रमाण है।

पाठको ! यदि कहा जाए कि ध्वनि ही संसार की सर्वश्रेष्ठ सत्ता है तो गलत या असंगत न होगा। ध्वनि के सिद्धांतों को विकसित करके ही आज, रेडियों, दूरदर्शन, अल्ट्रा साउन्ड, टेलीफोन, टेलीग्राफ व फैक्स आदि की तकनीक अस्तित्व में है। आज के वैज्ञानिक इस बात को सिद्ध कर चुके हैं कि वायु मण्डल में ध्वनि कभी समाप्त नहीं होती, बल्कि घूमती रहती है। इसी को रेडियों व दूर-दर्शन से पकड़कर, दूर स्थित स्थानों पर ज्यों का त्यों क्षण भर में पहुंचा दिया जाता है। आज अमेरिका में आंख झपकता और हाथ हिलाता व्यक्ति भारत या संसार के किसी भी स्थान पर उसी क्षण दूरदर्शन के माध्यम से देखा जा सकता है। छोटे-छोटे कण जब धीरे एक साथ चित्र के रूप में पर्दे पर उभर आते हैं तो कण-कण में भगवान बसता है, वेदों की श्लोक की सच्चाई सामने निखर आती है। ध्वनि का ही कमाल है कि फैक्स में लिखावट को पहले ध्वनि में, फिर दूसरे स्थान पर ध्वनि को लिखावट में बदलकर, हरेक स्थान पर ज्यों का त्यों पहुंचाता है।

ने किया है। वस्तुतः यंत्र-मंत्र-तंत्र क्रिया मृत्युलोक एवं स्वर्गलोक में सब प्रकार की सिद्धि देने वाली है।

पाठको! भगवान शिव द्वारा वर्णित उपरोक्त श्लोकों से यंत्र-मंत्र-तंत्र की महिमा महामहान है। इसकी सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता। वेदों में वर्णित इन्हीं सब महान श्लोकों की सच्चाई परखने के लिए ही तो आज अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों ने एक 'अध्यात्म शोधशाला' का निर्माण किया है और वेदों, ग्रन्थों, उपनिषदों तथा पुराणों पर महाशोध हो रहा है। परिणाम स्वरूप भारतीय जनमानस में ही नहीं बल्कि समूचे विश्व में यंत्र-मंत्र और तंत्र के प्रति सम्मान और श्रद्धा उत्पन्न हो रही है। 'अन्तर्राष्ट्रीय भारतीय वेद अध्यात्म अनुसंधान केन्द्र' द्वारा एक सर्वेक्षण के अनुसार लगभग 50 प्रतिशत व्यक्ति भले ही वो किसी धर्म के अनुयायी हों, यंत्र-मंत्र व तंत्र शक्ति के प्रति परोक्ष या अपरोक्ष रूप से श्रद्धावान हो रहे हैं औ इनके चमत्कारों को नमस्कार कर रहे हैं।

यूं तो आज के युग में, यंत्र-मंत्र व तंत्र विषय पर बहुत-सी पुस्तकें उपलब्ध हैं। परन्तु, उनमें जितनी भी जानकारी दी गयी है वह पाठकों के लिए इतनी कठिन है कि साधारण पाठक उसे समझ नहीं पाते या फिर इतनी कम जानकारी दी गयी है कि पाठक उसकी तह में जाकर पूरा ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते। कुछ पुस्तकों में, पुस्तक धड़ा-धड़ बिकवाने हेतु यंत्र-मंत्र-तंत्र साधना के अधूरे, झूठे आसान विधि छप रही है। आसान विधि को पढ़कर पाठकगण अति प्रभावित हो जाते हैं वे सोचने लगते हैं कि यह विधि तो अत्यन्त सरल है इससे तो मैं निश्चित ही साधना सम्पन्न कर लूंगा और झट से पुस्तक खरीद लेते हैं। परन्तु, उन पुस्तकों से सब सिद्धि साधना करते तो सफलता नदारद। इससे साधकों का मनोबल टूट जाता है और वे यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या को ढोंग समझ बैठते हैं।

आज जिधर देखो, गली-गली, शहर-शहर बाजारों में तांत्रिक ही तांत्रिक भरे पड़े हैं। बड़े-बड़े बोर्ड लगाकर भोली-भाली जनता को दोनों हाथों से लूट रहे हैं क्योंकि इन तथाकथित तांत्रिकों को जितना आधा-अधूरा ज्ञान है, उससे तो लोगों की समस्याएं हल होती ही नहीं। ऐसी अवस्था में वे हमारी यंत्र-मंत्र-तंत्र के प्राचीन विद्याओं को बदनाम और कलंकित करते हैं।

मंत्र जप में मंत्र ध्वनि की महत्ता

(अन्तर्राष्ट्रीय शोध द्वारा प्रमाणित)

पाठको ! अन्तर्राष्ट्रीय वेद व अध्यात्म शोधकर्त्ताओं ने प्रमाणित कर दिया है कि मंत्रों में ध्वनि का एक विशेष स्थान है। मंत्र के उच्चारण से उत्पन्न हुई तरंगों से आकृति की रचना 'Photograph of Vibrations' ही यंत्र का प्रतिरूप है। भोजपत्र, कागज, चांदी व स्वर्ण धातु के पत्तरों पर खुदा हुआ मंत्र का स्वरूप ही वास्तव में यंत्र है। इस पत्तर वाले यंत्र को मंत्र स्मरण रखने का साधन कहा जा सकता है। यर्थात् में ध्वन्यात्मक उच्चारण से आकाश में स्थित वायु के माध्यम से, कम्पायमान तरंगों से जो आकृति बनती है और उसका जो ज्ञान, जो पहचान, स्व आत्मा ज्ञान के द्वारा हमें होता है, वही ज्ञान व फल हमें उस यंत्र की पूजा-अर्चना से भी मिलता है। मंत्रों की तरह ही यंत्रों में लौकिक कार्य के सम्पादन की शक्ति छिपी रहती है। उसी शक्ति से भोजपत्र, कागज, चांदी, तांबा जो भी धातु यंत्र के लिए प्रयुक्त की जाए, उसमें चमत्कारिता स्वयं आ जाती है। यही चमत्कारिता साधक में आत्मशक्ति को प्रकट करके उसे लाभान्वित किया करती है। ध्वनि तरंगों से प्रभावित होकर ही कृष्ण भगवान की बांसुरी की ताल पर जंगल से गाय-बछड़े भागकर कृष्ण के पास आ जाया करते थे। सांप भी बीन की ध्वनि पर थिरकते हैं। यही नहीं, नेत्र रोग, स्नायु रोग, पीलियों, पक्षपात व गूंगापन का उपचार भी अब ध्वनि से ही सम्भव हो रहा है। संगीत की ध्वनि से ही तानसेन और बैजू बांबरा आदि गायक दीपक जला दिया करते थे, वर्षा करा दिया करते थे। 'दीपक राग' और 'मेघ राग' इसका प्रमाण है।

पाठको ! यदि कहा जाए कि ध्वनि ही संसार की सर्वश्रेष्ठ सत्ता है तो गलत या असंगत न होगा। ध्वनि के सिद्धांतों को विकसित करके ही आज, रेडियों, दूरदर्शन, अल्ट्रा साउन्ड, टेलीफोन, टेलीग्राफ व फैक्स आदि की तकनीक अस्तित्व में है। आज के वैज्ञानिक इस बात को सिद्ध कर चुके हैं कि वायु मण्डल में ध्वनि कभी समाप्त नहीं होती, बल्कि घूमती रहती है। इसी को रेडियों व दूर-दर्शन से पकड़कर, दूर स्थित स्थानों पर ज्यों का त्यों क्षण भर में पहुंचा दिया जाता है। आज अमेरिका में आंख झपकता और हाथ हिलाता व्यक्ति भारत या संसार के किसी भी स्थान पर उसी क्षण दूरदर्शन के माध्यम से देखा जा सकता है। छोटे-छोटे कण जब धीरे एक साथ चित्र के रूप में पर्दे पर उभर आते हैं तो कण-कण में भगवान बसता है, वेदों की श्लोक की सच्चाई सामने निखर आती है। ध्वनि का ही कमाल है कि फैक्स में लिखावट को पहले ध्वनि में, फिर दूसरे स्थान पर ध्वनि को लिखावट में बदलकर, हरेक स्थान पर ज्यों का त्यों पहुंचाता है।

'अन्तर्राष्ट्रीय अध्यात्म शोध संस्थान' के विद्वान जिसमें भगवान शिव और महाकाली की दया से मैं भी सम्मिलित हूँ, भारत के विद्वानों में से एकमात्र हमें ही उस संस्थान के शोधकार्यों में भाग लेने का सुवसर व सौभाग्य प्राप्त हुआ है तथा कई विश्व के कई वैज्ञानिक ने हजारों साल पहले के 'श्री कृष्ण के गीता उपदेश' राम, बुद्ध, ईशा, मरियम, विक्रमादित्य, नेपोलियन, सिकन्दर व अकबर महान् आदि की ध्वनियों को पकड़कर रेडियो व दूरदर्शन से सुनने व देखने की शोध में प्रयासरत हैं। शायद, कभी न कभी चाहे मैं जीवित रहूँ या न रहूँ, परन्तु ये विद्वान इस कार्य में अवश्य सफल हो जाएंगे।

14 अगस्त 2001 को आस्ट्रेलिया में हम सभी शोधकर्त्ताओं का अन्तर्राष्ट्रीय वार्षिक शोध शिविर लगा था। दो महीने तक शोध कार्यक्रम में वही रहना पड़ा था। वहां के शोधशाला में 'नीलग्राहम' रोक दिया था। इसके सूत्र पर हम लोगों का विस्तृत शोध अभी भी जारी है। अब तो बच्चों का खिलौना तथा मोटरकारों को हाथ की ताली व रिमोट कंट्रोल से रोकना एक आम बात हो गयी है।

अब सोचनीय बात यह है कि 'ताली की ध्वनि' जब कार को रोक सकती ह तो मंत्र की ध्वनि क्या कुछ नहीं कर सकती ? 1914 से 1919 के प्रथम विश्व युद्ध के दौरान वैज्ञानिकों ने एक ऐसा यंत्र बनाया था जो अपनी ध्वनि तरंगों से मनोवांछित व्यक्तियों को चेतना शून्य करके मार डालता था।

दुनियां के कुछ भागों में ऐसे वृक्ष भी पाए जाते हैं, जो किसी व्यक्ति की पदचाप की आवाज सुनकर ही, व्यक्ति को अपने चंगुल में कसकर मार डालते हैं। ये सब 'ध्वनि' का ही कमाल है।

इंग्लैंड के एक प्रसिद्ध स्थान 'स्टोन हेमबज' में मैंने देखा कि प्राकृतिक तौर पर परस्पर सटकर जुड़े पत्थर इतने संवेदनशील हैं कि मध्य स्वर की ध्वनि होने से ये कांपने लगते हैं। विश्वास किया जाता है कि यदि लगातार ध्वनि की जाए तो ये पत्थर गिर पड़ेंगे, अतः सरकार ने उस स्थान पर आशंका वश क्रमिक लयबद्ध ध्वनि को 'दण्डनीय अपराध' घोषित कर रखा है।

जर्मनी के शोध शिविर में 'मिस हॉटन हयूज' नामक महिला ने स्वनिर्मित वाद्य यंत्रों की 'ध्वनि तरंगों' से 'मरीयम' व 'ईसा मसीह' के चित्र बनाकर दुनियां के विद्वानों को आश्चर्य में डाल दिया था। इस पर विस्तृत शोध चल रहा है।

अमेरिका में ध्वनि चिकित्सा से उत्साहित होकर 'पीट्सबर्ग' के स्थान पर 'राल्फ लारेन्स हीथ' नामक चिकित्सक ने ऐसी शोधशाला बनायी है जहां पर 'संगीत ध्वनियों की लहरियों' से असाध्य रोगों का इलाज किया जाता है। हजारों रोगी रोगों का इलाज किया जाता है। हजारों रोगी यहां आकर रोग मुक्त होते देखे व सुने गए हैं।

पाठको ! जिस प्रकार वायुमण्डल की ध्वनि को आपका टेलिफोन, टेलिविजन या रेडियो आदि एक 'शक्तिशाली ट्रान्समीटर' के माध्यम में ध्वनि को पकड़ते हैं। ठीक उसी प्रकार 'साधक की मंत्र ध्वनि' देवता या इष्टदेव के ट्रांसमीटर से रगड़ खाती है, जिससे साधक के देवता या देवी के टेलीफोन की घण्टी बजने लगती है, वे साधक की पुकार सुनने का यत्न करने लगती हैं, अब देखना यह है कि साधक की पुकार कितनी सच्ची कितनी सशक्त है, उसी के अनुसार साधक के देवता या देवी फल प्रदान करते हैं और साधक की सहायता करने लगते हैं। 'ध्वनि' का क्या महत्त्व है, पाठक अब आसानी से समझ गए होंगे। इसीलिए साधना में सफलता के लिए मंत्रों की बार-बार निश्चित संख्या में ध्वनि करके अपने भगवान अपने आराध्य तक अपना सन्देश पहुंचाइये और साधना में सफल हो जाइये। यह मेरा प्रथम शोध है और साधना सफलता का प्रथम सोपान है। इसे अपना कर देखें।

न्यास क्या है ?

न्या का अर्थ है स्थापन्। बाहर और भीतर के प्रत्येक अंग में इष्टदेवता और मन्त्र का स्थापन ही न्यास है। इस स्थूल शरीर में अपवित्रता का ही साम्राज्य है, इसलिए से देवपूजा का तब तक अधिकार नहीं जब तक यह शुद्ध व पवित्र न हो जाए। जब तक इसकी अपवित्रता बनी रहती है, तब तक इसके स्पर्श और स्मरण से चित्त में ग्लानि का उदय होता रहता है। ग्लानियुक्त चित्त प्रसाद और भावोद्रेक से शून्य होता है, विक्षेप और अवसाद से आक्रान्त होने के कारण बार-बार प्रमाद और तन्द्रा से अभिभूत हुआ करता है। यही कारण है कि न तो वह एकतार स्मरण ही कर सकता है और न विधि-विधान के साथ किसी कर्म का सांगोपांग अनुष्ठान ही। इस दोष को मिटाने के लिए न्यास सर्वश्रेष्ठ उपाय है। शरीर के प्रत्येक अवयव में जो क्रियाशक्ति सुषुप्त हो रही है, हृदय के अन्तराल में जो भावना शक्ति मूछित है, उनको जगाने के लिए न्यास तेजस्वी महौषधि है।

श्री बगलामुखी यंत्र साधना-विधि

पाठको ! इस शीर्षक के अन्तर्गत मैं श्री बगलामुखी यंत्र की साधना-विधि का वर्णन करूंगा। तांत्रिक साधना-विधि होने के कारण यह जरा कठिन है परन्तु, उनके लिए नहीं, जिसमें इस दिव्य साधना को करने का जुनून और दृढ़ संकल्प की क्षमता है। मैंने इस साधना को आरम्भ करने से पहले सभी आवश्यक बातें, जो साधना से सम्बन्धित है, जो यंत्र-मंत्र से जुड़ी है का वर्णन किया है ताकि सम्बन्धित विषय के बारे में आपको पूरी जानकारी हो सके और साधना काल में आपको किसी प्रकार की कोई समस्या न आए। श्री बगलामुखी यंत्र साधना में कुछ

आवश्यक साधना पूजन सामग्री की जरूरत होती है जो निम्नलिखित 'साधना पूजन सामग्री' शीर्षक के अन्तर्गत लिखी गयी है।

साधना पूजन सामग्री

पाठको! श्री बगलामुखी यंत्र के इस साधना पूजन में जिन-जिन पूजन सामग्रियों की आपको आवश्यकता पड़ेगी, उन सबका वर्णन मैंने 'माता बगामुखी का वैदिक षोडशोपचार पूजन' शीर्षक में कर दिया है, हां, इस पूजन में आपको कुछ विशेष वस्तुओं की जरूरत होगी और जनके बिना साधना पूजन पूर्ण नहीं हो सकती। ये विशेष वस्तुएं हैं - 'सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र' (साधना में हुई गलती से होने वाले भयंकर नुकसान से साधक और उसके परिवार की सुरक्षा करता है और साधना में पूर्णतः सफलता प्रदान करता है। साधको! आप यह सिद्ध यंत्र हमारे कार्यालय से मंगवा सकते हैं) भोजपत्र, पीला चन्दन, कनेर की कलम, हल्दी की माला, माता बगलामुखी की तस्वीर, हल्दी का चूर्ण, हरिताल हरिद्रा का रस आदि।

श्री बगलामुखी यंत्र साधना आरम्भ

किसी भी शनिवार की सुबह या रात्रि में स्नानादि से पवित्र हो जाएं। इसके बाद बिना सिले हुए नये पीले वस्त्र धारण करें। तदुपरान्त एकान्त पवित्र कमरे को जल से धोकर, उसमें गंगाजल छिड़ककर कमरे की पूर्व दिशा में आम की लकड़ी से बना सिंहासन स्थापित करें। अब इस सिंहासन पर पीले रंग का वस्त्र बिछाएं। माता बगलामुखी जी की तस्वीर को इस पवित्र सिंहासन पर स्थापित कर दें। यंत्र-साधना पूजन की सारी सामग्री अपने समीप रख लें। पीले कम्बल पर बैठ जाएं और समीप पड़े 'सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र' को अपने गले में पहनें। अब अपने सिर पर कोई पीला तौलिया या रूमाल रखें। इसके बाद पवित्र तन-मन से गाय के शुद्ध घी का दीपक प्रज्ज्वलित करें। सुगंधित अगरबत्ती व धूप जगावें। प्रज्जवलित दीप सिंहासन के सामने पास में दाहिनी ओर अक्षत पुंज (छिड़के हुए चावल) पर रखें। साधना के समय पूरब मुख होकर बैठे और सामने सिंहासन स्थापित करें। अब दाहिने हाथ अंजुलि में गंगाजल होकर निम्नलिखित मंत्र पढ़ें, मंत्र समाप्ति के बाद अंजुलि का जल अपने शरीर पर छिड़क लें :

शरीर पवित्र करने का मंत्र

ॐअपवित्रः पवित्रो वा सर्वा-वस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं सबाह्यभ्यंतरः शुचिः॥
ॐ पुण्डरीकाक्ष पुनातु॥

(दत्तात्रेय तंत्र से उद्धृत)

हिन्दी अनुवाद – कोई पवित्र हो, अपवित्र हो अथवा किसी भी अवस्था में क्यों न हो, जो 'पुण्डरी काक्ष' का स्मरण करता है, वह बाहर और भीतर से भी परम पवित्र हो जाता है। अतः हे ॐ रूपी पुण्डरीकाक्ष हमें पवित्र करें।

नोट : अब दीपक की पूजा करें :

प्रज्जवलित दीप पूजन मंत्र

ॐ दीप ज्योतिषे नमः।

यह मंत्र मुख से बोलकर जल, अक्षत, पुष्प, चन्दन, बिल्वपत्र व नैवेद्य दीपक के पास चढ़ावें। फिर उस दीप में माता श्री बगलामुखी के ज्योतिर्मय रूप की भावना करते हुए यह श्लोक बोलें :

भो दीप देवरूप-स्तवं कर्म साक्षी ह्यविहन कृत।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

हिन्दी अनुवाद – हे दीप! आप देवता के रूप हैं, कर्म के साक्षी तथा विघ्न के नवारक हैं, जब तक पूजन कर्म पूर्ण न हो जाए, तब तक आप सुस्थिर भाव से सन्निकट रहें।

नोट : इसके पश्चात् निम्नलिखित मंत्रों को पढ़कर आचमन करें :

आचमन मंत्र

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः।
ॐ माधवाय नमः। ॐ हृषि केशवाय नमः।

नोट – तत्पश्चात् दाहिने हाथ के अंगूठे से चौथी उंगली (अनामिका उंगली) में कुशा से बना अथवा तांबे का पवित्री (अंगूठी) धारण करें। पवित्री धारण करते समय निम्न मंत्र पढ़ें :

पवित्र धारण मंत्र

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव
उत्पुनाम्याछिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्र-पते पूतस्य यत्कामः पूर्ण तच्छ केचम्॥

नोट – पवित्री धारण करने के बाद तीन बार 'प्राणायाम' करें :

प्राणायाम की विधि एवं मंत्र

मन की चंचलता को शांत कने, उसे एकाग्र करने और अपनी उपास्य देवी के कमल रूपी चरणों में मन रूपी भ्रमर को अवस्थित करने में 'प्राणायाम' एक महत्त्वपूर्ण कार्य करता है।

प्राणायाम की प्रक्रिया के विविध चरणों में श्री बगलामुखी जी के प्रिय बीज मंत्र – 'ॐ ह्लीं नम:' का निश्चित समय में मन ही मन जप करना चाहिए।

सर्वप्रथम नाक के दायें नथूने को दायें हाथ के अंगूठे से बंद करके, बायें नथूने से धीरे-धीरे श्वास अन्दर की ओर खींचिए। इस क्रिया के मध्य मन ही मन उपरोक्त मंत्र का दो-चार बार जप भी करते रहिए। श्वास भर जाने के बाद सीधे हाथ की मध्यमा व अनामिका उंगलियों से बायां नथूना भी बंद कर लीजिए। सांस को रोके रखिए और चार आठ अथवा सोलह बार उपरोक्त मंत्र का जप कीजिए। अब अंगूठे को नथूने से हटाकर अत्यन्त मन्द गति से वायु को बाहर निकल जाने दें। इस मध्य भी दो-चार या आठ बार उपरोक्त मंत्र का जप करें।

यह उपरोक्त सभी क्रियाएं तीन बार करें। प्रथम बार उपरोक्त विधि से दाहिने नथूने को अंगूठे से दबाकर प्रारम्भ करते हैं। दूसरे बार बाएं नथूने को अंगूठे से दबाकर प्रारम्भ करते हैं यह प्रक्रिया।

यहां विशेष ध्यान रखने की बात यह है कि श्वास खींचने में जितना समय लगता है, उसमें चार गुणा समय इसे रोक कर रखते हैं और दूने समय में बाहर निकालते हैं। यही कारण है कि क्रमश: एक-चार और दो के अनुपात में मंत्र पढ़ने का विधान शास्त्रों में दिया गया है।

प्रारम्भ में कुछ दिनों तक तो श्वास रोकने में थोड़ी असुविधा भी हो सकती है। परन्तु कुछ दिनों में ही न केवल ये सभी कार्य आसानी से होने लग जाते हैं, बल्कि आपकी श्वास रोकने की क्षमता भी बढ़ती जाती है।

नोट : प्राणायाम विधि सम्पन्न कर 'विनियोग' करें। विनियोग करते समय दाहिने हाथ की अंजुलि में जल भर लें और विनियोग मंत्र समाप्त होने के पश्चात् जल पृथ्वी पर छिड़क दें :

विनियोग मंत्र

ॐ अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारदऋषि:,
त्रिष्टुप-छन्द: बगलामुखी देवता, ह्लीं बीजम्,
स्वाहा शक्ति:, शत्रूणां स्तम्भनार्थे मया अभीष्ट
कार्य सिध्यर्थें जपे विनियोगा:।

हिन्दी अनुवाद - इस मंत्र के ऋषि नारद, त्रिष्टुप छन्द, बगलामुखी देवता, हलीं बीज, स्वाहा शक्ति बतायी गयी है। मेरे सारे शत्रुओं के स्तम्भन के लिए और अभीष्ट कार्यों की सिद्धि के लिए साधना में इसका विनियोग है।

न्यास

पाठको! 'न्यास' शरीर को पवित्र व शुद्ध करने की एक धार्मिक क्रिया है। यहां पर सबसे पहले 'ऋष्यादि न्यास' करें :

ऋष्यादि न्यास

ॐ नारद ऋषये नमः। (सिरसि)

नोट - उपरोक्त मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ की उंगलियों से अपने मस्तक को स्पर्श करें।

त्रिष्टुप्छन्दसे नमः (मुखे)

नोट - अब दाहिने हाथ की उंगलियों से मुख को स्पर्श करें।

बगलादेवतौ नमः। (हृदय)

नोट - अपने हृदय को स्पर्श कें।

ह्लीं बीजाय नमः (गुह्ये)

नोट - उपरोक्त मंत्र पढ़कर अपने गुह्यांश को स्पर्श करें।

स्वाहा शक्तये नमः। (पादयो)

नोट - अपने चरणों को स्पर्श करें।

विनियोगाय नमः। (सर्वांग)

नोट - इस मंत्र को पढ़कर अपने सभी अंगों का स्पर्श करें।

करन्यास

ॐ हलीं अंगुष्ठाभ्यां नमः।

नोट - उपरोक्त मंत्र पढ़कर अपने दोनों हाथों के अंगूठों का स्पर्श करें।

बगलामुखी तर्जनीभ्यां नमः।

नोट - अब अंगूठों से तर्जनी उंगली को स्पर्स करें।

सर्वदुष्टानां मध्यमाध्यां नमः।

नोट - इस ऊपरलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए दोनों हाथों की सबसे बड़ी उंगली अर्थात् मध्यमा उंगली का स्पर्श करें।

वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः।

नोट - अब अंगूठे से अनामिका उंगली का स्पर्श करें।

जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

नोट - अब अंगूठे से सबसे छोटी उंगली कनिष्ठिका का स्पर्श करें।

बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा

करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

नोट - ऊपर के मंत्र को पढ़कर दोनों हथेलियों के पृष्ट भागों को परस्पर स्पर्श करें। 'करन्यास' के पश्चात् 'हृदयादि न्यास' करें।

हृदयादि न्यास

ॐ ह्लीं हृदयाम नमः। (हृदय)

नोट - उपरोक्त मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ से हृदय का स्पर्श करें।

बगलामुखी शिरसे स्वाहा। (मस्तक)

नोट - अब अपने मस्तक का स्पर्श करें।

सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। (शिखा)

नोट - अब शिखा का स्पर्श करें।

वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्।

नोट - अब दोनों हाथों की भुजाओं का स्पर्श करें।

जिह्वा कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्।

नोट - अब दोनों नेत्रों का स्पर्श करें।

बुद्धिं विनाशय ह्लीं स्वाहा अस्त्राय फट्।

नोट - अब उपरोक्त मंत्र पढ़कर ताली बजाएं। इसके पश्चात् 'मंत्राक्षर न्यास' करें :

मंत्राक्षर न्यास

पाठको! नीचे न्यास हेतु मंत्राक्षर दिये गए हैं। कोष्ठ में दिये हुए अंगों का मंत्रोच्चारण करते हुए, दाहिने हाथ से स्पर्श करें।

ॐ नमः मूर्ध्नि (मस्तक)। ॐ ह्लीं नमः भाले (भालस्थल)। ॐ बं नमः दक्षिणदृशि (दाहिना नेत्र)। ॐ गं नमः वामदृशि (बायां नेत्र)। ॐ लां नमः दक्षिणश्रेत्रे (दाहिने कान)। ॐ मुं नमः वामश्रोत्रे (बायां कान)। ॐ खीं नमः दक्षिणकपोले (दाहिना कपोल)। ॐ सं नमः वामकपोले (बांया कपोल)। ॐ र्वं नमः दक्षिणनापुटे (दाहिना नाक)। ॐ दुं नमः वामनासापुटे (बायीं नाक)। ॐ षट्ा नमः ऊर्ध्वोष्ठे (ऊपर के होंठ में)। ॐ नां नमः अधरोष्ठे (नीचे के होंठ में)। ॐ वां नमः मुखवृत्तौ (मुख पर)। ॐ चं नमः दक्षिणां से (दाहिना कन्धा)। ॐ मुं नमः वामासे (बायां कन्धा)। ॐ यं नमः दक्षिणाऽगुलिमूले (दाहिने उंगली के

पोर में)। ॐ स्त नमः गले (गले में)। ॐ भं नमः दाक्षिणाकुचे (दाहिने स्तन में)। ॐ यं नमः वामकुचे (बायें स्तन में)। ॐ जिं नमः हृदये (हृदय)। ॐ ह्वां नमः नाभौ (नाभि)। ॐ कीं नमः फटिभागे (फटिभाग में)। ॐ लं नमः गुह्यो (गुप्तांग में)। ॐ बुं नमः वाममणिबन्धे (बायीं कलाई)। ॐ दिधं नमः अङ्गुलिमूले (उंगली के पोर में)। ॐ विं नमः करौ (ऊरुस्थल में)। ॐ नां नमः जानुन्यो (घुटने में)। ॐ शं नमः गुल्फे (गुल्फ में)। ॐ यं नमः अङ्गुलिमूले (उंगली में मूल में)। ॐ स्वाहा नमः सर्वाङ्गे (समस्त अंग में)।

नोट : मंत्राक्षर न्यास के पश्चात् साधक अपने मस्तक पर निम्न मंत्र पढ़कर चन्दन लगावें :

मस्तक चन्दन लेपन मंत्र

ॐ चन्दनस्य महत्व पुण्यं पवित्र पापनाशनम्।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी स्थिरस्थि सर्वदा॥

नोट – अब निम्न मंत्र पढ़कर शिखा बांधें :

शिखा बंधन मंत्र

ॐ मानस्तोके तनये मानङ्ग आयुषि-
मानौ गोषु मानोऊ अश्वेषु रीरिषः।
मानो वीरान भामिनो वधीर्ह है-
विष्मन्तः सदमित्वा - हवामहे॥

नोट – इसके पश्चात् भगवान 'गणेश' का ध्यान करें। किसी भी साधना में पहले गणेश जी की पूजा ध्यान का शास्त्रों में प्रावधान है -

श्री गणेश ध्यान मंत्र

विश्वेश माधवं ढुण्ढि दण्डपाणि।
वंदे काशी गुह्या गंगा भवानी कर्णिकाम्॥
वक्रतुण्ड महाकाय कोटि सूर्य समप्रभम्।
निर्विघ्न कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा॥
सुम खश्यैक-दन्तश्य कपिला गर्जकर्णकः।
लम्बोदरस्य विकटो विघ्ननासो विनायकः॥
धूम्रकेतु-र्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशे तानि नमामि य पठेच्छणुयादपि॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लांबरधरं देवं शशि वर्ण चतुर्भुजम्।
प्रसन्न-वदनं ध्यायेत सर्व विघ्नोप शान्तयै॥
अभीत्सितार्थ सिद्धयर्थं पूजितो च सुरासुरैः।
सर्वविघ्नच्छेद तस्मै गणाधि पतये नमः॥

हिन्दी अनुवाद - हे विश्वनाथ, माधव, दुण्ढिराज गणेश दण्डपाणि, भैरव, काशी, गुह्या, गंगा तथा भवानी कर्णिका की मैं वन्दना करता हूँ।

कोटि सूर्य के समान महातेजस्वी विशालकाय टेढ़ी सूंड वाले गणपति देव! आप सर्वदा सदैव समस्त कार्यों में मेरे विघ्नों का निवारण करें।

सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, लम्बोदर, विकट, विघ्न-विनाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र और गजानन ये गणपति जी के बारह नाम हैं। जो मनुष्य विद्यारम्भ, विवाह, गृह प्रवेश, यात्रा, संग्राम तथा संकट के अवसर पर इन बारह नामों का पाठ करता है, उसके कार्य में विघ्न नहीं उत्पन्न होता है।

चन्द्रमा के समान शक्ल धारण करने वाले, चन्द्रमा के समान गौर, चार भुजाधारी और प्रसन्नमुख वाले गणपति देव मैं आपका ध्यान करता हूँ। हमारे सम्पूर्ण विघ्नों को शान्त करें।

देवताओं और असुरों ने भी अभीष्ट मनोरथ सिद्धि के लिए जिनकी पूजा की है, जो सारे विघ्न-बाधाओं को हरने वाले हैं, उन गणपति जी को नमस्कार है।

नोट : अब आप 'स्वस्ति-वाचनम्' के पांच मंत्र पढ़ें। इस मंत्र का उच्चारण करते समय साधक हाथ में चावल लेकर दो-चार दाने कर पूजा स्थल के सिंहासन पर छिड़कते जाएं, यह चावल तब तक छिड़कते रहें, जब तक सम्पूर्ण मंत्र पढ़कर पूर्ण न कर लें :

स्वस्ति-वाचनम् के पांच मंत्र

(पहला मंत्र)

ॐ स्वस्तिनः इन्द्रो वृद्धश्रवा स्वस्तिनः पूषा विश्वदेवाः।
स्वस्तिन-स्ताक्षर्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥

हिन्दी अनुवाद - अत्यन्त यशस्वी इन्द्र हमारा कल्याण करने वाले हों। जिनके संकटनाशक चक्र को कोई रोक नहीं सकता, वह परमात्मा गरुड़ और बृहस्पति हमारा कल्याण करें। (यः वे. 25/19 से प्राप्त)

(दूसरा मंत्र)

पचः पृथिव्यां पचः औषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे
पयोधाः पयश्वती प्रदिशाः सन्तु मह्यम्।

हिन्दी अनुवाद - हे अग्ने! तुम पृथ्वी में रस धारण करो, औषधि में रस की स्थापना करें। मेरे लिए प्रदिशा आदि सभी रस देने वाले हों।

(य.वे. 18/39 से प्राप्त)

(तीसरा मंत्र)

ॐ गणानात्वा गणपतिग्वं हवामहेत्वाप्रिय पतिग्वं
हवामहे निधिनात्वा निधिपतिग्वं हवामहे वसोमम्।
अहम् जानि-गर्भद-मात्व भजामि गर्भधम्॥

हिन्दी अनुवाद - हे गणपति! आप सब गणों के स्वामी हैं, हम आपको आहुत करते हैं। प्रियों के मध्य निवास करने वाले प्रियों के स्वामी हम आपको आहुत करते हैं। हे निधियों के मध्य निवास करने वाले निधिपते! हम आपको आहुत करते हैं। आप श्रेष्ठ देव, हमारा रक्षा बनें।

(य.वे. 23/19 से प्राप्त)

(चौथा मंत्र)

ॐ द्यौः शान्तिरुतरिक्षग्वं शान्तिः पृथ्वी शान्तिः
रापः शान्ति, रोषधयः शान्ति-वनस्पतयः शान्तिः
विश्वदेवाः शान्ति सर्वग्वं शान्ति शान्ति रवे शान्तिः
सामा शान्ति रेधि सुशान्तिर्भवतु।

हिन्दी अनुवाद - स्वर्ग, अन्तरिक्ष और पृथ्वी शान्त रूप हो, जल, औषधि, वनस्पति, विश्वदेवता, ब्रह्म रूप ईश्वर, सब संसार शान्ति रूप हो और वह मेरे लिए भी शान्ति प्रदान करने वाले हों। *(य. वे. 36/17 से प्राप्त)*

(पांचवां मंत्र)

एतते देव सवित प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणेतेन
यज्ञ मव तेन यज्ञ पति-तेन मामव।

हिन्दी अनुवाद - हे दानादि गुण सम्पन्न सविता देव! इस यज्ञानुष्ठान अर्थात् साधना को अपने निमित्त करते हैं और आपकी प्रेरणा से इसके लिए बृहस्पति को यज्ञ मानते हैं अत: मेरी रक्षा करें। (अ.वे. 2/12 से प्राप्त)

साधना संकल्प मंत्र

ॐ विष्णु-र्विष्णु-र्विष्णु श्रीमद् भगवतो महा पुरुषस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्राह्मणोह्वि द्वितीय प्रहरार्द्धे श्री श्वेत बाराहकल्पे वैवस्वत मनवन्तरे अष्टां-विशाततमे युगे कलियुगे कलि प्रथम चरणे भूर्लोक जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्या-वर्तान्तर्गतैक देशे अमुक नगरे, अमुक ग्रामे, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक नक्षत्रे, अमुक वासरे स्थिते देव गुरौ शेषेसु ग्रेहषु च यथा अमुक नाम महात्मनः, मनोकामना पूर्ति हेतु, धन-जन-सुख-सम्पदा, प्रगति सफलता प्राप्ति हेतु श्री बगलामुखी यंत्र साधना-संकल्प अहम् करिष्येत।

नोट : साधको! उपरोक्त संकल्प मंत्र में जहां-2 पर 'अमुक' शब्द आया हैं वहां पर अपने से सम्बन्धित जानकारी पढ़नी है जैसे अमुक नगरे-आपके शहर का नाम आदि।

अब साधक पृथ्वी की पूजा करें। इस सन्दर्भ में सर्वप्रथम अपने दाहिने हाथ की अंजुलि में जल लेकर निम्न मंत्र पढ़ें। मंत्र समाप्त होते ही अंजुलि का जल पृथ्वी पर छोड़ दें :

पृथ्वी शुद्धि मंत्र

ॐ अपसर्षन्तु ये भूता ये भूता भूवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्त्ता रस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

नोट : पाठको! इसके पश्चात् पीछे दिए गए माता बगलामुखी का वैदिक षोड़शोपचार पूजन के अन्तर्गत शीर्षक 'भगवान पंचदेवता का पूजन' से लेकर 'कलश प्राण-प्रतिष्ठा मंत्र' तक पूजन करें।

श्री बगलामुखी ध्यानम् मंत्र

चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासन-संस्थिताम।
त्रिशूलं पानपात्रं च गदां जिह्वां च विभ्रतीम्॥
विम्बोष्ठीं कम्बुकण्ठीं च समपीन-पयोधराम्।
पीताम्बरां मदाधूर्णां ध्यायेद् ब्रह्मास्त्रदेवताम्॥

नोट : चार भुजाओं से समन्वित, तीन नेत्रों वाली, कमल के आसन पर विराजमान, करों में त्रिशूल, पानपात्र अर्थात् मदिरापान करने का पात्र, गदा और शत्रु की जिह्वा को धारण करती हुई, बिम्ब के समान रक्तवर्ण ओष्ठों वाली, कम्बु के समान कण्ठ संयुक्त, समान एवं पीन पयोधरों वाली पीतवर्ण वस्त्रों को धारण किए हुए, मद से घूर्णित ब्रह्मास्त्र की देवता अर्थात् देवी का चिन्तन करता हूँ। पाठको! याद रखिए श्रीबगलामुखी यंत्र की यह साधना आरम्भ करने से पूर्व, साधक अपने गले में 'सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र' गले में अवश्य धारण कर लें।

श्री बगलामुखी यंत्र निर्माण विधि

पाठको! मन में माता श्री बगलामुखी जी का ध्यान करने पश्चात्, यंत्र का निर्माण कीजिए। इस क्रम में भोजपत्र पर हरिताल की हरिद्रा की स्याही अथवा पीली हल्दी संयुक्त चन्दन की स्याही बनाकर, कनेर की कलम से श्री बगलामुखी यंत्र का निर्माण करें। श्री बगलामुखी यंत्र का चित्र निम्न इस प्रकार है :

श्री बगलामुखी आवाहन मंत्र

यंत्र का निर्माण करने के पश्चात् इसको माता बगलामुखी की तस्वीर के सामने तांबे की प्लेट पर रख दें। अब हाथ जोड़कर भोजपत्र पे बने यंत्र में श्री बगलामुखी का आवाहन करें और निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें :

ॐ सहस्त्र शीर्षाः पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्र-पातस-
भूमिग्वं सव्वेत-सत्पुत्वाऽ यतिष्ठ दर्शांगुलाम।
आगच्छ भगवती बगलामुखी स्थाने-चात्र स्थिरोभव
यावत्पूजां करिष्यामि तावत्वं सिन्धौर भव।
ॐ भगवती बगलामुखी आवाहयामि स्थापयामि॥

नोट : साधको! अब पीछे वर्णन किये गए 'माता बगलामुखी' का वैदिक षोड़शोपचार पूजने के अन्तर्गत शीर्ष' 'माता बगलामुखी आसन समर्पण मंत्र' से लेकर 'अर्घ्य समर्पण मंत्र' तक हुए पूजन के अनुसार श्री बगलामुखी यंत्र का पूजन करें। इसके पश्चात् अपने हाथ में पुष्पांजलि लेकर निम्नलिखित क्रमानुसार श्री बगलामुखी यंत्र की आवरण पूजन करें :

आवरण - पूजन

प्रथमावरण :

यंत्र के बिलकुल मध्य में निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए माता बगलामुखी का पूजन करें :

ॐ संविन्मये परे देवि परामृतरस प्रिये।
अनुज्ञां देहि बगले परिवारार्चन मे॥

अब यंत्र में बने त्रिकोण की पूजा ईशानादि क्रमानुसार करें :

ॐ सं सत्त्वाय नमः। सत्य श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ रं रजसे नमः। रजः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ तं तमसे नमः। तमः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

पूजा होने के पश्चात् पुष्पांजलि लेकर मूल-मंत्र का उच्चारण करें, तदुपरान्त पुष्पांजलि व विशेष अर्घ्य देकर यंत्र को प्रणाम करें :

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणगत वत्सले।
भक्त्ये समर्पयै तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

द्वितीयावरण :

अब षट्कोण केसरों में आग्नेयादि चारों तथा मध्य दिशाओं में यंत्र पर पूजन करें :

ॐ हलीं हृदयाय नमः। हृदय श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि नमः॥
बगलामुखी शिरसे स्वाहा। शिरः श्रीपादुकांपूजयामि तर्पयामि नमः॥
सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। शिखा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
वाचं पदं मुखं स्तम्भय कवचाय हुम्। कवच श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
जिहवां कीलय नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्रत्रय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
बुद्धिं विनाशय हलीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्॥
अस्त्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

इस प्रकार पूजन कर पूर्ववत पुष्पांजलि दें।

तृतीयावरण :

अष्टदलों में पूज्य तथा पूजक के मध्य पूर्व दिशानुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करके पूर्वादि क्रम से पूजन करें तथा निम्नलिखित मंत्रों का उच्चारण करते रहें :

ॐ ब्राह्मयै नमः। ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ माहेश्वर्यै नमः। माहेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ कौमार्यै नमः। कौमारी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ वैष्णव्यै नमः। वैष्णवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

ॐ वाराह्यै नमः। वाराही श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ इन्द्राण्यै नमः। इन्द्राणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ चामुण्डायै नमः। चामुण्डा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ महालक्ष्म्यै नमः। श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

पूजनोपरांत पुष्पांजलि लेकर मूल-मंत्र का उच्चारण करें :

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणगतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥

अब पुष्पांजलि व विशेष अर्घ्य देकर यंत्र को प्रणाम करें।

चतुर्थावरण :

अब पुनः हाथों में पुष्पांजलि लेकर अष्ट मातृकाओं (भोजपत्र पर बने यंत्र में) का पूजन निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करते हुए करें :

ॐ असिताङ्ग भैरवाय नमः।
असिताङ्ग भैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ रु रु भैरवाय नमः।
रुरु भैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ चण्ड भैरवाय नमः।
चण्डभैरव श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ क्रोध भैरवाय नमः।
क्रोध भैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः।
उन्मत्त भैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ कपाल भैरवाय नमः।
कपालभैरवाय श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ भीषण भैरवाय नमः।
भीषण भैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ संहार भैरवाय नमः।
ॐ संहार भैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

इस तरह अष्ट भैरवों की पूजाकर पूर्ववत् पुष्पांजलि दें।

पंचमावरण :

अब षोडश दलों की पूजा करें :

ॐ मङ्गलायै नमः।
मङ्गला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ स्तंभिन्यै नमः।

स्तंभिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

ॐ जृम्भिणी नमः ।

जृम्भिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ मोहिन्यै नमः ।

मोहिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

ॐ वश्यायै नमः ।

वश्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

ॐ बलाकायै नमः ।

बलाका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

ॐ अचलायै नमः ।

अचला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

ॐ भूधरायै नमः ।

भूधरा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

ॐ कल्मषायै नमः ।

कल्मषा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

ॐ धात्र्यै नमः ।

धात्री श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

ॐ कलनायै नमः ।

कलना श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ भ्रामिकायै नमः ।

भ्रामिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ मन्दगमनायै नमः ।

मन्दगमना श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

ॐ मन्दगमनायै नमः ।

मन्दगमना श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

ॐ भोगस्थायै नमः ।

भोगस्था श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

ॐ भाविकायै नमः ।

भाविका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

पूजनोपरांत पुष्पांजलि लेकर मूल-मंत्र का उच्चारण कर पुष्पांजलि यंत्र पर चढ़ाकर प्रणाम करें। अब यंत्र पर विशेष अर्घ्य दें :

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणगवत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम् ॥

षष्ठावरण :

अब यंत्र के ऊपर भूपुर के भीतर पूर्वादि दिशाओं में पूजा करें। इसके पश्चात् पूर्ववत पुष्पांजलि और अर्घ्य दे यंत्र को प्रणाम करें :

ॐ गणपतये नमः।
गणपति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ बटुकाय नमः।
बटुक श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ योगिनीभ्यो नमः।
योगिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ क्षेत्रपालाय नमः।
क्षेत्रपाल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥

सप्तमावरण :

भूपुर की पूजा करने के पश्चात् भूपुर के बाहर पूर्वादि दिशाओं व इन्द्रादिक दिक्पालों की पूजा करें :

ॐ लं इन्द्राय नमः। (पूर्व)
इन्द्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ रं अग्नये तेजोऽधिपतये नमः। (अग्निकोण)
अग्नि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ मं यमाय नमः। (दक्षिण)
यम श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ क्षं निर्ऋतिये नमः। (नैऋत्यकोण)
निर्ऋति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ वं वरुणाय नमः। (पश्चिम)
वरुण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ यं वायवे नमः। (वायव्य कोण)
वायु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ सं सोमाय नमः। (उत्तर)
सोम श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ हं ईशान्य नमः। (ईशानकोण)
ईशान श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥
ॐ आं ब्रह्मणे नमः। (इन्द्र-ईशान्य-मध्य)
ब्रह्म श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ ह्रीं अनन्ताय नमः। (वरुण-नैऋत्य-मध्य)

अनन्त श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

पूजनोपरांत पुष्पांजलि लेकर मूल-मंत्र पढ़ते हुए भोजपत्र पर बने श्रीबगलामुखी यंत्र के समीप चढ़ाएं तथा विशेष अर्घ्य समर्पित करें :

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणगतवत्सले।
भक्तया समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्॥

अब निम्नलिखित देवताओं के शस्त्रों की यंत्र पर पूजा करें। पूजन समाप्त होने के बाद हाथ के पुष्पों को यंत्र पर चढ़ा उसे प्रणाम करें।

ॐ वं वज्राय नमः। (इन्द्र के समीप)
वज्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।
ॐ शं शक्तये नमः। (अग्नि के समीप)
शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।
ॐ दं दण्डाय नमः। (यम के समीप)
दण्ड श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।
ॐ खं खंगाय नमः। (नैऋत्य के समीप)
खंग श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।
ॐ पां पाशाय नमः। (वरुण के निकट)
पाश श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।
ॐ अं अंकुशाय नमः। (वायु के समीप)
अंकुश श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।
ॐ गं गदायै नमः। (सोम के समीप)
गदा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।
ॐ शूं शूलाय नमः। (ईशान के समीप)
शल श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।
ॐ पं पदमाय नमः। (ब्रह्मा के समीप)
पद्म श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।
ॐ चं चक्राय नमः। (अनन्त के समीप)
चक्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।

नोट : साधकों यहां पर यंत्र की आवरण पूजा समाप्त होती है। अब आप निम्न 'श्रीबगलामुखी के 36 अक्षरीय महामंत्र का सवा लाख जाप करें।' जाप के समय हल्दी की माला का प्रयोग करें। मंत्र जप की उपरोक्त निश्चित की गयी संख्या को ३१ दिनों में पूरा करें :

श्री बगलामुखी महामंत्र

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तंभय जिह्वा कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।

मंत्र - जप का कार्य पूर्ण हो जाने पर अन्तिम 31वें दिन इसी उपरोक्त (1000) ग्यारह हजार मंत्र से माता बगलामुखी का हवन करें। हवन में उन्हीं सामग्रियों का प्रयोग होगा जिसका उल्लेख 'बगलामुखी हवन खण्ड' में किया गया है। हवन के पश्चात् आरती करें। इस क्रम में इस पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर दी गयी आरती गावें। अब भोजपत्र पर बने यंत्र को चांदी के ताबीज में हवन भस्म के साथ भर दें। तदुपरान्त इसमें पीला धागा डालकर गले में पहन सकते हैं। स्मरण रहे यह कर्म करने के पश्चात् ग्यारह बाल-कन्याओं को भोजन कराना और विसर्जन कर्म करना न भूलें। 'सिद्ध गुरु रक्षा कवच यंत्र' को साधना पूर्ण होने पर लाल कपड़े में रख, कुछ पुष्प व मीठे सहित, नदी में प्रवाहित कर दें।

नोट : साधको, माता बगलामुखी यंत्र की षोडशोपचार पूजन केवल पहले दिन ही करें। अन्य दिन मंत्र की निश्चित संख्या का जाप करें और जाप समाप्ति पर आरती कर्म करें। यहां पर 'श्री बगलामुखी यंत्र' की साधना का कार्य सम्पन्न होता है।

पाठको! यह साधना आप स्वयं कर सकते हैं। यदि आपके पास समय का अभाव है या आपको यह साधना कर्म कठिन लगता है तो उस स्थिति में आप हमारे कार्यालय से सम्पर्क स्थापित कर, सिद्ध यंत्र मंगवा सकते हैं। हमारे कार्यालय से मंगवाया गया यह दिव्य यंत्र आपको उतना ही लाभ देगा जितना आप इस यंत्र की साधना करके प्राप्त करते। इसके अतिरिक्त अन्य किसी भी प्रकार की समस्या के समाधान के लिए या सिद्ध यंत्र प्राप्त करने हेतु आप निःसंकोच हमारे कार्यालय के पते पर सम्पर्क कर सकते हैं।

परम तेजस्वी श्री बगलामुखी यंत्र से होने वाले लाभ

1. यदि कोई व्यक्ति अपने शत्रुओं से अत्यधिक परेशान है। शत्रु उसको हर तरह से परेशान कर रहे हैं, उसका जीना तक दुभर कर दिया है तो इस दिव्य यंत्र का प्रयोग करें। चमत्कारिक ढंग से आपके शत्रुओं का विनाश होना आरम्भ हो जाएगा और बचे हुए शत्रु आपके परम मित्र बन जाएंगे और आपके कहे अनुसार चलेंगे।
2. कारागार से मुक्ति दिलाने में यह सिद्ध यंत्र अचूक रामवाण है।

3. यदि कोई व्यक्ति कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगाते लगाते थक चुका हो, आये दिन कोई-न-कोई नये मुकद्दमें के कारण उसकी जान तथा माल की बहुत हानि हो रही हो, और मुकद्दमे का निर्णय उसके विरुद्ध आने वाला हो। इस यंत्र का प्रयोग उसे मुकद्दमें में अवश्य विजय दिलायेगा। मेरे जीवन का यह यथार्थ अनुभव है। आप प्रयोग करके देखें स्वयं जान जाएंगे।

4. यदि इस यंत्र को धोकर, धोए जल में 101 काली मिर्च डालकर शत्रु के घर आंगन व्यावसायिक कार्यालय में उढ़ेल दिया जाए तो उसके विनाश को कोई नहीं रोक सकता।

5. यदि किसी व्यक्ति का अनैच्छिक स्थान पर स्थानान्तरण हो रहा हो तो इस यंत्र के धारण करते ही उसका स्थानान्तरण तत्काल रुक जाएगा। धारणकर्त्ता के ऐच्छिक स्थान पर ही होगा।

6. इस दिव्य यंत्र को गले में धारण कर किसी से भी मिलने जाएं और कोई भी कार्य कहें तो सामने वाला तुरन्त कार्य कर देता है।

7. यंत्र धारणकर्त्ता यदि किसी अधिकारी या बहुत बड़े व्यापारी के सामने जाकर अपनी इच्छा प्रगट करे अथवा पदोन्नित या कोई एजेंसी प्राप्त करने की बात कहे, तो वह निश्चय ही स्वीकार कर ली जाती है।

8. यदि इस यंत्र को पीले कपड़े में लपेट कर छोटे बच्चे के गले में शनिवार के दिन पहना दिया जाए तो वह डरना बन्द कर देता है।

9. यदि आपके घर और व्यावसायिक स्थूल को किसी ने तांत्रिक बन्धन कर दिया है जिसके फलस्वरूप आपके परिवार के साथ आये दिन कोई-न-कोई हानि पहुंचाने वाली घटनाएं घट रही हो। इस महातेजस्वी यंत्र को अपने घर व व्यवसायिक कार्यालय की पूजा स्थल पर पीले कपड़े में लपेट कर रखें। आपकी सभी प्रकार की तांत्रिक समस्याएं दूर जाएंगी और भविष्य में भी, जब तक यंत्र आपके घर व ऑफिस में स्थापित है, कोई आप पर व आपके परिवार पर तांत्रिक बन्धन नहीं कर पाएगा।

10.यदि इस यंत्र को धोकर, धोए जल में मोर पंख के नीले चांद वाले हिस्से का एक टुकड़ा डालकर, साथ में गुड़ डालकर - रजस्वला समय में स्त्री को तीन दिन तक पिलाई जाए तो वह अवश्य गर्भ धारण करती है और उसकी होने वाली सन्तान असाधारण गुणों से सम्पन्न होती है।

11.यह यंत्र जल में धोकर, वह जल किसी ऐसे व्यक्ति को पिला देंगे जो हमेशा आपका विरोध करता हो, जल पीने के पश्चात् वह व्यक्ति आपके कहने के अनुसार चलने लगेगा। यह वशीकरण यंत्र की तरह उस व्यक्ति पर कार्य करेगा।

12.जन्मकुण्डली में निर्मित दुर्योग फलहीन हो जाते हैं, यदि दुर्घटना या

अकालमृत्यु का योग हो तो वह भी अल्प हो जाता है अर्थात् एक प्रकार से नष्ट हो जाता है।

13. नौकरी, इंटरव्यू, परीक्षा आदि में जो यंत्र धारण कर जाता है, वह निश्चित सफलता पाता है।

14. व्यापार में अचम्भित तरक्की होती है।

15. यदि कोई परिवार का सदस्य लड़ाई-झगड़ा, क्लेश आदि से क्रुद्ध होकर घर से चला गया हो तो इस यंत्र को धोकर, धोया जल अपने चारों दिशा में घर से भागे व्यक्ति का नाम लेकर छिड़क दें तो वह व्यक्ति शीघ्र ही घर वापस आ जाता है।

16. इस यंत्र के धारण करने पर धारणकर्त्ता अति घोर-से-घोर संकट और विपत्तियों से भी छुटकारा पा लेता है।

17. इसको धारण करने वाला, मानसिक, शारीरिक एवं भौतिक कष्टों से मुक्ति पाता है।

18. यंत्र धारणकर्त्ता के घर में कई रास्तों से धन को आगमन होने लगता है, जिससे वह चकित रह जाता है।

19. इससे धारणकर्त्ता के घर में होने वाले आपसी झगड़े समाप्त हो जाते हैं। इस प्रकार घर में अमन-शान्ति बनी रहती है।

20. ऐसा व्यक्ति समाज में सम्मानीय एवं पूजनीय हो जाता है, उच्च कोटि के मंत्रीगण एवं अधिकारी भी उसकी बात को मस्तक पर धारण करते हैं। वह सभी को प्रिय हो जाता है। जीवन में उसे किसी चीज़ का अभाव नहीं रहता।

21. उसकी समस्त इच्छाएं व कामनाएं पूर्ण होने लगती हैं जिससे यंत्र धारण करने वाला स्वयं भी हैरान हो जाता है।

पाठको! इस दिव्य महातेजस्वी यंत्र की साधना स्वयं करें अथवा सिद्ध किया हुआ यंत्र हमारे कार्यालय (पंडित वाई.एन. झा 'तूफान' के कार्यालय से) से प्राप्त कर उपरोक्त सभी प्रकार के लाभ उठाएं।

श्री बगलामुखी वन्दना खण्ड

माँ आओ बगलामुखी माँ आओ
माँ आओ बगलामुखी माँ आओ।
तेरा बेटा तुझे बुलाये माँ आओ।।
संकट ने आ घेरा है।
अंधियारी काली रात है।।
माँ होता नहीं सवेरा है।
इस संकट से मुझे बचाओ।।
माँ आओ बगलामुखी माँ आओ।
तेरा बेटा तुझे बुलाये माँ आओ।। १।।

दुःख पीड़ा मुझे सता रही।
ज्योति आशा की बुझती जा रही।।
सब इस जग हुए पराये माँ।
अब और न मुझे तड़पाओ।।
माँ आओ बगलामुखी माँ आओ।
तेरा बेटा तुझे बुलाये माँ आओ।। 2।।

असहाय पड़ा हुआ हूँ माँ।
रिपुओं से घिरा हुआ हूँ माँ।।
मदद को कोई आता नहीं।
अब तुम्हीं मित्र बन जाओ।।
माँ आओ बगलामुखी माँ आओ।
तेरा बेटा तुझे बुलाये माँ आओ।। 3।।

मैं अनारी और अञ्जान हूँ।
झूठे मुकद्दमों से परेशान हूँ।।
शातिर दुश्मन ने मुझे फंसाया माँ।
मुकद्दमें में विजय बनाओ।।
माँ आओ बगलामुखी माँ आओ।
तेरा बेटा तुझे बुलाये माँ आओ।। 4।।

हुई जो कोई भूल माँ।
उस भूल के लिये क्षमा करो।।
तेरे दर्शन को बेचैन हूँ माँ।
तनिक अब तो झलक दिखलाओ।।
माँ आओ बगलामुखी माँ आओ।
तेरा बेटा तुझे बुलाये माँ आओ।। 5।।

जय अम्बे माँ जय जगदम्बे माँ

जय अम्बे माँ जय जगदम्बे माँ।
तुझको मेरा प्रणाम, जग में तोसा कोउ महान।।
दुष्टों का संहार करो, माँ भक्तों का उद्धार करो।
तेरे दरबार में आया हूँ, माँ खाली झोली लाया हूँ।।
मुझ पर भी उपकार करो, मेरी खाली झोली को भरदो।
इस बेसहारे का, माँ और सहारा कहां।।
तुझको मेरा प्रणाम, जग में तोसा कोउ महान।। १।।

कृपा माँ तेरी, जिस पर भी पड़ती।
सुख-सम्पत्ति से, उसका घर भरती।।
चिन्ता-भय न, कोई उसे सताये।
माँ वल्गा जिसपे, दयादृष्टि तेरी आये।।
विपत्ति का अंधकार हटे, माँ तेरे चरण पड़े जहां।
जय अम्बे माँ, जय जगदम्बे माँ।।
तुझको मेरा प्रणाम, जग में तोसा कोउ महान।। 2।।

वरदान माँ जिसको, तेरा मिलता।
खुशियों से उसका, आंगन खिलता।।
वैरी न उसका, कुछ भी बिगाड़े।
माँ जिस भक्त को, तू स्वयं संवारे।।
दिखती है माते तू ही, देखूं मैं जहां-वहां।
जय अम्बे माँ, जय जगदम्बे माँ।।
तुझको मेरा प्रणाम, जग में तोसा कोउ महान।। 3।।

चार भुजाओं वाली माँ, भक्त की रक्षा करती सदा।
शव को आसन बनाये माँ, भक्तों के मन समायी माँ।।
शत्रु की जिह्वा धारण करती, भक्तों के मन में भक्ति भरती।
देवता भी जिस माँ की, भजन करते जहां-तहां।।
जय अम्बे माँ, जय जगदम्बे माँ।
तुझको मेरा प्रणाम, जग में तोसा कोउ महान।। 4।।

हे बगले मात् सुनो विनय हमारो

हे बगले मात् सुनो विनय हमारो,
यह वरदान दया कर पाऊं।
प्रातः तुम्हें मञ्जन करवा के,
प्रेम सहित स्नान कराऊं।।
हे बगले मात् सुनो विनय हमारो,
यह वरदान दया कर पाऊं।। १।।

चन्दन-धूप-द्वीप-तुलसी दल,
पीत कनेर के पुष्प चढ़ाऊं।
तेरे सम्मुख नृत्य करूं माते,
प्रेम से घण्टा-घनन बजाऊं।।
हे बगले मात् सुनो विनय हमारो,
यह वरदान दया कर पाऊं।। 2।।

चरण धोय चरणामृत लेकर,
अपने सभी परिवार पिलाऊं।
जो कुछ रूखा-सूखा घर में,
तुझे खिलाकर भोजन पाऊं।।
हे बगले मात् सुनो विनय हमारो,
यह वरदान दया कर पाऊं।। 3।।

जीवन में जो पाप किये हैं,
परिक्रमा के साथ बहाऊं।
करम करो 'संजीव' पे बगलामुखी,
जन्म-जन्म मैं दास कहाऊ।
हे बगले मात् सुनो विनय हमारो,
यह वरदान दया कर पाऊं।। 4।।

श्री बगलामुखी वन्दना

नित् ही पुजूं बगला माते, तुम भी इक उपकार करो।
माँ धन-जन से भण्डार भरो, माँ मेरी नैया पार करो।।1।।

अनिष्टता न आने पावे, मेरे आंगन द्वार पे।
बाधाओं को मार भगाओं, भयावनी हुंकार से।।
शोक विनाशो शत्रुनाशिनी, इतनी दया करो सरकार।
माँ धन-जन से भण्डार भरो, माँ मेरी नैया पार करो।।2।।

धन से जल्दी भरें खजाना, कह दो अभी कुबेर से।
लुट जाऊंगा मिट जाऊंगा, एक क्षणों की देर में।।
कितना तड़पाओगी अम्बे, अब भी माँ उद्धार करो।
माँ धन-जन से भण्डार भरो, माँ मेरी नैया पार करो।।3।।

करो सुमंगल हरो अमंगल, जय हैं मंगलाकाली माँ।
दुःख के सागर, डूब रहा हूँ, कर मेरी रखवाली माँ।।
सभी मुरादें करदें पूरी, अर्जी अब स्वीकार करो।
माँ धन-जन से भण्डार भरो, माँ मेरी नैया पार करो।।4।।

कब से बिलखुं तेरे दर पे, अब भी नैना खोलो न।
हताश हो गया तुझे बुलाते, अब भी तो कुछ बोलो न।
प्राण पखेरू उड़ेगा मेरा, वरना अंगीकार करो।
माँ धन-जन से भण्डार भरो, माँ मेरी नैया पार करो।।

नमस्कार हे बगला माता

नमस्कार हे बगला माता, अम्बे यह उपकार करो।
मेरे सारे शत्रुगण का, जल्दी से संहार करो।।
नमस्कार हे बगला माता, अम्बे इक उपकार करो।। 1।।

शत्रुगण हैं शक्तिशाली, बहुत यातना देते हैं।
मेरे जीवन की खुशियों को, क्षण में ही हर लेते हैं।।
दुष्ट दलों का करो दलन, हम सेवक का उद्धार करो।
मेरे सारे शत्रुगण का, जल्दी से संहार करो।। 2।।

बाधा से कहदो माते, हमको नहीं सतायेगी।
कहो विपत्ति से जाकर के, हमको नहीं रूलायेगी।।
मेरे घर में धन बरसाने, लक्ष्मी को तैयार करो।
मेरे सारे शत्रुगण का, जल्दी से संहार करो।। 3।।

कहो निराशा से जगदम्बे, हमसे दूर चली जाए।
क्रोध को कहदो समझाके, आंखें वो न दिखलाए।।
मुझमें भी है सारे अवगुण, इनको माँ बेकार करो।
मेरे सारे शत्रुगण का, जल्दी से संहार करो।। 4।।

मेरे अन्दर से बाहर करदो, दुःख शोक सन्तापों को।
बाहर करदो मेरे हृदय से, हे जगदम्बे पापों को।।
ईर्ष्या-द्वेष का मेरे मन से, जल्दी से माँ खार करो।
मेरे सारे शत्रुगण का, जल्दी से संहार करो।। 5।।

हूँ मैं नांदा पुत्र तुम्हारो, और नहीं माँ बिलखाओ।
अपने इस 'संजीव' पे माते, दया दृष्टि बरसाओ।।
भवसागर से मेरी नैया, तूं ही मैया पार करो।
मेरे सारे शत्रुगण का, जल्दी से संहार करो।। 6।।

भक्तों जयकारा बोलो, बगला मैया के दरबार

भक्तों जयकारा बोलो, बगला मैया के दरबार।
शत्रु का करें सर्वनाश, सेवक को देती तार।।
भक्तों जयकारा बोलो, बगला मैया के दरबार।। 1।।

पीले रंग आभूषण पहने, पीले रंग की साड़ी।
हल्दी की माला मैया को, दिल से अद्‌भुत प्यारी।।
पीले पुष्पों की मालाएं, गले में लटकी हार।
भक्तों जयकारा बोलों, बगला मैया के दरबार।। 2।।

द्विभुजी और चतुर्भुजी, दो माँ के रूप निराले।
एक हाथ में शत्रु जिह्वा, दूजे मुदगर डाले।।
द्विभुजी मां की महिमा भक्तों, बड़ा ही अपरम्पार।
भक्तों जयकारा बोलो, बगला मैया के दरबार।। 3।।

चतुर्भुजी बगला माता की, बड़ी ही अनुपम शोभा।
मुदगर-वज्र-पाश हाथों में, एक में शत्रु जिह्वा।।
स्वर्ण-सिंहासन पर विराज, सेवक करती उद्धार।
भक्तों जयकारा बोलो, बगला मैया के दरबार।। 4।।

पीतरंग पुखराज जड़ित, कानों में झूले वाली।
स्वर्ण-मुकुट नवरत्न जड़ित, माँ ने सिर पे डाली।।
हाथ में कंगन स्वर्ण का झूले, गले स्वर्ण की हार।
भक्तों जयकारा बोलो, बगला मैया के दरबार।। 5।।

जो भी बगला माता को, पीला प्रसाद चढ़ाए।
उन भक्तों का जगदम्बे, सारे अवसाद मिटाए।।
नित दिन पूजे जो भी, उनके शत्रु होते खार।
भक्तों जयकारा बोलो, बगला मैया के दरबार।। 6।।

प्रथम आरती

दया करो बगलांमुखी अम्बे, आरती करूं तुम्हारी जी।
बाधा नाशिनी शत्रु विनाशिनी, जन-जन के हितकारी जी।।
दया करो बगलामुखी अम्बे, आरती करूं तुम्हारी जी।। 1।।

पीताम्बर तन पे आति सोह, भूषण पीत भक्त को मोहे।
शत्रु जिह्वा हस्त से खींचत, तुम हो मुदगर धारी जी।।
दया करो बगलामुखी अम्बे, आरती करूं तुम्हारी जी।। 2।।

गले में पीत पुष्प की माला, स्वर्ण की टीका भाल विशाला।
त्रिविध ताप मिट जात है तन के, जो भक्ति करे तुम्हारी जी।।
दया करो बगलामुखी अम्बे, आरती करूं तुम्हारी जी।। 3।।

आसन पीत वर्ण महारानी, भक्तन के तुम हो वरदानी।
सुर-नर-नाग करत हैं वन्दन, तुम सबके सुखकारी जी।।
दया करो बगलामुखी अम्बे, आरती करूं तुम्हारी जी।। 4।।

शशि ललाट कुण्डल छवि न्यारी, स्तुति करे देव नर-नारी।
चतुर्भुजी त्रिनयनी माते, तुम हो प्यारी-प्यारी जी।।
दया करो बगलामुखी अम्बे, आरती करूं तुम्हारी जी।। 5।।

चहुं ओर शत्रु ने घेरा, बाधाओं ने डाला डेरा।
शत्रु विनाशो हे जग-जननी, विनती करूं तुम्हारी जी।।
दया करो बगलामुखी अम्बे, आरती करूं तुम्हारी जी।। 6।।

विद्या-बुद्धि-ज्ञान बढ़ाओ, माँ अपने चरणों में लगाओ।
सबके तारनहारी माते, हमको भी अब तारो जी।।
दया करो बगलामुखी अम्बे, आरती करूं तुम्हारी जी।। 7।।

शरणों में 'तूफान' है आया, भरदे झोली है महामाया।
चरणों का रजकण ही दे दें, हे जग मंगलकारी जी।।
दया करो बगलामुखी अम्बे, आरती करूं तुम्हारी जी।। 8।।

द्वितीय आरती

जय-जय श्रीबगलामुखी माता, आरती करहुं तुम्हारी।। टेक।।
पीत वसन तन पर तव सोहै, कुण्डल की छवि न्यारी।।
जय-जय श्रीबगलामुखी माता, आरती करहुं तुम्हारी।। १ ।।
कर-कमलों में मुद्‌गर धारे, अस्तुति करहिं सकल नर-नारी।
जय-जय श्रीबगलामुखी माता, आरती करहुं तुम्हारी।।
चम्पक माल गले लहरावे, सुर-नर-मुनि जय जयति उचारी।
जय-जय श्रीबगलामुखी माता, आरती करहुं तुम्हारी।
त्रिविध ताप मिटि जात सकल सब, भक्ति सदा तब है सुखकारी।
जय-जय श्रीबगलामुखी माता, आरती करहुं तुम्हारी।
पालत हरत सृजत तुम जग को, सब जीवन की हो रखवारी।
जय-जय श्री बगलामुखी माता, आरती करहुं तुम्हारी।।
मोह निशा में भ्रमत सकल जन, करहु हृदय महं तुम उजियारी।
जय-जय श्रीबगलामुखी माता, आरती करहुं तुम्हारी।।
तिमिर नशावह ज्ञान बढ़ावहु, अम्बे तुमहीं हो असुरारी।
जय-जय श्री बगलामुखी माता, आरती करहुं तुम्हारी।।
सन्तन को सुख देत सदा ही, सब जन की तुम प्राण पियारी।
जय-जय श्रीबगलामुखी माता, आरती करहुं तुम्हारी।।
तब चरणन जो ध्यान लगावें, ताको हो सब भव-भयहारी।
जय-जय श्रीबगलामुखी माता, आरती करहुं तुम्हारी।।
प्रेम सहित जो करहिं आरती, ते नर मोक्षधाम अधिकारी।
जय-जय श्रीबगलामुखी माता, आरती करहुं तुम्हारी।।

दोहा

बगलामुखी की आरती, पढ़ै सुनै जो कोय।
विनती शिवदत्त मिश्र की, सुख-सम्पत्ति सब होय।।

प्रकाशक :

महामाया पब्लिकेशन्स

नज़दीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर शहर-8

2012

घर बैठे ही अपनी मनपसंद पुस्तकें मंगवाएं

लेखक ओम प्रकाश अग्रवाल की पुस्तकें (23×36 साईज में)

पुस्तक	मूल्य	पुस्तक	मूल्य
❖ अच्छा गृहस्थ	15.00	❖ जीवन यात्रा	20.00
❖ अच्छे जीवन का सार	20.00	❖ ज्ञान शास्त्र	25.00
❖ तनाव कम करने के उपाय	20.00	❖ सरल जीवन कैसे हों	20.00
❖ दुनियादारी	15.00	❖ संसार को जानों	30.00
❖ सुखी कैसे हों	25.00	❖ कहानी संग्रह	20.00
❖ सांसारिक बातें	25.00	❖ तंत्र-मंत्र से दूर रहो	20.00
❖ निरोग कैसे रहें	20.00	❖ गीता की जानकारी	20.00
❖ जीवन क्या है?	20.00	❖ खर्च कैसे कम करें	25.00
❖ किस्से मियां बीबी के	20.00	❖ अशांति से शांति की ओर	25.00
❖ खट्ठी मीठी बातें	20.00	❖ जीवन की राह	40.00
❖ उलझनें संसार की	20.00	❖ ईश्वर की रचना	40.00
❖ बोध कथाएं	20.00	❖ ईश्वर की सत्ता को जानें	40.00
❖ अच्छे बोल	25.00	❖ स्कूली बच्चों के लिए	15.00
❖ इन्सान गरीब क्यों होता है	15.00	❖ आस्था	25.00
❖ घरेलू समाधान	30.00	❖ स्वस्थ भारत की कल्पना चावला	20.00

घर का वैद्य मेल (मूल्य 25 रुपये)

❖ घर का वैद्य (नीम)	❖ घर का वैद्य (गाजर)
❖ घर का वैद्य (तुलसी)	❖ घर का वैद्य (पपीता)
❖ घर का वैद्य (शहद)	❖ घर का वैद्य (मुली)
❖ घर का वैद्य (प्याज)	❖ घर का वैद्य (बेल)
❖ घर का वैद्य (अदरक)	❖ घर का वैद्य (हींग)
❖ घर का वैद्य (फिटकरी)	❖ घर का वैद्य (दूध-घी)
❖ घर का वैद्य (लहसुन)	❖ घर का वैद्य (आक)
❖ घर का वैद्य (नीबू)	❖ घर का वैद्य (दहीं-मट्ठा)
❖ घर का वैद्य (आंवला)	❖ घर का वैद्य (नमक)
❖ घर का वैद्य (हल्दी)	❖ घर का वैद्य (त्रिफला)
❖ घर का वैद्य (पीपल)	❖ घर का वैद्य (अनार)

प्रकाशक :

महामाया पब्लिकशन्स

नज़दीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर शहर-8

2012

घर बैठे ही अपनी मनपसंद पुस्तकें मंगवाएं

❖ सुन्दर कांड (भाषा टीका)	लाल रंग में (23×36/16)	50.00
❖ अष्टावक्र महागीता भावार्थ और व्याख्या सहित		90.00
❖ पांच केदार यात्रा और श्री बद्रीनाथ धाम के तीर्थ		50.00
❖ सम्पूर्ण व्रत पर्व एवं त्यौहार	23×36	50.00
❖ नौ देवियों की अमर कहानी	(बड़ी)	50.00
❖ 51 चालीसा संग्रह (आढ़ा) डिमाई साइज)	(सजिल्द)	50.00

❖ राम उपासना	50.00	❖ वैष्णों देवी की उपासना	50.00
❖ श्री नृसिंह उपासना	50.00	❖ श्री कृष्ण उपासना	50.00
❖ नवग्रह उपासना	50.00	❖ श्री नृसिंह आराधना	50.00
❖ चण्डी उपासना	50.00	❖ सम्पूर्ण नव दुर्गा पाठ	50.00
❖ सम्पूर्ण काली उपासना	50.00	❖ सुख सागर संक्षिप्त	50.00
❖ सम्पूर्ण शनि उपासना	50.00	❖ महाभारत संक्षिप्त	50.00
❖ हनुमान उपासना	50.00	❖ रामायण संक्षिप्त	50.00
❖ भैरव उपासना	50.00	❖ शिव पुराण संक्षिप्त	50.00
❖ बाला जी उपासना	50.00	❖ प्रेम सागर संक्षिप्त	50.00
❖ महालक्ष्मी उपासना	50.00	❖ अष्टावक्र महागीता	100.00
❖ विष्णू उपासना	50.00	❖ नौ देवियों की अमर कहानी	40.00
❖ गायत्री ज्ञान	50.00	❖ गणेश चतुर्थी व्रत कथा	30.00
❖ गायत्री उपासना	50.00	❖ सत्यानन्द की जीवन गाथा	25.00
❖ दुर्गा उपासना	50.00	❖ गोपाल सहस्त्रनाम (लाल रंग)	20.00
❖ बगलामुखी उपासना	50.00	❖ विष्णु सहस्त्रनाम 20×30	25.00
❖ सम्पूर्ण शिव उपासना	50.00	❖ कुरक्षेत्र महात्म्य	50.00
❖ सम्पूर्ण गणेश उपासना	50.00	❖ पांच केदार और बद्रीनाथ तीर्थ	50.00
❖ सूर्य उपासना	50.00	❖ 51 चालीसा संग्रह	35.00
❖ सरस्वती उपासना	50.00	❖ गोगा पुराण	75.00

पुस्तक मंगवाने के लिए मनीआर्डर एडवांस भेजें।
मनीआर्डर फार्म पर ही पुस्तक का नाम लिखें।

प्रकाशक :

महामाया पब्लिकेशन्स

नज़दीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर शहर-8

2012

प्रकाशक :

महामाया पब्लिकेशन्स

नज़दीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर शहर-8

2012